॥श्रीब्रह्मविलासप्रारंभ॥

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी
MEMORIAL

दूहा ॥ नमः सिद्धेभ्यः ॥ ॥ श्री[illegible]॥ ॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥
प्रथम प्रणामि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमिजे आचारज उवझाय तासु पद
॥१॥ वंदन कीजे साधु सकल गुन गुनवंत सांत मुद्रा लषि लिजे श्रावक प्रतिमाधरन
२ चरन तन मी पाप निकंदौ समकवंत सुनाव घर जीव जगत मांही वंदि जिन त्रि
तति तत्रिकाल वदित तविक तावसहित सिरनाय निंत १ ॥ श्री जिनेश्वर स्तुति छ
पय ॥ मोह कर्म जे हि हरउ करउ रागादिक तिष्ठित द्वेष सबै परिहरउ जागि क्रोध
हकीयो तिष्ठित मान मुठ ताहरि अटरि अमाया दुषदायनि लोभ लहरि गालिग
सी अपरीआ प्रगटी कुरसायनि केवल परम बलंबिकु तवसमुद्र तारन तरन
त्रिकाल चरनवंदित तविक जयजयजिनंद सुमपयसरन २ ॥ श्री सिद्ध की स्त
ति ॥ छप्पय ॥ अवबंध भविश्राम नामनि रंश्रपद मंडित ज्याज्ञात परकास वा ॥२॥
स जिहां सदा अषंडित तासलोकालोक थाकसुषमहि जविराजहि घनमहि
आनुसहाय सर्वगुन मंहिरजाजहि ईहविधि अनंत तियसिद्धमहि ग्यान ध्यान
विलसंत नित नित त्रित त्रिकाल वंदित तविक तावसहित नित एक चित ३
॥ आचार्य की स्तुति ॥ छप्पय ॥ परम पंच आचार तासु धारण आचारज ग्यान
आरस जुगत करत उतम सब कारज हित धरम उपदेश देत तब जीव विचा
रत जिनवानि जोषिरत सांतो निज हिरदे धारत कहत अरथ परकासि के
केवल पद महिमा लषत जु साध मध्य परधान पद सु आचारज अमृत वष
त ४ ॥ उपाध्याय की स्तुति ॥ सवैया ३१ ॥ द्वादस अंग वानि वषांनि वितराग देवजा
नि तवि जीवन अनादि की कुलानि हे ताकि पावक रवै को नेर तिके धरवै को अ
र्थके उचारिवेकों पडित उवानी हे परम समझायवेको ग्यान उपजायवेको रू
परिजायवेको निपुन निदानी हे याहि ते उवान मानि सति उवझाय वानि ते पायो
वषानी ताकी मोष वधू रानि हे ॥ मुनिराज की स्तुति ॥ सवैया ३१ ॥ दहि के करम
अघ जहि के परम पथ गहि के धरम ध्यान रपांन कालगनि हे सुध निज रूप धरे प
रसो न पीत कर रवम तासरीरपे अजिमत जोग गाज हे विश्व परिलोम साधि अपने

बुल गुनश्रन धिग्रप निसमाधिमध्य अपनि जानिहै। शुद्ध उपयोगी मुनिराज दोषम
॥२॥ ल सुन परसौ जगतनतें हिंसा युमैमगन हैं ६ ॥ श्रावक को वर्णन स्तुति ॥ मिथ्या
मती रितदारी तयो अनुचनधारिनकास्तान दतारि दिर देवम नुहै। सेवा जिन
राजकी ये या ति सिरता तेको देतन नि मुनि कौ जकीये चितमें चहतु है। वीम
दृति वारीरान तौ जनकु तजि पाति ई उनको जीरा चित पिरतान रहतु है। दयानी
वसदा धर्ममित्र ताव्रण मकरे पाप मन उपकार हे स्मुनि यौं कहतु है ॥ श्री समंतभद्र
महिमा ॥ स० ७ ॥ जोथि तिनि कंद क्षोय कर्म बंध मंद होय प्रगटे प्रकास निज आ
नंद के कंद कौ हितको दिढाव होय विनको बढावहोय तपजेज कुरंगौ सु
निधौ को चंद को सुगति निवास तुगं तको नाश होई अपने उछाह दाह करे मो
ह फंद को सुषतरपुर होय दोष दुष दूर होय यों सगुन वंदक है समंतभद्र ॥२॥
दको ८ ॥ श्री जिनस्वरूप प्रतिमा को नमस्कार ॥ कवित्त ॥ प्रथम प्रणामी सुरलो
क जिन्हें जिन चैत्यालै आठ सै चार तिनि बिंब एक सौ अष्ठ अनुपम ब

ऊरि प्रणामी मर्त्यलोक बिंब जिनके जितें थांनक ॥ हृति मध्य अकृतम सु विधि
तें प्रतिमा प्रणामों लोक पाताल लोक स्वनाप्र वल तितें थांनिक जिन बि
बवंदित तितै मानि तिहूं चिकाल वंदित ते तबिक नाव महित सिर नाय नित ९ ॥ स
मंतभद्र कों महिमा ॥ सवैया ३१ ॥ स्वरूप रीझ्वारे से सु गुन मतवारे से सुधा के
सुधारे से सुप्रान दयावंत है। सुबुधि के अथा से सुरिधि पाति से सुमन के सनाद
से माहा वडे महंत है। सुध्यान के धरैया से सुग्यान के करैया से सुप्रमान परषै
या से सक ति अनंत है १० ॥ [illegible] ॥ स
वैया ३१ ॥ काहु को कोध के रकर तुंग अति नाहि रहे दुष्ट संघट घेर ॥ काहु कों मान
माहा सवरा धर आवत का लैडी न छिन ते रे ॥ काहु कैं अंध अनुबंध तमाया सौं ए
नरका दिक में ताहि गेरे ॥ लोन माल दुष मुल है जे या अव तत को नहि वित स वेरे
११ ॥ [illegible] ॥ जे तजगा पा वहोय अ
धम केव पापलो हितेतेस व वलन कौं मुजजो न जानिरे जेते दुषपुंज लोहि कर्म

वृ.त. नकेकंजेहोहिंतेतेसबफलनकोमुलजानेहमांनिरे जेतेबकुरोगहोहिंव्याधिके
संयोगहोहिउपजेथितेतेसबमुलकोशरीरहीवषांनिरे जेतेजुगमरनहोहि
॥२॥ काउकीनचरणसाहितेतेसबमुलकोशरीरहीवषानिरे १२ ॥आतमज्ञान
कवित्त॥३१॥ ग्यांनमेंहध्यांनमेंहवचनप्रमानमेंहअपनेसुथांनमेंहताहि
नुवातुरे उपज्ञोनउपजनुमुएनमरनुहे उपजनमरनथाहारताहिमांनेरे
रावसातरंकसोहंपानिसोनपंकसोहअतिहीअटंकसोहताहिनीकेजा
निरे अपनोप्रकासकरेअष्टकर्मनासकरेएसीजाकीरितेनेयाहताहिनुस्के।
निरे १३ ॥अथआतमसिवाकवित्त॥३२॥ सरूपधनाजकाजअनापनीकरेश्र
काजेषावतसमानसबराजनतेअधिको ईश्वहोतोवडउनोतरनोगेउहोते।
माहकोलसकोनगमकुतोज्ञानकुतोकथिको लोकालोकनासहोतोअष्टक ॥३॥
मेनासहोतोमालमेसुवासकुतोसवनोसुसथिको॥सबहीविगारकोस्वोअ।
पणोजस्वारथसारयोजोसोअपणांनीजीवकांमकीयोवंधको ॥सिवआसवैय॥३३॥

काहेकुंकुरनुन्नरससेहडुषपेवनकेपरपंवनपाए एअपनेअपनेरसकेनिव
पाषतेहेतोहेलोमलगाए नुकबुनेरतबुफतस्वकुतोहिदगाकरिरेसथकाए
हअबकेएहदाक्कनेनाहिजितलेपंचजिनेदवताए १५ ॥सिवआ॥सरस॥ एनुर
अंथनुबंथतकोनितुसुजतेनाहिकेनगपईहे जेअघसंवरतेहेनितआपकोते
ताहिमुजकरगिगईहे एनरकाहिकमेंताहिडारिकेहसजायजेएसीनई
हे मांनतनाहिकवुसमफायोसातोकुंदईमतएसीनईहे १६ ॥सवसारीथ
रस्वाकाउशांत॥सं॥३४॥ योवनकेधोरहरेदेषकलगर्वकरेएतोछिनमांहि
जायपेंतपरससहे मेघाकेसेभांनरंगदेषतहिहोयनंगदिपकपतंगजेसेका
लगरससतहे सपनामेंनूपजेसेंईद्रथनुरूपजेसेअोसविंदुफपजेसेंदुरस
नहे जेसनरमसवेकर्मफलवरगताकोतामेंमूरखमगनहोयमरेतसरसनहे
॥पररवस्तुनामनहोयजेदेकथनी॥सं३५॥ देषतहिदिष्टिविचारअनंतरप।
जगमांहिकबुसांचोहेआहि मातताजसुतबंधववनितापईजसोप्रीतकरेके।

ब्रह्म तवाहि तनजोवनकंचनन्नोमंदीरराजरुधिघ्नुताप्रकाहि ॥ एतुपजेविन
४ सञ्पनिथिनिसुकीतनाथदोनसबनाहि २६ ॥ पुदगलकरतासुफलयश्लक
थन ॥ स०२७ ॥ संसारीजीवनकुंकरमनकोबंधहोयमोहकोनिमत्तपायुरागा
द्वेषरंभासु वितरागदेवपेनरागद्वेषमोहकहेताहितेंआबंधकहेकमैकेव
संगमैं पुगलकीक्रियारहिपुगलकेषेतविछ्यापुहितेंवतेफानिआपनि
उमंगसैं जैसेमेघपरविनुआपनिजकाजकरेगाजिवर्षिजु मिआवेसकति
सुलंगसैं २७ ॥ ज्ञानमहुणाकोदृष्टांत ॥ सवैया ॥ २८ ॥ आतमसुयानरमताहि
नसोकरम ॥ तजतिपेवेगआय विषेस्वादविरम्योई ह्यां निकलटकेतरेखर
धतेएपाय एकरेमोहमगनचांगलसुंकरमसुंनद्दिवसाय दिषकुकेतिवि
वारनविकजनजगतजीवयल्धोरसुत्ताय २८ ॥ श्रीमुपनोविजोकेतालो ४
सवेकायकोह्निसर्वेडयारः ॥ तोलोंपवगरपुनपदथिरहेतोलोसुतमलहे
प्रकाश तोलोंउज्वलगुनमनस्वछितनतोलोतपनिर्मलताप्राश तोलोंधर्म

वासताम्रषसोतितनजतिपद एमेगुननिवास जोलोंरागमहिननदिदेष
तत्तांमतिकोमुषवेदविलास २९ ॥ मुष्यआत्माकुंकर्मीकोदृष्टांत ॥ स०३० ॥
जोपेंआरवेदपेदिरचिपविरजरिफिपडतकीकलामेंप्रविनषूकल्यायोहे
धरमबोदारग्रंथताऊंकेअनेकनेदताकेपठनिपुनतायगायोहे आत्मके
तत्वकोनमरमकउं स्वपायो तोजोलो ह्रिदयनमेंजैसकत्वतायोहे जैसे
रसविजनमेंकरछीफेरसदीवमुट तासुनाचस्वादकबुपायोहे ३० ॥ मि
थ्याकविनम०३१ ॥ चेतनजैसेमेंचेतनताकोतहिआयबनिसबदिविधिनी
की देनरदह्रिजंआस्तषेतजिनंदकीवोनिउंर्बिंडआमिकी तोमेंजोआप
गहेथिरतानुमेतागरोटमहिमासीवजीकी ३१ ॥ पुनपापकोदृष्टांत ॥ स०३२ ॥
ग्रीषममेंधूपपरेतामेंनोमीनारफेरफलतहेआकफानिअतापहिसपल्के व
र्षारतमेंघफरेतामेंअबकोईफेरजरवतवासाअयआपहितसपल्के रितको
नकुंसकोतप्तपापफलदोउतमेंकीयपूर्वतेसारदेसपल्के कोईजीवसुषी

बुद्ल

ब्रह्म होइ कोइ जीव दुषी होइ देषो कुतमा मो मो नैया मारो ले कुरद्धके २५ ॥ दोहा ॥ उं
स्य धर्म पथ को करे निश्चै नंदन कोय । तासु सु सपचि सका पदे धर्म फल होय

५ २५ ॥ संवत सत्रह सै तीस के उतम फागण मास आदि पक्ष तिथि निर्मला वसु कहे
भैगोतिदास २६ ॥ पुन्य पाप पचीसी ॥ ॥ मंगलं ॥ मत अष्टोत्तरी सतो अष्टोत्तर

॥ दोहा ॥ ईकार गुन अत्ति सिद्धगम पंच ब्रह्म इह नीवास प्रथम तासु वंदन कीए लहि
हिये ब्रह्म विलास ॥१॥ छप्पय ॥ कोनिश्च विवहार लक्षन ॥ छप्पय ॥ द्रव्य एक अ
काश जासु महि पंच विराजत दुअ एक चिद्रूप सहज चेतनता राजत दुअ
एक फुनि धर्म चलन सब को सहकारि द्रव्य एक अधर्म रहन थिरता अधि
कारि द्रव्य एक पुद्गल प्रगट अरु अनेक घट मानिये निज निज सुभाव में सब
मगन होय सु वो थल अस्तो नियै २ ॥ जीव पुद्गल भिन्नता व कथन ॥ छप्पय ॥ जी ॥५॥
व पानगुन धरैय धर्म मुरति गुन पुद्गल जीव सु पर करनंद नंदतां हिन्द हिय
करम मल ज्ञान सदा शिव रूप रूपमय पुद्गल सु और जीव रमे निज धर्म धर्मप ५॥

रुलय सजोर जीव दुअच्चेतन सहित तिहुं काल जग में जैसे तसु धर्म न करत लहि
जैत अज्ञान पंच मगति पुल में वसे ३ ॥ एक एक इन्द्रि की रसको मुष ताकरि के
सर्ती वदु षपावत है सो दुहि तो छप्पय ॥ रस ताके रस मीन प्रान तप्त में हि जाय
वे अलि नासा पर सेग रैन कु संकट पावै मृग करि श्रवन सु नैद देकु
जैन कोष दीनी दिपक देह पतंग दिष्टहित के से कानी फरस इंद्रि गज वस प
रे सो को न कोन संकट सहे एक एक विष वेलि सम जु पंच सेव तसु मच
है ४ ॥ नरदेही अति दुर्लभ है ताते सुचत ॥ चेत चेत चित्त चेत विचक्षन
वेर पर्‌ दुहुं देह नु वदे दुक दरसन देह रूप गाढ़ु माति माति फुनि माति ज्ञान
पद वेकुर नपावे गंध पानि गुन जानि मुढ को जन्म गमावे ओर वहु पुंन
नर लो भिसो सो तैं षोवत बावरे अजहुं सैंनारि कवु ग पाय नहीं नैया कह
त एक द्राव रे ५ ॥ सम्यक दृष्टि आप स्वरूप कौं सिद्ध सम मानि अरु तु देस्यु कथ
न मछेयान ॥ जैसो वितराग देव कह्यो है स्वरूप सिद्ध तो इसो ई स्वरूप मेरो

ब्रह्म यामें फेर नहीं है । अरु कर्म भावको उपाधि मोंमें कछु नांहि अरु गुन में रो थ ।
॥६॥ तो सदा में हि पाहि है । व्यापक सु ना वे मेरे तिकुं काज मेरे पास गुण ते अनेत
ते उसदा माही मांही है । ऐसो है स्वरूप मेरो तिकुं काज सु यह रूप गानउ छे दष
तेत सु जिप रहां हि है ६ ॥ तत्वसमुद्रतरवे का इ र्थतः ॥ स० ३१ ॥ विकस्तवमि
युतादि त्तरवे कुं ता रु कों न तो कें तृस तीर आयो दे ष्पा दि ष्ट्य रके । अब केस
चार ते पार नलेप कुच तहो अब के सेना र वि नु बुद्र तहे ता रके । बकुरि कोरि
मिन वि धान एसो संयोग क कुं देव गुरु ग्रंथ कर आए ईश्वर के । ताहि सुविचार
नूज आतम नि हार ते या तार परमातमा है अनुध्यान करके । ७ ॥ तिन वां
निज रअं नि ॥ स० ३२ ॥ जो पते हि त्त रवे की ईछा न ई नई या तो तो वितराग जु
के वचन नुरस स्ये । तो प मु र ज ज मे अ नादि हि के बु द्ध तहे कि नत ना मतो कों ।
मती खितथे न टारिये । बवर विचार शुधा पिर ता सुध्यान की जे सुष को सम ॥८॥
द को दि ष्ट सु विचारिये । वजियेजु ई ष्ट्या थमति ये सो मार ग मांहि जनम जय । १

मरण के तो को निवारिये । ८ सवैया ३१ ॥ ग्यान ध्यान से रतो हि ते रतो न जानु
हो अग्यान ध्यान मांहि अनि रूप मांनि रह्यो है । आतमा के बंध को न अंश कछु
लो की जे पुगल ते चेतो ति लोग लह ल ह्यो है । पुगल के हार हार पुगल के जित जि
त पुगल पीत संग के सब दव घो है । जागत है धाय धाय जागि तो उपाय कछु सुतो
चिदानंद राय को न पथ गहो है ॥ इमलयंद ॥ एक बात कछु श्रिव नायक सो तुम
जायक वो रक हो अरु के । ईहां कों न विवेक नरीतग हि विनु देष हि अतन सों
न रके । अज हुं गुन मांन सो भाष्य क कुंतस में सो लतन कों न घट के पट के । वर न सु
रति आपु विराजीत है तिन सु रति दे षि सुधा घटके । ९ ॥ स० ३३ ॥ तन सु च पी न
पीये बालक रा रान अंग बत्त तलावे । राम कहे सुके ध्योत गहे व गुनि दित है ।
फुनि सुठ सु ठावे । वस्त्र विना पशु ओ मन्व ले षग माल तरे सित पान के षाई । ऐता
सब जड रीत विरुच न मो सत हि विना त ल के पाये । १० स० ३४ । कर्म सुतावमों स ।
ता सुतारके आतम लब न जा न त है है । भ्रांत करे नित स्वे पद कौं जि ण थां ति कऔ

Dr BHAU DAJI MEMORIAL

भ्रू॰ रूतकौ उठएहै ॥ ग्यांनअनंततितिहं पनितासतआपुहिआपुस्वरूपनएहै ॥ ओर
उपाधिपषारिकै चेतनगुरुनएतेईसिद्धतयेहै ॥ १४ ॥ स॰ २३ ॥ देषतरूपअनुप
३ अनोपमसुंदरताबिरोझिकैमोहै ॥ देषतईडनेरउमाहासुनितउब्धिविलष
णाकोटिकसोहै ॥ देषतदेवकुदेवसबैजगरागिविरोधधरेउरदोहै ॥ ताहिवि
चारविचछतरेमनहेमतुदेषतुकोहै ॥ १३ ॥ स॰ ३१ ॥ सुबुधवेतनप्रतिवचन ॥
सुनारायचिदानंदकहै जोसुबुधिरानिकहेकहावरवरनेकुतोहिजानहै ॥ कि
सीजानकहाकहादमकब्जाणत नरमेईहा दुईनकोवषेसुमराजहै ॥ ओ
रसुदविषेसुषएतेअनंतिवेरअउकुंअधायोनहीकोमसिरताहैहे ॥ मांनसु
सुजनमपायआरजसुषितआयधोनचेतेहसतेरोड़हाअकाजहै ॥ १४ ॥ सुन:
सुंतहोजुदेसएकवातहमसांचिकहेकहाकोउतीकेकोउमुषकुगएतुहेतु
मकुकहतेदेहमेरीहेजीकेरापुसुकेसंदेहतेरीतेरीरापीओरहतुहै ॥ जात ३
नहिपालनहिरूपरंगसांसनाहीजेसजुवमुदकोउजगोउकहतुहै ॥ चेतनपवि

नताईदेषिदमेंतेरीजातिहोजुतवहीएहुषकोंसदतुहै ॥ १५ ॥ सुबुधिवर्णन
वचन ॥ स॰ २३ ॥ सुनोहोसयोतनाहदेषोतेकुटोटोजाकुकोंनविवसाकुयाहि
जेमेजीजीयतुहै ॥ टिनदजाविषसुपनाकोकडुकेतोउमुपरिकेनरकमुषको
जोसोजीअतुहै ॥ कितोकालवीतिगयोआजहूनछोरलयोकडुंतोहिकहान
योजेसोरीझियतुहै ॥ आपुहिविचारिदेष्योकहिवेकोकोनलेषोआवतपरेषोतो
तेकहोमानियतुहै ॥ १६ ॥ मांननतमेराकह्योकोनषीजरह्योजेसीजेसीवासनुमे
यासोकहिचहीटा ॥ एरिमेरीरानितोसोकोनदेसयोलीसषीएतोखपरीबीरांनी
तुतरोसगहियो ॥ ईनसोननहिमाहितोहिसोसनेहबनोरांमकोदुहाईकहोतेरेगे
हरहोमे ॥ १७ ॥ एतोखपरीबिरांनीकालीजेसीकोधिआरीईनसोनकरहुप्यारीते
रीलहरसदीये ॥ १७ ॥ अथ मिठास ॥ स॰ ३२ ॥ जीवकोतेकुजापेसोमोतुईस्तेतुकरेलछ
कोटिजोरिजोरिनेकुनअघातुहै ॥ चाहतुहैधराकोधनुसबतेराग्दयोनजांनेजन
नमसिरांनेमोहिजातुहै ॥ कातुसाकरुरउदेनिमविषयबंधेसोकरेताकेबीचमन

३ सो जीव कौ लोभ घणो छै। दृष्ट छै तिन सौं जगत सर्व वसो जानतु मुख्य वे तिनां हि लि
८ तेल च्वा छै ॥१८॥ सवैया ॥ कहां देव वीतराग जिते जिन राग द्वेष कहां देव चक्रव
र्ति षट्खंड के धनि। कहां देव वासुदेव पृथ्वी के करई था वीर कहां देव कामदेव का
म के सौ जे अनी। कहां देव राजा राम रावन से जीते जन कहां देव गालि न रलब्धि
जा के द्रव्य नी। ऐसे ताके ईक कोटि केगए अनंति वे उद्धार दिनां तेरी वारका हेको
केर मनी ॥१९॥ सवैया ३१॥ सुने सम मान तन कहा करे सरूप रूप ते राज सरीर घर घरी
लो तर छै। छिन छीन छीज आयु जे संघरि जाय तनाकु कोई लाज कर उतर कुंधर छै।
आदि जे संदेह ते तो या दिक तु, नांहि तो हि आगें दरु कहा पाति का हेतु छोर छै। घ
री एक दषो ष्याल करी की कहा देषो जगरी घरि याजसा रूयो करे छै ॥२०॥ सवैया
सवैया ॥ पाय नर देह कहा कीनौ ताको मकहा तु मरो भारो माथ न यन करत वि
ह्वा छै। कपरि न कछु छिन्न रहो देह सरीर यह दया के संग ऐसे काज करत सो हा छै ८
जो नते हे परघर मरवे को नांहि डर देषि नु मन्न लिम रूद फुलि मुस का छै। चितै र

जीवन फुनि विचरवे को नांहि डर आज का लूपिं जे रसौ पंथी न ज्जी जा छै ॥२१॥ जैप
आपका सुगनके को कहा ॥ सवैया ३१॥ कर्म को करे ईया भी तो जो ते नांहि के सो कर्म तृ
मे मंक नादि हि को कर मकर छै। कर्म को जो नेईया ते यासी तो कर्म करे नांहि धर्म
मांहि लिकु का न धर्म थर छै। दरु नि की ज्ञाति पाति लेव नसु नाव तिन्ह क बकुं
न एक मन कहां ईश्वर छै। या दि तो त ऐसी दीष्ट अंतर दिषाई दई तो हि नां तेआ
पुल षिआ तु हि सर छै ॥२२॥ पुनः सवैया ॥२३॥ जीव अकरता हे पर को पर को क
रता पर हो पर वां सो। ग्यान निर्थां तम दाय ह्वे वत नगा तक रेन कछु ओ सो। यो ज
गुध द्रष्टि यत तन्ने क की सक्ति धर ति कुं काल व षांसो। कोऊ जग सर्व जे षेड रासि लि
सुचिन्न रहे नर रहे लपटा सो ॥२३॥ सवैया २३॥ चेतन चिन्ह ज्ञान गुन राज तपुन्न जे वर्णा
दिक रूप। चेतना आप रूप अनत विलोक पुगल रह्यो ह धरे अरूप। चेतन केणिर
ता गुन राजत पुग्गल देह जड़ ता अनुप। चेतन सुध सिधा ले से रा जीत ध्यावत दृशि
वगा मी रूप ॥२४॥ सवैया ३१॥ जीव दु अनादि ही को है कर्म कु अनादि ही को है द्रव्य है अना
दि के देह औ दो उदहन में री रुके को है उ ना वरी कुं नांहि है उ ना वरी कुंवे को नाव

अ॰ सुमुत्ता वहे अमल मे सांच है सो करवी तसां च सो बकेरवी तसां चि वि थ री तसां
च हाय रूप पत्र मे गांन गुन कांम कीन कांम केन कांम कीने आंन मे मे कांम कीने।
९ वे सथल अपुमे २५॥ कुमती दासी यह कथन॥ सवैया॥ दासिन के संग षेल षेल
न अनादि विते अजऊ लव है बुध कौन चतुराई है कैसी है कहा कारी निसी जैसी अ
धी आरी औगुन गहन हारी कहा जांनि लेई है ईन ही की संगत सों सेकर अनेक स
है ज्ञांनि बुझि नलि जांऊं जै संपुथ गई है आवत परे षोह समोह दए हिवा तन कोवि
तनी केनाथ को अंवे तन कौं न रहे॥ सुबुधि हितीय सवैया॥ कलकल कौन सगला
गई फिर तलो ज अ विकों न अ जतु मगांन के महल में निकउ विलो की दषा अंतर सु
बुद्धि चिति के सील की नारी गाडि है हल में अकत ते एक बनी सुंदर सरूप घनी उ
पमा न जाय बनी वाम की वहल में असि वी थि पाप कऊ न लि आर का ज की जेए ता क
सो मांनि ली जै चित तिस है अमे॥ २७॥ सोरठा॥ जाई ले लालन वा लअ मोल कंद षिकु
तो तुमे केसी बनी है॥ एसि कऊ त्रिकुलो क मे सुंदरी और ता नारी अंने क पति है ९
या हिते ता न कहूं नि तचेत न या हि की पीत सो तासे सनि है॥ तरा वरा थ कि री फैअन

त सु मो पे क कुपर ज्ञाति म नी है॥ २८॥ पात मांद कौ दृष्टांत सवैया॥ कायाचि कुन ग
री मे विद्यानंद राज करे माया यों कुरंनि ने मगन वे कुन यो है॥ मोह सो ती फोर दास कों ध
सो है कोर वाल जो न सी व जि र ति हुजुर वे को रह्यो है॥ उर है सो है का जि मा मे मा न को
अहं लज्जा नै कों मे मवा कों न वि च आय वा के कह्यो है॥ ऐसी राज थंति में आप न पो न
लिगांयां सुधि न व आई ज व गांन आय ग यो है॥ २९॥ ... ॥ सवैया॥ कुं ए तुम क
हां आय कों न वो राय तुम्हे का के का के रस सरस कऊ सुधा धर तु है॥ कौन है एक मे ति
ने अक मक सोनि रहे अ जऊ त लोग हाथ ना वरीत र तु है॥ व दलावि तारा जि हां वि
ते है अनादि कालके स के से से क रस दढ़ु विसर तु है॥ तुम तो सयां ते पसयां न य ह
कौन की नीति न लोक नाथ हो के दीन से फरतु है॥ ३०॥ नाविका॥ सवैया॥ देषि कह
तु लिपर्यो देषिक हान लि पर्यो देषि त जि कहा कर्यो हलो सुष सब है॥ गोन सै अ
— नेत ता हि अ बुर अनते से गग ब ज हो अनेत ता हि रूपां ना अ ब है॥ कांम व सी प
र तो त न रक मे व सी परे अ सो दुष परयो सुक हो नो ज्ञाय कब है॥ वात कौं जतो गो
रकी है से नुरा नि गो र की है अेसे अनु मोद कौ यजो नु कुंज त ब है॥ ३१॥ सवैया॥

श्रु॰ देहनकोंनचिंतारतवेतनमातकीकुषिमेंआयवसेहैं उरगपायनगेतिसथाम
रसचकेसतनकोंतरसेहैं आउसंयोगवेसकहुँजायतजोकनकोंतवइषीज
१० सेहैं आजनतयातुमयावनकेसतजलिगएकोतेतनिकसेहैं ॥सवैया॥ सहदैन
रकदुषकरतयातहिरूपवरवरकजुताहिसुषमांनतलज्जथोहै जावनकोजे
बनरसुवतिलगायवगेरकरकोमषोटषेरकोंमआगेंदसोहै तनधनकेंचनेश्र
दरआनेकवस्तुबिनमांहिषयजायकोईएपीनेकहायेंहे इनदशावीतजाय
हाथपीटीपछतायजोवसनावहरायकोजगवकहाहे ॥२३॥ सुबुधिप्रगट
लईयहकथनम॰२४॥ याहीदीनताहिछीनअंतरसुबुधीलसिताहिपछुता
हिसमजोतसीजगतहे हातहेउद्योततिहांतिमिरविलायजायअपापरेने
दलबिरथवगतिहै निर्मलअंतरईगपांनदंषिरायचिदानंदसुषकोनिदानि
याकेमायानलगतिहे जैसोसिरावषतवरोतसोदहमेंविराजमानएसोलषी १०
सुमतिसुनावमेंपगतिहै ॥२५॥ जीवसमझ॥ जवतेंअपनोजीवआपुलष्यो
तवतेंजुमिटिदुविधामनकी तिनतलचितनयोनवहोसववांडिदईममताधन

नकी चिंतामनीजुवधगहोयघरमेंसवकोंनकरेववाधनकी जोसिधमेंआपुमें
फरनजोंनसोकोपरवादकरेजनकी ॥२५॥ पुनस॰२७॥ केवलरूपमहाअतिसु
दरआपुविदानंदसुषविराजे अंतरदृष्टिलषिजवहितवआपुहीमेंअपनोप
दछाजे सेवकसाहबकोगुनदीजगकोहकोंषदकेरकिहकोजे ॥ मतायनहिनर
कोनसिहोरअंतवसोअपनोपदछाजे ॥२६॥ दोहा॥ याहीनअपनेसहजहीचेत
नकरतकलोल ताबिनओनननासहि आपुहिआपअडोल ॥२७॥ मोहमदको
॥ स॰२८॥ पीयोहेअनादकोमहाअग्यांनमाहिमदताहिसनसुधआईओरपं
थलियोहे ग्यानविनाव्याकुलहेजिहांतिहांगिसोपरेनिवलचमारकोविचाररतल
कोयोहे वकवोबोएतेकवसीननहुकीसुधिनहिबुडेनवकुपमेहिसुनसोनहियो
हे ऐसोमोहमदमेंअग्यांनजीवननेतिरसोग्यांनउद्दिदेषानईयाकोहातोकोजीयो
हे ॥२९॥ पुन॥स॰३०॥ देषतुहिविदानंदकहांकहांकेजकसिआतमसुनावनलि
योरसराच्योहे काहुकोथकाहुमानकाहुमायाकाहुलोभअहिनावमांनिमोति

७६
१२ वारंवारभयोहै ॥ इहिनकेसुषमांमगनरह्यो आगेंजोभई इनकेसुषदेषिजांते
सुषसांचोहै ॥ हवसीयेंचनारिकीगतिनकौसो कौनकौनस्वांगधरियोहिव्रतनाओ
है ॥ ४ ॥ गाथा गुजराती ॥ सं० २३ ॥ आतुआतीवडातन्हेकुंसुकऊं वलिवलि आगेंउ
विषेसवे विषनाफलतेविषयथकी पडेवामानिनिद्दिष्टसुकानवेवे ॥ अजिसुश्रि
ष्यलागीनर्यी कांतन्हेन कंनाउपकहिकौनरेव ॥ आयो अकलोजापुण्यएककौ
पटलामाटेकांएहलेषावे ॥ ४३ ॥ सं० २१ ॥ कोउतोकरेकोलोलताम नीसोरीफरीफेव
हिसौंसनदकुरेकोमरोगअंगमे ॥ कोउमालासुरवीरकोटिकगुमांनकरेमोससौंन
दुसरोनदष्योकोउजगमें ॥ अेसाअनीमांनमलोनायरहेघ्रनुसुनपीनकरचक
उजकहरहेचिहाकालउमगमें ॥ कहेकलनेयाकबुकहेवेकीवातनांहीसवे
जगदेषिअनुरागरसरंगमें ॥ ४४ ॥ सुबुधिवचनसिष्यासं० २१ ॥ जोजोंतमेंघोरक १२
पक्केरहलाविरानंदनांपुंकऊंसुषनहीरावरविचारीये ॥ इहिनकोतुसुषमां
नरह्योसांचोसुषसोतोसबदुषयांनदीष्टसुनिहारीये एतोविनासीकरूप

Dr. BHAU DAJI

तीनमें आरूस्वरूपतुमअवनासीनपकैसेएकसुधारीये ॥ असोनरजनमपा
येनेकंतोविवेककीजेआपरूपगहलीजेकमरोगहारीये ॥ ४५ ॥ सं० २१ ॥ अरे
मुरुषनतन अवेतनतुकांहेहोततंईक्षातजानावकुरितईनुहि आयवी ॥ असे
नरजनमपाएभावककुलआयरहोहविषेलीनायओधिमनतुईवी ॥ आगे
कुअनादिकालविसहेविषितपलअनकुंसनतालजाजलिवरपायवी ॥ पी
छेपछतापकछुआएहेनांहाथ सेरसोसे अबचेतितेकुनतिपरजायवी ॥ ४६ ॥
जोवेतगजातेजनतिन्हौसेवेरनहिनसोच नहिदीनकोनकीकालजठीजीयतु
है ॥ धनधंहोपथनहोयपुत्रपरीवारहोयवडोविसतारहोयजसलिजीयतु
है ॥ देहतेनिरोगहोयसुषकोसंयोगहोयमनवांछितजोगहोयसोलोंजीय
तुहै ॥ देवेवेबापुरीहेयपतवेबापुरीहोयआउथिति पूरीहोयतोलोंकोजी
यतुहै ॥ ४७ ॥ सं० २१ ॥ जवलोंरागदेषनहितजियतनतवलोंमुगतीनांपावेको
य ॥ जवलोंक्रोधमांनमनधारततवलोंसुगतिकहांतेहोय ॥ जवलोंमायालो

३१ नवसंत्ररतनत्रजोसुषमपतेनहिजोय ॥ एकदरीज्ञातनतयेंजो निर्मलरिविसंपति
२२ विलसतनुहैसोय ४५ ॥ दिढकोसरूपसोऊं ॥ आतमा मगनहैहताको ॥ ऊँन ॥ सवैय
मातथातुम जिनहैमलाहुरगंधकतरीता संतुमप्रीतकरीजहतन्यानंद है नरकनि
गोदकेसहायजेकरनपवतिनहोकोसीषमांबीस्वजतसतुहै है ॥ आगेंजोम
गेहेकोमरागरससरागरा विकरतकिजोजमोतोमातेयुगायंदहै ॥ कहुतोविचा
रकेरूपाकलेककलानुलिपस्यानलेजुतनेजरतेयातेजेचेदहै ४६ ॥ नाहदी ॥ सं
२३ ॥ एतुमसुदककहानुम नुनेहोहसीविवारस्तोंगपरभाया ॥ यामेस्वरूपनहिके
हुतेरोह जेंबा यिकीपोटबनाईहेकाया ॥ सम्यकस्वरूपसदागुणतेरोहेओरबा
निसबाहिनमभाया ॥ देषतरूपअनुपविराजितसिधसमानजिनेदवताया ॥ ४७
सवैया ॥ २३ ॥ चेतनजीवनिहारहुंअंतरएसबहेपरकोजरकाया ॥ ईदकेबानजल
मयधरामांहिसोनीतनहैपरहेतहिछाया ॥ रतनसमसुपतोजिमंदपितधातवहे २२
सबरूगबनाय ॥ सोंनहिनावसंयोगमलोसंवतुमचेतोचितचेतनराया ॥ ४८ ॥ स

२४ ॥ देहकेतेहलगोकलचेतननारीअकोंअपनीकरमांनी ॥ याहिसोंरीझअग्यां
नमेंमांनकेयाहिमेपांगुरस्योथीरथांनी देषतुहेपरतलविनाछिकनतउयनचेत
नअथअग्यांनी ॥ हाहिसुषीअपनोबलफोरकेमांनिकह्योसरवगपकीवानी ॥ ४९
जोग्चेतनकुंजतससं २४ ॥ केवलरूपविराजितचेतननांहिविवेककछेरमतवा
रे कालअनादवसीतगयोअजहुंतोहिचेतनहोतकहारे ॥ नलिगयोगतिको
फरबोआवसदीनअरनएरकुरारे ॥ लागीकाहारसोअलिननकेसंगचेतनकुं
नहिचेतनहारे ५० ॥ सं २३ ॥ बालपनेनितबालकसंगर्षेलोहिताकीअलेक
कथारे ॥ जोवनआपरमोरमनीरसमांउतोबातवदीतनथारे ॥ वृधनयोतनके
पतहोउतलाजपरेमुषहोतिविथारे ॥ दर्षिरारीरकेलेतनतेयापुचेतनकुंन
हिचेतनहारे ५१ ॥ बालककेतबबालकसीबुधजोवनकामहुतासनजारे ॥ वृ
द्धभयोतनअंगरहेथकीआयरुस्वेतगएसबकारे ॥ पायपसारपरयोधरतिमां
हिरोवरटेदुषहेतमाहारे ॥ बीतीयोवानगयोसबभूलितुचेतनकोनहिचेतनहा

३० २ ५२ पुनः ॥सवैया॥ तुहि जिआप वसो तन नती तर तुहि रमो विलवाल कतारे जो
वनताजेन्नई फलिनिताहि कुंताहि केजो अनेक तुमारे वधनयाातुहि आगर स्वेसव
१३ बोलत वेन कहे तुमारे देवशरीर के लेवन नेया तुवेन तको नहि वेतन हारे
५३ ॥सवैया॥ पंचनसो नानरहे कंचन सो काई तेज रंच नमलिन होय जाकी गती मारी है कंजन के कुलेया अनाव कोच कुवेन हि वसे
जलमांहि भीनजथताविचारि है अंजनको अंग जाको वंचमनको कुरीसे सुध
ता भुगाव सिधि रूपसुषकारी है गंधनको समह गंधनथ्यानमें विराज रही अपा
नहीं हरहे यानोई याएसा ब्रह्मचारी है ॥५४॥ ॥सवैया॥ विराजे रहेयाविराजतु हे
घट में ताको रूप लषवे कुनपायक छुकरीये अष्टकर्म को फाल को प्रकृति एकस्या
रस्यावताम्हें कछुतरि लही अपनी नेधारीये पुरवके बंधते रेले ई आयउदेहोय
निजगुनसकतिसु तिनसो सागतरीये सिधसम चेतनस्वभाव में विराजत है वाको
ध्यानधरो आरु काहु सो न हरीये ॥५५॥ ॥सवैया॥ एकसिषमेरीमां निआप हितु १३
पहिचानो तनपान तुगनवरन निवासवाको घरको अनेतनवलदपरिहै जहर को नव।
रीहैमाहा अनंतचारी है तुसाथ्यातदरी जरको आप माहा तेकु बंतर एकानपारस्ये
तजाकी महिमा अनंत तुजे तहि वरको चेतन के रसनेरचेतन प्रदेसाधरे चेत
नाके चिन्ह के रसिधपटतरको ५६ ॥सवैया॥ यदकर्म को करे इयाहे रमको नेरई
याहे धर्म को करे ई याहेयाहि शिवरावहे यहसुषसमरूई आया हितु भक्ता गतेई
यायाहितु नके चूलियाया हिचेतनावहे याहि विरकोफरेई यायाहि तिनको र
हियायाहि सबकोल षेईयायाहियाको वावहे रागदेषको हरेई याया मालामोहको
करेई याया हि शुध तेया एक आतमशुनावहे ५७ ॥सवैया॥ मनियारे मेरा कसा
हलकी चसमचोजसा हि बनति कहे तिस कुं पहिचां निये अनाहक नां फरीयका
फचजिहां तविचसु कन गोस जिनकी तलितां तिजांनिये पावक यावसता हि आ
रनि पाषान में तिसरो सचिदानंद ई सहि मेमांनिये पंचसंग निमेत रउमर कुसा
ष लगे षेजा पतिसे जानितु आप सांचिआं निये ५८ ॥सवैया॥ अवदम के सोर सुहे

षिकलप न्हलता दे षतु आपमे जिन आपुनमे वतायादे। अंतरकाइ ष्टी षालि विदा
नंद पाई ये वा हि रुका दीष सो पुदगल का बायादे। ग्यान के ताव सव तरै दे करी देष
नु आगे गुदा नित ई सातां तिपायादे। बेग बसा दे बविराजता दे दल विश्वसचा को
दीलै दे तसी के इल आया दे। ५९ ॥रषता॥ वेता दे कविरं तेता इ आपतीकरी मांनता
दे जो नता नतु मुझे मरता दे। सपने मे सुष मेरा पुरा तां परता दे। पंव सेगति मते
री तमर केसाथ उगेतिस को फरक कीय कां मतेरा तासरता दे। पाकए सा द्वि बदल
विव क्षवता दे तिस रूप छिवो निव तु ऊ बरता दे। ६० ॥रषता॥ वेदान को फरीसो
चकरता दे विदानंद दो जक के विच तु पोकीर प्रमा करता था। जुबा लेके आकारा
तु जे जेल ते पे त्रि स्रूल सो आतरसायत निनाग रताथा। जदगा तिसाम रोको ग्रम
रते रीकु ई तिस कै व तु ग्रे से तरताथा। ई हां आई तुलता दे विनासिक वस्तु आप
नी करी जांनता दे फेर दो जक स्ह फेर सकताथा। ६२ ॥स॰ गु॥ चेत ऊ रविदानंद ५५
ई हां बनै दो ष फंद को मनि कन कके देए न से निकास दे। जितमो तां दे षि न्ह सा वि

विषसुष मांन फसो मोह की दसा मे फसो एनमे निकासी दे। पाय तआने कवार दे
षिकल्प करी फरी का जव रस्ते दरीय न मे निकासी दे। ई न कु तु बाउ देते या कधो मां
नै लिद सिध सदा ते रोग दए नमें विकासी दे। ६२ ॥इकतरूप्या मवस्या॥ कोटको
स्कष्ट सहे कष्ट मे सरीर दे फप पांन की या पतां तदपा या तनको। व्रबत कम
लरहे ऊ टामफल रहे। मांन मध्यन तलिरहे कीय कष्ट मन को। तिरयञ्च नेकरा
ये तिरयत कस्तए कीरत ना का जदी यां द्यो नरत तको। ग्यान विना वरे व रक्रि
या करे फेर फेर की मो को अकार तआतम जतनको। ६३ ॥मिथ्यादृष्टी की अवस्था
स॰ ३१॥ २४ देव कुदेव मे फेर न मांने कहे सब एक राम मारक कै को। साध कुसाध
समांन गिन नेचित राव न जांन तनेद द कुको। धर्म अधर्म कुं एक विचारत ग्यान
विनान रवा चौरासी कुको। ताहि विलोक कहो कहि ये मां नु सो फिरे सवकाल ति
कुको। ६४ धर्म नां जांन तु हे मुद मिथ्या मांन तु हे सास्त्र अथ बोद्धी स्वरूप द्यो चा दे
पार सी। मिथ्या मती देव जि हां नि स नावेजाए ए तपर कहे हे मे एई पुरो पार सी
नि सदी नवि षम लिम कु तकुं ताहि जांनि एसी करत ते करप कु चेवा हि पार

२० सौ। नरकमांहिपरेगो सोतो तिसतिनतेरेगो कूरेगो पुकारएकोऊविपतपा
रसौ॥ ६५ ॥ आपस्वरूपकथन॥ दोहा॥ तनतेदेषसकल तिनतेदेषतोहि ता
२५ हिदेषकोदेषतो नयनकरोषामांहि॥ ६६॥ मिथ्यादृष्टीकोश्रद्धान॥ स०३१॥
देषताहि देहसुं जोपे देषवेकी चाह करे देष विनु आपतोहि पापवडो लागिहै। मो
हनिंद सेन मैं अनादकालसों यह होदेष तविचार ताहि सुवेदे के जागिहै। राग
द्वेषसंग सें मिथ्यातत रंगराचिरह्यो अष्टकर्मजालकाप्रतिसमोनपागिहै। विषे
कीकीलालसद्वेषसदृष्टिदेषित्रिजगयारूपरसगंधतादिकेसे अनुरागिहै॥ ६७
स०३१॥ देवएकदेहरेमसुंदरस्वरूपवनोपाप्रानकोविलासजाकोसिधसमदेषि
ये। सिधकेसीरीतलियेकाहूसेंनघातकोयपुरवकेबंधतेईआइउदेपषीयेव
रनरसगंधफरसजामेकछुनहिसदाकोअबंधयाहिजेसाकरलेषीये अजस्त्र
मरामरचिदानंदज्ञानतासेंश्रद्धानमुक्तताहिजिमेकोचिरोषीये॥ ६८॥ सवैया १५
३१॥ कोकेदोजरागद्वेषजाकोएकमेंआंठकोकेएककरमजाकोरागद्वेषहै ता
कोनाशकोनलहेतलतोतिनुमेंलहुलषिहुवतावोजपेचक्रकरलेषहैताको

कछुलछनदेववषतुविचछनदेकछुजनमांनकहोमांनकहेसितषेदै। एनकहो
सुधिसुधितापेरगीआगआगेजोपककुंईनसोंमिलापकोविरोपदे॥ ६९॥ स०२३॥
कुंडलिया॥ त्रैयासेरमतनतूलिये। पुद्गलकेपरसंग। अपनोकाजसवारीये। आ
यगणानकेअंग आयगणानकेअंग आपदर्शनगहिलीजे। कीजेथिरतातासुशुद्ध अ
नोसोरसपीजे। दीजेदस्याविषदान अहोनिशिवषतकरीजे। तुमत्रिभुवनकेराय
नरमनतजितनलोकहैया॥ ७०॥ हंसाहंसीहंसीआपतुम पूर्वसंवारफंद। तिहंकुदाव
भेवडोरदे। केसंहोयसुछंद केसंहोयसुछंद वंदजामेएकुगरासे। तिमिरहोयव
लजोर कीरनकीप्रनुतानासि नोसमनिजपरसेद। गगनपकुडउसुनावसुलाषिन
सुसंसा। तुमगुनपूरनपरम सहजअवलोकोहंसा॥ ७१॥ कुंडलीया॥ मातताततसु
तबंधवासजनअरुपरवार एसवस्वारथकेसगे तुमततमांहिविचार तुमनमां
हिविचार थिरतिजरूपनिरंजन परमनितसोतिनलसभु तुमततनतारउजनए
हवीधअनेकगुंएव्रमममहियऊंकरमनेनरममलिस्वोगात। एतिनसवबंधिस

ध्रु॰ बकुरंबजिन सोतुकहतेहैमानअरूताल ७२ कु॰। सुवातं सवगोई सैयोसें
२६ बलइन्ह औपधोकेऔबके यापेंएरलईन्ह यापेरेंरनांइन्हु व्रन्हकोतेरनजांमी
फलमांहितीकसेतुन्ह स्वादफुनिकबूयनरूया याहिजगतकारीन दषसेंबल
समसुवा ७३ जीवकीअवस्थास॰२३ औगुनकोकरततविचारतऊकोनकी
नकरतहेष्याल कबकुश्रीरपरछत्रधरावतकबऊंरूपकेरबफोत देवलोके
बकुसुषभोगतेकबऊंनाजकोकरेकाज एकरततिकेरेकमोहिकचेतनरूप
तुआपसंताल ७४ स॰२३ चेतनजीववीचारकुतोतमनिदश्वेगेररहनकीको
न देवलोकसुरईदकहावततेनकरहेभोगफुनिगोन तिनलोकपतिनाथजि
नेसुरचक्रीधरफुनिनांरहेजीन एसंसारसदाक्षपनासमझिध्रवेवासनहिं
न ७५॥ स॰२४ चेतनरूपविचारोचित्तन्हतएमबदेपरकेपरपंच आठकरमले
गनिवासरतिन्सोनिवारलेहोजिनपंच जिसमफावतिहांफरीनोहिईनसोम
गतहोयजितस्व एअज्ञानतुमभांनविरा ज्ञततःकोकरऊंनईनकोसंच ७६

DR. BHAU DAJI

२६

स॰२५॥ चितकेअंतस्वेतविचबनयहनरतनवमेरीजेजाय पुरवपुंनकोयेकऊं
अतिहितोसेयहरतनमकुलपाय अबकबुसुकतऐसोकरोतुंजातेजनम
जरानहियाय वारअनंतिमरके तपजेअबचेतविवेकसनराय ७७ ॥ अरु
[illegible] ॥ स॰ ३० ॥ औरेनरमरषतंत्तोमनि
सुकलान्सोविषेकेसीवेलिकाकुदगाकोबताईहे सवतहियाहिनेकुसेवतऔ
नेकउषसुषकुकीवातकऊसुपनेनआईहे रसकेकीयेसंरसरोगकोरसंसहो
यषोलकेकोएसुषीतनरककोपाईहे याहिनवसागरमेबुढवेकोतोरनेपायामे
कबुधोषोनहिरामकोउलाइहे ७८ पुनः स॰ ३१ मयंकमुषीमनुधारहेज्ञोपऔतस
मेनोकुउषदाई यारगलिमेएईफरावततासोतमोफिरषोनजगाई वारअनं
तिनरकमेंउारकेछ्दननेदनदुषसहाई सुबुधिकहेसुनचेतनवानिसमाकसु
ख्याहेअधिकाई ७९ स॰२३ एमनमुढविचारकरोत्रियकेसंगवातसवेदिगरेगी
एमनपानसुध्यानधरोजिनकेसंगवातसवेसुधरेगी फगुनत्रापुविसलगालोफु

श्री॰ निश्चा पुद्गल ते पर रीत तरे रंगौ॥ सिद्धन्त पै ते ये द करनि करी॥ ऐसी कीधी वनारी वरंगा २
दे॥ सोरठा॥ ऐसे चेतन राय परसौं प्रीत करा करी जैईनर कले जाय तिनद्दिसुं
१७ रचे पद्दा ८१॥ चेतन अनादि निद्रसु अथा काल गमायो॥ सवैया॥ चेतन निद्रव उरत्तम
लीनी पर ऐसी यत्नि दलियेत दिकोय अनादिकाल सो वरतनि लो विते वड जागे स
म कीत कौं होई॥ निज श्रुत सुद्ध गहो गुन अपनो परके ताव निन्न करषोई॥ हंसा अ
ज्ञान उज्वल होई॥ जब हित त्याहि जीव सिद्ध सम होई॥ ८२॥ जावलीस॰ २३॥ अनादकाल
सो वरतनो हि विसो अब तो जागु चेतन जीव॥ अब तरस जिनवर की बानि एक
चित निज विकरपी व॥ पूर्व कर्म मल गौ ते रे संग तिन की सुरत षार कुं नीव॥ जडत्त गए
गुपत तत्त्व चेतन जैसे निम्त दुध अरु घीव॥ ८४॥ स॰ २३॥ अनादकाल तें फिरत फि
रत अब नरतन वरतन तैं पायो॥ समक्ति समक्ति नर षांति ते रेकर चिंतामणि ह १८
हाथ पायो॥ घट की अंषि षोले जोरे रतन जीव जिन देव बतायो॥ नल में तैल वास फु
लन में द्यो घट में घट नायक गायो॥ ८५॥ स॰ २३॥ देहा को अंश लषो जब ते तब तेज

मी टोन्न में घी रस अंधेरो॥ गरुड के आवत मैं अहि ताको सब कुच्छ छिपायो मो बंधनये रो
सम्यक शुद्ध गहो अपनो गहलम्पा तक ओलां न की या द्वेस वैरो॥ जीव अजीव सब लषलि
हो सुतत्त्व जिन आगम केरो॥ ८५॥ कर्मों की गति टर न हि॥ स॰ ३२॥ उदै करे ज्ञो पे ज्ञा
न पे श्रम की दशा आयत उडके आकाश मध्य जाय कक्कु पररति॥ अवपन जैसे रसम चलो
फिरे अवनि पे शिर तासु ना वग है आगम हा जरति॥ फल जो पंक मल के कुं पवन
शिला में पथर की नाव पानि में उलित रति॥ चलके अलंड उज्ज सो पाताल मध्य जायो क
कुं सत विधिना की लेष जल बिन ही टरति॥ ८६॥ काहे को ज्ञान सम्यक करयाँ कथन
स॰ ३२॥ काहे को सो वक रे चित्त वेतन तेरी जे बात सु आगे बनी है दोष दिई पो नीति पा
न अनंत में हानि सो अब थी की रीति घनी है ताहि उजै घर के कक्कु को गुरु नायक जो
मि कबु धि बनी है॥ पाहि निवार के आगु नि नार के हो उ सुधा जैसे सिध धनी है॥ ८७॥
८८ को जीव शाकी ज्ञान वथ कथन॥ स॰ ३२॥ कोउ जो साव करो जितने सव कदेरि
धरी ते हकाल हरेगो॥ जो उपजो जग में दिनचार के देषत ही फन सो ईमरेगो॥ मोह ज

ब्र॰॥ ज्ञानवनमानतसांचसुजांनत्यागिदियोकाजसरेगो॥ पंडितसोईविचारतअंतरयां
१८ नसंसारतआपुनरेगो॥ ८८ ॥ यदगुनातकारीसमकततीं॥ म॰ २९॥ कारेंकोंदेहसों
नेहकरेतयअंतनराषारेहगीनांनरी॥ मिरायमेरीकहोकेसलबसोकाउकोछिके
कऊरहेनाहिनेरी॥ मांनकहरघोमोहकूटंवसुस्वारथकेरसलागेसगरी॥ तोनतु
ग्वेतविकुवनवेतनकृग्रीअरीतसंवजगकेरी॥ ८८ ॥ समकीतकामहिमाजेंको
नंगुनंद॥ म॰ ३० ॥ केवलतकासहोयग्रंथकारनासहोयग्यानकोविलासहोय
उरलोनिवाहवी॥ सिधमेंसुवासहोयजोकाजोकनासहोयआपरीधपासहोयअे॥
रकोनवाहवी॥ ईद्रआपदासहोयअरातकोंत्रासहोयदुखकोउत्रासहोयईष्टनी
धगाहवी॥ सांतिमपरांनिहोयअपुकोनिवारहोयसमकातनयतेहोयएसीसि
ससाहवी॥ ८९ ॥ समकदुर्लभताकोदृष्टांत॥ म॰ ३१॥ जोकिघटसमकीतउपजतूहै
सोतोकरतहंसकोरीत॥ षीरगहतछांडतजलकोंसंगवाकेवेकुलकीसकी
यहअविरतकोटउपायकरोकोउनेहस्योषीरगहेनीरतेकुंपानतेंससमकीत १८

तकहतगुनघरघटमध्यएककोननीत॥ ९२ ॥ समकदृष्टीकीमरदहगा॥ सवैया ३२
सिधसमांतचिदानंदजांनकेथापुतहैघटकेउरचिव वाकेगुनागहिवाहित्र
गावनओरगुनासववजातनतकीव॥ ग्यांनअंनतविचारतअंतरराषतुहैजीप
केउरसिव॥ ऐसेसमकीतसुधकरतहेताहितेपाचोमोक्षतनगीव॥ ९३ ॥ समकी
तवंतनीअत्रसासुकदत्ता॥ म॰ ३३॥ निसंदीनध्यांनकरेनिहचैसग्यांनकरेक
मकोनिदानकरेआवेनाहिफेरकें॥ मिथ्यामतीनासकरेसमकतउजासकरे
धर्मकोप्रकासकरेसुधदृष्टीहेरकें॥ ब्रह्मकोविलासकरेआतमानिवासकरे
देवसवेदासकरेमहामोहहेरकें॥ अमानाअसासकरेथिरतामेंवासकरेमो
षसुषरासीकरेकहूंनाहिहेरकें॥ ९४ ॥ मुनिराजकीअवस्था॥ म॰ ३४॥ जिनकर
सुदृष्टीजागीपरगुनत्यागीचिदानन्दसेंजोलागीलागीजोतनारीहै॥ पंचमा
हाव्रतधारीजिनआज्ञाकेविहारीनगनमुराकेआकारीधर्महितकारीहे॥ अ
गाईसमूलगुनधारीत्रासुकआहारीसहेंपरीसाहनारीपरउपगारीहै॥ पर्मधर्म

ग्रं×

श्री धनधारी सरस सबद के उचारी ऐसे मुनीराज तातैं वंदना हमारी है ॥ ९ ॥ सं॰ २४ ॥ श्रुत
१९ औ अश्रुत करम दोनु सम जानत है चेतन की धारा में अखंड गुन साजै है जीव
दुख मानो राग बिन औक करम पुर्विके बंध ते मलिन ते मलिन के ई ताजै है संसे
दरसन के चवान ते अवाद वेदी धान की विसुध ताले सुचेट के दवाजै है अंतरके २
दुष्टी सुं अरष्ट सब जिनाराधे ऐसी ऐसी वात करे अंसै मा हाराजु है ॥ ९५ ॥ श्रीगा
समंतभद्राचार्य कीनी नाममाला ॥ सं॰ २२ ॥ श्रीवीरस्वामी को केवलज्ञान कल्यान ये ईदुस
वेआए तिहां क्रिया निज कीनी है सो वस्ता धर्म ई उवोनि कोन षिरआ कुछ लोग
नाहि थिति नई के नवी नीहि एक तश्री मंदर पंजाय के विदेह लेत्र ई अनुत जोग
लिन भवता यदी नीहि आय एक का व्य पडी जाय ई अनन्त पास सुन ताहि चोका
चली आयद खालि नीहै ॥ ९६ ॥ रागद्वेष मोह मिथ्यात ही ॥ श्रावि ॥ रागद्वेष अ
रु मोह मिथ्यात निवारीये परसंग तस बसा गिस सत्र रधारीये केवलरूप
अनुपदेह जानि निज मांनिये फुनि हो लांज साको अनो नोभुध सदा नुर आंनिये १९
९७ पुनल के गुन तो जान नु देता हि जामे ॥ सं॰ २३ ॥ जो षेर स्वाद विवेक

विवास्त राग न के रस सेंद न एहि पंच सुवर्ण के ज बन ने वदन बुफ सुवास कुवास
हि जो है फरस सुवास त षा निज दहु सुगंपान अनंत कहि गोकि ताय ताहि विचार
विच उनेर मन दूपन ऐ ह्ष नदाषत काहे ॥ बुधि रूप ज्ञान मी व्यवहार कालवन
सं॰ २५ ॥ बुधि तुप कहा न यो जो पं सुध विन न हि बुधि को तो फल एहु सत्व को विचा
रिये देह नई कोन का जपु जो जो जिनराज देह की वडाई एहु तप सप वितारीये
जलि आय को तसि थिर है हि तथिर रिथ जल को तो नाहि जु सु पात्र मुख डारीये
वचन की चतुरी बनायबो तेक हा होय वचन तो वदेस सम सबद नचारीये ९
९ ॥ परम तास कहि देत ॥ सं॰ २३ ॥ जो परलीन रहे निस वास रसो अपनि निधि कों
न गमावे जो जगमांहि लषेत अध्यातम सो जिय को निह्चे पद पावे जो अपने प
द ते न दन जान न समोत नव सागर में फिर आवे जो विषपाय सो ग्यान तंत गुडपाय
सु कहि ना को न विधावे ॥ ९८ ॥ चेतन की निजया ॥ सं॰ २७ ॥ न जो न गमावत न तजो अ
परसाद समाधि के संग मेरा गीर ह्यो अहो चेतन तसा गिपराई बुधि गहोनि जो शुद्ध
जो बुध जह्यो विषया रस के हि बुउ नपो तो सा गार में क लुसु धगा ह्यो हसपायक

जु॰ होषटउयनकेतिनसुयहजो निके आपुकह्यो ॥ १ ॥ दिष्टपतको कारीको दुष्टा
तामस॰ ३ ॥ दिषिदहषेतकयारीताकोरीनजेसीन्मारी वेपोकहुआनउपजतु
२० कहुआनेह पंचामसरससे सतिपोषीयाआरीरनीसउपजेहयिरमासहाइनके।
२ गनहे एसपररहनहिकोजीयेउपापकोरोडानकेमेविनसजायनाउनेनि
आनिहि एतेदषिमुरषउत्ताहमतनमांहिथेरोसोफूगीवातनकोसांचकरमा
नोहि २ ॥ चेतनचेततकोनही ॥ सं॰ २ ॥ आरेसजायउगोहिसमोनिकेवाहि
केसंगसुपानविहार कालअनादिवसोजिनकेहिगजोमोनाउउनऔग्र
रीसारे नुलिगयोनिजरूपअनुपमसोहमलमदकेमतवारे तेरोनिदावब
मोअबकेंतुमचेततकोनहिचेतनहार २ ॥ सुसा रुसे मगन यहकुयन ॥ कु
ड्लीया ॥ सुषमेमगननरहेसदा दुषमेकरैविलाप तेअजानजानेनही यहदुंम २०
अरुपाप यहदुंसअरुपाप आपमूनईसतोसारो सदाविलासविरुष सु
हजजाकोअजुआलो मएअसंतसजामेषगट कबहुदोहिओरुरूष तेहि २१
परसविनुरहे मगनसंसारसुष ३ ॥ अनेतताकी जयकरतार मन

कयन ॥ सं॰ ॥ ३ ॥ जीवजेअनंतराचिरहेअनंतसोतुताकुतेअनंततुंनसि
धकोविरोषीये ताकुतेअनंतजीवजगमेजिनेराकहेतकुतेअनंतसंगूनसो
षिये तिनकुतेपुनउपवानुदेअनंतगुनताहितेअनंतयोआकासकोज
पेषिये ताकुतेअनंतगपातजामेसकुवियमोनतिकुकालकोपवानएकस
मेदषीये ५ ॥ सुधअर्थदसगारहदाय ॥ सं॰ ३ ॥ जैसोजउलोकमधसागरअसं
सकोटितेतोजलपीयोपतोप्यासयाकीगईहे जैतोनाजदिपमधमतरहे अवा
रहेरतेतोनाजजेयोतउनषयाकीनईहे तातेंध्यानताकोकरजातेएहजाय
ररीअष्टादसदोषआदिएईजीतलियेहे वेहपंथउकुसाजिअष्टादसराजा
यताजितेईवेलिमाहाराजसोहियाप्रदईहे ६ ॥ कामकी अवस्था ॥ सं॰ ॥ ३ ॥
३ एजुबुधवंतनरदस्योजिनकोउमोदबालपालकीनोतुमलिजीयेसुधारके
मेतोपढोपिंगलनोदेषोछंदकोसकाहुनामभालाकोउनपदिनाहिविचार
के संह्सरूतप्राकृतव्याकर्णनोपढोकाहुंतातेंमोहिदोषनदिसोधियेनिहा

रके कहनेकी तिहासब्रह्मकोलहेविजासतातेब्रह्मलसबनाकरहेविस्ता
रके ॥७॥ दोहा ॥ ईहश्रीसतसंगीतरी किनिनिजहीतकाज जेनरपहेविचे
कसो तपावेशिवराज ॥८॥ इतिश्री सतसंगीतर कवित्तबंधसंपूर्णं ॥ अथ
२२ द्रव्यसंग्रह लिख्यते ॥ जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं देविं
१ देवंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा ॥१॥ छप्पय ॥ सकलकर्मक्षेकरण तरणता
रण शिवनायक ग्यानदीवाकर रूपगट सर्वजीवहितसुषदायक परमपूर्ण
गुणधार ताहिपुजत जिनराजय देवनकेपतिईश इंद्रवंदीतसवलोके
य ईहवीधीअनेकगुणनिधिसहित श्रीवृषभनाथ मिथ्यातहरन तसुच
रनकमलवंदीतनवीक नावसहितनितसजोरिकर ॥१॥ दोहा ॥ ताहां जी
वअजीवके लषगुणपरजाय कहेअगटसबग्रंथमें ऋदनावसमझाय ॥
२ ॥ गाथा ॥ जीवोउवउगमउ अमुत्तिकत्ता सदेहपरीमाणो भोतासंसारथो सि
द्धसोविस्ससोढगई ॥ छ० ॥ जीवहै सोग्यानमई चेतनअरुतावधरजो निवोअरो
दषिवोअनादिनिधिपासहै अमुत्तिकसदाहै औरसोनरूपगधनिलेप

वोव जाके आतमाविलासहै ब्योहारनेकर्त्ता है सुदेहके प्रवांन नयन्नोक्तासुष
दुषनकोजगमेनिवासहै सिद्धनेविलोके सिधकर्मकलंकविना उर्द्धकोअना
वज्ञाकोलोकअग्रवासहै ॥२॥ गाथा ॥ तिकाले चदुपाणा इंदियबलमाउआ
णपाणोय ववहारासो जीवो णिच्छियणयदोदुचेदणा यस्स ॥३॥ सं० ॥ तिहुंका
लमार प्राणधरे जगवासि जीव इंद्रिबल आउ अरु ओसास ए जानिये ए ईआ
र प्रांणधरे सातामांनि जीवोकरे तातें जाउनो मकह्यो नेओहार मांनिये निह
चैनेचेतनाविराजरहि सुधजाके चेतनां ताविरहे सदायाहिते प्रवानिये ॥
अतिनओअनागतवर्त्तमांनतेयानिजग्यानप्रांनसासतोअतावयोवषां
निये ॥ गाथा ॥ उवउगोदुविअप्पो दंसणणाणंच दंसणं चदुधा चक्खुअचक्खू
ओही दंसणमोद केवलंनणीयां ॥४॥ सं० ॥ जीवके जुचेतनप्रवान अरुगुणजतहै
ताकेभेददोउ जिनग्रंथनमेंगायहै एकहे सुचेतनाकहावे अरुदर्शनदूजो ग्या
नचेतना लषेसुअसपाइये दषवेकेभेदच्यार हैंजीपहिलें देषिचारिवत्तओर

डाक्टर भाऊदाजी इत्यादि
Dr. BHAU DAJI
२२

३० अवधज्ञानोधिकेवलसुं आईये ॥ एईयारस्नेदरकेहेदर्शनकेदर्षवेकुंजाकोपर
काशुलोकालोककुलषाईये ५ ॥गाथा॥ णाणंअ ट्ठवियप्पंमदसुदिओहि अ
२२ णाणं णाणाणिमणपजवकेवलमपिपचखपरोकभेयंच ॥गाथा॥ मतिसुयपरो
यणाणं तुहिमणोहेईवियपलपचखं केवलणाणंचतहा अणेवमेहोईसय
लपचखं ५ ॥संधेया३॥ ग्यानकेकुभेदआठताकेनाउमतिश्रुतसुलोकुमतिकु
श्रुतिकुअवधिलोविशेषिये सुमतिश्रुतिसुअवधिमनपर्जयकेवलअका
शोवोभवसुभेदसलवीये मतिश्रुतिग्यानदोउहेंपरोक्षवांनअवधिमन
पर्जयप्रतक्षिएकदेषिये केवलप्रतक्षतासुलोकालोककोविकाशयांहि
ग्यांनसास्वतोअनंतकालपेषिये ५ ॥गाथा॥ अट्ठचदुणाणदंसणसामण्णंजीव
लक्खणंभणियं ववहारासुधणया सुधपुणदंसणंणाणं ॥७॥ स॰ टीका अष्ट
॥कारग्यानचक्षुदर्शनादिववहारजीवकलक्षन॥ निश्चेसुधग्यानअोदर्श २२
नसिद्धसमांनसुद्धदविजुवन केवलग्यानदर्शनफुनिकेवलशोभे सुधतजप

तक्षन ॥ एतिदश्वेवोहारकथनकीकथाअनंतकहिनिकोकनठन ५ ॥गा॥ वो
णरसपंचगंधा दोफासाअठणिछयाजीवा णोसंतिअमुतदो ॥ ववहारमुत्ति
बंधादो ॥ ८ ॥स॰ टी॥ वर्णपंचस्वेतपीतहरीतअरुणस्यांमताकुकेभेदनानात्ता
तिकेविदतहे रसतिवाषारोमधुरोकरुवोकसायलोईनकुकेभेदभेदगन ५
तिअनंतहे तातोसीरोचीकणोरुषोतरमकवारहरुवोसारीसुगंधदुर्गंध
मईरीतहे मुरतिपुग्गलकीजीवहेअमूर्तिकनेवोहारमुर्तिकबंधतेक
हितहे ८ ॥स॰ टी॥ बंधोहेअनादिहीकोकर्मकेअबंधसेतिताते मूर्तिकक
ह्योपरकेमिलापसों बंधहिमेसदारहेसमप्रतिसमेगहेपुग्गलसुएकमेक
ह्वेरहेहेंआपसेंा जिसोसुतोरुपोमलोएकनांमपायरह्योतिसेंजीवमुरतीकपु
ग्गलप्रतापसों यह्वेवातसिधतईजीवमुरतीकमईबंधकोविपषपालेकुव्यो
हारतापसों ९ ॥गाथा॥ पुग्गलकम्मादिणं कत्ताववहारदोदुणिछयदो चे
दणकम्माणादा सुद्धणया सुधभावाणं ९ ॥स॰ टी॥ पुग्गलकर्मकेकरैयाहेजिव

अ॰ ध्यानदओहारनेभवांनईहीफिरकबूनहीहै॥ गणांनावर्णीआदिअष्टकर्मकोक
लीहेरागादीकनावधरेआपउरूपांहिहै॥ शुधनेविचारीयेतोरागादिककर्मक
२८ याकोयफलेतोआटकसदाचेतनासुखाहिहै॥ अनंतगणातपरीणामतिनकी
कोईयाकुं॥विसास्वतोसदीवत्रिकालजाकुभोहिहै॥१०॥गाथा॥ ववहारास
दभुवं पुग्गलकम्मफलाणभुंजदि॥ आदाणिछयणयदो चेदणभावंखुआ
दस्स॥११॥म॰ग्र॥ ओहारनेसोदेषीयेतोपुग्गलकैजुकर्मसुधसुफलतिनको
भोगतेईयाहि॥ उपजायआपसुअसुअशुभकर्मताकेफलसाताओसा
ताकोसहईयाहि॥ निश्चैनेदेषियेतोईहजीवगुणांतमईआपचेतनपरी
णांमकोकरेईयाहि॥ तातेतोकाचेतनपरीणमनकोसुधनिवेलोकीये
तोसबनकोलषियाहे॥१२॥गाथा॥ अणगुरुदेहपरी माणो उवसंहारप्प —
सप्पदोचेदा असमुहदोववहारा णिच्छयणदोअसंखदेसोवा॥१०॥म॰ग्र॥ २४
देहकोप्रवांनराजेचेतनविराजतयुओरदीरघताकारकेतदेसोहि॥ नाहिके

समानप्रविस्तयाकोपुररयोसुक्षमवाबादरतनधरेतिहांसिसोहे॥ ओहारतै
एसोकहयोसमुदघातविनातुहांदेहकोप्रवांननाहिलोकाकाशजेसोहि॥ शुध
निश्चैनेदेषियेअसंख्यातपरदेशिआतमाशुतावधरेविद्यमानऐसोदीहै॥११॥
गाथा॥ पुढविजलतवाउ वणफुदीवविहथावरेइंदि॥ विगतगचदुपंचक्ख।
तसजीवाहुतिसंखादि॥१२॥म॰ग्र॥ पृथ्वीकायजलकायअगनिकायवायुवन
स्पतिकायपंचस्थावरकहिजिये॥ वेईइंद्रीतेईइंद्रीचौरिंद्रीपंचेंद्रीयचारजामें
चलेतेकोसदाजहांजीये तनजिवनताकोआपकोतएईपंचेईद्रीजाकेजेसहि
ताहितिसरदहीजिये॥ संखेदपपीलतीनिमोंरभ्रमरनेपंचईहेआदितानाने २५
दसमनजिगदिजीये॥१३॥ समणाअमणाणेया पंचेंदीयणिममणापरेसवेवादरस
कुमेईदियसवेपजत्तियरईदराया॥१३॥म॰ग्र॥ पंचईंद्रीजीवजेतेताकेदोयभेद —
कहेएकनकेमनएकमनविनापाईये चारगतिवासीजंतुतिनकेतोमन
कहुएकेंद्रियवेईंद्रीतेईंद्रीचौरिंद्रीतास्ये॥ एकेंद्रीनेदोयसुक्षमवादरलायप

अपर्याप्त

३० जोपतेसर्वेजीवपाईये ॥ वाकेबहुविसतारमांहिउथनमेथोरेसेसमझिपां
नाहिरहेअनाईये २४॥ गाथा ॥ मग्गणगुणठाणेहिय चउदसहिहवंतितह
२५ यहअसुधणया विणयासंसारिसवेसुधाहुसुधणया १२ ॥गा॰॥ चउदहमा
रगणाचउदहगुणठाणाहोहिअसुधनेकरिजिनराजने एईभावजोलो
लोसंसारीकहावेजीवतनकोउदयकरीमवेशिवसाजने सुधनेविलोकर
येतोसुधहेसकलजीवद्रव्यकोउपेक्षासोअनंतसबविसाजने सिधकीसमां
नविराजमानसबेवहरागचेतनासुनावधरेकरेनिजकोजेते १४ ॥गाथा॥
निकम्माअठगुणा किंचूणाचरमादेहदोसिधा लोयगठदाणिचाउपादअ
येहिसंयुता १५ से॰ १३॥ आठकर्मरहितअठगुणसहितसर्वदेहकहितेवा
तेकछुऊनोनिवासहे लोककोउअग्रतिहांथितिहअनेतसिधउतपात २५
वेसंयुक्तसदाजाकोवासहे अनंतकालपर्जंतथितिहै अंडालजाकीलोका
लोकप्रतबहुतासीपांनकोप्रकाशहे निरअसुधराउकरेबहुरीतज्ञनधरेजैसो

सिधरायसबनकोआतमाविलासहे ॥१६॥ गाथा ॥ पयडिठिदिअनुभागा
देशावंदेहितवहो मुक्कोउदुंगइदिसेसा विदिसावजंदिजंति ७ ॥से॰ ३२
प्रकृतिबंधस्थितिबंधअनुभागबंधप्रदेशबंधएईच्यारभेदबंधकहिये ई
नकुबंधतेअबंधहेकेचिदानंदअतिशिषासमउर्द्धकोसुभावलहिये ओ
रसबसंसारीजीवउसजिनिजदेहतबपरसंजोगानकेसतवसवगहिये असो
हेअनादिथितिनईकछुनईतहिकहिउथमहितिनतसीसरदहिये ७
गाथा ॥ अजिवोपुणणेओपुगलधम्मोधर्मआयासो कालोपुगलमुत्तोरूवा
दिगुणोअमुत्तसेसादो १६ ॥से॰ ३१ ॥ अजिवद्रव्यपंचतत्ताकेनाउतिन्तसुनोपु
दगलऔरधर्मद्रव्यकोसुतावमालिये धर्मद्रव्यआकाशद्रव्यकालद्रव्यएई
पंचद्रव्यजगमेअचेतनवषांनिये तोमेंपुद्गलहिमुर्तिकरूपरसगंधफरस
मईगुनपरजायलियमालिये औरपंचजीवजुतकहेहैमुर्तिकनिजनिजता
वधरेतहिपिछांनिये ॥१७॥ गाथा ॥ सद्दोबंधोसुहुमो थूलसंठाणभेदतमछा

३० या। उजोदादवसहिया। पुग्गलदव्वस्स पज्जया॥१६॥ स० टी० सबद बंध सु
षम स्थूल संस्थान आकार रूप छेदवो भिन्नवो विछुरवो अंधकार छाया है। उद्योत
२६ रो अरु रूपो रात उद्योत चंद्र कौ तिस मध्य आताप सो न जीमना नाम हनाय है।
पुग्गल अनंतानंत ताका परजाय कुं अनंत न लषे जो कहाई ये तो अनंतानंत
पर्याय है। एक दिसामें आयस वे प्रवर्तनां सरद्धि है पिनां नवंसत जेसि पुग्ग
लपर्जाय है॥१६॥ गाथा॥ गइपरिणयाण धम्मो पुग्गलजीवाण गमणसहयारी
तोयं जह मच्छाणं अच्छंताणेव सो णेई॥१७॥ स० टी० जब जीव पुग्गल चले
तब लोक मध्य तें धर्मास्तिकाय सहाय आय होत है। जैसें मछ पानी में आ
प हिलेगा लकैर जल का सहाय सलिल चलता चाले है। पुन पानी हि जरू पानी
मौन कौं चलावे पंथ आपहि लेन चलै तौ सहायको रबनानुहे तिसें जीव पुग्गल २६
कों और ता सहाय सकै सद जा विहि जे तो सहायको उद्योत है॥१७॥ गाथा॥ ठाण
जुयाण अधम्मो पुग्गलजीवाण ठाणसहयारी छाया जह पहियाणं गच्छंताणेव

वसोधरई॥१८॥ स० टी० जीव अरु पुग्गल को थिति सहकारी होय अैसे है अधर्म
द्रव्य लोक सौं ई रहे है। जैसें कोउ पंथी कपंथ मध्य गमन के स्त्या ताके समीप छा
या वे ते न कत रहे है। पिथो नहि जरू पंथी को वा पारा पे वे गाय अपने ई सहज वे
वा कै आस्त्रीत पढ है। तिसें जीव पुग्गल को अधर्मास्तिकाय सहाय होय है सहज
थितै थाथि तिसमे जुद है है॥१८॥ गाथा॥ अवगासदाण जोगं जीवादीणं वियाणं
आयसं जोण्हं लोगागासं अलोगागास मीति दुविहं॥१९॥ स० टी० जीव पदार्थ
आदि पंच पदार्थन को सहाय देत अवकाश ताते आकाश नाम पायो है। ता
के भेद दोय कहे एक लि अलोकाकाश जिन ग्रंथतमें गायो है। जैसें क कुं घर
५ होय तौ मिसे ववसें जाय तैसे पंच द्रव्यन कों सरन बताया है। या ही मैसे चिर है
पंचिल लिज सातानां है या ते परे अग्ने आकाश अलोकज कलयो है॥१९॥ गाथा॥ ध
म्माधम्मा कालो पुग्गलजीवाय संति जावदिये। आयासे सो लोगो ततो परदो
अलोगुत्ति॥२०॥ स० टी० जित ने आकाश मध्य रहे ए अपंच तिते तिते आकाश
कौ जुलोकाकाश कहिये। धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य अकालद्रव्य पुग्गलद्रव्य अरु जीवद्र

द्र. अरु पंचवर्ण हीन लहिये ईन ते अधिक कछु ओरज विराजे रह्यौ ताको नाम लो
काकाश अैसो सरदहिये दिष्यासानवंत न अेते ज्ञानवंत करी गुणपर्य
२७ यसु शुभाशुभ गहिये २२॥ गाथा॥ दव्वपरिवट्टरूवो जसो कालो हवेई ववहा
रो परीणामादिलरको वट्टणलको दु परमठो २१॥ सवैया ३१॥ जु सर्वद्रव्यनको पर्व
र्तनासमरथ सोई कालद्रव्य बहुभेदनावृ राजेई अपने अपने पर्याय विषे
परनवे सकाल की सहायपाय करनिज काजेई ताहि जिनराज के विराजे
होरादिताय एक आहार द्रोय वणमयो आदिदकाजेई दुजो परमार्थकालनिह
चै वर्तनाचाल कायरहितहि लोकाकाशलोमसुभाइजे २१॥ गाथा॥ लोयायासप
देसे एकेकेजेथियाहुईक्किका रयणाणं रासीमिव ते कालाणुं असंखदव्वाणी
२२॥ स॰ ३१॥ लोकाकाश के जे एक एक प्रदेश निविषे कालअणु के अलग एक ए
कविराजरहिहै तातें कालअणु के असंख्य द्रव्य कहिये तु रतनराशि
की जैसे एक पुंज लहिहै काहु सों न मेले कोय रतन प्रसम सहिहि जोय तैसे का २७
ल अणु हाय भिन्न ताववहहै आदि अंत मध्य न छिवर्तना सुभाव माहि सम

DR BHAU DAJI

पतम कुर्ते पर्याय भेद करे हैं २२॥ गाथा॥ एवं छब्भेयमिदं जीवाजीवपभेददो द
व्वं। उत्तं कालविजुत्तं णादव्वा पंच अस्तिकाया उ २३॥ दुहा॥ जीव अजीव दुद्रव्य
के भेद सु षट विधजान तामें पंचसु कायधर कालकाय विनु मान २५ गा
था॥ संति जदो तेणेदे अस्थित्ति भणंति जिनवरा जम्हा॥ कायाइव बहुदेशा
तमा काया य अस्तीकाया य २४॥ सवैया ३१॥ अैसो कहो जिनवर देषिनिज
ग्यांनमध्य ईन ते पदार्थनको कायधरमों निये जीवद्रव्य पुद्गलद्रव्य धर्मद्रव्य
अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य ए ई नाम जानिये एकायकी न इहां बहुत प्रदेश
धरे ता ते सवगाई नहे पत ले पवो नीये निज निज सत्ता तामें विराजै रहे सर्व द्रव्य
अैसे भेद ताके अंतद्रिष्टि सों पिछानिये २५॥ गाथा॥ हुंति असंखा जीवे धम्मा
धम्मे अनंत अयासे। मुत्ते तिविय पयसा कालस्सेगो न तेण सो काओ॥ २६
स॰ ३१॥ जीवद्रव्य धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य ए तिन्हो द्रव्यन को असंख्य प्रदेश कहि
जुहै अनंत प्रदेशी आकाश पुद्गल के तेद तिसंख असंख्य अनंत प्रदे
शावतुहै कालके प्रदेश एक अनंत पंच के अनेकता ते पंचास्तिकाय कायो

३० नामकहतुहै कालविनुकायाजिनराजकहेतेयातैकह्योएकप्रदेशाकेसंका
यपथरसुहै २५॥ गाथा ॥ एयपदेसोविअणूणाणाखंधप्पदेसदोहोदिबहु
२८ देसोउवयारातेणयकाओभणंतिसव्वण्हु २६॥ सं०२६ जोपंपुग्गलप्रवा
नुएकप्रदेशधरैतोबहुतप्रवांनुमिलेबहुतप्रदेशहै नानाकारकेस्कंधसो
कोतैतेप्रदेशहोयसप्रमाणपरमाणुतेतेनेकोसबतैसहै दिषोये।
जेतिनपुग्गलपुंजसबएकलोकमध्यएकसामतेतोहैसहै तातैसरव
ग्यजुनैपुग्गलप्रवानुप्रतिकह्योकायपथरसदाजाकेसबदेसहै २७॥ गाथा ॥
जावदियंआयासं अविभागीपुग्गलाणुवट्ठद्धं तंखुपदेसंजाणे सव्वाणु
ट्ठाणदाणरिहं २७॥ इतिषट्द्रव्यपंचास्तिकायप्रतिपादकद्वितीयोधि
कार॥ सं०२॥ जितनोआकाशपुग्गलानुएकरोकरह्योतितनोआकाश
कोप्रदेशएककहिये सुक्षमबीनागुजोकोएककेनहोयदोयअरुपरवा २८
नुकैअनेकलैदलहै तासुअनंतप्रवांनकोठौरदेवकोजोगहै जैसोहि
आकाशकोप्रदेशएकगहिये जामेओरद्रव्यसर्वथानदविराजरहैकोक

काकुमजेनहिंऐसेसरदहिहै २७॥ गाथा ॥ आसवबंधणसंवरणिज्जर
मोक्खसपुण्णपावंजे जीवाजीवविसेसा तेविसमासेणपभणामो २८
चौपई॥ आश्रवबंधसंवरकेपंथ निर्जरापुन्यमोक्षकोग्रंथ पापजीवअरु
अजीवअनेक एतेपदारथकहुसंषेव २८॥ गाथा ॥ आसवदिजेणकम्म
परिणामेणप्पणोसविण्णेओ भावासवोजिणुत्तो दव्वासवणंपरोहोदि २९
अर्थ गाथा॥ जिहंआतमकेपरणामनसुंनिजकर्महिआश्रवमोनिजए ति
सभावनकोइहिनातुलहीभावाश्रवकेचेतनकोजनए दरवाश्रवसोपुद्ग
लजोवोकर्मादिकतानानोविवए पावनावतकोकरतानेयावेसबदर्व
आश्रवताहितए॥ २९॥ गाथा ॥ मिच्छत्ताविरदिपमादजोगकोधादयोथ
विण्णेया पणपणपणदहतियचदुकमसोभेदादुपुव्वस्स ॥ सं०३० पंचमिथ्या
तपंचहैअव्रतअरुपनरहप्रमादहिजांनि मनवचकायजोगहैतिनतीन्यो।
स्कषायसोलहविधमांनि ईन्हैंआदपरीणामनजानिबहुनाबाआश्रवके
हेवपोनि तासुभावकर्मकोकरतोचिनमुरतितेपापहिचीनि॥३०

३० णाणावरणादिनजोगं ॥ जं पुग्गलं समासवदि दव्वासवो स णेओ अणेयभे-
उ जिणवरवादो ३२ स॰ टी॰ ग्यानावर्णादि आदि आठ कर्म को जोग्य जो
२९ पुग्गलद्रव्यानु समानि नाना भांति आवे है जीव के प्रदेशन कों आय करि आ-
वते है ताको नाम कारणकै द्रव्यास्रव कहिये है ऐसे द्रव्यास्रव अनेक विधि
राजत है ताहि केवलज्ञान सहित जीव की नदे कहे सर्वज्ञ नै ऐसे देखि
ता कहिवा को वेदगोण तिन के जो कोमिथ्या नहि है ३४ ॥ गाथा ॥ बज्झदि कम्म
ं जेण दु चेदणभावेण भावबंधो सो कम्मादपदेसाणं अण्णोण्णपवेसणं इदरो
३३ ॥ स॰ टी॰ ॥ चेतनपरिणाम सो कर्म जिस बांधिये तिस तैं ताको नाम भावबं-
ध जिस बंध तें कहिये कर्म को प्रदेशन को आत्मप्रदेशान सों परस्पर मि-
लाप करनो तिला कहिये ताको नाम द्रव्यबंध है जिन तें ऐसे जिननें
द्रव्यबंध पयसि को गहिये अनादि ही कों जीव कै द्रव्यबंध सहित बांधे है ऐसे
मिटत अनंत सुख नाहिये ३४ ॥ गाथा ॥ पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसभेदा २९
दु चदुविधबंधो जोगा पयडिपदेसा ठिदिअणुभागा कसायदो होदि ३५ ॥ स॰
टी॰ ॥ तव बंध तें च्यार प्रकृति और स्थिति बंध अनुभाग बंध प्रदेश बंध मा-

नियै प्रकृति प्रदेशबंध दोऊ मन वचन काया के संयोग सें होहि है और स्थि-
नियै स्थिति अनुभाग बंध होहि एक कषायन तें क्रिय मसे समस्या तौ स्वरूपवा-
नियै ऐसी बंध विधि कहि है पुन कै अनुसार स्वरूप विचार सर्वज्ञ ने या जानि-
गाथा ये ३५ चेदणपरिणामो जो कम्मस्सासवणिरोहणे हेदु सो भावसंवरो खलु दव्वासव-
रोहणे अण्णो ३५ ॥ स॰ टी॰ ॥ कर्मन के आस्रव निरोधवे कुं ताव नायतें ई शुद्ध प-
रणाम भावसंवर कहिजिये उ आस्रव रोकवे को जे जे कारण होहि ते ते कार-
ण सर्व द्रव्यसंवर जानि जिये या विधि भेद दोउ कहे जिन देव सो यहु भाव
उर तें हीय तें याथो गहिजिये संवर के आवत ही आस्रव तें आवे कहि ऐसे तै
द्रव्य भावसा गदी जीये ३६ ॥ गाथा ॥ वदसमिदिगुत्तिउ धम्माणुपेहापरीस-
हजउ य चारीत्त बहुभेया णादव्वा भावसंवरविसेसा ॥ ३६ ॥ स॰ टी॰ ॥ अहिंसा
आदि पंच महाव्रत पंच सुमति मन वचन काया तिन गुप्ति पवोनिये ध-
र्म प्रकार दशआर द्वादस भावना उब्बावीस परीसह को जित वो सु जानिये ब

३९॰ ऊतैनदेवारित्तकेकहलनोआवपारआतिविजापारयनलंडनपावांलीये
एतेसबनेदनावसंवरकेजानिये समस्तचपनामकहेयाम्हरआलिये ३८
३९॰ गाथा ॥ जेदकालणलवणया तत्तरसंकेमपुग्गलेजेण नावणमहिदि
तप तस्सदरंध्रहिणजैरादुविहा ३९ ॥ सो ३९ जेपरणामहोहिआतमाके
पुग्गलकरमखिरनकोहेत अपनेकालपायपरवांनुनपतिमिलितनुसहि
बेत तिहिखिरवेकोनावहोहिबहुतसवलिरउरातावसमेत ॥ पुग्गलकौखी
रसुदवौनिजैरजेतदजिनवरकहिदेत ॥ गाथा ॥ सवसकमाणोया तपहि
दुअपणाऊपरीमांणो लवसंनावमाषो दरविमारवायकमपुलनावा ॥ ४८
॥ उथा ॥ सकलकर्मक्षकरण नावअलरगतिराजय तिननावनसोकहि
त नावपहमोदासवनुय दुकमीमापतिहोलहित कर्मसर्वजिलविना ३०
सय आतमकेपरदेश तिनतुपतेतेनासयईकविधिसनेदहैमोषके
दजिनपंथधारके एहदकनावविधिसहितसम्यकवेतविस्तारके ॥ १ ॥ गाथा ॥

सुहअसुहनावजत्ता पुमपावहवेतिषलजीवा सादंसुहाउणामं गोदं प
णपराणीपावंच ५० ॥ स॰ ५० सबनावतिहोजिहंसुनपरीणामहोहि जीव
नकीरवाअरुव्रतनकोकरवो तातिहोयपसताकोफलसातावेदनीसु
नआअसुनगोत्रअनकसुषचारवो असुनपरणामनतेजीवहंसाआदिव
हुपापकोसमहहोयसुकतकोहरवो वेदनीअसाताहोयषडिनकोनसा
ताहोयआपुनामगोत्रसवअसुनकोनरवो ॥ गाथा ॥ समएदंसणणाणं
चरसंमात्तसकारणंजाणं विवहाराणिछयदोतातियमईउणीअप्पा ५०
॥ उथा ॥ सम्यकदर्शनग्यांनपुनिसम्यकसोहे अरुसम्यकचारित्र
त्रिविधिकारणशिवसोदे नयविवहारचषानि कहोजिनआगमजेसनि
श्चेनयव्यवसुनाउ करुकहुलखतजेसादर्शनग्यांनचारीत्रमयपरम
सरूपमोषसुकारणहोय आपुहिविरतचिद विलासचिद्रूपधर ॥ गाथा ॥
रयणत्तयणवट्टई अप्पाणंमुयंतआणंदवियम्हि तम्हातत्तियमइउ होइ
हुमोषस्सकारणंआदा ॥ ४१ ॥ स॰ ४१ ॥ जिवविनरकंएरतनात्रयआदिगुन

सू० अनिजउदर्वैनेमेनकऊयनपाईये ॥ तातेउभगपान्तवरणआतमाकोरूप
वर्णत्रगुनकोमूलधर्णविद्यातेदर्शईये ॥ निश्चैनेतमापकोजेकारहेआप
सू१ सदाआपनोश्रुतोयमापआपमेजषाईये ॥ असोजैननैवषासोनेदआय
यतनेनसुविचारतेयानेदयावताईये ४१ ॥ गाथा ॥ जीवादिसदहणं स
म्मतंरूवमप्पणोतंतु ॥ दुरभिनिवेसविमुक्कं णाणंसमुखंहोदिसजितम्मि ४२
स०टी० जीवादीपदार्थकेजिसरधांनरूपरूचिपवितहोयनिजपरजास
है ताकोनामसम्यक्तकहावसुदर्शनजाकोसरधानेमेविपरितबुधनास
है आतमसरूपकोसरधानऐसोकहियेजाहिकेहोतिबहुगुनकानिवा
सहै सम्यकदर्शनतेज्ञानजुसम्यकहोयईनेआदिआरअबसम्यकवितास
है ४४ ॥ गाथा ॥ संसयविमोहविब्भमविवज्जियं अप्पपरसरूवस्स गहणंसम्
णाणंसायरमणेयमेयं तु ४३ ॥ कुंडलिया ॥ निजपरवस्तुसरूप ताहिवेदेअरुथी सू१
रथगुनलक्षनपहिचान यथावतऐसीकारथ संसैविभ्रमभोह तिहिंवर्जि
तनिजकहिये ऐसेसम्यकग्यान नेदजाकोबहुकहिये नसुपदमहिमाग्र

गम ॥ अतिबलबुधिकोवरनैनकेर ॥ यहमनिगंनादिकआदिबहुतेद
जासजिनवरे ॥ ४५ ॥ गाहा ॥ हंसणमणंगहणं नावाणंणेवकम्मायार अवि
सेसिऊणऔम ॥ हंसणमीदसणंपसमं ४४ स०टी० जोसरूपसवपतिनाप
तदर्शनताहिकहसवकोई नावरूनेदविचारविनाजिहांएकहिंबेरविलो
कनहोई जातिजदर्वयथावस्तुवेरतेनेदर्शनदकेरनाहिकोई गुनदोषवि
कल्पविनुनेयादर्शनतिरकहावेसोई ४६ गाथा ॥ दंसणपुव्वंणाणं छदमत्था
णंणदुणि उवउगा जुगवं जम्हा केवलिणाहेजुगवंतुतेडुवि ४७ ॥ कुंडलि
या ॥ सववसंसारीजीवकु पहलांदर्शनहोय ताकपीछैगानके उपजेसंगतो
होय उपजेसंगनाहोय कोयगुनकोसनसहाई अपनिअपनिवेर सवे
गुणलहेवडाई पभीकेवलज्ञानगावतकेलोय परमपदलावतवरूपसभन
ऐसरहैयएकगमसब ४७ ॥ गाथा ॥ असुहादोविनिमित्ति सुहेपवित्तिय
जाणचारितं वदसमीदिगुत्तिरूवं ववहारणयादुजिणभणियं ॥ स०टी०
पापपरणतित्यागि हिंसादिनिकसैनागधर्मकिपेषजागदयादानकरै

७. श्रावककेव्रतपालग्रंथनिकेनेदनाजैनागेदोषनादिलालभ्रयनकोाहर
र पंचमहाव्रतधारिपंचसोमतिकरीतिनकुगुपतिवरीतिरनेदधररे
३२ हेसरवगपंदचारीत्र वोहारसेन्वअत्यमासिद्धिमवेवराकोनतररे ४५
गाथा ॥ बाहिरभसारीकारीया रोहोभवकारणप्पणासठं णाणसजंजिणुतु
तंपरमंसमम्चारीतं ४६ म.३२ बाहजअभंतरदोउकियाकोनिरोधनिर्लेप
रमसम्यकगुनचारीत्रउहोतहे वेनअरुकायदोबाहजकेयोगकहेमनुअ
भ्रेतरजोगुनिनिरोधहेनुहे ताहितेनिकटजेलगानुहेसंसारकुपरागादिक
मलनकोयाहिकमपोनुहे कषायआदिकर्मकेसमुहकेविनाशकरेताको
नामसम्यकचारित्रदीयोनुहे ४६ ॥गाथा॥ दुविहंपिमोषहेउनाणे पाउण
दिजंमुणिणियमा तम्हापयत्तचित्ताजूयं झाणंसमभसह ४७ म.३२ द्वियपरको
रमोक्षकोकारणनितपतितसुकीजेअभ्यास दसनानमयेवध्यानपरपञ्चसुप ३२
अनेसपरगटनिजरास ध्यानहोयतोलहियेरतनात्रयचिन्तमनेकरेकर्मको
नास तातेचितासानिनविकजतधानकरोनिजमनतजरास ५० ॥गाथा॥

पणतीससोलछपन दुइगमेगंचजवझाएह परमेष्ठीवाचयाणं अनंचगु
रुवएसेन ५१॥ पंचपरमकोजेध्यान तसुअक्षरकोसुनोकुवि
गोन तिसपंचअक्षरमनिलीजे नमस्कारनितप्रतितिलोकीजे ५२ न
मोअरिहंताणंसात नमोसिधाणंपंचविख्यात नमोआइरियाणंपंचबो
य नमोउवज्झायाणंवरसप्तसुसाय ५३ नमोलोयसव्वसाहूणंनवमलि
येतिसअक्षरगुन सोलहअक्षरकोविस्तार सुनोसविकपमनमसार ५
४ अरहंतआचारजनाम उपाध्यायनितकरउपणाम अरहंतसिधषटअक्ष
रविध्यान असियाउसापंचप्रधान ५५ चारअक्षरअरहंतविचारि हैअ
क्षरसिद्धनिघार एकअक्षरजैसबधरे इनकोसमरनतेविसनतकरे एअप्प
रपरमेष्ठितेपढ आरसकलगुरुमुषसुनलेह ५६॥ एहविधिपंच
परमपदहि तविजतनितप्रतिधाय एककेगुणहिचितारसतो घाटईलसम
याय ५७ ॥गाथा॥ एहवथाईकेस देहनाणसुदण्णाणविपरीयमईव सुद्दढ
दसुअप्पा सुद्दोअरीरोविचिचिवितो ५८॥ म.३२ ऐसेनिजआतमअरह

डाक्टर भाऊ दाजी ... Dr. BHAU DAJI

द्र॰ नकै विनाशियतु च्यारकर्मनिष्टगए तादिहिसैं अरु कैसा है । ग्यांनावर्णीदर्शनाव
र्णीमोहनीअंतरायए ई च्यारकर्मगएघातनासु तेहै । अनंतदर्शनअनंत
३३ ग्यांनअनंतसुषअनंतवीर्य इएच्यार है । परमउदारीकदेहविषैराजमानजे
जे हैं दोषनतैरहित सुधग्यांनकोनिदांतहै ५० ॥ गाथा ॥ णट्ठट्ठकम्मदेहो लोया
लोयस्सजाणउदट्ठा पुरिसायारोअप्पा सिद्धोझायह लोयसिहरत्थो ५१ ॥
॥ अ॰ ॥ ऐसे ईह आतमकोसिद्धकरीअनुध्यावो कर्मदेहादिकदोषजाकेनसहै
लोकअलोककौजाणनवेतादिष्टमांहिजाकीसुखजाईमैंसुनावसवस
सेहै । अनंतगुणपनात अनंतकालपर्यंतथिति है अरुजाका पुरुषाकार
वसेहै ऐसो है स्वरूप सिधक्षेत्रमैविराजमान तैसो ई निहारनैया आपस्वरसे
है ५१ ॥ गाथा ॥ दंसणणाणपहाणो वीरियचारित्तवरतवायारो अप्पापरंजु
जई सो आयरीयोमुनिझाउ ५२ ॥ अ॰ ॥ पंचप्रकारआचारजाकैज्ञानदर्शनविचारित्त ३३
तेता विर्यआचारकोनामगुनधारैहै आपुहि प्रवर्तेहै कोमारगदयालरूप
औरप्रवर्तावनकोपरउपगारीहै दर्शनाचारज्ञानाचारवीर्याचारचारित्रा

चारतपाचारमैविशेषवुधनारिहै ईन्है आदि औरगुनकेतेई विराजरहे
ऐसे आचारजप्रतिवंदनाहमारीहै ५३ ॥ गाथा ॥ जो रयणत्तयजुत्तो णि
च्चंधम्मोवदेसणेणिरदो । सो उवझायो अप्पा जदिवरवसहो णमो तस्स ॥ ५
४ ॥ अ॰ ॥ २३ सम्यकदर्शनग्यानकुं निसम्यकअरु सम्यकचारीत्र कहिये ए
रतनत्रयगुनकरीराजतहादशांगगतदेतहिये सदातेउपदेशधर्मके ।
उपाध्यायहि गुणगाहिये जतिनमप्रधानपुरुषहै ताप्रतिवंदनाहमरहा हि
ये ५५ ॥ गाथा ॥ दंसणणाणसमग्गं मग्गं मोक्खस्स जो हु चारित्तं साधियदि णि
च्चसुद्धं साऊ स मुणी णमो तस्स ५५ ॥ दोहा ॥ सम्यकदर्शन संयुगत अरु
सम्यकज्ञिकग्यान तिलाकरस्मरन ज्ञानस्यो तिचारित्रपरवान ५६ च्या
स्त्रिमारगमोक्षको सर्वकालशुधलीय तिहसाधकसु जो साधुमन जिनप्र
तिवंदनजोय ५७ ॥ गाथा ॥ जं किंचिवि चिंतंतो णिरीहवित्ती हवे जदा सा
हु लद्धूणयएयत्तं तदाहु तं तस्स णिच्चयं झाणं ५८ ॥ छप्पै ॥ जबककुं साधु
मुनिंद कछुनिजरूपविचारे तबतिहं साधमुनिंद अयतनके पदउपविदारे
जबककु साधमुनिंद शुधथिरतामांहिआवे तबतिं॰ त्रिविधकर्मकहावे

अ॰ ईमध्यानकरतमुनिराजतव रागादिकत्रिकटारके तेहवतिनिरुक्षेक
हननिन नविवंदकुसुरतसंतालके ॥ ६ ॥ गाथा मथिहसाजेपदमां वि
२४ नदकंपिजिणाविईवि रोगथा ॥ अप्पामरातुईणमे बपरह्वेजाणं ॥ ५७ ॥
स॰ २१ ॥ मनवववकायतिलजोगनसुराविकऊकरामतिवेशातुमडणई
णकीकदावके बोलेजिनवैनकलोईनसोमगनहिल्केचिवोतेजिनआन
कलुकुकुतादिसांवके परवस्तुतोडिनिजरूपमांहिजिनरहोथिरता
कोध्यानकरआतमासोरावके दिव्योजितरागवातेईहतत्केध्यान
जोमथिरहोयपरमकरमनावके ॥ गाथा ॥ तवसुद्दवदवचेदाजणारहधर
धुरीदवेजहा तमत्तातियणारिहा तजहिएसदाभिई ॥ स॰ २२ ॥ जेबयह
आतमकरेतपसादहेसकलकर्मवनकुंत सुतसिहंतनेदवकुवेद
सजपेपंचपदजकेगुनरस वतपच्चषानकरेवकुनेदरुआनसमुकेमाह ।
श्रूपकुज तववतिहाधरमधकरंथरहदिमेपरमातमथा तातिमतुज ॥ ९ ॥ गा॰ ३६
दवेसगहमील मुलीणहदोससतयसुदासपुणा सोधपंतुतलुसतथु
रणतेसीचंदमुलिणातलीयंते ५८ ॥ स॰ २३ ॥ सकलगुणनिधानवंदित

पथांतबकुणनरहीनमूणानूषलरहातेहे तेणिवतिविनवतनेमीचंदमु
निनाथसुधियोजोजोदित्तसम्यजोआदितेहे सर्वसंगहंग्रंथयदकीतोमे
वहातथारीमोरीकुबुधआसमासूसीमदितेहे तातेमेजूपदग्रंथसवता
करहेकवुगहिमूतलिजाएतिविनतिकरुंतेकुं ॥ ५९ ॥ इतिश्रीनेमीचंद
तदूअसंग्रहसर्णा ॥ दाला ॥ नेमिचंदमुनिनाथने ईलविधस्वताकीनगा
थाथोरीअर्थबकु तिपटमुगमकरीदीत ॥ १ ॥ छप्पे ॥ ग्यानवंतगुनतहेआ
तमरुचिअमनसपरसंग तिसवसागीमतिरमवेरमुनिजऊत वेदयनि
जपरसतद षिदसवतजयकर्मेतन छदपरावथितवासदासमवकेरय
आरिणातईलविध आनेकगुनत्रगटकरी जेहयत्रावपदपलकमे
जेजवेतसहदावह विरविलासलषि जेकुतविजितफलकमे ॥ ६० ॥
दाला ॥ दुव्यसंग्रहगुनतउदधिसम किहविधिलहियेपार यथासकतिक
बुवर्णये निजमतकेअनुसार ६१ ॥ सवैया ॥ गाथामूलनेमीचंदकरी म
हाअर्थनिधिपरणनरी बकुमुतधारीजेगुणवंत तिसर्वअरथसबगुनसे

ब्र० त ॥ ६६ ॥ हम सुरष गुन सम कहू नहि ॥ गाथा पद नो अर्थ जथा हि ॥ कहुं अर्थ लिष बु
ध जन ॥ वाचत तन पजे अति सुष चैन ॥ ६८ ॥ जो पद ग्रंथ कवित मांहि आय ॥ तो ज्ञान
३५ मां पद सब को य ॥ परविध ग्रंथ रच्यो सुविकास ॥ मांन सेय ग नोति दास ॥ ६९ ॥ मा
हामित्र एपरम सहि ट ॥ तिनक वितक पंगुन गोठ ॥ संवत सत्रसे एक सिम ॥ मा
ह सुदि दसमी गुरु वार ॥ मंगल करण परम सुष धाम ॥ दुष संकट हर तिक हुं
प्रणाम ७० ॥ इति संग्रह गाथा कवित्त बंध संपूर्ण ॥ ॥ अथ चेतन कर्म चरित्र ली
ष्यते ॥ दोहा ॥ श्री जिनवर चरणन नमस्कार करी ॥ नावन गात जु अग्यानि ॥ चेतन अरु
कर्म को ॥ कहूं चारित्र वषानि ॥ १ ॥ सा वरतम हाँ मिथ्या तसे ॥ विरुधा तिस
ज्ञापा य ॥ विसा काल अनादि तिलौ ॥ जगो नां चेतन राय ॥ २ ॥ जबै नव श्चित गट
गई काल लब्धि तई आय ॥ विति मिथ्या निद सिल ॥ सम्यग्दृष्टि दिषइ राय ॥ ३ ॥ कोए
करण त्रय मतिलौ ॥ जाग्यो परमदयाल ॥ लषी शुद्ध सम्यक दरस ॥ तोरी माला भ्रम ३५
जाल ॥ ४ ॥ देष्या दि दृष्य सारके ॥ निज पर सब के आद ॥ ए पर संग को तज ॥ जइ सो
लग्यो अनाद ॥ ५ ॥ तब अशुबुधि बोलि चतुर ॥ सुनहो कंत सुजान ॥ ए तेरे संग अरी

लगे महा सुभट बलवान ॥ ६ ॥ कहे सुबुधि को जिततै ॥ ए उसमांन सव इर ए
सी क अवतु ॥ बहोरि नआवे फेर ॥ ७ ॥ कहे सुबुधि एक सिष सुन ॥ जो तुम मांनो
कंत ॥ केतो आप स्वरूप तिज ॥ के तन जेतग वान ॥ ८ ॥ सुन के सिष सुबुधि की
चेतन पकरी मोन ॥ उगी कुबुधि रिसाय के ॥ यह कुलक्षण पन कौन ॥ ९ ॥ मेरी
दुमाद की माही चेतन राय ॥ कहो लारी यह को न हे ॥ राषी कहां लोकाय ॥ १० ॥
तब चेतन हसी यो कहे ॥ अबतो सो नहीं सनेह ॥ मन जोगो एह तास सो ॥ माए
सुबुधि गुन गेह ॥ ११ ॥ तब कुबुधि रिसाय के ॥ गई पीता के पास ॥ आज पीआ ए हम
परहरी ॥ तो तेन ई उदास ॥ १२ ॥ चौपई ॥ तब मोह नृप बोले वेन ॥ सुन पुत्री
एक सीष्या ऐन ॥ तुम मन मां मत लाए दलगीर ॥ बांधि मंगाव तत सह कीर ॥ १
३ ॥ तब वे तेडा एक कोमकुमार ॥ जा सब दुतन में सरदार ॥ कहो वचन मेरो स
म जाय ॥ कुरेम्ये अथ निमिधाय ॥ १४ ॥ आदवो अवली हो हारे कोउ कुर ॥ कह गयो तेरो व
ज सुर ॥ के तो पाय परो मुझ आय ॥ के लरवे की करहु सजाय ॥ १५ ॥ ऐसे वचन उ
न अवधार ॥ आयो चेतन पास विचार ॥ रूप के वेन ई तस बकहे ॥ सुन के चेतन

३० त ॥ ६५ ॥ हमसुरषगुनसमरु नहि ॥ गाथापैदनोअरथजषांहि ॥ कहुंअरथलिषेबु
धिजन ॥ वाचतनपजेआनिसुषचेन ॥ ६८ ॥ जोपदग्रंथकवित्तमांहिय ॥ तोजिना-
३५ मांपदसबकोय ॥ परविधग्रंथस्योसुविकास ॥ मांनसंयपनगोतिदास ॥ ६९ ॥ मा
हामित्रएपरमसनेह ॥ तिनकवित्तकहेगुनगेह ॥ संवतससतरसेएकासिय मा
हसुदिदसमीगुरुदीस ॥ मंगलकरणपरमसुषधाम ॥ द्रव्यसंग्रहवतिकरुं
प्रणाम ॥ ७० ॥ इतिद्रव्यसंग्रहगाथाकवित्तबंधसंपूर्ण ॥ ॥ अथकर्मचरित्रली
ष्यते ॥ दूहा ॥ श्रीजिनचरणप्रणामकरी ॥ नावनगातनुरआनि ॥ चेतनअरु
कछुकर्मको ॥ कहुंचारित्रवषानि ॥ १ ॥ सावतमहामिथ्यातमे ॥ चिरूगातिसा-
आपाय ॥ चिसोकालअनादितिहं ॥ जगपातांचेतनराय ॥ २ ॥ जबेवनवाछितगट
गई ॥ काललब्धितईआय ॥ चितिमिथ्यानिंदसिहं ॥ ससकिरद्विवेदराय ॥ ३ ॥ काए
करणत्रयमतिभिद ॥ जागोपरमदयाल ॥ लेवोशुद्धसमकितरस ॥ तोरीमाहअघ ३५
जाल ॥ ४ ॥ दृष्यादिस्वपसारके ॥ निजपरसबकेआद ॥ एमेरेसंगकोतबे ॥ जडस्यो
लग्योअनाद ॥ ५ ॥ तबेशुबुधिबोलिचतुर ॥ सुनहोकंतसुजान ॥ एतेरेसंगआरी

लगी ॥ महासुनटबलवांन ॥ ६ ॥ कहेसुबुधिकोजितवो ॥ एउसमांनसवरेएए
सीकआवहु ॥ बहारिनआवेफेर ॥ ७ ॥ कहेसुबुधिएकसिषसुन ॥ जोतुमांनो
कंत ॥ केतोआपस्वरूपनिज ॥ केनउलेतगवार ॥ ८ ॥ सुनकेसिषसुबुधिकी
चेतनपकरीमोन ॥ उठीकुबुधिरीसायके ॥ यहकुजषपनकोन ॥ ९ ॥ मेबटी
दुमोहकी ॥ आईचेतनराय ॥ कहोतारीपदकोनहे ॥ राषीकहांलोकाय ॥ १० ॥
तवचेतनहसीयोकहे ॥ अबतोसोनहीसनेह ॥ मनलागोएहनास्यो ॥ मारु
सुबुधिगुणगेह ॥ ११ ॥ तबेकुबुधिरिसायके ॥ गईपीताकेपास ॥ आतुपीआहस
परहरी ॥ तातेनईउदास ॥ १२ ॥ चोपई ॥ तबेमोहनृपबोलेवेन ॥ सुनपुत्री
एकसीष्याअेन ॥ तुमसनमांमतहोएदलगीर ॥ बांधिमंगावतंसहतीर ॥ १
३ ॥ तबेतेडोएककोमकुमार ॥ जोसबहुतनेमसरदार ॥ कहोवचनमेरोस
मजाय ॥ कुरेअंधअधर्मिथाय ॥ १४ ॥ माहरूजीडांइकोकुर ॥ कहगयोतेरोब
जमुर ॥ केतोपायपरोमुकआय ॥ केतोरवेकोकरहुसजाय ॥ १५ ॥ असवचनउ
तअवधार ॥ आयोचेतनपासविचार ॥ नृपकेवेनईतसबकहे ॥ सुनकेचेतन

३० रीसगलहरै १६ अबहमयाकोपरमोनहि निजबलराजकरोजगमांहि
तुमनतेमम तिकरेगुमांन ऐसेवकुहैएकहिसुजांन १७ करीआवांआसवा
३६ रीवेग मोपिश्चाधितमसुंदक औसेवचनेवितनजाकहै कोमकुमारीससव
सुनिलहै १८ ओसेवचनसुंतनविकराल दुतलषेएहुकोप्याकाल तत
सोतोजबहोहियारि तबहोमीहनिडारेमार १९ तबमनमांहिकीयोविचा
र अबकेजोरापेकोरतार तापकरानांमनईनकोजेय सितनकेएसबत
जिदेय २० तबबोमसोवेतनराजांन जाहुतलमअपनेथांन फेरिमतआ
वोएहपुरमांहि देषेसबविकुटिमनांहि ॥सोरठा॥ दुतजघोषसताव मन
मेतोअेसोहुति नलोबमोएहदाव आपोराजामोहसो २१ कहिसिवेसम
जाय वातांचेसनरायको नेमतोसुमकुंआय जरबकीलेमोतेर २२ सुन
करएजामोह कीनीकटकजावेप अहेसुनटसजदोह धेरोजायगमारको ३६
२४ सजेसकेसबहीसुर अपतीअपनिकाजलो आपमोहल्लतर अबेमो
हलाविजेयि॥२५॥ चौपई॥ रणहुर्षहिवडेवजीर माहसुनटदलसंयतवीर

फोजमअेदोउगरिरहार ईनकेपीछेसवपरीवार २६ गोनावरणिबोलोथों
वेन मोपंपेक्जातकेचेन जिनसबजीनुकीजेजोर राषेत्तवसागरमेंथ
रि २७ गोतनुपरसबेसरोलोग तादिनहिजोगेउपजोग जांनेनहिएक
चकटोय सामाहिमसिरीसबवोय २८ तबदरीनावरणियोकहे जीवजा
गतकेअंधरहे सामबहेमेरेपरताद नोरसविरकेरजनमाद २९ तबवे
रतीबोलोधीर मोपेदोयजातकेवीर मालसुनटजोधाबलसुर तीर्थंकर
कोरहुंहजुर ३० आरजीवबपुरेकेहिवात मेरीमहिमाजगतविषात मो
कुंवाहेविकुगतमांहि मोविनसुषदोछिनमांहि ३१ आनकर्मबोलेबक
वेत सिधविनामेरसबजेत मराघुतासोथिररहे नेतोपंथकोंनकीगहे
३२ मोपंचारजातकेसुर तिनसोंजुधकरेकोकुर विहुगतिमेमेरसबका
स मेंसागुतवनिविपरवास ३३ नांमकर्मबोल्यामहिमार मोविनुकोंन
करेसंसार मेकरतापुत्तलकोरूप तामेआयवसेचिद्रुप ३४ विस्तारो
नवेमेरसंग रूपरसिजेदेवकुरंग ईनसोंसरतरजीयकोकरे तथवत

३० डाडिमरतन्नअवतेरे २५ गोलकमैलेदेअमचार उचनिचजनकोपरीवा
र सुरवंछकोयफ्लुनाव छिनमेरांककरेमिवराव २६ अंतरायअपनौ
२७ लखाञ पंचसुनटदेवमालाराज सबकेआगेएअसवार रणमेयुधकी
निरधार २७ करछयियारामानतिलोदिहि चेतनकीसुद्धसबपरनहि ए
सगुनटएकसोविसा तिनकोगुनजानजगदीसा २८ इनकेसुनटसमावेसि
रदार परदलगंजनवडेझुजार तवमोहनृपमनआनंद देष्याःसुनटफौजस
ववंद [illegible] रागद्वेषद्वैमीत्रलेपतवबोलकें सुमनलावोकुमरीको
जेनुवनत्रपषालके विसआक्रमसवारवडेसवसुरमा आरापियोवनिजा
यतोहियोसुरमा ३९ रागद्वेषवेलेतिहांजितिहांसवसुरहे लावोसरतवबोल्यो
यसुनुएहहजूरहे तवबोलेमुषवेनजीवपरहमचढे सुनतकेअवतलि
सहसुरकेमतत्वडे ४० फाउजांकीलीयारवडेविसतारसो लिउसिवक्कसि २७
रदारकोयेसुजनारसो फहलाफौजेसासुनटआगेचले दुजिफौजांया
नचरतेसवकेरले ४१ दघोसासवचलेतिहांचेतनवदसे आएपुरकेपास

Dr. BHAU DAJI

नांआगेंकोधसे चेतनकोगढजोरद्धविसवथरहे सातसुनटतवनिकसी
सवतआगेआरे धर [illegible] उदजसुसुधमोदकी कहीजीवपेजाय कहारहि
वुमबेरके फोजोलगिआय ४३ सुनकेचेतनराय चितवमनेको कोजेक
ला लिलोगपांतबोलाय कहोमित्रकहाकीजिये ४४ तववोसोयेगपांन
इनसोतोलरीयेसही हरायेएनकामांन अपनिफौजांसजकरो ४५
तवचेतनबोलोमुषवीरं हमसवडेमेरेवजीरं तामोकुचिंताकछु
नांहि निरनेराजकरोजगमांहि ४६ एतेपफौजांकरोतियार सुरवडेसेय
जेझुझार तवगपांनसवसुरबोलाय कहैकुकमयोचेतनराय ४७ वोति
धारगाहोछियार कर्मसेआवककरतीरार सुनतकेसुरसुमीअतिराए अत्र
मइलेमेसवसजआऐ ४८ जवमहलजागपांनवजीर केसुनटवनेसववी
र तवगपांनदेषसवंसेतन कोनकोतसुरातमञेन ४९ प्रथमसुनावेमेक
हमेवार मोहिछांजागआरीकेतीर ओरसुतोमेरीअरदास छिनमेकरुअरि

३० नकोनाम ५१ तवसुधर्मा नबोलेमुषवेन कुकमतमारजितसेन मोआगेस
नू० वआरीनामीजाय सुरदेषीजातिमीरपराग ५२ बोलोवारीत्रमालावजवंत
लिलमेकरुआरीनकोगेत फुनिविवेकबोलोबलसुर दषतसोल्लतेसआरी
कुर ५३ तवसंवेगबोलोकरितांनि आरीकुलआवकरुंघमछोएं तवजत
मबोलोसमतावि मजिखाकेगाहराव ५४ तवआरीवपुरदेकेल्लोत तमस
मसुरकेरपरस्नात बोलोवचनसंतोषरस्वाल मोलोगेवकलकंगाल ५५
धीरजकहैमतोकुंमुर पलकमेंकरुआरीनकोकुर ससकहैसवेतमेजोर
जिसोवरीकठोलकठोर ५६ उपसमकहेओनेकथकार मजिसोवेरीसर
दार दशोनकहेएकहिवार जिसोवरीसकलआतिघार ५७ आएदांनसी
सतपनाव निहश्रेविधडोनेजिनराज पारलोपालतांमअपार एहविधि नू०
सकलसफेमिरदार ५८ तेलेषांतेचवतनसुकहैफोजुतमारीईल्लवनरहे
वेतनदेषनेनतिरहार यप्लोकाज्ञतईतियाव ५९ अवमेरेसवसुरआ

नंत जावोकुरुपांनप्रमोरमीत रागकिआनंतजसेतिजनेन दषोप्रभुतमारी
सेन ६० अनेतचतुष्टआदिअपार सिनसेषतिलोनईतियार जोरिभुजटआ
तिबउवेत गालतिपारनांआवेअंत ६१ ।दोहा। कहेगपांनचेतनसुणौ रोस
करोजिनरेस एकवातसोल्लउपनी कहुंविनापरपंच ६२ कहेजीवसुनगपां
नतु केसीउपनीवात तुमतोमाल्लासुबुधिहो कहविनापरपंच ६३ कहेते
सुकमात ६४ तवेगपांनचेतनसुंकहै बोलेप्रभुसेवेन वाकरणकहोनेजा
ये गहिलावेसवबेसेन ६५ सारगाकहाविचारीमोह जिहउपरतुमचडन
हो नजोसिवकसाय जिवतसोवपकरकें ६६ कहेचेतनसुनगपांन उ
प्रतुरोपरआयके कहोएल्लकोनसयांन रहियेघरमेंबठके ६७ सुरगाह
धनपुरवाले नारोन आरीआयोघरमेंरहैकेजीत जसीहोतिसीबने ६८ कहेगपांनसुंतो
सुर नमुरुकहोतेसांचहि पविचारोकुंन जेहउपरतुमचडनहो ६९ चोपई
तवजीवकहेसुनगपांन तुमजापकहोनहिसंस्थान वहमीथ्यातपुरकोदे
नरेश जोहघरआपनेसकलहदेसा ७० जाकिसंगासुराहेअनेक आपासनी

३० वसवगादिएटेक मंत्रीसुरराग़द्वेषदेतहां ।छेनमेसवंसिम्याहरावेंतेह।७०
संबजाकेगरअटुर ।विहमसीफाईजराईफ़ेर ।विषधारोलीजासुगेह
३९ सुतजाकेसुरकषायेतेह ।७१ सेनापतिआरौद्रअनेत ।जिनकेसोअव्रतपु
रमहंत ।व्रतनामदेशजिनोबीन ।परमतादिहिद्विआयकीन ।७२ एहविधि
घेरोसबदेशजेह ।चटिआईफोजालगीतेह ।तामेनपआउअनंतजोर ।व
लजासुनपारावार ।७३ आयुधजाकेरमचक्रहाथ ।वकुधाराजासुउपाधि
साथ ।मातुतागपासविद्याअनेक ।बंधेसतरकोडाकोडीटेक ।७४ ।वालादि
कमाहकेमेस्नाव ।जिंहांलगिवसतादिरोकराव ।एहविधिअनेकहथीया
र ।कहुनामकहीतनआवेपार ।७५ यहमोहमाहाबलवंतसुर ।तुमग्याता
जोणाबलीपूर ।केसईनस्योवस्योजाय ।त्ससांयांनहीयचुकोराय ।७६ ।मा
खा ।तवबोल्योयोगपाल ।जीवतमेंसांचिकहि ।पमरेजनरमांन ।तुमकाजा ३९
नोवातयह ।७७ कहेंजीवसुनमीत ।मेवातीआपनीकहुं ।तुमधरोनीप्रीत
सुनहीवातविस्तारसो ।७८ ।चौपई ।कहेरूपमोहमोहीनृजाय ।निजसुत्री

दिनीपरणाय ।ताकीआदमोहकहुजाह ।काअनादिएहविधिजाहि ।७९
मेरीसुबुधिसबहरीलेय ।मोहतसुरतिरंचकहुनदेई ।एहकीनेंजिसिंनार
टकीस ।विविधस्वांगनाचोनीसदीस ।८० चौरासीलषनामधराय ।बीन
मेस्वर्गनर्केलेजाय ।बानमेंकरेमनुषतीर्यंच ।लषनांजादिजांकेपरपंच
८१ ।जइपुरकोमोहकीयोनरेस ।मिंत्ताल्योसबमेरोदेस ।तवमेपापकीयोएह
संघ ।मांनिमांनिअपनेरसरंग ।८२ तवमेवस्योमोहकेगाह ।तातेंसवविधिजो
नोएह ।कहुंकहांलेंवहुविस्तार ।थोरमलोबिलेफोविचार ।८३ ।सोरठा ।
तवबोल्योयोगपाल ।एहपरमारथमेंलषो ।अवतुमसुंनहोसुजांन ।एकह
मारीविनती ।८४ ।सेवकनेजोएक ।जहजामोवलवंतहे ।तारहेतुमारी
टेक ।मेरेमनएसीवसे ।८५ कहेजीवसुनग्यान ।विनाविचारोकेंकस्यो
मोहमाहाबलवोत ।ताकीपटंतरकोनहि ।८६ ।।चौपई।। कहेग्यानसुनजी
वतेरा ।तुमसमअवरनकोरहेस ।सुषसमाधिसदेशविशाल ।अनेत
मगरअतिहिविशाल ।८७ तामेनिहचस्योत्त्सनाथ ।निसदीनराजकरोहि

वु॰ तसाय सुमतिआदिपटरांणीसात सुबुधीहितमाकरुणाविख्यात ८८
निर्जरादियधारणांएक सातआदिअरुसषांअनेक बंधवजिहांधरमसे
४० धीर अब्धातमंससलवरवीर ८९ मास्थांतिरसवसेसुपास निजगुणमह
लसुषवास असराजकरातमईस सुषअनंतविलसीजगदीस ९० तुमसेप
सुरमताहिजार तिनकापारनहिकुछआर तुमअपनेपुरमांथिररहो बव
नहमांसासमरहो आपाकरऊएकजनकोय सफिसेंसवहआंगहोय
कहजावसुनहोगोंन तुमोरववतहमपरवांन ९२ हमआपातुमसोयहक
री जिहोमकुरतेंअसिसुघरी चंद्रोकुकमनेपसफिहयीआर सुरवडंसवतु
मोरजार ९३ हमतमसैंकबुअंतरनांहि तुमहमंमहमहतुममांहि जैसे
सुरजोतहतुतिधर तजसकलसुरजतुतिकर ९४ एहविधिहमतुमपरम
सनह कहितनाजिहियगुंतकोबुह ग्यानकहपनुसुनएकवन सिद्धा ४०
मांहिहितुयिअन ९५ तुमसांसबविधिहगुनतेर पअरीसेकवकुनहिज
र तांतेतुमहोजोहुसीयार जुथवउअरीमोनरयार ९६ ॥वेसरछंद॥ ग्यात

हेसान

कहविनतिसुन सांमी तुमतोसबकेअंतरजांमी कहाकहयांनकरीमेरा
र अबदेषोमरीआर ९७ वेसवउहमलाअपराधि कहिविधसेनाजायस
बसाधि मेरमनअबरजएहगांत मोपेजानतमबजवांन ९८ दोहा॥क
हेगांतेंवतनसुनो तुमसोमेरेनाथ कहाविचारोकुरखह गहिकरिएक
हाथ तबचेतनअसंकहै जीततुम्हारीहोय मारीनजावोमोहकुं रागद्वेष
अरीहोय ॥कडषाछंद॥ चेतनोगंमांनोतीरबसवीरबकुसंगले एकेमएकस
बसरसजाधए कोटिअरुसंषनांपासकांगने ग्यानकेनेदहलबलपुरा ति
प्परहिलारहिरहारनपीनेहनप अरीनदलचुरबिरदलिनो हाथहथीयारसु
नधारविस्ताखकु पिल्हीदीरनावपहमलदकीनो ९ बडतसबबीरमन
धीरअसवारहे दषीअरीदलनकांमांननजे पिषजबेतजिनेदसबदीकहे
आजपरदलनकोसहीगेजे अतिहिआनंदसेरीविरतमंगातसब आजह
मेनिजरनकोदावपायो जरुअसेकरेदेषिअरीपरहरे हाथहमदैनांमहि
नरसवायो ॥मरगछंद॥ वजदिरणजेरदलवकुपरें चेतनगुंणगावंत ॥

ब्र॰ सुरतनजोगकी तनां तोगी। अरी दलपें धावेत। ऐसे बहु सुत। ग्यांन अंकुर
आए सन्मुख ते है। अप्पा दल मंडे। अरी दल षंडे। पुरुषरतन को गहे ५
४२ विवेकनांम अंकुर को। जिनां ग्यांन बोलाय। जाय कहो वा मोह सुं। नजीक
होजाय। ६। जो कछु कुटे होब के तो तुमहि जो मो स। धिग धिग तेरे जनम कुं
जो कछु गुरा षेदु स। ७। तेरा बल जे तो बेलि ति तो कर रहु जोर। क्यां कर सब जीवेक
जिन मैं कर रहु जोर। ८। ग्यांन नजाई ज्ञांन के मैं पगाय तो हि पास। चेतन को पु
र षांडई जो जीवन की आस। ९। सोरठा। चल्यो विवेककुमार आयो राजा मो
ह पे। कह्यो वचन विस्तार न जो चाहि तो ना जीये। १०। सुंन के वचन ह तास की
यो मोह मन बल। जीन मैं कर रु कुनाथ। मैं आगे तुम हो कहा। ११। एक लिये ग्यांन
वांणि ने तुम सब की नेजर। ई तन ते लाज लो आव है। मुष हो देषा वो फेर। १२। का
ल अनंत कुका तर है। सो तुम कर हु विचार। अब तुम मैं को अति सयो जर वे ४२
कुति यार। १३। चोरासी लष स्वांग मैं कोना वत हि ना व। वादी न पुरुष तको तग
यो। मार कहो तुम साव। १४। इतने दिन लो पास के मैं तुम को न पुष्ट तातें लख

चेतन के गुन जे है मोहि सुष न देषा वकु षातमैं कर हु बेह १७ मो ह वचन ए ऐसे भवे ॥ ॥ ॥ उलर

कुल ए। गुन लो पिम ल छु ष। १५। जा कुजा कु पापी सबै। सुन के चल्यो विवेक आ
यो राजा गया ते पे। कह्यो वात सब एक। १६। वह को दिना जन हि। गहि विवेक ए कर
क। जा रख फो जो जो र के। बाल्यो कुत विवेक। १७। कुत वचन सुन के चल्यो ग्यांन
बलीन र मोहि। देषा पित पुरा लई। को उमांते नां हि। १८। लिहां सुन र तु मवे गा हि अ
व्रत पुर अभिराम। रहो अंकुर ए हो यै र के। मोटा वा को नांम। १९। चहि सेना सब गांव
की। सुरवीर बल वेत। आगे सेनापति लयो। मा हा विवेक मद हेत। २०। कर ख
हा। आयो सन्मुष न ए। मोह की फोज स्यो। नि उत्त के मने से सब सुरमा डे। दिष तव
मोह क्षति को हि मन में कीयो। शुन टहल कार र है आ पुमां डे। सुर बल वे ते मे
मंत माल मोह के तिकस। सब सल से त्रो गं आयि। घम सांत करी मोह युध क
री एक ते एक सवाए। २१। विरवी वे कल्यो धनुष ध्यान को मोर के शुसट सातोंग
राए कुमक तो मान कोसे न सब संघ यसी। मोह शुन टमुर्छा सम ए। २२। देषि
य ह युध तब मोह ना गो तिहां आय। अव्रत पुर सब सुर जोर। बांधि करी मर
अब पोरी सन्मुष न ए। तरनक सो फेर कर न हो रा। २३। चौपई। एह विधि मो

Dr. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊ दाजी

३८ है जोर सर्व सैन। स्यों अमरपुर खेमेस्थैन। करे विविध नाना प्रकार। कौ है विधि लौ अ-
मरपुर सार २६। सुनर सात जाकि दुष नर रे। तिन विलुप्यों जो कस्यौ कौ लरे। जो होत
४२ विषुर रथ मोन। तौ लिते अमरपुर थान। २७ जो सब वचन मोहनरूप कहि। राग द्वेष
ते अति उर दहे। हलाह तुम ऐसी को कहे। एक हमारी सिष्या लहे। २८ सुनर
तुम्हारे हैं बहु विर। तिन में जो मोसा है सधिर। जिनको आग्या प्रनु है दए। एह वि-
धि में अमरपुर लहे। २९ तब मोहनरूप विराधेर। कोन सुन रस्या आग्या कुलेरं। तब
बोले अप्रसाधान। में जितं स्मर बके हलांन। ३०। कहै मोहनरूप को है विधि चार मो-
हं बतावो साहसधीर। बोले अप्रसाधान प्रकार। सुत अब तुम री अरदास। ३१
में अमरपुर सेवी पुजात। चेतन गंगा नवेसतिह गान। संघ ते ईस बक्ष्य पर लोक ना-
ना विध प्रकासौ नोग। ३२ व्रत के तप सम वदक ताव। षट तप सम व सुनैह लषाव
ई तनके थिर ताव कक कहु नहि। ज्ञान सम कांत ज्ञीन भीष्या मांहि। जाय कए कमा- ४२
ह तै जोर। पद्ह्ली त्रगरे नाम कुजोर। तो तो देष्यो में का करुं। व्रत के नाव सर्व षाइ-
रो ३४ अव्रत में उपसम ह्वै जाय। जाय करै पाप सु समन लाय। जव यह भगव-

हो यक्ष्मा। जित जेउ तब हिस रवेगा। ३६। एह विधि जी तेु परह जाय। जो मांहि
आग्या दिजे राय। तब मोहनरूप चित्त स्याहि। एह तो बात नालि हुइन कहि। ३७। सिद्ध
करो हो प्रसाधान। जेले सुर एसं घजे बलवान। एह विधि आये पुर के मांहि। गंग-
न वितान को उजांने तांहि। ३८ निज विद्या परकास्यहि। नाना विध को थ्या दिकल-
हि। ताकें न दया ने कप्रकार। को लों कहिये बहु विस्तार। ३९। दोहा। एह विधि
संघ लिसि नेह। आयो अप्रसाधान। अमरपुर में वेत के। केर अ सतन की होए। ४०
ताकें पीछें मोहनरूप। आयो सबदल जोर। मोह अ गुन तस्यं गसु रले। चढ्यो सुभम-
शार ४१ कुमन जासु बोत्राय के। मोह कहे यह बात। तुम सुधि लावो बिगाइ कहुं
शुनर देसात। ४२ कुमनष वसुपल कहे ई। वे सुद्धि सत जनयास। कहुं विद्या कर-
ज्ञई हो। जो बल सहै प्रकास। ४३ मोह करे विद्या विविध। राग द्वेष ले संग। ईन में
कहु जीय तन नए। कहुं रहे मुद्धि तं अंग। ४४। सुमन जासु सबपांलप कहि मोह कर
बात कहा रहे तुम खेत के। वह सुनर ज्ञांवाए सात। ४५ जो वे सात ए कहे जय जो
तुम सुन लि बात। चेतन के सब सुनर को। करहेप लेक में घात। ४६ अरु मो

३०
रफौजंजोरकै। आयोकरी अभिमान तुमहो अपनाथके। ष्वरपरावोग्यांन
४७ तबग्यांननिजनाथने। तेजोसमकितवेग। कहौवधाईज्ञानकी। अरुई द
४२
बहुरीतहवेग ४८ बहुरी मनलेवेहुषसव। आयेपुरकेमांहि। जरयेकी मनसा
कर। नामानकीबुधनांहि ४९ एहविधिसमकुनावसव। कहिजीवसेंजायसुम
नकेषवलपवंर अति। चलातुवेतनराय ५० मोहासुनरअतिमकवंतअति
चढोआकरटकदलजोर। गुनअनंतसवसंगले। कर्मदहनकीओर ५१ आपमन
सवग्यांनके। कीनोएकविचार। अवकेंजुधअसोकरो। बहुरीनांवेसंगमार
५२ चेरसुनरसवदुधके। सुरवीरवलवंत। आएअंतरस्नभीमे चेतनदलसुभ
नंत। सोरठा। रोपीमाहारणथीन। चेतनधर्मसुधीनको। दिषतहिआरणगतअ
चेत। मांनहमोहकीफोजको ५३ दोहा। दोउदलसनमुषनए। मचीमहासंग्रा
म। ईतचेतनजोधावलि। ईतमोहअतिरांम ५४ कडषा छंद। जीवकीफोजसुभ
बलगोलाचले। मोहकेदलनको आपमारे। अत्रवैराग्यतातावबहुतावताती
हिसुतिनामएसोविचारे ५५ बहुरफुनिजोरकरीअतिहिष्यनघोरकरी मो
हरूपचेद्रबानवलावे। दोषषटआयतनअ ३

तिहिउपजायघन। जीवकीफोजेंसनमुषगावे ५९ दंसणकीफोजतेंबांनघम
सांनके गाजतेवाजतेंचवोमांहे। मोहकीफोजकोमारीहजकोनकरी। हियतुपा
धेनकोनावकाहे ६० अष्टमदगाजनकेहजकेहजकारहे। मोहकेसुभटसव
धसतसुरे। एकतेएकजोधामाहातिउंते। अवहीवसवंतमयमन्तपुरे ६१ जीव
कीफोजेंससपरतितके। गाजतेकपुंसबकुधसतमांते। मारिकेमोहकीफो
जकोंपतकमेकरतयमसांतमयमतअंते ६२ मारगोछिसंवसुभटकोजेन
चाविधायविनुकाईकुदहतनमांहि। एकतेएकजोधादोदजतेमकहुतकहु
आपमावनतनोंहि ६३ समजेअसुभटपदहेभुर्छितनए। मोहनमंत्रकरीस
वेजीवाए। आएएहुजुधमोहितिनकुवजरुदनकरी। जीवकीजितपीछेह
गाए ६४ मिश्रसास्वादनहोयेपरसीमिथ्यातमांहि। उमांकेबहुरअत्रतहि
आयो। मारयुमसांनअवमांनषोपतरत। सातमिएकंडयोनपायो ६५ सो
रठा। एहविधिचेतनराय। युधकरतहमोहसो। आरसुनोहोअधिकाय आ
वपरपरतिडतहे ६६ मरहटा छंद। रणसंगहिवजतहिकोजनोनतहिक

३० रहि माहि होउ जुध ॥ इन जीव ही कौ रे निज परवार करे हि अरि नि कौ जुध ७
तमोह बलावि सब दल धा वे विदन करे आज ॥ एह विधि होउ दल मे कहे न
४४ हि पतन करे हि अनेक ई लाज ॥ चौपई ॥ मोह सराग नाव के बान मोर षेव
जीव कौ तान ॥ जिव वीतराग निज धाय मोर धनुष बान एहलाय ६७ तवे
मोहरूप षड राग षहार मोर पाप पुन दोउ धार ॥ हंस शुद्ध वेद निज रूप ए
हषड राग मोर आरी रूप ६८ मोह वक्र के अरा सलधान ॥ मोर चेतन को पहि चा
नि जीव सुधं न धर्म कौ चोट ॥ आपवसाय पर चोट ६९ मोह रूड व रसा गहि
लेह चितनसन्मुष धाव जुदेय ॥ हंस दयाल नाव की ढाल निज हि वसायक
रपरकार ७० मोह अविवेक गदहजमदाह ॥ धावक स्वेतन परकाट चेतन
ले ज मध रसु विवेक ॥ मारी हरी वैरन की टेक ७१ चेतन ष्यायक ब्रूपधोरा वे
री मार के रघमसान ॥ अवस्था ष्यान सहित नए ॥ मोहकार पिंडे लगनए ७२ ४५
जिसो चेतनन यो आनंद ॥ वाजे सुरवा जे सुष कंद ॥ आए मले वृत के पुर लोक
दरी सवति माआदि सं योग ७३ व्रतिक्र तिमा दुजो नाव त्रिजो मले सामायक

राव ॥ पोसो व्रत चोथो बलवंत ॥ सागव वित पंचमो महंत ७४ षष्ठमो व्रत लच्ह
यं दिनराय ॥ सप्तमनी सो दीन कहाय ॥ अष्टमो पापारंभ निवार ॥ नवमो दशमो *
परीग्रह परीहार ७५ किंचीत आदि परम वधान ॥ मा ह अनुवुधि गुन रत नि
धान ॥ द्वादश पाप रहित उपदेश ॥ एकादश मन वचन तजि नेस जु ॥ प्रासुक ले
आहार सुजान ॥ उदंड विहारी कहिये ज्ञान ॥ एकादशमो न्हपउतंग ॥ आयमले
श्रावक के रूप ७७ चेतन सब सु करे जोहार ॥ परम धरम धन धारन धार ॥ नि
ज बल हड्डा करे आनंद ॥ परम दयाल सुष को कंद ७८ ॥ दोहा ॥ एह विधि चेत
न जित के आये व्रत पुर मांहि ॥ आप आपनी जिनदेव की निकविरिधि तांहि ७९
तिहां जिहां वनि का जेत कीनेम व विधि आय ॥ अनंता वेरा गता सुनो हि
त चित मन लाय ८० ॥ अथ ढाल ॥ पंचमा निवृत मन धरो ॥ सुन जिनिरो ॥
डांडि अल्हवास ॥ आतुस नर्या निश १ एदेशी ॥ पंच महाव्रत मन धरो ए देशी
ते मीष्यात दशा विषे म० कीने पाप अनेक आज म० ने अंतें तें कोय म०
राग द्वेष परसंग श्री० ८१ ग्यान ने कुं तो कुं नहीं सु० तत्व कीते व कुपाप श्री०

ब्र॰ ते आपुपतो कुंदेय सु॰ जेसु के अबदाव ऊ॰ ते अवसर में जे कोय सु॰ ऊतवि
नाबहुपाप ऊ॰ ॥ देशव्रत जे पत्रमो सु॰ थावर हंसा जो गि ऊ॰ कोय कर्म ते ऊ
६५ तिघने सु॰ ॥ कंतु नभ सविनु जाय ऊ॰ मोहमाहा ही तासे कीयो सु॰ ति सोकु दुष
देय ऊ॰ ८५ ॥ जिहां जिहां माही तिवारी ये सु॰ सुरति पायो ऊ आनंद ऊ॰ मन व
च काया योग से सु॰ ति को अबहु कर्म ऊ॰ तिनो भता विन को मरे सु॰ जो सु
संयम आदरे सु॰ कर तपस्या ऊ तिहां रहा ऊ॰ ८७ तो सब कर्म षपाय के सु॰ पा
वे परमानंद ऊ॰ एवं बांये कर्म ते सु॰ सब बडी न मेष पी जाय ऊ॰ एह विधि भा
वना भावतो सु॰ आयो अति वेराग ऊ॰ ८८ ॥ दोहा ॥ जीव चहे संयम गहु
मोह जेतन हि देय बेगा आगे रोक के परम तपुर में जाय १ कुरट पसा षा
त को कर के आगे वान बेग घोरा रोक के मोह महा सुअगपान २ केई सु
चाकर जोर जे नेह प्रात विद्धी पजाय ते चतन के दल न में निश्चदी न रह
लोकाय ३ कबहु प्रात हाथि कहु कबहु रहीप जाय एह विधि से नामाह ३५
की रहे सुई छद लमाहि ४ ॥ चौपई ॥ मोह सकल दल सु परवार आय ऊ रे से

घ जो परीवार चेतन देश आविरत पुरमांहि आगे पाय धरे क कुं नांहि ५ मोह
कीये परपंच अनेक गहि बेग नुहो हो टेक जो चेतन आवे पुरमांहि ताप
बुंग कीनिज पाहि ६ बंध शिनिकस न छीन एक द्रदु उरिम आति वार ली
जलेद्रुं एह चेतन मासुं युध करे जो आवे भव के करतार ७ तो फरी या को ओ
सो करो सुध बुध सकति सब हरो एह बीध माह द गा की वात स्वनो कर अन
क विष्यात ८ सुमन बबर सब जी मे कुंदेय एक वात सुनो षत नेय भाद र
च कंदा बहु जाल तुम जिन नेहु दीन दयाल ९ अब के पकेर गो तो हि तो
फरी दोस नहि जो माहि सब सीष ना पतु मदई जेसी कछु द की गात नई १०
तबदेस एह पुरको पंच चलो तु घमा हा निग्रेश्य अप्रमत पुर को जहूं रा
ह जिहे मारग पथ कछु साह ११ रोक आय जे पसा षान जय करे विनु द
ऊनो ज्ञान चेतन के ऊ जा यो सब दुर छिन में मारी थिक दे व कछु र १२ तबजो
रना नाविय कर चेतन सन्मुष हाय के लरे चेतना आ नय न तुप कर लेय मु

त्रै॰ ठितकरआगेपगदेय १३ गिरोजुप्रसाषांनकुमार चेतनपडुच्यो सतमधा
र मोहकहिदेषकुरेजोर अतोकीयेजातहिजोर १४ पकरोकुकुसहदोरीकु
४६ जाय जाबोकुपकरीबेगमोदीपाहि कुंसोधर्मभगवरवार विकथाकुसरोव
चनछिवीर १५ निद्राविषयकषायसुपंच पकरीदंडालिआयेपंच चेतन
देषोहकूकहोसबई मोहपकरीलेआयेदई १६ एहपरमतदेकहेसहि मोकु
समनओनेतुकहि अबकछुओसोकीजेकाज जिसोहोयअपरमतराज १
७ अराईसमुलगुनधरे बारहभेदतपसाकरे सहपरीसाविसअरुदोय
उजेतेटपालेमुनिसोय १८ एहविधिलेअबमतआय तबमोहनिजदासप
ठाय पकरीमेगाविकरवेकुमाहि तवदेषाचितेनिजमांन १९ एतोमोहक
रवकुजोर मोकुरहनदेवकुऔर तबयाकोमैलीष्टतकरो अप्रमतमे ४६
तवपगधरो २० तवदेषोथारताअभ्यास कीनिधानअगानप्रकास जारोस
कतिमोहकोदई मोहाजोरतेनिरबलभई २१ देसलघोनिजबलपरकास

7

कीनोअप्रमतपुरमोवास शुनरतीनमोहकेटरे अरुप्रमादसबेअपदे
२२ तजोलाकोरविकारविलास प्रथमकरनकीनोअभ्यास सत्तमपुरके
अंतअनुप करेकरणएकधारीचसरूप २३ अबसंयमोहदललेई पेकछुजे
रवेलेनहिजोई अबजीयअष्टमपरपगधरे मोहसंगगुपतिअनुसरे २४
करेकरनेचेतनईहगाय कुंजीकहोअपुरवबताय जेकबहुनहिआव
पधोन तईहांपगटेअष्टमथांन २५ अबचेतननोमेपुरआय जोमेथिरता
बहुतकराय पुरवलाबवलिहिजेकहि तईयांनकहाजेनाहि २६ एहविध
करणतिसरोकरो तबमोहमनचिंताधरे यहतोजीतिशिवपुरजाय
मेरोजोरनाकछुनसाय २७ मोहसेनासबजोरके कीनोएकविचा
र परगटजनएबनेनहि यहमोहनिरधार २८ तातेशुक्षमटुकायके त्सम
रहोपुरकेमाहि जोकछुआवेदावमे तोतुमतजीयोनाहि २९ हमकुसक
तिलोपायके रहुंदुरलोजाय जोजीवततबदीकहे तोतुमलिहिआय ३०
नगरतामतुपशांतपुर तिहंजोमेरोजोर जोआवेमोहिदावमे तोमकरी

श्री ऊंतोर ३१ तुमहोसबजनदोरके आयमेलेहोयाय तबएहेसकोपकर
के देहांनलिसजाय ३२ यहविचारसबसेनमें कीनोमोहदोर३३ रहेगुप
४० तिदविदविसेव करीकरीउपसमनेतेसु ३४ चौपई चेतनचरसचलाई
चहुंओर पकेरमुहमोहकेन्चोर जनसतिसगंहेतनकाल मुहिसकरी
चालोदीनदयाल ३५ सुदमसांपरायकेदेश आयकीयोचेतनाप्रवेश
तिहंथांनकाएकलोनकुमार जितिकीयोमुहिसनिवार ३६ आगपानि
गांकितथेरे अबवेरीमोधोकराजरे मजिसोसबकर्मकेगेर एहविधयरो
निरोकीतजोर ३७ जोउपशांतमोहकेदेश तिहमांहिकीनोपरवेश तो
वेमोहजोरनिजकेर चेततपकरीउलटीईतगेर ३८ आयेसुनटमोह
केदोर मुहितहिपरहेतलेोर पकरीदेगामीथ्यातपुरमांहि जायोकुर
सेवगाहहोंहि ३९ ईहांनकछुनिदचाएहवात उत्कृष्टकहियेविथ्यात औ ४७
रथांनकहेवकुजिहां चेतनआयवसतहेतिहां ४० उपसमसमकीतजो
कहाय मिथ्यातरहीउत्रावेसोय षाईकसमकवंतकहाय उपसमसमकीतजो

सहिलीय ४१ तबदेरवोयेपुरजोआय गिरेतोरहेईहांवहराय ओरथां
नकउपसमसमांहि दोउसमकवंतजोरहे ४२ अबमीथ्यापुरमेंउपदे
य मोहबलिविसतकोजोय नानाविधसंकटअणांन सहेपरीसायप
गुनचोन ४३ पंचमिथ्यातनेरविस्तार कहेतनसुरगुरपावेपार साथिमि
थ्यातनामजीवलहे ताकेनदेकोंएहुषसहे ४४ जोउपजोसेचेतनरोम
कजांनेकेवलीउपधोम कहितनजहियेपारएवार दुषसमुद्रअतिअ
मच्यपार एहविधिसहेकर्मकीमार अबचेतनजिउकरेसमार दृव्य
देत्रकालभवसाव पंचमलिसबबलोदाव ४५ दूहा ध्यांनसुधिरताए
षके मनमेंसांकिरेविचार संगतईनकीसामीये जेतुमथीलायसार ४६ ॥
ढालचेतनमनसमझाईरे ॥ एदेशी ॥ मथ्यामिथ्यातअगसोचसतताईरे तिसे
ससनिवार चे० क्रोधमांनमायालोभ० लागसवेपरीताग चे० ४८ कुगी
हेयहसंपदा म० कुटांसबपरीवार चे० कुवीरकायाकारमीम० जुगोईनसो
नेह चे० ४७ एहहीनमेंचपतेमटे म० तेअवनासीआल चे० कालअनंतकु

ब्र॰ दुषदाय म॰ दूहमोहअग्यान चे॰४८ सोतिनरकमेंदुंषसोम॰ वारअनंतिवा
र्यचि॰ ताकोवेदनाकोकहे म॰ जांतेश्रीजिनराय चे॰४९ जोताकुंसमरनके
४९ कुंम॰ आवैस्वकमात्रेचे॰ ताकोबहुसंसारमें म॰ हुंनेविधिसुषसेव चे॰
९॰ कोकहेकथानिगोदकीम॰ ताकोदुषनहिंपार चे॰ कालअनंतोतेंमहा
म॰ दुषअनंतिवारचे॰५१ दिवआयुफुनिसंधस्यो म॰ तामेंदुषअनेक चे॰
लोत्तमालदुषदेजिहांम॰ आटविरहदुषहायचे॰५२ दुषमाहाबलमोन
सीम॰ दुषिचमविनतिचे॰ तिर्याचगतिमेतफासोम॰ संकटसदेअने
कचे॰५३ अविवेककरीयाकरीम॰ बांधेपापअनेक चे॰ नरदेहीपाईकउ
म॰ सेयपंचमिथ्यात चे॰५४ कहुकारजकोनसरयो म॰ जनमगमायो
आलचे॰ हमनहमनसंसारमेंम॰ कबहुनांपायोसुषचे॰५५ अब
केजोताकुंलईम॰ कहुआतमपरतीतचे॰ धारीलेहानिजसंपदाम॰
दर्शनग्यानचारीत्रम॰५५ गोरसकलहमजालहैम॰ तलएकछिकि ४९
काजचे॰ सुषअनंतयामेंवसेम॰ निजआतमअवधारि चे॰ सियसमान
सुदंदहे म॰ निहश्चेइहविनिहारचे॰ एहविधआतमसंपदा म॰ जहकारीआ
तमकाज चे॰५६ ॥दोहा॥ एहविधिनावसोनावतो पायोपरमानंद सम्यकद
र्शनसोहांमनो जलोसुआतमचंद ५७ धायकनावधगटतए माहासुनट
वलवंत कोनोजितहोबिनएकमें सुभटसातकोअंत ५८ माहतकेनिरख
लनए अबकेकवूविपरीत मिरहस्तटसिथलनए लोभनकोजीत ५९॥
चेतनध्यानककांनते मोरधायकवान मुंहमोहछीपतोफीरे ग्यानकेरेय
मसांन ६० दिशावतहरमोचडो चेतनदलपरचंड आग्याश्रीजिनदेवकर
पालेसदाअषंड ६१ ॥सोरठा॥ मोहनयावलहीन छिप्पोरजितितरहे चे
ततमहापवित्र सावधानकेवलतहे ६२ अथमतपुरमांही चेतनआन्रो
हांधमांन शुनटतिनओरहरे फुनिवारित्रवधमंत करणकीयेसतमपुरे॥
॥ नजिआहारविहारविधि आसनदिरहेराव छिनरसषाधिरताव

Dr. BHAU DAJI

३॰ है। योंबोलेजिनराव ६५ अबपूरबकरणमें आयोचेतनराय कीयोकरण
दुजोतहां आगेंकोपगदेय ६६ आयोदशमेपुरविषे चेतनमाहसचेत सु
४९ नहुएकईसहंदहसो तवकपांनसुथिदत ६७ सावधानव्हेनाथहा रहियोइ
ग्यारमांठाय दशमांमोहकेजोरहे तुमजिनजानहोंओर ६८ पहिलेखताजुतुम
लही सोयानकथहआदि तातेमेंविनतीकरूं प्रभुतलीजिनजाउ ६९ तव
चेतनकहेंग्यानसुनि अबपदपयनलेघ चलतुंलेथियेंवांचलो आगेंथा
सोदेय ७० कहेबकुलसंतपसो ईनविधिएगुनथान पुरववरननविधि
सवे समफिलेहुगुनथान ७१ जोफिरावववर्णनकरे तोलगेपुनगतदोष
तातेथोरेमेकहु मोहगुननकोकोष ७२ पद्धडीछंद जहंचेतनकरेसव
कर्मषीन उपसांतमोहपुरतलेयलीन आयोवादशमछीनकंतसवमो ४५
हकर्मषेअनंत ७३ जथाख्यातप्रगटोअनुप सुषमयसवसंवेदनिजस्वरुप
जहंआदम्यानपुरणप्रकास केवलफुनिआयोनिकटतास ७४ जोछिन

मोहपुरसगरनोम तिहंथोंनिकविलसेनिजसथांम अबअंतरायकर्मक
रयअंत षोडशसवप्रकृतिषपायतंत ७५ जहंघातीयाचारोंकर्मनास
लोकालोकप्रतक्षभास प्रगटोप्रभुकेवलपरगास जिंहंअनंतगुनकोनि
वास ७६ प्रगटीनिजसंपतिसविपतछि विनसीकुजकरमअग्यांन
आदि प्रगटोदर्संग्यांनअनंतओर प्रगटोफुनिदर्शनअनंतसोर ७७
प्रगट्योबलहंवीर्यअनंतजोर प्रगटोसुषसकलअनंतफोर तहांदोष
अगाशहगएनाम प्रभुलोकरणत्रिलोकराज ७८ सवेईदृआयसेवहि
त्रिकाल प्रभुजेजेजीवनदयाल तहांकरतअष्टप्रतिहारदेव विधना
वसहितनितनविकसेव ७९ प्रभुदेवमाहाउपदेशओन तिहिंसुन
तलहतनविपरमचेन इमजनमजरादुषनासहोय प्रनविधादईयत।
ईसोय ८० ईनविधिसंयोगपुरराजयोग प्रभुकरतअनंतविलासभोग नवक
मविारनहितजहिसंग लोगरहेसर्व। थितिबंधअंग ८१ प्रभुसुकलध्यांन

श्री॰ अरु टलि होय॥ अंतरिक्ष विराजत भगवंतसोई॥ तिहां आसन तहि रहिये एक
५१ पदमासन कैं काउसग्ग टिक॥ ८२॥ चतुरगति दिन रहि कदाचिन्न स॥ ताकर
मकर तहकों नधर्म॥ लईलईफरत ई हि लोकमांहि॥ ८३॥ जिहां जिहां थां नि
कस्यों बंध आदि॥ किहां राषहि थिर करू लेव लंत॥ करू वानी षरेक करू मोनि
हंत॥ करूं समोसरण करूं अंकुर टलि होय॥ करूं चतुर टल तज प्रवोन लोय॥ ८४॥
इहविधि एक कर्म करत जोइ॥ नाहि तां नहि तसि वहरे फरे आर॥ एते परतिबीत
कहे वषां नि॥ मोनै जरी जिवरी की समान॥ ८५॥ तत समय समय में आय
आय चेतन परदेशन थिति तिधाय॥ फरूं एक समय मांहि करत साग॥ जिर
होन देतन हि कुतिय ताग॥ ८६॥ तउ श्रुत टपव्यासी लगि रहंत॥ निज रथां नि
कलि तु वल करत॥ चेतन्न परदेश न घात होय॥ ता सिं जगि पुजि जिनेश हो
य॥ ८७॥ दोहा॥ चेतन श्री संयोग पुर इह विधि वीजस रहत॥ अब विकु कर मन न ५१
दरन को मंगल एक अलाज॥ ८८॥ श्री अजोग पुर देशनि चेतन करि पर वेश॥

जोग हरन मु कर्म को॥ तजि के योग कलेश॥ ८९॥ तबे सु वेदनी कर्म नै॥ दिनो र
सनि ज आय॥ डुकु मं एक वगट नई॥ जां त श्री जिन राज॥ ९०॥ हंस सयां नो जगत
मे॥ कीनो लघु थिति मांहि॥ दरके च्यारों कर्म को॥ सथा शिवपुर मांहि॥ ९१॥ तिहां
अनंत सुष सों सवसो॥ विलसै चेतन राय॥ निराकार निर्मल नयो॥ त्रिभुवन मुकट
कहाय॥ ९२॥ चौपई॥ अविचल अमवसि शिवरूप॥ अष्ट गुणातम सिद्ध सरूप॥
चर्म देह परमा तपरदेश॥ किंचीत उनो थिति वानु लेस॥ ९३॥ पुरुषाकार निरं
जन रूप॥ काल अनंत ध्रुव विश्राम॥ नो कदाचित कव करू होय॥ सुष अनंत
विलसै नित सोय॥ ९४॥ लोकालोक प्रगट सब वेद॥ षटद्रव्य परजाय सभेद॥
गयाकार सकल प्रतिभास॥ सहजे स्वरूप अंनत विलास॥ ९५॥ अष्ट गुन हां नि र
हु परतमे चेतन शुद्ध स्वभाव हीरमे॥ उतपति विष व्यय वन जास॥ ईहिवि
धि थिति सर्व सिवरासि॥ जगत जीत जिंहां विरद प्रवीन॥ पायो शिवगढ रतन
निधान॥ गुण अनंत कहिये कीत नाम॥ एविधि तिहे आतमराम॥ ९६॥ जिन प्रति
मा जग मां जिहां होय॥ सिथ तिसो ना दिरष देसो ताय॥ सिद्ध समान निहार कुआप

ब्र० जौलों मिटत दिसै कछु संताप ९८ निश्चै दिष्टि देष्यै घट मांहि सिद्ध अरु या मै फेरु
कछु नांहि एसो वकर्म दो द्विज इस्यो ग तुने या चेतन सरवंग ९९ ग्यानदर्श
५२ न चारित्र नंदार तु शिव नायक तु शिव सार तु शिव कर्म जीतो सब कोय तेरी
महिमा वरनै कोय १०० ॥ दोहा ॥ गुन अनंत या दर्व के किहि विधि कहै बषा
न यों रेमै कछु वरणए नवि कलै दो पहिचांनि १ इह जिनवांनि उदधि सम क
विमति अंजुलि मात्र तिते दिक छू संग्रहै जाते दोनि जपात्र २ जिनवांनि जि
हां जीय लषि अंगिनि निज घट मांहि तहि प्रानि शिव सुष लहै पा निंधौ को नांहि
३ चेतन अरु अद्द कर्म को कह्यो चरित्र प्रकास सुनत परम सुष पाईये कहि
नेगो तिहास ४ संवत सतरै छत्तीस के जेष्ट सुदि सप्तमी आदि भा गुरुवार सो हो
मनो स्वनाक हि अनादि ५ ॥ इति चेतन कर्म चरित्र विवाद संपूर्णं ॥ अ
थ अक्षर बत्तीसी लीष्यते ॥ दोहा ॥ ॐकार अपार गुन पार लहै कोय सो सब ५२
अक्षर आदि है व नमत हासी होय १ ॥ एस व अक्षर जीय छतिसि हाक
ह तहै ॥ चोपई ॥ कका कहै करन वस कीजे कनक कामनी दिष्टि न दीजे

करके ध्यांन निरंजन गहिजे केवल पद इहि विधि सो लहिये १ षषा कहै षवर
मुनि जीव षवरदार रहो सदीव षोटे फंद रचे अरि जाल पिसए कज्जिन न्न लहि
वहि ष्याल २ गगा कहै ग्यांन अरु ध्यांन गहि के थिर कुल न गवांन गुन अनंत
गरिहत न काल गिरके जाहि मिथ्यात भजाल ३ घघा कहै सुघरि पहिचांन
घने दीन न एकि रत अयांन घर अपने आवो गुनवंत घनों कर्म तुहो अरु अंत
४ नना कहै न न सुलषीये नित दरव आहार परषीये निज के गुन निज मंग
हिलीजे नीरविकल्प आतम रस पीजे ५ चचा कहै चरचि गुन गहिये चि
न मुरति शिव समनर लहिये चंचल मन कीजे थिर आनि चेतन सो ष सुगुरु
की मांनि ६ छछा कहै छोडि जग जाल छहो काय जीव न प्रतिपाल छोडि
अग पांत ना व को वंग छोडि आपने गुन लषि सरवंग ७ जजा कहै मिथ्या म
त जीत जिन धरम की गहो परतीत जिनसों जीव जोग तत काल जग न तु बंध
हाय शिवराज ७ झझा कहै झु वि परवीर झुलै चेतन साह्स धीर झुलो हैय
ह कर्म सरीर झीलो रहम गन तृस्ना नीर ८ ञञा कहै निरंजन नेन निश्चै

द्रुम
सुध विराजे आन । निज तत्व के परमेन न हिताय । निरावर्न वरहु जिनराय १०
५२ टटा कहे टेव निज गहिये । टक के थिर अनुनो पद लहिये । टिकि न नहि जे
अरि के ताय । दुसु दुक सुष को यह उपाय ११ ठठा कहे ठाठ ठग पाए ठग
तठग त अक्षक के कर आए । ठग को साग तलं जलदी जे । ठाकुर ह्वै के लय सु
षलीजे १२ डडा कहे डंक विष जैसो । डसो सुष गमो विष तैसो । डसो विष
गुरु मंत्र सुनायो । उरस बसा गिम नस मफायो १३ ढढा कहे ढील न व की
जे । ढहिर चेतन गुन लीजे । ढिग से रहे ग्यान अनंत । ढके मिथ्या तताहि करु
अंत १४ दोहा णणा अक्षर जे लषे तई अक्षर लेण । जे अक्षर देष्यत
ही तई लेण अलेण १५ चौपई तता कहे तत्व निज काज । ताके गहे
हाय शिवराज । ताको अनुनो कीजे हंस । तावेदन के तिमिर विध्वंस १
६ थथा कहे ईधन को रूप । थंतन कीजे मन सचि रूप । थाके हि सकल क ५२
र्म केस ग । थिरता सुष तहां होई अभंग १७ ददा कहे पर गुन को दान
दीने थिरता लहे निधान । दया के सुदया ज लहिये । दया सिरोमनी क

हिये सोई १७ धधा कहे धर्म को ध्यान । धरि चेतन तनु उगुल गध्यान । धवल परम
पद प्रापत होय । अफ वलो अरहत हे नो हि मोय १८ नना न व तत्व सोहि
न्ह । निस घ लिर है ग्यान के चिन्ह । निसदिन ताके गुन अवधारि । निर्मल होय
कर्म अघ टारि १९ पपा कहे परम पद ईष । परापित है चेतन निज दिष्ट । व
लि नासम व लो का लोक । पूरन होय सकल सुष थोक २० फफा कहे फिर कु
की तहंस । फोरि फिरि मिलन निरना हंस । फंद सकल अरि करस कचूर फे
रि सकति निज आनंद पूर २१ बबा कहे अलसु निविर । वरवि विचित्र तुम प
रम गंभिर । बोधबीज लहि ये अभिराम । विधसों कीजे आतम काम २२
भभा कहे भरम के संग । भूल रहे चेतन सरवंग । भाव अग्यान वहे करि
दूर । भेद ग्यान परगट लहे भूरि २३ ममा कहे मोह की चाल । मेटि सकल पर
पर फाल । मांन कुसदा जिनेस्वर वेन । मिटै मन कुसु धाते अन २४ यया
कहे पैला धरम गाहे । योचेतन पंच मग लिलहि । जो न कुस कहे अप रस परसे
द । ईहजा ना नके कर्मनि षेद २५ ररा कहे रोम सुनि चेन । अपने गुन तजि परसे

बु॰ न॥ थिरसिद्धगुणरिद्धि तत्काल रतनत्रयजुत बीजक्रिया भिराज १९ लखकें दे
५३ खबेकुं निजरूप लोक अवसमब्रह्मसरूप जानहि हिय दर्शन अवधारि लीन
करत परतीत लिवार २०॥सोरठा॥ ववाबालवेल सुनो सनो निपुणनर
कहा करत तत्त्व सेल आये नर नापायकें २१॥दोहा॥ समासिद्धआदेस
सुनि हो चेतनराय सकल परिग्रह त्यागकें साधो आतमकाज २२ अबधी
टिहृदए बिलकमां हिथिरजांहि थीरस्यात मसंपदा थीरत्या रसांहि
२३ कृपा सज्जन अपने हृदय हिं गोविपथ करकुं विचार हिंसक सब सा
सवतो सस सर्व निरधार २४ लखकें देहीत सी पमद हंसवन्यो देदार
दूरहि ढिलमेकर्मकों यहबंटग्रीवराव २४ हत्याहाय कंपं थरवहि दे
कीजे सबकर्म हरणएक से वसीयेसा हो देवसिधसुषधसे २५ यहअंतर
बतीसका स्वीतगासिदास बालख्याल कीलोक कहु लहि आतम परगास ५२
२६॥इतिश्री अंतर बत्तीसी संपूर्णं॥ अथ परमसमकितपचीसी॥दोहा॥
पंचपरमपद प्रणामके परमपुरुष आराध कहुं सुकछु संतेप सु केवल त्र

त्म समाधि १ सकलदेवमेंदेवयहु सकलसिद्धमेंसिद्ध सकलसाधमयसाधएह
पेषनिजातमरिद्ध २ सारविभ्रममोहके सारजगतमझार सारतिनकेतुमपरे सा
रेगुनहिविचार ३॥सोरठा॥ पीरहोकुंसूजांन पीरेकाहेकेरहे परितुमविनुग्या
न पीरेस्प्रीतकरी ४ विमलनिजरूपमांनि विमलआनंदतुग्यांनमें विम
लजगतमेजानि विमलसमतातेभयो ५ उजरेभावअग्यान उजरेजि
होतेबंधते उजरेनिरखेंनांन उजरेचारकुगतिनाथें ६ समिरकुआतमरा
म जिहांसमरेसिद्धहोतहे सुमरहिभावअग्यान सुमरनसेतुमहोतहो ७ दो
हा॥ मेंनकांमजीतोवली मेनकांमरसलीन मेंकांमअपनोकीयो मेंनर न
कांमआधीन ८ मेंनासेतुमक्यों नयो मेनासेसिद्धहोय मेंनाहिवाग्यांनमें मे
नरूपनिजजोय ९ जोगीसोइजांनीये बसेसंयोगीगेह सोइजोगीजगमें
सबजोगीसीरतेह १० तारीपीतुमनूतिकें तारीतनरसलीन तारीषोजकुग्या
नकी तारीपतिपरवीन ११ जिनचूलकुंतुमनरममें जिनचूलकुंजिनध
र्म जिहिचूलेतुमचूलहो जिनसासनकोमर्म १२ फिरेबहुतसंसारमें फि

ब्रल२ रफिरथाकेनांही फिरेजबैनिजसरूपकौं फिरैचिहुंगतिमांहि १३ हरिषावत्तहेउ
॥५४॥ बावरे हरीतोहिमतकौन हरिस्नजेआपोतजे हरिरीतसुषहोन १४ आ
ब्र॥ जैनीजानेजैननै जजीनजांनिजैन जैजेजैनिजैनजन जांनैनिजनिज
नैण १५ परमारथपरसेनही परमाथनिजपास परमारथपरचैविना आ
नीरहेनदास १६ परमारथजानेपरम परनांहीजांनैभेद परमारथनिजपरष
वो दर्शनग्यानअभेद १७ परमारथनिजजानिवो यहपरमकोराज परमारथ
जांनेनही कहोपरमकीहकाज १८ आपुपराएवसिपरे आपाडारोषोय आ
पुआपजांनेनही आपअगटकोहोय १९ सबसुषसांचेमेंवसे सांचोहेसब
रुव सांचोरुवबहायकें चलजगतसरूव २० जिनकीमहीमाजेलषे तेजि
नहोहिनदान जिनवांनीयोंकहतहे जिनजांनकुंकेवलग्यान २१ ध्यानधरकुं
निजरूपकौ ग्यानमहिउरआंनि उमतोराजाजगतके चेतकुंचिनतामानि
२२ चेतनरूपअनुपहे सोपहिचांनेकोय तिनलोककीनाथकी महिमापा ५४
वेसोय २३ जिनपूजेरहिंजिनवरनमहि थंरेसूथिरताध्यान केवलपदमहि

मालषे तेजीवसमकुवांन २४ मुक्तिलोपरवसरहे मुक्तिकरैनिजजैन मु
क्तिआइग्यानकी मुदितकेगुरुवेन २५ ग्यानदिष्टधरिदेषिये सिष्टनयासम
कोय॥ इष्टकरेपरवस्तुसें निष्टरितहेसोय २६ उमतोपदमसमानहो सदाअ
लिप्तसुभाव लिप्तभएगोरसविषे ताकोकोनउपाय २७ वेदभावसबत्याग
कें वेदकलकोरूप वेदमांहिसवषोजहे जोवेदेचिद्रुप २८ अनुभोमेंजोलो
रहे तोलोअनोभेनांहि जेअनुभोजानेनही तेजीवअनोभोमांहि २९ अ
पनेंरूपसरूपसें जोजीअराधे पेम सोनिहचैशिवपदलहे मनसावा
सानिम ३० ॥प्रश्नोत्तर॥ बहोदर्शनमेकोंनशिरै कहाधर्मकोमुल मिथ्याती
केकेकहा जैनकहोइकसूल ३१ वितरागकीभोकहा कोअंदाकीसेन
धांमधारकोरहतहे तारेसनिसिषवेन ३२ धर्मपंथकोनेकह्यो कोनतरै
संसार कहोरंकवलनकहा गुरुबोलेववसार ४ कहोस्वांमिकोदेवहे
कोकोकिहसमकाग कोननेहसजुनकरे सुभोसीषविनुराग ५ गुरुसं
गतिकहापाइये किहिविनुनूलेभ्रम कहाजीवकाहेमइ ग्यानकहोगुरु

 मर्म ६ जिनपूजैतेहकैसे किहतेंजगमेमांन पंचमाहाव्रतजेधरे धनबोलेगु
 रुग्यांन ७ छिन्नशबिजेजन्मनर कितकैरखोअचेत तेरेसिरपेअरिचद्यो।
कालदमांमोदेत ८ जोजनपरसोहितकरे निजसुधिसबविचार सोचिंता।
मणीरतनसम गयोजन्मनरहार ९ जैसप्रगटपतंगके दिपमांहीपरगा
स तैसेग्यांनउद्योतसें होइतिमीरकोनास १० आरमांहिजोलोफिरे धरेआ
रसोंप्रीत सोलोआरलषेनही चारषूटयहरीत ११ जेलागेदसविससो
तेतेरहेपंचास सोरहवासवकीजीये बाडिचारिकोवास १२ विधिकीजेवि
धनावतजि सिद्धपरसिद्धनेहोय यहग्यांनकोअगहे जोघटबुजेकोय १३
वारवीसनकोन्टपतजो प्रभुजोआनोग्यान तुमराजाशिवलोकके बकुंड
रमतकीषांन १४ आपअकेलोाटलएह परोभ्रमकेफंद ग्यांनसक्तिजागेनां
ही कैसेंहोयसुबंद १५ शिवस्वरूपकेलषतही शिवसुषहोयअनंत शिव
समाधिमेरमरहे शिवमुरतिभगवंत १७ बालापनगोकुलवसे जोवन
मनमथुराज वंदावनपररसरचे द्वारेकुपजाकाज १८ दिनादशाकेकार ५५

नै सिवसूषफासोपोय विकलभयोसंसारमें ताहिमुगतिकोहोय १९ यामाया
सोराचिके तूंजिनभूलेहंस संगतयाकीत्यागके चीतोअपनोअंस २० जागी
मारोजोगतें करेयोगसवकाज जोगजुगतजांनेसवे सोयोगिशिवराय २१
जाकीमहिमाजगतमें लोकालोकप्रकाश सोअवनासिघटविषे कीनोआयनी
वास २२ केवलरूपस्वरूपमें कर्मकलंकनकोय सोअवनाशीआतमा निजघ
टप्रगटहोय २३ धर्म्माधिर्मसुनावनिज धरोकुंथांनउरआंनि दर्शनग्यानचा
रित्रमय केवलदलप्रवांन २४ निजचंदाकीचांदनी जेहिगटमेप्रगास ति
हीघटमेउद्योतके होयतिमीरकोनास २५ जितदेषेतित चांदनी जवनिजनै
नवजोति नेननविनुपेषेनही कौनचांदनिहोत २६ ग्यांनवांनप्रगटभयो
तमअरिनासेदुर धर्मकर्ममारगलषो यहमहिमारहिपुर २७ जेतनकीसं
गतिकीये चेतनहोतअजांन तेतनसममताधरे आइकोनसयांन २८ जे
तनसदुषहोतहे यहेंअचंभोमोहि तेतनसोममताधरे चेतनचेतनताहि
२९ जेतनसुतुनिजकहे तेतनतोतुजनाही ग्यानप्रांनसंयुगतयो सोतनतो

स्त० तुममांहि ३० जाकैलषतयहलष्यौ यहमेंयहपरहोय। महिमासम्यकुग्यानकी॥वि
५६ रलाबुजैकोय ३१ जडचेतनकीभिनता परमदेवकोराज सम्यकुहोतहैयहल
षौ एकपंथद्वैकाज ३२ बहोदर्वअपनेसहज राजतहैजगमांहि निहचैदिष्ट
वीलोकीयै परमकवकुनांही ३३ सम्यकैपूरनरत्नलकौ रहलोभलेलाय जानि
बुझकुएपरे तासोकहावस्ताय ३४ जाकीप्रीतीप्रभावसो जीतनूकबकुहोय
ताकीममताजेधरे दुखबुधिजीय जोय ३५ जाकीपरमदशाविषै कर्मकलंकन
कोय ताकीप्रीतप्रभावसो जीतजगतमांहोय ३६ अपनिनौनिदछांडिकै मां
गतघरघरभीष जांनिबुजकुएपरे ताहिकहोकहासीष ३७ मुदमगनमि
थ्यातमें सम्यकैनहीनिरोल कानिकोडिकारने षोवैरतनअमूल ३८ कानि
कोडिविषसम नरभौरतनअमुल पूर्वबुमेकरचद्यौ भेदनलहेनिरोल ३
९ चौरासीलषमेंफिरयौ रागद्वेषपरसंग तिनसोप्रीतनेकीजीयै यहग्यान
कोअंग ४० चलोचेतनजीहांजाइयै जहांनरागविरोग निजस्वभावप्र
गासीयै कीजेआतमभोग ४१ बहोउद्यअपनेसहज फूलेफूलसुरांम ति ५६

नसोनेहनकीजीयै यहग्यानकोसंग ४२ तेरबागस्वग्यानहै निजगुनफुलवि
शाल ताहिविलोकेपरमतुम छांडिआलजंजाल ४३ सांचविचारौभूलि
के करिझुठसोप्रीती ताहीतेदुषहोतहै योयहगहिअनीत ४४ हितशीख
इतनीयह हंससुनोउपदेश गहियेशुधसुभावको तजियेकर्मकलेश ४५
॥सोरठा॥ जौनरसोवतकोय सुपनेमेराजानयो सोनरमुरषहोय देष्योसंपतिभ्र
मकी ४६ कहोकोनयहरीत मोहिवतावोपरमतुम तिनिहीसुंफुनिप्रीति
जैनरकलेजातहै ४७ अहोजगतकेराय परसोप्रीतकहाकरी जेइनरक
लेजाय तिनहीस्वभावैसदा ४८ तुमतोपरमसयांन कोनसयांनपतुमकरी
काहेभैयाअयांन अपनिनिजरिद्धछांडिकै ४९ तिनलोककेनाथ जगवासी
तुमक्योंनये गहोज्ञानकोसाथ आतअपनेथलविषै ५० तुमपूनिमचंद पूर
नजोतिसदाभरे परेपरायेफंद चेतकुंचेतनरायजी ५१ जांनेगुनपरजाय
ऐसेचेतनरायहै नेननकुंलेकुंलषाय अहोसंतसूजाननर ५२ सबकोउक
रतकिलोल अपने २ सहजमें भेदनलहतनीरोल भ्रजतमीष्यातमके ५२

ब्रह्म० ॥दोहरा॥ ज्ञाननमानेओरकी ज्ञानितरजनिवेन ॥ ज्ञाननदेषेपरमको ॥ सो॥
५७ ज्ञानेसीवऐंन ५२ लोगनकोंलागोरहे नवजलथोरेज्ञांनि एकेज्ञ कर॥
आदिके तजकुंताहिपहिचांनि ५३ जितदेष्योतितदेषीये पुद्गलहीसोंप्रीती
पूदगलकेहारेहारे पुद्गलजितेजीत ५४ पुद्गलकौंकहादेषिये धरेविनासीरु
प देष्योआतमसंपदा चिदविलासचिद्रुप ५५ जोजनजलथोरोनिपट थो॥
रितिदकषाय सोमुनिथोरेकालमे वसैमुगतिमेंजाय ५६ जगहिफिरतके
जुगभये सोकछुकीयोविचार चेतनअवकेनचेतकुं नरभोलहिअतिसा
र ५७ दुर्लेनरभोदिष्टांतसें सोनरभोतुमपाय विषेसुषनकेकारने सर
वसुचालेगमाय ५८ ऐसीमतविभ्रमभई विषयनलागतधाय केदिन
केछिनकेघरी यहसुषथिरठहराय ६० देषोकुंनौनिजदिष्टसो जगमेंथिर
कछुनांहि सबवीनासीदेषीये कोतजिगहीयेकाहि ६१ केवलशुद्धस्वभावमें
परमअतेंद्रिरूप सोअवनासीआतमा चिदविलासचिद्रुप ६२ जैसोशिव
षेतहीवसे तैसोयातनमांही निहचेदृष्टिनिहारिये फेरंचककुंनांहि ६३ चे ५७

तनकर्मउपधितजि रागद्वेषकौंसंग जोप्रगटेनिजसंपदा शिवसुषहोयअभं
ग ६४ तुंअनंतसूषकोधनि सूषमांहिनाहिस्वभाव करेलषनमैंप्रगटनिज
होइवेछिनशिवराव ६५ ग्यांनदीवाकरप्रगट तें दशदीशहोतप्रकास ऐसी
महीमाइनकी कहैभगोतिदास ६६ जुगलचंदकीजेकला अरुसंयमकेभे
भेद सोसंवतसरजांनिये फागुनतिलसपेद ६७ ॥इतिप्रमसतकदुहासंपूर्ण
श्रीजिनपूजाअष्टप्रकारीकवितलिष्यते॥दोहरा॥ जलचंदनअरुसुमनले
अक्षतशुद्धनेवेद्य दिपधूपफलअर्घविधि ॥जिनपूजावसुभेद ॥१॥ अथ
जलपूजा॥सवैया ३१॥ निरषीरसागरकोनिर्मलपवित्रअतिसुंदरसुवासन
स्योसुरपेंअनाइये गंगाकीतरंगनकेस्वछजे मनोग्यजलकंचनकेकल
शविभरिकेमगाइये ॥ औरकुंविशुद्धअंबुआंनियेउछाहसेती जांनीये विवेक
जिनचरननचडाइये जोदुषसमुद्रकोजलांजली दीजे इहांतिनलोक
नाथकुंकीहजुरगहराइये २ ॥चंदनकीपूजासवैया॥३१॥ परमसुसीतलसु
वास नरपुरनसोअतिहिपवित्रसबदुषनरहतुहे मालावनरायनके

दस० छेदनसुगंधकरैसंगतिकेगुनयहवीरदवकुंतुहे॥ बावनकुंचंदनसुपावनकर
५८ तजुगचढेजिनचरनगुनताहीतेलहुतुहे॥ मोहदुषदाहकेनिवारबेकुमाहा॥
हिमंचंदनसौंपूजौजिनचितयौंचहुतुहे॥३॥ अथपुष्पपूजा॥३१॥ जगतकेजी
वतिन्हेजीतकेगुमानभयो॥ ऐसेकांमदेवएकजोधाजुकाहायोहे॥ ताकेसरजा
नीयेतुफुलनकेदंदवकुंकेतकीकमलकुंदकेवरासुयोहे॥ मालतिमाहासुगंधवेल
कीअनेकजातिचंपकगुलाबजिनचरनचढायोहे॥ तेरहीचरनजिनजोरनेवसायथा
कोसुमनसोपूजौताहिमोहिऐसोभायोहे॥४॥ अथअक्षतपुजा॥ ससीकैसीकीरए
कीधोंरूपगीरवर्णकीधौमेरतटरूर्णकीधोंफटिकप्रवांनिहे॥ उधकेसैफेनकीधोंचि
तामनीरेनकीधोंमुक्ताफलऐनिकीधौहीराहरीआनैहे॥ ऐसेअखितजलहेतंदु
लपवित्रपुंजपूजतजिनेशपापपातिकपरानेहे॥ ऐसेगुनप्रापतिप्रकाशतेजपू
जहोय ऐसैजिनदेवअबतआधांनेहे॥५॥ अथनैवेद्यपूजा॥स॥३१॥ परमपूनि
तजानिमेंवनकेपूजआनितिन्हेपुनिपहिसानिजिनयोग्पजांनिये॥ आनजेविशुद्ध
होय ताकोपकवांनहोय कहियेनैवेद्यसोयसुद्धदेवीआनीये॥ पूजतजिनंदपाय॥ ५८

DR BHAU DAJI

अथ २
य
प्रातिकपरानेजांमोहअलखहरायससयौंवषांनिये॥ क्षुधाकोनदोषयहग्यांन
तनपोषहोयपरमसंतोहोय ऐसीविधवांनिये॥६॥ दीपपूजा॥सवै०३१॥ दि
पकअनाएचिकुंगतमैनआविककुंबतीके वनाएकमेंवतीनवैंतुहे॥ घृतकी
सनिग्धतासौं मोहकीसनिग्धजाय जोतिकैजगाए जगाजोतिमिसनतुहे॥ आ
रतिउतारतही आरतिसबजायटरि॥ पायहिंगधरेपपंकतिहनतुहे॥ वी
तरागदेवजुकीसेवाकीजेदिपकसोंदीपतप्रतापशिवगामीयौंभनतुहे॥७
धूपपूजा॥स०॥३१॥ परमपवित्रहेमआंनियेअधिकपेम जांनिधूपदांनजेम
सुधनिपजाइयै॥ वन्हिजेविशुद्धवनितेजपूजमाहाघनिमांनोधरिरत्ननीऐ
सीबविपाइये॥ तामहछिद्रागुरुकीकनिकाउषेवका जैवहैकर्मकाष्ठनकेपूज
गहिनाइयै॥ पूजीयेजीनंदपायधूपकेविधांनसेती तीनलोकमधिसुवास
वासछाइये॥८॥ फलपुजा॥स०॥३१॥ श्रीफलसुपारिसेवदारिमबदांमनेवसीता
फलसंगतराशुद्धसदाफलहे॥ वीहीनासपातीऔबिजोराअंबाआमतसेना
रगीजंभीरीकर्णफलजेकवलहे॥ ऐसेफलशुद्धआंनिपूजिये॥ जीनंदज्ञानति

५९॥ कुंलोकमध्यमाहाश्रुकृतकोयलहै॥ फलेसेती पुजेसुद मोक्षफलप्रापतिकैइच्छ
रत्न० नावसोंयेसुषसंपतिश्रचलहै ९॥ अर्घविधिपूजा॥ स०॥ ३१॥ जलविसुद्धिश्रों
निचंदनपवित्र जानिसुमनसुगंधगनिश्रछतश्रनुपहै॥ निरषनिवेद्यकवि
शेषनेद जानिसबैदिपकसवारिशुद्धश्रोरगंधधूपहै॥ फलले विशेषलायपु
जियेजिनंदपायवसुनेदवहरायश्ररघसरुपहै॥ कर्मकलंकहरिकैनयोश्रा
कसेवतजिनंद नेयाहोतशिवनूपहै॥ १०॥ इतिश्रष्टकवितसंपूर्णं॥ लिष्यते
दोहरा॥ सूचकरकैनिजश्रंगकों॥ पूजहोश्रीजिनपाय॥ हर्षितनावतविधिस
हीत॥ करौकुंमगतिमनलाय॥ ११॥ जिनपूजाकेनेदवकुं॥ यहविधिश्रष्टविचार
प्रतिपुजाजलधारिसों दिजैश्ररघसुधारि॥ १२॥ इतिश्रीजिनपूजाश्रष्टकवित
बंधसंपूर्णं॥ ॥श्रथश्रीजिनंदेवकेसमोसरनमध्यश्रष्टप्रतिहारजातिकोक
वित॥ ॥प्रथमश्राशोकफुलकीवरषावांनीषीरेपरमसुषकारि॥ चांवर
छत्रसिंहासनसोनितनामंडलदुतिदीपेश्रपार॥ दुंदुनिनादवजईश्राका
शहतिनलवनमेंमहिमासार॥ समोसरनजिनदेवसोंचकोएलतकष्टप्रतिहार॥ १३ ५९

श्रीपार्श्वनाथजीकोकवित॥ २३॥ काहेकोंदेशदेसंतरधावतकाहेरीझावत
इदनरिंदे॥ काहेकोंदेवीश्रदेवमनावतकाहेकोंसीसनमावतचंदे॥ काहे
कोंसुरजसोंकरजोरत॥ काहेनिहोरतमुदमुनिंदे॥ काहेकोंसोचकरेदिन
रैनतुसेवतक्यों नहिपाशजिनंदे॥ १४॥ वीतरागस्तुतिबप्पे॥ देवएकजिनंचंद
नामत्रिभुवनसुजंपे॥ देवएकजिनचंद॥ दरसपातिकजिहांकंपे॥ देव० द
र्वजीवहासुषदायक॥ देव० प्रगटकहियेशिवनायक॥ देववहेत्रिभुवनमु
कट॥ तासुचरननितवंदीये॥ गुनश्रनंतहिप्रगटहिभुरत॥ सुरिधत्रर्द्धि
चिरनंदीये॥ १५॥ श्रथसिद्धदेवश्ररुश्रातमनिश्चेएकहिजाननहो॥ स० ३१॥ श्रा
त्मा श्रनोपमहेदिशेरागद्वेषविनादेष्योनश्रजीवतमेश्रापुमेनिहारके॥ कर्म
कोनश्रंशाकोनत्नमकोवंशाकोउजाकीशुद्धताइमेनश्ररुश्रापाटारके॥ जेसो
शिवषेतवसेतसोत्रलहलसेइहांनहाफेरनहिदेषियेविचारके॥ जोइगु
नसिद्धमांहिसोइगुनब्रह्मपाहिसिद्धब्रह्मफेरनहिनिश्चेनिरधारके॥ १६॥ इ
तिसंपूर्णं॥ श्रथश्रष्टोत्तरदोहालिष्यते॥ दुहरा॥ जेश्रघस्त्रजनकोतेइश्रब

रत्न० रत्नतारकै। कौनग्यांनविनुआवरण। कौनदेवविनुरागा। कौनसाधुनिग्र
६० ग्रंथहै। कौनव्रतजिहुंत्याग। १। अथएकअखर। नानिमानिमाननेमा ना
नानिनामननननानिर्नेमनने। नेननननानैनान। २। अथद्वेअखर। २। मांनुमांमां
मैमांनमेमांनुमांनुमोमान। मानन्नांननेननमे। मांननानमेन्नान। ३। अखर
त्रिन। चेतनचेतौचेतना। तौचेतैचितचेन। तातेचेतनचेतनु। चेतन
तानितनेन। ४। चतुर्थअखर। अध्यातमसोइआतमा। ममअध्यातमध्यान
आतमअध्यातममतेंधममयातमनांम। ५। संपूर्णं॥ चोविशतिर्थंक
रसवेइयाछंद॥ श्रीआदीनाथअरीहंत। नाभीराजाकुलमंडण। नगरअ
जोध्याजनम। सर्वमिथ्यामतषंडन। केवलदर्शनशुध। व्रषभलंछनतन
सोहै। धनुषपंचसेदेहइइसतकेमनमाहै। मरुदेविकेनंदजिन। तिहु
लोकतारनतरन। मनभावधरीएकचितसु। भविजीववंदेनुमचरन। १
स०३१। जितशत्रुसुविजयानंदनगजलछनतेरअभिरांम। अष्टमाहाम
दसवजिनजितेनगरअजोध्यातजिधनधांम। केवलग्यांनकीएनरकेतेंपंच ६०

...मगतिपहुंचैप्रभु...गाम। ऐसेअजितनाथतिर्थंकरतिनकुनितकीजेप्र
नाम। २। शंभवनाथसकलसुषदायकसावस्तीनगरीअवतार। राजा
जयारथसेनाजननिकेवलवरसनरूपअपार। हयलंछनस्वांमीतनसो
नीतअरिसबतेंतेरेनिरधार। भविजीवपरनांमकरतहै। एप्रभुभवद
धिपारउतार। ३। अभिनंदनचंदनसोपुजोसमरसराजाकुलअवतार
नगरअजोध्याजनमलीयोजिनकंपीलंछनजगमेविसतार। सिधारथमा
ताकुलमंडनपापविहंडनपरमउदार। तातेजगतजीवनितवंदीतभव
सागरमेप्रभुपारउतार। ४। स०२३। सुमतिनाथसमरेसुषसंपतदुषदा
लिदसबजायदुर। नगरकोशलाजनमलीयोजिनपीतामेघअरुपेगला
मायपुरलछनअनंतभगवंतविराजेलंछनक्रौंचसेवेसुर। मनवचभावना
वेतिनवंदे। श्रीजिनचरननसिसनमायहजुर। ५। स०॥२३। पदमप्रभुधरराा
जानंदनमातसुसीमाजगतजगीसाकोशंबीनगरीजिनजनमेदुदारीकप्र
एमहीनिसदीस। लंछनकमलवीराजेप्रभुकेसोभिततिहांअतिचोत्रिस

व.ल.१ चरनकमलनितकेवंदे ॥ नमत्रिकालमायनिजसीस ६ ॥ जिनसप्तमश्री
॥६१॥ सुपार्श्वजिनवरजिनवरआसपुरैसेवकुनितनवियचरन ॥ पयंतराजा॥
गीवसुलंबनपोहमीकुषप्रनुअवतारणं ॥ केवलवयणदेशनादेतेनवी
जनमतअम्रतऊरणं ॥ नगरवणारसीनितजेवंदेनमजीवसतवतुमस्वर
णं ॥ ७ ॥ जिनचंद्रप्रनुचंदेरीउपजे ॥ मंगलामा ॥ तपीतामहासेन ॥ शसिलं
बनसेवेचरनादीकसमकीतसुधदेतहैअैननोकालोकप्रगटघटअै
तरवानिषरैअम्रतसुषजेन ॥ ताकेचरननमजेवंदीतअविचलरीध्देकु
प्रनुअैन ८ ॥ नवमजीन ॥ स० ॥ २३ ॥ सेवकुसुविधनाथतिर्थंकरजससमरे
सुषसंपतहोइ ॥ काकंदीनगरीजीनउपजेमगरलंबनप्रनुकेतनजोय ॥ रामा
मानजगतजननजानेअरीकुलवापसकेनहिजोय ॥ अवनीअपनीसुग्री
वकहावततांकेसुतवंदीतत्रिकुलोय ९ ॥ कंचनवरनतनुरंचनडिगतामन
तिकुलोकनाथजिनइइमुषनासइ ॥ नंदाजुकीकुषधतइदरथराजात ६१
नकुलमदहनिर्गपानकुप्रकाशइ ॥ लबनश्रीवत्सपाउशितलश्रीनाथनाम

नेदिक्षजिनंदगाउरविजोउजासइ ॥ पावेपारमिथ्यातविनाशइ ॥ त्रिकुलोकवं
दीतचरणाइ १० ॥ एकादशजिन ॥ श्रीपुरनगरजगतसबजानेविष्नुरायवि
सनाकेनंद ॥ लंबनषरगसेवेचरणादिकतिर्थंकरश्रीहंशजिनंद ॥ समोश
रणमध्यजिनसोहतमोहतहेनरपकेकुलवृंदतिनकेचरणएकचितलायक
वंदतहैनितइंद्रनरेद ११ ॥ द्वादशजिन ॥ श्रीवासपुज्यचंपानयरीपतिमहीषी
लंबनमहिषसबजाने ॥ वसुपूजराजाकुलमंडल ॥ जयासुतसबजगतव
षाने ॥ सुरपतिआयसीसनमितनावेप्रनुसेवानिजमनमेआने ॥ सम्यकद
ष्टिनितप्रतसेवेजिनकेवचनअर्षडितमाने ॥ १२ स० ३१ ॥ विमलनाथए
कदेवसिध्दसमआपविराजेत्रिनुवतमध्यजिनंदजासुधनअबरगाजे ॥
कंपीलपुरजिनजन्मसुकरलंबनमहिमाने ॥ सुरपतिसेवहिपायजगत
महिमाजुवषाने ॥ क्रतकर्मनाशासुननकेवलग्यानदीवाकरन ॥ तसुचर
नकमलनविवंदीतनविक ॥ जेजेजीनतारणतरण १३ ॥ श्रीअनंतना
थसिंचोनोलबनसुजसमातकहेसबकोय ॥ पीताजासुश्रीअस्वसेननरे

चस० स्वर॥ अजोधा जनमे सोय। गुण अनंत बलरूप विराजे सिध भये अरी
६२ कै कुलषोय। भावसहित प्रानि वंदत ए प्रभु शिवपद लहम कुं होय॥ १६॥
वज्रलंछन रत्नपुर उपजे धर्मनाथ तीर्थंकर धीर। अवनि अपनि भाए
राजा भानु सुव्रत मात वडे बलवीर। सामो शरण है शना देते प्रभु धनि साग
र जिम गंभीर॥ चरन सदा भव्य प्रानि वंदत जे जै जीन वर समशरीर॥ १७॥
॥सिंहावलोकन छंद॥ जिन वंदे तारा चंद नंद तारा नित वंदय वंदे ए सुर नर
कोडाकोडि सुर वंदे आनंदे। आनंदे म गमन आपु आपु हस्तनपुर आ
ए आए शांति जिनंद देव वहीसु षपावसें ए। पाए ये सुपना विशाल वि
शाल भाल विससेन तन तन कंचन प्रभु को विसोबनो सुतारन तरन
जिन॥ १६॥ स० २३॥ पदमासन भगवंत विराजे केवल वयन देशना देही॥
गजपुर नगर सुरसेन राजा। ता के नंद अभय पद देहि। श्री कुंथुनाथ तीर्थंक
र जग मे सब प्रानि कु आनंद देहि। जसु श्री मा छाग लंछन सो हृततो भौ त्रि
काल भय वदना देही॥ १७॥ नंद्यावर्त सो है चरणा दीक सुरपति सेवक रत नि ६२

ग

त आय। चतुर्विध संघ देशना दि तै वैरभाव तिहां रहे न। अरनाथ॥ अर्जुन मा
त महि सब ज्ञान यपी ताजा सुदर्शन राय। अरीनाथ भव प्राणी वंदे ग
जपुर नगर जिनेस्वर पाय॥ १८॥ स० २३॥ मल्लिनाथ मथुरा नगरी पति अ
द्भुत रूप जिनंद विराजे। कुंभ राय प्रभावति जननी लंछन कलश भरन सु
छाजे। सुरपति आय सीस नीतना वे कंचन कलस धरे प्रभु का जै। समो
वशरन गोह ग हे जिनेस्वर वानी सुनी मिथ्यामत भाजे॥ ९॥ संभावलोक छं
द॥ मुनिसुव्रत जिन नाज नात कौ त्रिभुवन सु जंपे। जंपे हि सुर नर जाप जपी
पाप जु कंपहि॥ कंप ही अरी कुल रीत रीत जननी तप्रकाशी। प्रकाशे केव
ल सोमति मी मति राजग्रह वासे॥ वास हि जिनवर सिद्ध चित चित्त चित्त व
न मर्म वरन तन। पदमावती पुत जिन जिनदास वंदे इक मन॥ २०॥ स० २३
नमीनाथ निलोमपल लंछन मथुरा नगरी है प्रसिद्ध। विजयाराय प्रभावती
जननी समरे आपे अविचल रीध। कैलपांन जिनेस्वर वंदी तहोत सदा स
मकीत के व्रंध। भावसहित जिनको पुजे नित घर होय सदा नवनिध॥ २१॥ स० ३॥

वस्त० नेमनाथनाथनेमकाकुसुनरोषिपेमभनवच सदाएमरहेदआयोगकी
६३ समुद्रसुसुतधीरसागर जिमगंनीरशंषरहे चर्णधीरलेरपानहिनोगकी
सोरीपुरसौ वामायजगतजिननाम्परायनिलुरत्नजासुकायलवैवानलो
गकी ॥ अनंतबलधारी हे सौसदाब्रह्मचारी हे ऐसेजिनवृंदमरहेनादजी
रोगकी २२ ॥ छप्पै ॥ अमृतमुषजिनफरे द्वारदेवदुंदुभिराजे सेवहिसुरन
रइंद्र अहिफनशिसविराजे नगरवणारसीनाम तातअस्वसेनकहि
यिये मातवामाउरजनमजगतजनपुजाकीजे अनंतुबलग्यानरूपध
रि आपजगततरीलविकुया नरलोककेभविजिववंदे जैजैपासजिनं
दतुय २३ ॥ छप्पै ॥ जनम्पाश्रीमाहावीर ईंद्रसेवानितसारेहि सुरनर
केंनरदेव तेउमिथ्यामतटारहि क्षत्रियकुलजिनजनम रायसिद्धार
थनंदन त्रिसलाउरअवतार संघकेपापनिकंदन चतुर्विधसंघसुन
देशना नाथकेवलवचनविशाल प्रनुवंदीतनितनावधरी जिनज
यजयदीनदयाल २४ ॥ जीनचोविसीसंपूर्ण ॥ जिनचोविसीजगतमे ॥ ६३

डाक्टर भाऊ दाजी ... DR BHAU DAJI

कल्पवृक्षसमांन जेनेपढेविवेकसौतेपावेशिवथ्यांन २५ ॥ संपूर्ण ॥ छे ॥ अ
थ वर्तमा २० ॥ सवैया लिष्यते ॥ छप्पे ॥ श्रीमंदीरजिनंदेव नगरपिंडरीगिरसो
हे वंदेसुरनरइंद्र देषत्रिभुवनमनमोहे व्रषभलंछनप्रभुचरन चर
नसबहीकोराषे ॥ श्रीहंसरायकुलउधारतजिनवरतमांनजगदीश ॥ भा
वसहीतभविजननमहि तुमचरननाथसीस १ ॥ स० ३१ ॥ केवलकला
पब्रह्मपुरतहेमनइछप्रतबजिनंदजुगमंदरजोहारीयेदेवदुंदुभारवाजे ॥
सुनतमिथ्यामतभाजे विराजे जगमे जिनकीरतिनिहारीये ॥ त्रिकुलोक
ध्यांनधरेनामलिधेपापाहरेकरेसुरकिंनररतिहारीमनुहारीये ॥ न्रपतिसु
व्रबरायविजयासुतारामायपायगजलंछनजिनेशकेनिहारीये २ स० २३
श्री बाहुअस्वामीसुग्रीवपीता ॥ विजयाजननीजगमेजनकी ॥ म्रग
चिन्हविराजितजासुधजानग्रसुसीमाभलिजनकी ॥ केवलग्यानप्रकाश
जिनेस्वरजानतहेसबहीजनकी ॥ गनधारभविसुनो ॥ तिकुलोकमेकी
र्तिहैजीनकी ॥ स० २३ श्रीस्वामीसुबाहुभवदधितारनपारउतारननिस्ता

सुरनराकिंनरदेवजियाधुरहीबंइ नाजानीतारं

व.स्त० २ ॥ नगरअजोधाजनमलियोजगमेजिनकीरतविसतार ॥ निसदीलपी
६४ तासुनंदाजगनिमकरलंछननिसतारं ॥ ४ स० ३१ ॥ अलिकाजुनामपावे
इद्रकीपुरकहावेपिंडरगिरसर्ननआवेयोविष्यातुहे ॥ सहसकीरनधार
तेजतेदिपेअपारधजापैविराजैअंधकारडरीतुजातुहे ॥ देवसेनराजा
सुता ॥ जाकीबविअद्भुतदेवसेनामातजाकेहरषतमातुहे ॥ श्रीसुजातिस्वा
मीकोप्रनाममनितनविकरेजाकेनामलियेकुलपतिकविलातुहे ॥ ५ स०
२३ ॥ श्रीस्वयंप्रभुससिलंछन ॥ पतितिकुंअलोकके नायकहावे ॥ मित्रभूत
नृपतिकेनंदनविजयानगरजिनेस्वरआवे ॥ धनसुमंगलाजननीइद्रा
दिकगुनपारनांपावे ॥ नवजीवपरनामकरतुहे ॥ जिनकेचरनसदाचि
तलावे ॥ ६ ॥ छप्पै ॥ रीषभाननअरीहंत कीतिराजाकेनंदन ॥ सुरनरक
रहीप्रणाम ॥ जगमेजिनकोवंदन ॥ विरसेनसुतलसय ॥ सिहलंछनतिना
सोहे ॥ नगरसुसिमाजनमदेषनविजनमनमोहे ॥ अमलांनग्यांनकेवल ६४
प्रगट ॥ लोकालोकविकाशधर ॥ तसुचरनकमलवंदनकरतपापपरह

रपरहर ॥ ७ ॥ स० ३१ ॥ अनंतविर्यस्वामीसेवकीजीयेअनेकभेवविद्यमानए
इदेवसीसनीतनाइये ॥ तातजसुमेघरायमंगलासुकहियेमायनयरीतो
अजोध्याके अनेकगुनगाइये ॥ धजापैविराजैगजपेषेपापजायनजित्रिको
टनकीमहिमादेषेनेअघाइयेहे ॥ त्रिडुलोकमधअतिसेलसेचातिसए से
जगदीसजैयानलिजानध्याइये ॥ ८ ॥ स० २३ ॥ विशालनाथतातविजयावति
जननिजीनकी ॥ धनसुदेशजिहांजिनउपजेपुंडरीगिरनगरीतनकी ॥ लं
छनइइवसैतिनपायगिनेतिहांकोनसुरकिनरगन की ॥ मुनीराजक
हेनवजीवतेरेसोहेमहीमामहिहेइनकी ॥ ९ ॥ सेघावलोकनांछंद ॥ श्रीसु
रप्रभुअरीहंतहंतकर्म्मादीककीने ॥ कीनेआपसमांनजीव ॥ जीवबकु
तारजेदीने ॥ दिनेरविवर्ननवासविजयामहिजाकोजाकोततसुनागराय
रायनयमांनताके ॥ ताकेअनंतबलग्यांनधर ॥ धरेजडाउरअवतार ॥ जे
जेनावधरेनवीजीववसे ॥ सेवनरीदलहेमुगतश्री ॥ १० ॥ सवैया ॥ ३१ ॥ अ
होप्रभुपदमारथराजाकेनंदनतुमरोइसुजसतिकुपुरगाइयतुहे ॥ कोइ

इतनीतनासंतमथ वालमीकसुतविच रतजिहां तिहांहोतसुच
तव

वृस्त० तुमध्यांनधरैकेइ तुमजापकरेकोइ सएि चर्नतेरे जीवपाइयतुहे नगरसु
६५॥ चिजामे धजापेविराजेसंबमानसरस तिकेआनंदवधायतुहे व्रजूधर
नायपायसीवपुरीकरोकहे तुमदासनीसदीससीसानायतुहे ११ छपै चंद्रा
ननजिनदेव सेवसुरकरहेनितपद्मासन भगवंतउगतनहिसमयचितपुडर
गणीओजननममातपदमावतीजायै व्रषनलंबनप्रतु पिह नविकआनं
दसुपाए जसधर्मचक्रआगेचलत इतिनीतनासंतमथ वालमीकसुतविच
रतजिहां तिहांहोतसुचलतव १२ स०॥२३ लंबनपदमरेएकाजननीनगर
वनिताजिनकोगांम तिहांअलोककीरतहै जिनकीचंडबाकुंजिनकौनाम
देवनंदनूप तिकेसुतनिसवासरवंदेहिसुरपाउ नरतषेत्रकेकरहीवंदना
तेभविजनपावेहीशिवनांम ॥१३॥ स०॥२३ मोहिमामातमाहाबलराजालंबनचं
द्रधजापरनीको विजयानगरनूयंगतिर्थकरनामभलोजगमेजीनहिको
कहैगनभारसुनोभविलोको जापजपेसबहीजीनजीको ज्ञासुप्रशादलहे ६५
शिवमारगवेगमलोजिनस्वादअमीको १४ स०॥२३ इस्वरदेवभलिमहि

माकरेहिमुलमीथामतनास जसुज्वालाजननीजगकहियेगलिसेनपीतापु
सपास नगरीजासुसुसीमाभणी येदिनपतिचर्णरहेनिततास जिनकोभा
वसहितवंदेएकचितनिह्चैतुमदास १५ स०॥३ व्रषभलंबनपायपीताजासु
विररायचेनपुनिजिनमायसुंदरसोहामनिअजोध्याभलिनषनीधआवेचली
इंद्रपुरपायतलीलोकभेकहावनि नवजीवपायलागेसेवातुमनितमागेअवे
सिद्दिदेऊआगेसुषकोलहावनि १६ स०॥२३ माहाबलवंतवडेभगवंतसवेजी
यजंसुतरनको पीताभूमीपालभलोतिनभालहलोजिनलालनधरनको
पुडरीसुवासएरावनपासकहोतुमदासउवारनकौविरसेनरायभलिभानुमा
यतारोप्रतुआयविसारनको १७ माहाभद्रस्वामीलियेतुमनांमछिजेसबकाम
विचारनको देवराजपीताउमादेविमायभलीविजयानिसतारको सशिसब
आयलगेतुमपायभलेजिनरायउधारनको कृपाकरीनाथगहिमहाथमले
जिमसाथतिहांरनको १८ छपै जिनवंश्रीजिनदेव जसपीतास्तवभूतभ
लीजै लंबनस्वस्तिकपाय नामत्रिकुलोकगणीजैपावेहीभवदधीपार ॥ मा

स्त० तगंगासुषधारहि नगरसुसीमजनम आयमीआमतरारही देहधरमनुपदे
६६ नानित त्रिकालवेनअमृतझरहे चिनचरनकमलवंदनकरत पापपुंजपं
कतिहरहि १९ ॥छप्पै॥ वरतमानजिनदेव पदमलंबननितछाजे अजीतवी
र्यअरीहंत जगतमेआपविराजे पदमासननगवंत ध्यांनएकनिहचैधारत
आवेहिसुरनंद्र तिन्हो नवसागरतारही नगरअजोध्याजनम जिनमात
कननिज्ञरधारन तसुचरनकमलवंदीतनविक जैजैजिनंदआनंदकरन २०
॥दोहरा॥ वर्तमांनविसीकरी जिनवरवंदनकाज जेनरपदेविवेकसु तेपा
वेशिवराज २१ ॥इति२०॥विरहमांनमांन स० ३॥ श्रीमंदीरजुगमंदीरबाहुऔ
सुबाहुसुजातस्वयंप्रभुनामतिकुपनधाइये रिषभाननअनंतविर्यविशा
लसुरीप्रभुवज्रधरनाथकेवरनचितलाइये चंद्राननचंद्रबाहुश्रीभूजंग
इस्वरजीनमीप्रभुविरसेनविद्यमांनपाइये माहाभद्रदेवजसुअजितवी
र्यजेयाएवर्तमानविसकोत्रिकालशिसनाइये २२ ॥इतिवर्तमान श्रीसवैया
संपूर्णा॥ ॥अथपरमात्मकिजयमालालिखते॥दुहरा॥ परमदेवपरनांम ६६

कर परमसुगुरुआराध परमधर्मचितारचित कहुमालागुनसाध १ चो
ई ॥ एकब्रह्मअसंखप्रदेशी गुनअनंतचेतनताभेसी सकतिअनंतलसेजि
हांमांहि जासमओरदुसरोनाहि २ दर्शनग्यांनरूपओहार निहचैसिद्ध
समांननिहार नेकरतानकरेहिकोय सदासर्वदाअविचलहोय ३ लोका
लोकग्यांनधरेंकबहुनांजनममरनअवतरे सुषअनंतमेजासुभ्रुनायनि
रमोहविनुकीनोराव ४ क्रोधमांनमायानहिपास सेहजैजीहांलोभकोनास
गुनथांनिकमार्गनानहि केवलआपुआपुहिमांहि ५ परकोपरसंसनहि
जिहां सुधस्वरूपकहावेतिहां अवनासीअवीचलअविकार सोपर
मातमहेनिरधार ६ ॥दोहरा॥ एहनिहचैपरमातमा ताकोशुद्धविचार ॥
जामेपरपरसेनही जैयाताहैनिहार ७ ॥परमात्मकीजयमालसंपूर्ण
॥अथजयमालनिष्पते॥दुहरा॥ श्रीजिनदेवप्रणांमकरी परमपुरुष
आराधि कहुसुगुनजयमालका पंचकरनरीपुसार १ ॥अथछंदपद्ध
डी॥ जयजयतुअनंतचतुष्टनाथ जैजैप्रभुमोक्षप्रसीद्धसाथ जैजैतुमके

दसण्वलग्पांनत्र्मास जैजैकेवलदर्शनप्रकाश १ जैजैतुमबलजुअनंतजोर जैजै
६७ सुषज्ञापारओर जैजैत्रिभुवंपतितुमजिनंद जैजैनविकुमदनिपुणचंद
जयजयतुमनासनप्रगटग्यांन जैजैयतुम५इंद्रिजितप्रधान जयर तुम
चारित्रजथाख्यात जय२अघनासनिप्रनात जयर मोहनिवारवीर ज
य२अरीजीतनपरमधीर जय२मनमथनमर्द्दनमहेश जय२जमजी
तरलसेस ५ जय२चतुराननहोतप्रतक्षि जयर तुमजीवनसकलरक्षि
जय२तुमक्रोधकषायजीत जय२तुममांनहस्यौअजीत ६ जयरतममा
याहरनसुर जय२तुमलोभनिवारणमूल जय२सत्तइंद्रविदनीक जयर
अरिसकलनिकंदकंद ७ जय२जिनदेवाधिदेव जयरत्तिभुवननविकर
तसेव जयरतुमधावेहिनविकजीव योपोपावेहिसुषसदीव ८ ॥घता॥
जेजिनरससरताजीपरसता तुमसमांनजेध्यावेघटमे तेशिवगतिपावे
बकुरीनांआवे वसेसिधरवृकंठमे ९ ॥इतिजयमालसंपूर्णं॥छै॥अथ
गुरुकीजयमाललिष्यते॥दुहा॥ परमदेवपरनांमकरी। सत्सगुरुकरूप्र ६८

णांम कहुसुगुनमुनिराजके माहात्तबधकेधाम ॥जयमाला॥ पंचमाहाव्र
तआदरेजी सुमतिधरेफुनिपंच पंचेइंद्रिजितकेजीरहेविनापरपंच २
साधुगुनवंदौकुमनधरी भावएहुओंकणी षटआवत्पककरनिकिरजी
जीवदयाप्रतिपाल सोविपश्चिमरयलीजी सुधन्हसीलघुकाल सा ३ नेन्ह व
विलेपननांकरेजी नगनरहेनिरधार केशलुचेहितभावसुजी एकहिवेर
हिआहार सा० ४ थिरहैलघुभोजनकरेजी तजेदंतनविकाज एपालेनि
रदोषसुजी सोकहियेरूषीराज सा ५ दोषलगेप्राश्चितकरेजी करेसु
आतमध्यान सोधेनिजपरणंमकुजी सोसंयमपरवांन सा ६ दोषवै
तालिसटालकेजी लियेशुसुद्धआहार श्रावककेकुलजानीयेजी जलअस
वेतिहवार सा ७ माहातपसाव्रतकरेजी सूहेपरीसारेघोर वीसदोयब
कुनेदसुंजी कायकसैअतिजोर सा ८ निर्मलकरीनिजआतमाजी च
देश्रेणीशुभधाम नेयातिनिहश्चेसहीजी पावेपदनिर्वाण सा० ९ ॥दोहरा॥
मुनीकेगुनकीमालका जेपेहरेनरमांहि तिनकुंशिवसंपतिमले जनमम

रत्न२ रनन्नेनहि ९ ॥मुनिजयमालसंपूर्णी॥ ॥अथ अहिछत्रपार्श्वनाथछंदलिष
६९ ते ॥दुहरा॥ अश्वसेनअंगजनितो वामाकुलकेचंद तिहांकेवलग्यांनन
पुजीयेपासजीनंद १ ॥छंद॥ पुजीयेपासजीनंदनविजननगरश्री अहिछ
तए जिहांध्यांनप्रभुजीध्यांनधस्यो आतमारसमेरतए उपसर्गमुद अ
ग्यांनकीनो क्रोधसेआगनितए बकुवाघसेंघपिसाचवितर गजादिक
मेमंतए पु १ कोउरुडमालपेहरकंमरी अगनीझालमुकंतए माहाकाल
रूपविकरालसुरतनेदवितगतए महिवरषवरषाक[illegible]रथाको नैस
मुद्रहिपतए पु २ धरणेंद्रऔपदमावती तिहांआएजिनसेवतए अनं
तबलकरीआपुराजत मेरजुअचलतए करीचारकर्म्मविनासताबीन
लहोकेवलततए पु ३ सतइंद्रमलिकल्यांनपुजा आयविविधरससरस
ए तेहकाजतेयेहनरमीमांहीमाजगतमेप्रगटतए नविजात्रआवेजिन
हिधावेनिजातमसईहतए पु ४ ॥दोहरा॥ रूावध्यांनमेराषके जेजीन
गुनगावंत संपतसुषतिनकौसदा गणतनआवेअंत ५ सत्तरेसेएकति ६९

सके सुदीदशमीगुरुवार कार्तिकमाससोहांमनो पुजोपासकुमार ६
॥इति अहिछत्रपार्श्वनाथछंदसंपूर्णं॥ ॥त्रिभंगी छंद॥ ॥दोहरा॥ देहस
नेहकहाकरे देहमरनकोहेत उत्तमनरऔपायके सुरअचेतनचेत
१ ॥मरहठाछंद॥ एसुरअचेतोकछुयकचेतो आषरजगमेंमरनाहे
नरदेहीपाइकर्मेमाइ तिनसौफिरतरनाहे १ कौधर्म्मविसारौपापविचि
तारौ इनवातनकासरनाहे जौनूपकहायेकेकमचलाए तौनिलेका
करनाहे पु १ धनजोवनआयरहेअदाए सोसंध्याकावरनाहे विष
यारसरातोरहेसुमातो अंतअगनमेजरनाहे पु २ एकदिनकौजीवोवि
षरसपीवो बहुरनरकमेपरनाहे जेसीकछुकरनीतेसीभरनीबुरे
फलसेडरनाहे पु ३ छिन्नछिनतनछिजे आउनौधीजे अंजलिजलजौज
रनाहे जमकीअसवारी रहेसुतियारी तिनसोनीसदीमलरनाहे पु ४
किंमोफिरआयौ अंतनापायौ जनमजराडुषभरनाहे क्यादेषिभूलो
नेनरमविरांने एहछपनकावरनाहे ५ डुरगतिकोपरवोबहुडुषको

Dr. BHAU DAJI

त

ब्रह्म° मरबो का गल्लअतौं ऊसरनाहे ॥ परसौहित जांनेमुढनेमांने ॥ एहतननहि
६६ ऊसरनाहे ६ ॥ मिथ्यामतलिनि आपुनचिन्हि ॥ कर्म्मकलंकनांहरनाहे
जिनदेवचितारो आपुनिहारो ॥ जिनसोजीयउधरनाहे ७ ॥ दुहरा ॥ जनम
मरनतेनायकेजीव चतुर्गतिमांहि ॥ पंचमगतिपाइनहि ॥ जोमहिमानिजपां
हि ८ निजस्वभावतेप्रगटते प्रगटभएसर्वदर्व ॥ जनममरनदुषत्यागते
जांनतलागौसर्व ९ जे यामहिमाप्रगटज्ञान ॥ कहेकहालोकोय ॥ केजानेजि
नकेवलि ॥ केसम्यकदृष्टिलोय १० ॥ इतिसंपूर्ण ॥ बो ॥ अथराग माला लिषते
राग भैरव ॥ यादेहिकोसोचकहाकीजे ॥ जासोधोइयेपेछीजे १ ॥ या ॥ जोजोधो
इयेसोसोभारी देषकुदिष्टिविचारकुषरी २ ॥ यादेभोघारनिसवासरवेहनि
कोटजतनकीएथिरनाहिरेहनी ॥ या ३ ॥ तत्वयह आतमरसपीजे ॥ परगुन
त्यागजलंजलदीजे ॥ या० ४ ॥ संपूर्ण ॥ रागदेवगंधार ॥ अबमेछाड्योपरफं
फाल लगोअनादिमोहभ्रमभारी तजेताहि ततकाल १ अ ॥ आतमरस
साष्योमेअद्भुत ॥ पायोपरमदयाल ॥ सिद्धसमांनशुद्धगुनराजत ॥ सोसम ६६

रूपविचाल अ २ ॥ संपूर्ण ॥ रागबिलावल ॥ याघटमेपरमातमा ॥ चिन्हमुर
ति भैया ॥ ताहिविलोकैंदिष्टिहे ॥ पंडितपरषइया ॥ या १ ग्यांनसरूपसदाम
ई नवसेफतरेया ॥ त्रिकुलोकमेप्रगटहे ॥ जाकीवकुरइया ॥ पा २ आपत
रैतारैपरै ॥ जैसे जलनइया ॥ केवलशुद्धस्वभावहे ॥ समझ्योसमझैया ॥ पा
३ ॥ देववहे ॥ गुरुहवहे ॥ जीववसेपरवसीया ॥ त्रिभुवननिकटवहेसदा
चेतोचितचइया ॥ ४ ॥ रागबिलावल ॥ नरदेहिबहुपुन्यसो ॥ चेतनतेपाइ
ताहिगमावतबावरे ॥ एहकोनवडाइ ॥ नर० ॥ तपजपसंजमनेमव्रतकरले
करेभाइ ॥ फेरतोकुकुलभमाहा एहगतचतुराइ ३ ॥ रागरांमकलि ॥ अरे
तेजुयेजनमगमायो ॥ पुरवपुन्यकीयेकहुअंतहितातेनरभोपायोरे ॥ देव
धरमगुरुग्रंथने ॥ परषे ॥ नहुकुरभरमायोरे १ ॥ फेरतोकोमलवोएहडु
रलभ ॥ दृष्टांतवतायोरे ॥ जोचेतेतोचेतरेभैया ॥ तोकोकहिसमझा
योरे २ ॥ रागरांमकली ॥ जीयकुमोहमाहादुषदाइ ॥ कालअनादिजित
तितराष्यो ॥ सकतिअनंतछिपाइ ॥ करमेकरकेनरभोपायो ॥ तनयेतजग

व.स.॰ तलराइ १ मातताातसुतबंधववनिता अरुपरवारवडाइ तिनसो
७० प्रीतकरतनिसबासर जातनसबठहराइ २ जीवविकुगतिजामृनम
रनमाहाढुष अरुबकुकष्टसहाइ संकटसहितचेतनहिचेतन न्रमम
डाअतिपाइ ३ यहविनुतजेपरमपदनहि यौजिनदेवबताइ तातेमोह
त्यागलेनैया सौप्रगटेवकुराई ३ ॥इति॥रागकाफी॥ जाकोमनलागोनि
जरूपही नहिऔरकौनावे सौअटटधनलहैरंककुं औरनेकाकुं
दिषावे १ गुनअनंतप्रगटेजिहांयानिकै तापटतरकौआवे इहविधहंस
सकलसुषसागर आपुहिआपलषावे २ ॥इति॥रागसारंग॥ नगनदिगं
बरमुद्राधरिकैं कबनिजआतमध्यान जगतगुरुकबनिजअतमध्यान
ऐसौलबदहोयकबमोकुं होधाबिनकोपान १ जेकबघरत्यागिहोउव
नवासी परमपुरुषलोलान २ जे रहोअडोलजोरिपदमासन कर
मकलंकषिपान जे केवलज्ञानप्रगटकरिअपनो लोकालोकलषा
ऊं जे सुषअनंतविलसोतिहयानिक कालअनंतगमावे मांनसेघनिज ७०

महिमाप्रगटे बहोरिनजौमेआवे ४ ॥रागगोडीपार्श्वनाथजी॥ गोडीप्रभु
पासपूजीयेहो मनधरिपरमसनेह सकलकर्म्मजेजंतोहे पुरेवांछित
आस तासुनामनितलीजीयेहो दिन २ लीलविलास गो १ केवलपद
महिमालष्योहो धरोकुंसुथिरताध्यांन ध्यांनमांहीनुरआनिये इहवि
धश्रीभगवांन गो ३ औरसकलविकलपतजोहे राष्योप्रभुसूप्रीति
आपुसरनरिएकरियो यहजिनंदकीरीति ४ जाकेवदनविलोकतेहो
नासतदुरमीथ्यात ताहिनमेंनितभावसोहो पासजगतविष्यात ५ गो
॥रागगोडी॥ कहापरदेसीकोपतीयारो मनमानेतबचलेपंथकों सां
झगिनेनसवेरो क १ सवैकुटंबछांडिइततहीमें त्यागचलेतनप्यारो
दुरदेसानरचलतआपुही कोउनराषनहारो क २ कोउप्रीतिकरो
किनकोटिक अंतहोहिमारो क ३ धनसोराचिधर्मकोभूलत झुलत
मोहमझारो क एहविधकालअनंतगमायोपायोनहिभवपारो क सांच
सुषसुविमुषहोतहे भ्रममदीरामतवारो क चेतनचेतकुंसुनहेभैया

रत्न० आपुहिआपसंभारो रू ॥ रागगोडी ॥ तेगेहलो भाइतुगेहलो जगरा तेअब
७२ केपेहलो ते अपापरतेभेदनजांनो तेबुडेभ्रमबेहलो धनधनकरत
फिरतनिसवासर तिनकोजनमगमायोएहलै भ्रममेमगनलगनपुग
लसो ते भवसागरसेहलै ते क्रोधमांनमायामदमातो विषयनकेर
समांहिरेले ते भैयाचेतत्वतुरकछुअबके नरकनिगोदहिले ते ॥ रागगो
डी ॥ छांडिअनीमांनजीयारे रूकेतुअरुकौनतेरा सबहेमहमानदेषरा
जारंकसबकोउ थीरनहीएहथांन जगतदेषततोहिचलायो तोहिदेष
तआनंद घरीपलककीषबरनहि करा होयविहांन सापक्रोधअरुलो
भमाया मोहमदीरापांन रागदोषहिटारीअंतर दुरकरोअग्यान व
भयोसुरपददेवकबहु कबहुनरकनिदांन इमकरमवसबहुनाच
नाचै भैयाआपुपहिचांनि व ॥ संपूर्ण ॥ रागसोरठ ॥ एकसुनजिनसास
नकीबतियां जातेहोयपरमसुषसतियां ए निजपरभेदकरोकुदीनरति
यां एसुषअनंतहोयसबनीकतियां मीटतसकलभवभ्रमकीघतीयां पर ७२

चे×

मजोतिप्रगटेपरभातियां भैयानिजपदगहोनिजमतियां ए ॥ संपूर्ण ॥ राग
कान्हडो ॥ देष्योमेरीसहीएआजचेतनघरआवे कालअनादिफिरयोपर
वसही अबनिजसुधहिचेतावे मे १ जनमजनमकेपापकिए तेछिनमांहि
विलावे मे० श्रीजिनआग्यासीरपेधरके परमानंदगुनगावे मे २ देतज
लंजलफेरफिरनको एसीजगतबनावे विलसेसुषनिजपरमअषांडित
भैयासबनमनभावे म ३ ॥ संपूर्ण ॥ रागकेदारो ॥ रूसेदेतकरमनदोस
मनहोहोआपुकीनो गहेरागअरुदोस के० विषेकेरसआपुभूलोपाससे
तनपोस देवधरमगुरुकरीअनंता मिथ्यातकेमदजोस के फलउदेभ
इनरकपदवी भजोगकेकेरा कौ येआपुसवनचुगति अबकराअपसोस
दुषतोबकुकालवीते लहिनांसुषजलसोसो के क्रोधमांनअरुलोभमा
या भरोभनघरवासचेतचेतनपायनरभो मुगतिपंथसुधोसके सं ॥ पूर्ण ५
रागकेदारो ॥ रूसोसुप्रीतकीनीकरागुनतुमजांनी चतुरचेतनचेतविचा
रो कछुहिपहिचांनि येचेतनतुमसचेतन देष्योदिष्टविनांन परसाग

स्त० अपनोरूपगहिये एहिचेतनपरवांन ॥संपूर्ण॥राग अडानो॥ एमनश्रेसो
हेजिनधर्म ॥ जाकेदरससरससुषनपजत मीटतसकलनवनमसुध
७२ सरूपसरुजगुनसागर जांनतसबकोकर्म्म १ ग्यांनदर्शचारीत्रकरीराज
तपरमतनहिकर्म्म निश्चोध्यांनधरयोप्रभुको जोप्रगटेपदपर्म २ ॥संपू
र्ण॥दोहरा॥ श्रीजिनवरणबुजप्रते वंदनभविकधरीभाव केवलपदआ
वलंबजिन करतजगतविसवाव १ स्वर्गमर्तुपातालजिन श्रीजिनविं
बअनुप तिहप्रतिभवीकवंदीतनीत भावसहीतशिवरूप २ ॥रागविहं
गडो॥ भविकतुम्हवंदोकुमनधरीभाव जिनप्रतिमाजिनवरकहियेभ०
जाकेदरसपरमपदप्रापति अरुअनंतशिवसुषलहिये भ० निजस्व
भावहेनिर्मलनिरषत करमसकलअघअरीदहिये भ० सिद्धमांनप्रगटे
तिहध्यानिक नीरषनीरषबविजरगहिये अष्टकरमदलभंजैप्रगटे ७२
चिनरूमुरतिमुनिर्वरहिये भ० चैयासुभावअपनोपदनिरषकुंजोअरैज
रअमरपदचहिये भ० माहापुनसंयोगमिलतहे भइयाजीप्रतिमासहिये

॥संपूर्ण॥रागविहंगडो॥ वेचेतनसवदुषविसरगए परेनरकमेसंकटसह
ते अबमाहा[illegible]भएसुरीसिजसवेतनवदन रोगएकत्रहए हो करतपो
कारपरमदुषपावत करमनआनंदए हो ककुसीतककुतेसनमाहा
भव सागरआतरयेहो भैयाचेतपरमपदअपनोनासोआगेआए
॥२०॥संपूर्ण॥रागमारु॥ जेजिदेषोवितरागने सोसाहोसेविरारे वएदे
ष्येहोसेनहिक्योहि काहुहोयअधिरारे समयएकवदेनहिघटसी जोसु
षदुषकीपीरारे तुक्योसोचकरेमनकुडो होयव्रजज्योहिरारे जे १ लगे
नांतिरकबांनबांनककुं मारीसकेनहिमीरारे तुसंभाफोरबलअपनो सु २
षअनंतसुपीरारे जे २ निहचेध्यांनधरोवाप्रभुकोजोटारेभोचीरारे
भैयाचेतधरोनिजअपनो जोतारेभोतिरारे जे ३ संपूर्ण॥रागधनसरी
कौ जिनवांनिं[illegible]नहितारे एहआकणी मिथ्यादृष्टिजगतनिवासी लहि
समकीतनिजकाजसुधारे गोतमआदिश्रुतकेपाठी सुनसबदअघ
सकलनिवारेर १ परदेशीराजाबीनवासी भेदतत्वेचरमसधारे पंचमाहाव्रतध

ब्र.ल.०२ सोरे भैया सुगतिपंथ मुनिराज सुधारे २ ॥ संपूर्णं ॥ राग धनासी ॥ जिनवांनि सुनतरत
संच्चारे समकीत दृष्टि नव ननौ वासी ग्रह व्रत कैवल तत्व निहारे १ गणधर गणेद्र
७२ दमावति पत्त कमे जुगल नाग अनुपास उवारे वकुबल बकुमांन धरत है मुनि ते
वचन सीव सुष अवधारे २ गणधर सर्व प्रथम धुनि सुनके दुविध परीग्रह से
घनिवारे गजसकोमाल वरषव सुही के दस्त्राग्रहत कुमिसवहारे ३ मेघकुमर
श्रेणीक को नंदन वीरवचन निज नव हि चितारे औरै जीवत रे जे भैया तीसवे
जिन उपगारे रे ४ ॥ संपूर्णं ॥ राग धनासी ॥ चेतन परे मोह वस आय मांनन हि के कु
समझायो विषयन रहे लोभाय नरक निगोद भ्रमन बहु कीनो सो दुष कहो नां
जाय चे० काल अनाद दुषीत बहु विता फरि रिति हांपंथ हि धाय ज्ञांन बुरूप रत
कीं कुप तासो कहा वसाय चे नर भोपाय धरम न हि कीनो आगे को उपाय
जैसे उमदि हार चिंतामनि मुरष फिके पीछ ताय ४ सदगुरु वचन धार ले अ
बके जाते मोही बीलाय तब प्रगटे आनंद रस भैया सोनिह बेवहराय ५ चे ७२
॥ इति श्री पद परमारथ संपूर्णं ॥ अथ गुरु प्रश्नोत्तर दुहा लिष्यते ॥ दुहा ॥ क

दीर्घ व्यनि सीष सुनि आये गुरु के पास पुज सुनो एक विनती अचरज की अरदास
१ आज अचंभो मि सुनो एक नगर के बिच राजा रीपु मांचि परहो राज करे स
बनीच २ निच राजा जिहां करे तिहां नृप बल हीन अपनो जोर चले नहि
उन ही के आधिन ३ वेश्या को मांने नही एह वासो रस लीन सतर कोडा कोड
लो बांदी षां ने दीन ४ बांदी वांन समांन नृप करि राषो उहि ठौर वाको जोर
चले नहि उन हि के शिरमोर ५ वे जो आग्या देत है सोइ करे हि कांम आपन
जाने नृप मे ऐसे हि चितन्न म दी उनके चेरी सुर चेत जि निज नारी निधांन
कहो स्वांमी सो कोन नृप जिन को असो ग्यान ७ कोन देश राजा कवन कोर सो
कुल मांहि एक को दासी गुरु कृपा करी वाको कहो विचार ८ गुरु वचन गुरु
बोले समकीत वीना को उपा विनहि सबै रीघ एक ठौर है ॥ काया नगरी माहि
९ ॥ काया नगरी जीव नृप अष्ट कर्म अरि जोरि ॥ आपंन भाव दासी रचे ॥
पगे विषै की ओर १० विषै बुध जी हानही ॥ तिहां सो मन की चाह जो सुमति सु
कुलत्रीया यह वाकी निरवाह ११ आपु पराये वसी परे ॥ आपा डारयो षोय

DR. BHAU DAJI

रत्न० आपुआपजांनेनही कहौआपुकुंहोय १२ आपनजानेआपुकौं कोनवता
७४ वनहार तवैसिस्ससवकीतलहौ जौनसवैविचार १३ यहगुरुसिष्यचतुर्दशी
सुनकुसवदमनलाय कहैदासभगवंतके समताकेघरआय १४ ॥ इतिगु
रुशिष्यचतुर्दशीसंपूर्णं ॥ अथमिथ्यातविध्वंसनचतुर्दशीलिष्यते ॥ सवैतीर्
थंकरकानमस्कार ॥ सवैया ॥ वंदौरुषभजिनंद अजितशंभव अभिनंदन सो
मतीपदमसुपास वकुर वंदप्रभुवंदन सूवीधशीतलश्रीहंश वासपु
जहिसुषदायक विमलअनंतसुधर्म शांतिकुंथुशिवनायक अरिम
लमुनिसुव्रत नमतपापपुजपंकतिहरेय नमिनेमपासजिनवीर कहुं
भवीत्रिकालवंदनकरय १ ॥ मिथ्यातगुनस्थानकमोचदिचतुर्दशीगुनस्था
न ॥ [illegible] सवैया ॥ ३ ॥ मिथ्यागांवभनदभ
यो अंधकारन्हासिगयो समकप्रकासलयोगांनकला भासदे अनौव्रत
भावधरैमाहाव्रतअंगीकरैश्रेणीध्यारोचदैकइप्रकृतिविनासीहै मोह
कोपसास्यौडारि घातियासुकर्महारि लोकालोककौंनिहारभयोसुषरा ७४

सीहै सर्वकुंविनाशकर्मभयो माहादेवपर्मवंदौभाव ताहीतिनलोकअपवा
सीहै २ ॥ रागद्वेषनिवारण ॥ श्री वीतरागसौवितर्कयहकथन ॥ सवैया ॥ ३ ॥
नेकुरागद्वेषजितेभए वितरागतुमतिनलोकपूज्यपदएहीसागपायोहै
यहतोअनुठीवात तुमहिवतायोदेवजांनिहमअवहीसुचितललचायोहै
तनकहूकष्टनासपाइये अनंतसुषअपनेसहजमांहिआपवहरायोहै
यामेकहालागहै परसंगत्यागितहीडारिदिजेभ्रमशुध आपहीकहायोहै
३ ॥ पंचसमयवर्णनं ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ वितरागदेवसततोवसतविदेहषेतसिद्धजुक
हावेशिवलोकमधिलहिये आचारजउवजायदुकुंमेनकोउइहांनहिसा
धवतायेंसोतोरवनमेंकहियै श्रावकपुनितसुतोविद्यमांनइहांनहीसम
ककेसंतकोउजीवसरदहीयै शास्त्रकीसरधातामेवुधअतितुछरहिपं
चमसमैमेकहोकेसेपंथगहीयै ४ ॥ याकेप्रतिउत्तरलिष्यते ॥ युवा आत्मह
[illegible] कथन ॥ ३ ॥ तुंहीवीतरागदेवरागद्वेषटारिदेषितुंहीलोका
हावेसीधअष्टकर्मनासतै तुंहितीआचारजहेआचारजोपंचाचारतुहि

ब्रह्म० उवज्झायजि नवांनिकेप्रकाशतैं परकोममत्वसागिगुहिहै रिषराज श्रावक
ग पुनिंगुहि व्रतएकादशभावतै सम्यकसुभावतेरोसास्त्र पुनिंतरीवानिंगु ग
७५ हीनैयाग्यांनिनिजरूपकोनिवासतै ५ ॥ आलशाकरुउद्यमजिनिकराय
रुकथन सवैया ॥ २३ ॥ आलशाकरैउद्यमजिन वानोंसोबकुंसदनपिछोरी
तिंनी काहूकोरैंनदिनारटिध्यावतलिष्योलिलाटमलेसोइ अांनि आव
तजातमरैजीवकेतक ऐसेकुं भेदहीएपहिचानि तातैएकंतगहोउरअं
तरऐसीषयहैपरहीसूषमानिं ६ ॥ अथउद्यमवचन ॥ स० ॥ २३ ॥ उद्यमक
हेअरेसवआलसतुसरभरक्यौंकरैहमारी हमभिथ्यातत्तजैगहेसम्य
कजोनिजरूपमाराहितकारि श्रावकधर्मएकादशभेदसोप्रीमुनिपं
चमाहाव्रतधारी चहिगुनथांनि विलोकसर्हेगेसागिहिकर्मवरेंशि
वनारी ७ ॥ मिथ्यातभावनाज्ञान ॥ स० ॥ ३२ ॥ मिथ्याभावनाशहोयतवैग्यां ७५
नभासहोयमिथ्याकेमिलापसो अशुताअनादिकी मिथ्याकेसंयोगसेति
मोक्षकोवियोगरहैमिथ्याकिवियोगबतिजानैमरजादकी मिथ्यातकीमग

त
नतासौंसंकटअनेकसहैमिथ्यातकेमिटाए भव भांवरलेवादकी ॥ ऐसीमि
थ्यारीतकीप्रीतिकोंनिवारैसैंकरैनितप्रगटशक्तितोरीकर्मादिकी ८ ॥ रा
गद्वेषमोहनिवारन ॥ स० ॥ ३ ॥ मोहकैंनिवारैरागद्वेषकुंनिवारैजाहिरागद्वे
षटरैमोहनैंककुनेपाइयै कर्मकीउपादिकेनिवारवेकोपेचयहैजरकेउ
षारेवृक्षकेसैवहराइयै डारिपातफलफुलसवेकुंमीलायजायकर्मनकेवृ
क्षनकोऐसेकेनसाइयै तवेहोयचिदनंदप्रगटप्रकाशरूपविलसेअनं
तसुषसिद्धमेंकहाइयै ९ ॥ सर्वेजीवनिज सं भारतवजांन ॥ स० ॥ ३ ॥ ज
बैचिदानंदनिजरूपकोसंभारिदेषेकोनकर्मकोनहमकहांकोमिलापहै रा
गद्वेषभ्रमनेअनादिकेनमाएहमतातैंहमभूलिपरैलागेपुनपापहै रागद्वे
षभ्रमहैसुभावतोहि मारोनांहीहमतोअनंत ग्यांनभांनसोप्रताप
है जैसेसिवषेतवसैतसौंरहलइहांलसोतिकुकालसिद्धरूपनैयानिज
आपहै १० ॥ जीवपरमासदानिनयरुकथन ॥ ३ ॥ जीवतोअकोलोहेत्रि
कालतिहोंलोकमध्यग्यांनपूंजप्रांनजाकेचेतनसुभावहै असंख्यातप

ब्रह्म० रंदेशीपुरीतप्रवांनवनो । अपनेसहजमांहिआपुवहरायहे । रागद्वेषमोहतो
७६ अुभावपरसंगतिमिलावहे अनादिहीकोचलोपायहे । आतमसुभावसो
विभावसोअतितसदाचिदानंदचेतवेकोऐसेमेउपावहे ॥११॥ उअक
मभावकर्मअनादिकेजीवकेमाथयहकथनसवैया ॥३१॥ रागद्वेषभ्रमभाव
लगोहेअनादहिकोजीकेपरसादपरभावभावहतुहे । बंधतअनेककर्म
इनकोनिमितपायतिनहिकेफलसबएहपेसहतुहे । चिहुंगतिचोरासी
मेजनमजराकेदुषमरनमिथ्यातयहतोलहतुहे । याहिक्रमकालतेअ
नंतवितगयोइहांआजकुलोचिदानंदचेतोनचहतुहे १२ ॥ अथमिथ्या
तभाववर्णनं ॥ सवैया ३१ ॥ मिथ्याभावजोलोतोलोभ्रमसोनातोदुटोमि
थ्याभावजोलोतोलोअरीनहिकुटीये ॥ मिथ्याभावजोलोतोलोमोह
कोयभायरहेमिथ्याभावजोलोतोलोपरसंगजुटिये । मिथ्यातभावजो
लोंतोलोचिहुगतिफिरेमिथ्याभावजोलोकर्मनविसुटिये । मिथ्यातकेवि ७६
नाशहोतप्रगटप्रकाशजोतिसुधेमोषपंथसुऊनेकुंअहटीये ॥ १३ ॥ सा

उरध्वमध्यअधलोकतासुमेएकतिहुंपल किसहिंतोहोयसहायइहकुमितहिंदुतिऊमजोदु
खकृतकर्मभावनिजबंधआपुकोने सोदुषसुषदृयरुपआ ७

दोहाएहुजीवताहिकोआपनेकर्मवसिफरतुहे ॥ दुहा ॥ यएहध्यानकरद
यदिने तिहमधनकोईराषिजयाक्रमविसतितिम सबजगतजीव
जगमेफिरतसुपांनवंतभासंतइम १४ ॥ दुहा ॥ भैयासुषसागरपरष
निरषजोतिनिजचंद मिथ्यातविध्वंसचतुर्दशी पटनवदतआनंद १५
संपूर्ण ॥ अथगुणमालानिष्यते ॥ दुहा ॥ तिर्थंकरत्रिभुवनमुकट तारणत
रणजिनंद तासचरणवंदनकरुं मनधरीपरमानंद १ शुणहिसंयुग
तजिन दोषअठारहनास एलंछनजाद्विवमे नितप्रतवांदुतास २
॥ चोपई ॥ दसगुनजासुजनमतेहोय प्रसेदादिदोषनकोय ॥ नीम
लतामलरहितशरीर । उजलवरनरुधिरखरनजिमक्षिर ३ वज्रव्र
षभनाराचप्रमान समसतुरससंस्थानवषांन सोभनरूपमह
दुतिवंत परमसुगंधशरीरस्वसंत ४ सहसअगेतरलेछनजासुब
लअतुलवपुदीसेतासु अनंतसक्तिअनंतबलप्रकास अनंतज्ञा
नसहितविलास ५ हितमीतवचनसुधासेंऊरे ताचरणभविवंदनकरे
च

ब्रल० ५ दशगुनकेवलहोतप्रकाश परमसुत्तिषचकुंदिशन्नास दैसैंजोजन
७७ मांनप्रमांन चलतगगनमांहिश्रीभगवांन ६ वपुतेंग्यांनघातनांहोय।
आहारादिकक्रियानकोइ उपसर्गरहितपरमसुषकार चकुंदिसआं
ननदिसेचार ७ सुबविद्यास्वामीजगवीर बायावरजीतजासुसरीर।
नषअरुकेशवृदैनहिकोय नेत्रपलकपलनलागेनाही ८ चउदह।
गुनदेवहिकृतहोय सर्वअर्द्धमागधिभाषासोइ मैत्रीभावजीवसब
धरै सर्वकालफलफूलहीफरै ९ दर्पनसमभूनिर्मलतामहि समक्वेंर
एजिनआगमकही सुगंधसुषदविननलपौंन सर्वजीवआनंदनुतौ
न १० धूलिकंटकावर्जितभूमि गंधोदकवरषतुहैजूम पदमउपरप्र
नुचलतजिनेश सर्वनाजउपजहिचहूदेश ११ निर्मलहोयआकाशवि
शेष निर्मलदशाधरतुहलेष धर्मचक्रजिनआगेचलै मंगलअष्टपा
पतमदलै १२ अष्टप्रातिहारजआनंदकंद वृषआशोकरहेदुषदंद पु ७७
हपवृष्टिशिवसुषदातार दिव्यध्वनिजिनजैजैकार १३ चौउसठिचवर

दरिहिचिहुंओर सेवहिइउमेघमेघजिमभोर संघासनसोभितदुतिवंतभा
मंडलबविअधिकदिपंत १४ दुंदुभिजरामरनदुषहरै तीनछत्रत्रिभुव
नजैकरै एचौत्रिसअतिससोभंत तिर्थंकरपदविनिकटलहंत १५॥
॥दोहरा॥ अनंतग्यांनमेंआतमा दर्शनजासुअनंत सुषअरुवीर्यअनं
तजससोवंदुभगवंत १६ एछ्यालिसगुनसहित वर्तमानजिनदेवदोषअ
ठारहनासतैं करेहिभविकनितसेव १७॥चौपई॥ छुडात्रिनभयाकुलजा
स जनममरनजरादिकनास इंद्रिविषयविषादनहोय विस्मेआठमदन
हिको १८ रागअरुमोहनहिंरंच चिंताश्रमनिद्रानहिंपंच रोगविनापरस्वे
दनदीस एदुषनविनुहेजगदीस १९॥दोहा॥ एगुनअनंतभगवंतके नि
हचेरूपवषांनि एकेहेविवहारके नविकलेहोउरआनि २० भैयानि
जपदनिरषतां दुविधारहेनाकोय श्रीजिनगुनकीमालका पढेपरम
सुषहोय २१॥इतिश्रीजिनगुणमालासंपूर्ण॥ अथ[illegible]
नमोसिद्धसमआतमाब्रह्मग्यांनि जिंहांकर्मकेवंचकुंअसनहिलसे मोह

श्री०
७८

मिथ्यातमदध्यांनदुरेनसे ॥ रागअरुद्वेषनहिजासुथानी ॥ नमो ॥ १ ॥ नहिक्रोध
नहिमांनजिहांयांनत्रासेकहूं ॥ मायानहिलोभजिहांदुरदीसेसकुं ॥ प्रकृ
तिप्रकृतिसवेमांनी ॥ नमो ॥ २ ॥ जामेंग्यांनअरुचारीत्रदर्शनगुनराजेई ॥ सु
कृतिअनंतसवेभ्रूवल्लाजेई ॥ पदपरमेपेषनिजराजधांनी ॥ नमो ॥ ३ ॥ अति
तअनागतवर्तमांनजितेदर्वगुनपरजायसर्वभासहितिनिसुद्धनेसिद्ध
जिमज्ञांनप्रांनी ॥ नमो ॥ ४ ॥ संपूर्णं ॥ दुहा ॥ प्रातसमेश्रीपंचपद वंदनकी ॥
जेनीत भावभगतिभरआनके निहचेकरीनिजचित्त ॥ १ ॥ चोपई ॥ अरिहं
तीजिनवरप्रनमीजे भावसहीतसिद्धजपीजे ॥ आचारजपरवंदनकीजे श्री
उवज्झायचरणचितदीजे ॥ १ ॥ साधुतणागुणमनआंणीजे षटद्रव्यभेदभ
लाजांनिजे ॥ श्रीजिनवचनअमृतरसपीजे ॥ जीवसकलनीरक्षाकीजे ॥ २ ॥
लगोअनादमोहनमीजे ॥ त्रिभुवनमांहिजनममरणनांकीजे ॥ पंचइंद्रीप्र
बलदमीजे ॥ जिनआतमरसमांहिरमीजे ॥ ३ ॥ प्रगुनसागदांननीतदीजे ॥ नि
जस्वभावसुधशिलपालिजे ॥ अष्टकर्मतजितपएहकीजे ॥ सुधस्वभावही ७८

DR BHAU DAJI

मोषपांमीजे ॥ ४ ॥ दुहा ॥ एहविधश्रीजिनचरणनीत ॥ जेवंदतधरीभाव ते
पावेसुषस्वास्वतो नेयासुगमउपाय ॥ ६ ॥ संपूर्णं ॥ अथगुणमंजरीली
ष्यते ॥ दोहा ॥ परमपंचपरमेष्टिको वांदुसीसनमाय ॥ जासप्रसादगुण
मंजरी कहुकथागुणगाय ॥ १ ॥ ग्यांनवृषरुषउगीयो ॥ सम्यकधरतिमांहि
दर्शनदीप्तभाषासहीत ॥ चारित्रदलनरहकांहि ॥ २ ॥ लगीतांहिगुणमंजरी
जसुवाससुओर ॥ अगरमहिमाग्यांनमे फलीयोअनुक्रमजोर ॥ ३ ॥ जें
सेंब्रहरसालके पेहलांमंजरीहोय ॥ तासुग्यांनपमालका ॥ गुनमंजरी ॥
काहोय ॥ ४ ॥ दयासुवासलसजनता ॥ आतमनीदारीत ॥ समताभगतवे
रागविधि ॥ धर्मरागसोंप्रीत ॥ ५ ॥ मनअन्नावनाभावअति ॥ तागपनग्रह
नविवेक ॥ धिरजहर्षप्रवीनता ॥ एममंजरीअनेक ॥ ६ ॥ तिनकेलछन
गुनकहुं ॥ जिनआगमपरवांन ॥ एहद्रुमशिवफललागहे ॥ देष्योश्रीभ
गवांन ॥ ७ ॥ चोपई ॥ दयाकहिदेभेदप्रकोस ॥ निजपरलछनकहुविका
रा ॥ प्रथमकहुंनिजदयावषांनि ॥ जिहमेंआतमारुचितमोजांनी ॥ सुध

श्रा० स्वरूपविचारेचित सिधसमांनिनिहारेनीत थिरताधरआतमपदमांहि
विषैसुषकीवंछेनहि ९ रहेसदानी जरसमेंलीन सोचेतननिजदयाश्र
७९ विन १० अबदुजोपरदयाविचार जोजांनेसगरोसंसार ११ छहुकाय
कीरछ्याहोय दयाशिरोमणीकहियेसोय थावरविकायअपतेजवायव
नसतित्रसभेदकहाउ १२ मनवचकायविराधेनहि सोपरदयाजिनाग
मकही १३ अव्रतभावनिसदहे यथासकतिकछुइवितपले १३ ।
जोकषायकीमैंदतजोत सोसोदयाअधकीहोत जेसकीरछ्यानिहचे
होय देशविरतिपावरकछु लोय १४ सर्वदयाछेगुनषांन आगेषां
नकहोभगवांन १ औरकहुपरदयावषांन ताकेतंछनभेहोपिछांनि १४
कष्टवदेषीअनजीयकोय जाकेहिरदेकरुणाहोय १५ सक्तिसमांनकरेउ
पगार सोपरदयाकहिसंसार १ दोहा कहिदयाकेभेदसें थोरेमेंसमझा ७८
य जाकेभेदअपारहें जांनतश्रीजिनराय १६ अबवाछलतागुनकहुं
जोरुचीवंतसदीव लागोरहेजीनधर्ममें सोसमदृष्टीजीव १७ चौपई

जेसेंवछ्याचुगगाय तेसेंजिनधर्मयाहिसोहोय लगोरहेनिसदीनतिहमांहि
औरकाजपरमनसानही १८ सुनोजिनागमकेविरतंत सोसोसुषहोहि
तिहामहंत जोदेषेकेवलभगवांन सोनिहश्चैयाकोपरवांन १९ द्वाद
शागहिरूपहिजोई सोजाकेघटअविचलहोय रहेसदाजिनमतकोध्यां
न सोवाछलतागुनपरवांन २० अबतिजिसजनताकहुं जाकेभेदजथा
७३ रकुं देषोजोजीनधर्मिजीव ताकीसंगतकरेयसदीव २१ सवप्राणीप
रसजनभाव मीत्रसमानकरेचितसाव जिहांसुनेजिनधर्मिकोय ।।
तिहांरोमांचितउलसितहोय २२ देषेदरसलहेआनंद सोसजनता ।।
हेगुनचंद अबअपनिनिद्याअधीकार कहुजिनागमकेअधीकार २३ जव
जीयकरेविषेसुषभोग निदितताहिरहेउपजोग अथकीरितकरेजीवजीहां
भ्रिष्टरहेरेनदीनतिहां २४ देहादीककुटंबादीकनेह जबहेतबभ्रिष्टेनिजजे
ह व्रतपचषानकरेनहिरंच तबकहेरेमुरषतिर्यांच २५ जबकहुंजियकी
हुंरपाहोय तबधिकारकरेनीजसोय जवपरणांममुर्षवहिजाय तवनि

ध्र०२ जनीघाकरेप्रभुन्नाय २६ एहविध जेनिंदहि जेजीव जेजीन धर्म्मीकहेसदी
८०२ व धर्म्मविषेउघमनहीहोय तवनिजनिश्चहिधर्म्मिहोय २७ ॥दूहा॥
तमनिंघापापारंभ करतनवीकनीसदीस अवसमतालछनकहुं भा
षीतश्रीजगदीस २८ ॥चोपई॥ समताभावधरेउरमांहि वेरभावका
हुंसुनांही निजसमांनजानेशिवहेरा क्रोधादीकतवकरेविघास २९
उतमरुमाकरेनिजअंग सुषदुषदहुमेंएकेवंग कोउक्रोधकरेय
हआय तबहु ज्ञाकेसमताभाय ३० उपजिक्रोधकषायकदाचि तिहां
तजिरहेआपुसुराचि सोसमताहिकलछनजांन योरेमैकछुकहोवषां
न ३१ अबकहुं भगतिभावजोहोय सेवेहिपंचपदहिनितसोय दे
वगुरुजिनआगमसार एनकीभगतरहेनिरधार ३२ जिनप्रतिमा
जिनसारषजांन पुजेभावभगतिउरआंनि साधर्म्मिजायदेषेसो
यः ताकीभगतीकरेफुनिसोय ३३ जामहिगुणदेषेअधिकार ता ८०
कीभगतकरेनीरधार भगतिभावतेनहिअघाई समदृष्टियह

सहजसुभाई ३४ अबकहुंवैरागवषांनि उदासिनसमसोहेतिहांजांनि जोपे
रहेग्रहस्थावास तोहुंमनरतिहांरहेउदास ३५ कबजांनेचारित्रग्रहलेउ परि
ग्रहसवेत्यागकरीदेउ छिनछिनगुरदेषेसंसार तातेंरागतजेनिरधार ३६ निज
शरीरविलेछनकरे अशुचिदेषममतापरहरे यहजडमेंचेतनसरवंग के
सेंरागधरूंएहसंग ३७ मनलागोआतमरसमांहि तातेंवेस्वासनानांहि
एमवेरागधरेजेसंत तेसमदृष्टीकहेसिधांत ३८ अबकहुंधर्ममारगकीवा
तसमदृष्टीजीयसवेसोहात पंचपरमपरमेष्टीजांन तिनपेंरागधरेउर
आंनि ३९ जिनआगमजोकह्योसिद्धांत तिनपेंरागधरतहेसंत जोदेषे
जिनधर्म्मउद्योत तोतीहांरागमाहाउरहोत ४० जिहांसुनेजिनधर्मिहोय
तिहमत्तवाकीइछासोय धर्मरागधर्मिपेजोई सम्मकलछनकहियेसोय
॥दूहा॥ कहीआगमगुणमंजरी सम्मकलछनजांन पंचभेदफुनिओरहें ते
कहुंसुनोवषांन ४१ मनप्रभावनाभावधर हेयउपादेयवंत धिरज
हर्षप्रविनताएमसंजुरीप्रत्रतंत ४२ ॥चोपई॥ चितप्रभावनानहिजेधरे
व

ब्रह्म° ८१॥ किहविधजिनधर्मविस्तरे संघचलावेषरचेदांम प्रगटकरेजिनशासननांम
४४ जिनधर्मकीरचनाकरे तामेंबिंबअनोपमधरे करेप्रतिष्टाविविधप्र
कार सोजिनधर्मीचितउदार ४५ साधसाधवीश्रावकवर्ग उनकेधारेकरे
उछ हर्ष पेषेचंगचतुर्विधजांनि सोजिनधर्मिकिहेवषांनि ४६ एहविधकरे
उद्योतअनेक जाकेहिरदेपरमविवेक जिनसासनकीमहिमाहोय नित
प्रतकाजकरतहेसोय ४७ जबकोउजिवमाहाव्रतधरे ताकेतिहांमहोछ
वकरे षरचेदरबदेयेबहुमांन सोप्रभावनाअंगवषांनि ४८ अबकछुहे
यउपादेयभेद जाकेलषेमीटेसबषेद प्रथमकछुहेकहियेसोय जामेत्या
गपकर्मकोहोय ४९ जोपरद्रव्यरूपपरीणांम सोनहिजेआतमरांम राग
द्वेषअरुमोहकषाय तेसबहीनिवारोचित्तनराय ५० पुद्गलसागजोग
सबतोहि उनकीसंगतमगननांहोहि असेजोवरतेपरनांम हेकहि
येताकोनांम ५१ अबकछुउपादेयकीवात जामेग्रहणअर्थविषात
निजसरूपजोआतमरांम चिदानंदहेजाकोनाम ५२ ज्ञानदर्शनचारी ८१

त्रचेउदार पर्मधर्मधनधारनहार निराकारनिरजेनिररूप सोअवनासी
ब्रह्मसरूप ५३ ताकीमहीमाजानेसंत जाकीसकतिअपारअनंत ता
कोसुजसहोयत्रुवनमांहि सबहीकीर्तिलहेजीयमांहि ५४ ताहिउ
पादेजानेजोइ समकदष्टिकहियेसोई ५४ जिनसरूपजोग्रहणकरेय
परसतासवत्यागीदेये असेभावधरेजोकोय हेयउपादेयकहियेसोइ
५५ अबधीरजगुनककुंवषांनि निजकेतेसमदष्टिजांनि धर्मविषेजो
धीरजधरे कष्टदेषिसरधानहिटरे ५६ उपसर्गसहेअनेकप्रकार तब
हूधीरजहेनिरधार मिथ्यामतजोदेष्येकोय चमत्कारतामेंबहुहोय ५७
तबकुंताहिलषेअज्ञान सोधीरजधरसमकवांन अबकछुंहर्षगुणहिस
मुझाइ समदष्टिइहसहजसुनाइ ५८ निजसरूपनिरषेजीयकोइ ता
केहर्षमाहाउरहोय सुषअनंतकोपायोइस तिहिनिरषेहर्षेनीसदीस
५९ बहोड्अकेगुणपरजाय जानेनिजआगमसूपपाय निजनिरषेसु
विनाशीनांहि यांतेहर्षमाहाउरमाहि ६० तिर्यंकरदेवनकेदेव ताको

ब्र.ल. प्रभुताकेसवभेव अनंतचतुष्टआदिकविचार ऐसेंतिंनिजमांहिनिहार ६१
८२॥ जनमजरादिकदुषबकुंनहीं तिहतेंभिन्नअपनोपोषहराहि सिद्धसमां
नविचारैचित तातेंहर्षमांहलहरनित ६२ अबककुंगुणपरविनवषांनि
निजकेतेसमदृष्टिमानि सपरविवेकीपरमसुजांन अगत्रौबोधमांहा
परधान ६३ धर्ममांहांगुणजाकेहोय तातेंमिपुनदुजौकोय जाकेभेदे
नयोप्रकाश ताकीकुमतिगईसबनास ६४ जाननलागेसबवस्तांत जे
सोकछुदेष्योभगवंत जिनआगमकेवचनप्रवांनि तामांहिबुधिमांहापर
धान ६५ चवदहविद्यामेंजोहोय सोव्यवहारग्यांनकहायोसोय तातेजोपर
विनप्रधान सोसमदिष्टिविनुनहिआनि ६६ मिथ्यातिजीयभ्रममेंरहे
सोप्रविनताकेसंग्रहे तातेंकयाएहपरवांन हेप्रविनजीयसम्यकवांन
६७ एहविधमंजरीलगीअनेक ग्यांनवंतधरीदेषीविवेक जेसेंद्रुमसो
भेसहकार तेसेंग्यांनगुंनभनीकेभार ६८ यातेप्रथममंजरीकाकही एहि
द्रुमशिवफललागेसही जाकेघटसमकीतप्रकाश ताकेंगुंनएहहिये ८२

निवास ६९ सम्यकदर्शनलहेजोजीव सोशिवरूपकह्योसदीव तातेंसम्य
कग्यांनप्रधांन जातेशिवफलहोयनिदांन ७० ॥दोहा॥ कहिग्यांनगुणमं
जरी जिनमतकेअनुसार जेसमजेतेसरदहे तेपावेभवपार ७१ यामें
निजआतमकथा आतमगुंनविस्तार तातेंयाहिनिहारीये लहियेआ
तमसार ७२ जेगुणसिद्धमहंतके तेगुंणनिजमांहिजांनि भेयानिहचेन
रषतां फेरकंचकछुनहिमानि ७३ सत्रेसेंच्यालिसके उतममाहहेमवंत
आदिपषदशमीशुदन मंगलकह्योसिद्धांत ७४॥ इतिगुणमंजरीसंपूर्णं
अथलोकाकाशक्षेत्रतिनसंततालराजुलिष्यते॥चौपई॥ प्रणमुपरमदेवके
पाय मनवचभावसहितशिरनाय लोकक्षेत्रकीगणतिककुं राजभेदजि
होंतेलकुं १ घनाकारसबकलोवषांन सततत्रयतेतालीसुजांन ताके
भेदककुंसमझाय श्रीजिनआगमकेसुपसाय २ सिधशिलातिहांगणति
होय उपरकीदहदीसजोय अहमंदीरनवग्रीवविमांन ताहिउपरकेसब
हिजांन ३ रजुअग्यारहघनकाकैर देष्योजिनवरग्यांनमझार ताकेतरे

त्र०लो०
८३
सरगसुजांन ड्डकचक्कीसंष्याउरस्रांनि ४ उपरतेनरकोडुगदेय गनति
भेदसमऊकरलेय साढेस्रढारजुडुकएक घनाकारसबलेयोविवेकप
डुजोडुकसाढेदशहोय तिजोसाढेबारहजोय चोथोसाढीचउदहका
सो डुकसकुभेदजिनागमलसो ६ विडुकस्रोरककुविसतार तिहाराजु
तेतिसनिहार साढेसोरहएकएकजांन इमतेतीसद्द कुडुकमांन ७ सन
तकुमारमांहिदशादीस इनहकुकेसाढेतेतिस स्रबसुधर्मइशांनवि
मांन तिरजोकलोकइहमांहिजांनि ८ मेरुचुलिकातेगनिलेहु राजुसाढे
उनसकहु सबगनतनुपरकीदीस रजुएकसेसेतालीस ९ स्रबनिचे
ककुक्रमसंगुनो जाकेभेदयथारथसुनो मेरुतलेसांचोगनलीजे सात
नर्ककोवर्णनकीजे १० पेहलिरतनप्रनातेजान दशाराजुतिहांककुवषां
नि तिजोसोलहराजुकहि तीजीनर्कविसहेलही ११ चोथीनर्कस्रगाईस
राजु जिहनीकसीजीयसारिकाजु पंचमनर्कराजुचोतिस छवीचालिसक
हिजगदीस १२ नरकसातइकीमरजाद कहिछेयालिसरूपनस्रनादि लो ८३

कस्रंतसबतेजोतरे सोसबनारकीसातेइधरे १३ सातनरककिगनति
जांन सतएकस्रोरछेयानवेमांन सबराजुदेषेजगदीस जएतिनसे
तेतालिस १४ घनाकारनवियनसबजांन उचोराजुचउदहमांनि स्वयं
भुरमणसागरजोय तिहांवानहीराजुएकहोय १५ पुरुषाकारकह्योस
बलोकयाकेपरलोकसुंस्रोरस्रलोक इहमध्येत्रसनाडीपरवांन ताके
भेदककुस्रोरस्रानि १६ चउदहराजुकहिउतंग रजुएकपेहलीसरवंग
तामांहित्रसथावरकोथांन याकेपरेसुथावरमांन १७ एहविधकहिजि
नागमभाष त्रिलोकसारग्रंथकीसाष धर्मध्यांनकोजांनोभेद वर्णचतुर्थ
लषकुविनुषेद १८ इतनोहिलोकाकाश छकुद्रव्यकोइनमेवास चेत
नज्ञानगुनदर्शनधरे स्रोरपंचजडतास्रनुसरे १९ रहेसदाईहलोक
मझार तुंभैयानिजरूपनिहार सतरेसेंस्रालिससही पोषशुदी
पुनमरविकही २० ॥संपूर्ण॥मकबिंदुयाकीचोपईलिष्यते॥दोहा॥
वाडुजिनवरजगतगुरु वांडुसीधमहंत वांडुसाधपुरुषसदा वां

DR BHAU DAJI

दो। सिद्धसिद्धांत १। मधुबिंदुवाकी चोपई। कहुं ग्रंथ अनुसार। दुष अरु सुष
के भेद धिको लहियेपारावार २। काल अनादि गयो इहां। वसत इह जगमां
हि। दुष अरु सुष सो भिन्नता। सबकुं जांनेनांहि ३। विषे सुषन को सुष लषो।
तिहुं दुष लसो अपार। सो जाने जिनकेवलि। हे अनंत विस्तार ४। चो
पई। एकदिन भविजनमिलि सुनाय। आवत देषे श्रीमुनिराय। नगनदी
गंबरपरमदयाल। षटविधजीवदयाप्रतिपाल ५। ज्ञानवंत अरु लब
धिभंडार। परमधरमधनधारणहार। अगाइसमुलगुणधरे। तासुचर
ण भविवंदनकरे। विनतिकरकुदकुकरजोर। एकत्र नुतवबंधनछोर
तवमुनिराजधरमहितजांन। निजआगमकछुकलोवषांन ७। दोहा।
भविकसुनो उपदेसतुम। मनवचइरकरीकाय: जोपावेनिजसंपदा: सं
सेवेगविलाय ८। एकदृष्टांतविचारके: कहेस्यगुरु उपदेस। सुनहोथिर
तासहित: तजिअग्यांनकलेस ९। चोपई। एकपुरुषवनभुलोपर्यो।
हुवत २ सबदीसफस्योचकु। दिसअटविझाझाकार। हीडतककुंवनपा

वेपार १०। माहाभयानकसव चनराय। भटकतफिस्योनकछुअवसाय। जि
तदेषेतितकांननजोर। परोसंकटमाहातिहांघोर ११। सोचतवाघसेंघजि
नषाय। जिनककुंवैरीपकरीनजाय। इहविधदुषितमाहावनधाय। ति
हांथांनिकगजनिकसोआय १२। ताकीदृष्टपस्योनरजहां। घातकरणकों
जोदोरोतेहां। यह भागोआगकोजाय। पिछैगजआयो तिहां धाय १३।
जोयहदेष्योदिष्टनिहार। यहतोरहोकगनिकेचारि। अबमेंभागकहांलों
जाय। कुपएकदेष्यो तिहां वाय १४। परोकुपमेंयहविचार। गजपकरेतो
डारिमारि। कुप मध्येवडभग्योएक। ताकीसाषाफलिअनेक १५। ताम
हिमडुंमांषनकोथांन। ब्रतएकलागोपहिचानि। बरकीजटालबरकी
तीहांरहि। कुपमध्यगिरतेकरग्रही १६। डुकुंकरपकरिरहोतिहांजोर
नि चेदेषेदिष्टमरोरि। कुपमध्यअजगरविकराल। मुहफारोएकुदेख्यो
काल १७। वहनिरषैआवेमुषमांही। तोफरिनाजीकहालोंजाही। चि
हुंकांनेनागादीकचारि। वेवोतिहांतेउमुषफारि १८। कबइहनर[illegible]गि

रहेइरुवौर ॥ गिरौतौयाकौकीजेकौर ॥ निचेपंचसरपलषिउरौ ॥ तबकन्वेकंउं
रत्न०२ मस्तककस्यौ ॥ १९ ॥ देषैवडकीजदाककुंदोय ॥ नदरजुगकाटतहेसोय ॥ इ
८५ कनजलएकरुपांमसशरीर ॥ काटहिजटानहितिहांपिर ॥ २० ॥ कुंपर्कवगज
सुदप्रकार ॥ ऊवफौरवडकौबकुंडारि ॥ पकरिनिसुंडचलावेताही ॥ यहतो
रहोदुभेरडुमसाहि ॥ २१ ॥ वरकीशाषाहातिसबै ॥ मधकीबुंदगिरिएकत
बे ॥ एहिराषीतबहीमुषफार ॥ आवतग्रहणकरेनिरधार ॥ २२ ॥ ऊकफोर
तमाषीतिडीजेह ॥ आयलगीसबयाकीदेह ॥ काटेतनपेबेवेसही ॥ मनला
ग्योमधरसतामांहि ॥ २३ ॥ एकबुंदजवमुषहिपरे ॥ तवदुजीपेंमनसाकरे
लागीहीरसतासौंजाय ॥ दुषसंकटसौनहिअकुलाय ॥ २४ ॥ सोरठा ॥
तबहीयांनकसोय ॥ विद्याधरआकाशमे ॥ जांनपुरुषस्त्रिदोय ॥ बेठेनिज
विमांनमें ॥ २५ ॥ स्त्रिनिरषेतीहबार ॥ कोनपुरुषसंकटपस्यो ॥ एपीनदुषनीवा
र ॥ निराधारनरकुपमां ॥ २६ ॥ दुषअपारअतिघोर ॥ पस्योपुरुषसंकटसहे ॥ ८५
कछुनचलतहेजोर ॥ एप्रभुयाहीनिवारीये ॥ २७ ॥ कहेविद्याधरवेन ॥ सुंनकु

त्रीयातुमससकें ॥ एहमांनतहेहौं ॥ नानिकसकोकोईनहि ॥ २८ ॥ दुहा ॥ त्रीया
कहेप्रीतमसुंनो ॥ करुंसुषमांमेचैन ॥ एहअटवीएहकुपगज ॥ अहीमुष
मुक्ताश्रेन ॥ २९ ॥ कहेविद्याधरप्रीयसुनो ॥ मधबिंदरसलीन ॥ एहसुषमां
निराश्रोहहां ॥ दुषअंगीकृतकीन ॥ ३० ॥ एसबदुषनिवारके ॥ मधबिंद
केस्वाद ॥ लगोमुदसंकटसहे ॥ कहियोसबहीस्वाद ॥ ३१ ॥ बकुरकहेसुंनहो
त्रीया ॥ एसीकवकुनांहोय ॥ तातेजेसंकटसहे ॥ सोसुषमांनोसोय ॥ ३२ ॥
तातेइनकुकाढिये ॥ कहेत्रियासमझाय ॥ विद्याधरकहेहवतजो ॥ पंयत्र
कारयथाय ॥ ३३ ॥ त्रियाकहेचलवोनहि ॥ एहविनकाढेआज ॥ स्वांमीव
डोउपगारहे ॥ कीजेउत्तमकाज ॥ ३४ ॥ त्रियाहठविद्याधरतिहां ॥ उतस्यो
निजहिविमांन ॥ आयकस्योतेनरप्रते ॥ निकसनिकसअग्यांन ॥ ३५ ॥ आ
वेतोहमबांहगहे ॥ तोकुंलनुनिकाश ॥ निजविमांनबेवायके ॥ पहुंचा
वोतोहिवास ॥ ३६ ॥ चोपई ॥ असेवचनसुनततिजकांन ॥ बोलेपुरुषसु
नोहितवांन ॥ एकबिंदसतातेषरे ॥ सोअबकेमेरेमुषगीरे ॥ ३७ ॥ ताकोर

ब्रल० समेल्योंसरवंग तबमेचालोतुमारेसंग ॥ जबवहबिंदुषीरीमुषमांहि ॥ त
बहुजीपेंमनललचाहि ३८ अबएहजोआवेगीसही तोकछुधोकोया
८६ मेंनहि दुजिबुंदपरीमुषआंनि तबतीजापिंकरीपीछांनी ३९ एहबिंदु
विधस्वादकेकाज लागोरहेनहिकछुइलाज विद्याधरहेलादियेपुकार
निकसोनहिचालोतबबहर ४० आयेविमानतयीअसवार निजस्थां
नकपुहसोतिहवार तबेजअमुनिकेनमीपाय कहाकहीप्रभुकहोसमझा
य ४१ हमसमझुनहीएहदृष्टांत कहोप्रगटप्रभुसबव्रतंत कोंनरको
वनगजकुप कोआहिकोअहजटाअनुप ४२ कोंउंदरकोमधकोबिंदु
कोमाषीजोकोदुषवंद कोंनविद्याधरकहोसमजाय तातेंसबसंसेमी
ट जाय ४३ ॥ दुहा ॥ तवमुनिराजदृष्टांतविध कहेनवीकसमझाय सा
वधांनहोयसुनोतमे कहुंकथनगुणगाय ४४ ॥ चोपई ॥ एहसंसारमहा
वनजांन तामांहिजवन्नमकुपसमांन गजजीमकालफीरतनीसदीस ८६
तिहांपकरतहेवीसवावीस ४५ वरकीजटालटकसोरही सोआवर

दाजीनवरकही तहांजरकाटतहेमोछादोय दीनअरुरेनलषोतुमसो
य ४६ माषीचुटततांहीशरीर सोकुटंबादीकदुषकीपीर अजगरप
स्योकुपकेवीच सोनिगोदसबतेंगतीनीच ४७ जाकीकछुमरजादान
ही कालअनादरहेएहमांहि तातेंनीन्लकहेइहगेर चिहुंगतिमांहि
तिन्तहेओर ४८ चिहुंदीसचारमहाकूयंग सोगतिच्यारकहिसरवंग
विं मधकीबुंदविषेसुषजांन ॥ जिहकाजरलोसुषमांन ४९ ओनरयोविष
याश्रीतजीव एहवीधसंकटसहेसदीव विद्याधरतेगुरुसमांन देत
पदेससुंनावेकांन ५० अबतुमनिकसीहिजीवीर दुरकरोदुषसंकट
नीर तबकुमुरषमांनेनहि ॥ मधकीबेदुविषेललचांही ५१ इतनोदु
षसंकटसहेरहे सुगुरुवचनसुंनीतजवोनाचहे तेसेज्ञानहिनजी
यजंत एदुषसंकटसहेअनंत पर विषेसुषमधबेंदुकाज मानतन
हिवचनजिनराज सहेतेमाहादुषसंकटघोर निकसनचलतवध
शिवओर ५३ जेहध्यानकसुषसागरजेरे कालअनंतकुविलसेपरे ॥

दस्त०
८७

जनमजरादीकदुषमीटजाय ॥ प्रगटेपरमधरमअधिकाय ॥ ५४ ॥ बकुरीन
कबकुसंकटसहेनकोय ॥ सुषअनंतभवविलसेसोय ॥ एउपदेशकह्यो
मुनिराय ॥ नविकजिवचेतोनीजकाय ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ सुनकेवचनमुनिंद्रके
नविकचेतोमनमांहि ॥ विषेसुषनसोमगनताकवकूं [illegible] छुटेनांहि ॥ ५६ ॥
विषेसुषनकेमगनसो ॥ एदुषहोहिअपार ॥ ताकेविषयविहंडीये ॥ म
नवचक्रमधरीनाव ॥ ५७ ॥ एहवीचारकरीनवीकजीववंदतमुनिकेपाय
धनधनतारणतरण ॥ जिनएरुपंथवताय ॥ ५८ ॥ जेतोसुषसंसारमे एतो
सबदुषजांन ॥ एमलषिनैयाचेतिये ॥ सुगुरुवचनउरआनि ॥ ५९ ॥ सत
रेसेंचालिसकें ॥ माघस्वरशितपक्ष ॥ तिथीद्वादशीसोहंमनी ॥ नौमवारप्र
सक्ष ॥ ६० ॥ मधबिंदुयाकीचोपई ॥ कहिग्रंथअनुसार ॥ जेसमजेतेसरद
हे तेपावेभवपार ॥ ६१ ॥ इतिमधु० ॥ संपूर्णं ॥ अथसिधसमुदशीलीष्यते ॥
दोहा ॥ परमदेवपरनांमकरी ॥ परमसुगुरुआराध ॥ परमधरममहि
माकहुं ॥ परमधरमगुणसाध ॥ १ ॥ आत्मासिधसमांनकथन ॥ स० ॥ ३१ ॥

धि४
आत्माअनोपमहेदीसेरागद्वेषविनादेषेनवजीवतुमेआपमेनिहार
केकर्मकोअंसकोभ्रमकोनवशकोनजाकोसुधताहिमेनओरआ
पोटारके ॥ जेसोशिवषेतवसेतेसोब्रह्मइहालसेइहांमहांफेरनहीदे
षियेविचारके ॥ जेइगुनसिधमांहितेइगुनब्रह्मपांहि ॥ सिधब्रह्मफेरन
हीनिश्चेनिरधारके ॥ २ ॥ आत्मासीधसमांनधायनुहिकथन ॥ सवैया ॥ ३१ ॥
सिधकेसमांनहेविराजमांनसिदानंदताहिकोंनिहारनिजरूपमानि
लिजीये ॥ कर्मकोकलंकअंकपंकजोपषारडारि ॥ धारनिजरूपपर
नावतागहीजिये ॥ थिरताकेसुषकोअभ्यासकीजेरेनदीनअनुभो
केरसकुसुधारभलेपीजीये ॥ ग्यानकोप्रकाशभासमीत्रकीसमांनदी
सेचित्रजौनिहारचितध्यानऐसोकीजीये ॥ ३ ॥ त्रिविध्रकर्मकेआत्मा
भिन्न ॥ अथसमनोकर्मआहारनहिकथन ॥ स० ॥ ३१ ॥ नावकर्मनामराग
द्वेषकोबमोजिनजाकोकरतारजीवभ्रमसंगमांनीये ॥ द्रव्यकर्मनासअ
ष्टकर्मकोशरीरकह्योज्ञानावर्णिआदिसवभेदभलेजांनीये ॥ नोकर्मस

ब्रह्म० ज्ञातो शरीरतिनपावतहे उदारीकविक्रिय आहारकअवांनिये अंतरात
समे जो आहारविनारहे जीवनोकर्मतिहांनहियाहितेवषांनियेध ॥ जीव
८८ कर्मसोनिन्ननषीहरु उपदेश ॥ सवैया ॥ ३ ॥ जोपैकर्महरेदुषनमसोध
मेसदानिजरूपनिहारयो ॥ ग्यांनप्रकाशनयोअथनासमीथ्यातमहात
मनिवारो ॥ चेतनरूपलषोनिजमुरतिसुरतिसिधसमांनविचारो ॥ ज्ञान
अनंतवहेभगवंतवसेअरीपंकतसोनिसमारो ५ ॥ अथसुधस्वभाव
सेब्रह्मवसयहकथन ॥ छप्पय ॥ त्रिविधकर्मतेभिन्न ॥ भिन्नपररूपपरस
तें ॥ विविधजगतकेचिन्ह ॥ लषेनिजग्यानदरशते ॥ वसेआपुथलमांहि
सिद्धजिमसुधविराजे ॥ प्रगटेपरमस्वरूप ॥ ताहिउपमासवछाजे ॥ ए
हविधिअनेकगुणब्रह्महो ॥ चेतनतानिर्मललसे ॥ तसुत्रिकालवंदी
तभविक ॥ जोशुद्धस्वभावहिनितवसे ६ ॥ छप्पय ॥ अष्टकर्मतेरहित
सहितनिजज्ञानगणधर ॥ चिदानंदभगवांन ॥ वसतिहुलोकसीसपर ॥ ८८
विलसतसुषजोअनंतसंततताकोनितपावहि ॥ वेदेहिताहेसमांन आ

DS BHAU DAJI

पघटमांहिलषावहि ॥ इमध्यांनकरेनिर्मलनिरष ॥ गुणअनंतप्रगटेहिस
रव ॥ तसुत्रिकालवंदीतभविक ॥ जोसुधसकतिआतमदरव ॥ अथज्ञान
प्रगटेगुनप्रगटस्यहकथन ॥ छप्पय ॥ ग्यानउदितगुणउदित ॥ मुदित ॥
भयेकर्मकषाय ॥ प्रगटतपर्मस्वरूप ॥ ताहिनिजलेतलषाये ॥ देतपरी ॥
ग्रहसाग्यहेतनिश्चेनिजमांनत ॥ जांनतसिधसमांन ॥ ताहिअंतरलगर ॥
वांनत ॥ अवभासीअविचलदरव ॥ सरवनेयज्ञायकपरम ॥ निर्मलवि
शुधसासुसुथिरचिदानंदचेतनधरम ७ ॥ अथहितोपदेशकथन ॥ स
वया ॥ ६ ॥ अरेमतवारे जीव जीनमतवारेहोउजिनमतआंनिग्रहोजि
नमतछोरके ॥ धरीमनध्यांनगहोधर्मनिध्यांनगहोधर्मशुक्लायलेसो
सकतिसुफोरके ॥ परसोननेहकरोपरमसनेहकरोप्रगटगुणगेहक
रोमोहदलमोरके ॥ अष्टादशदोषहरोअष्टकरमनाशकरोअष्टगुनभा
वैकरोकहुंकरजोरके ९ ॥ अथपुद्गलमेज्ञाननहिज्ञानआत्मामेयहक
थन ॥ सवैया ॥ ३ ॥ वर्णमेनज्ञाननहिज्ञानरसपंचैमेफर्समेनज्ञाननही

अ०प्र० ज्ञानकछुंगंधमें ॥ रूपमेनज्ञाननहीज्ञानकछुंग्रंथमेनशब्दमेनज्ञाननहि
८९ ज्ञानकर्म्मबंधमे ॥ ईनतेअतितकोअआतमसुभावलसेज्ञानसुधचेत
नाकेषंधमेंएसोवितरागदेवकहोहेप्रकाशनेरज्ञानवंतपावेसहिसुद
धाविधंधमे ॥ १० ॥ वितरागवानीकीस्तुति ॥ सवैया ॥ वितरागवेनसोतोऐन
कहेविरागैजमांनहे ॥ जाकोपरकाशनिजभासपरलहिये ॥ सुजुषटद
वसर्वगुणपरजायभेददेवगुरुग्रंथपंथसतरगहिये ॥ कर्म्मकोना
सजामेआतमाअभ्यासकहोध्यांनकीकुतासअरीपंकतकोंदहिये ॥ षो
ष्टिदगदेषिरूपगहोअवनासीनूपसिधकी ॥ समांनसबतोपेरीधकहीये
॥ ११ ॥ अथरागद्वेषबलवर्णन ॥ सवैया ॥ ३ ॥ रागकीजुरीतसोतोवडीवि
परीतकहिदोषकीजोवातसोतोमाहादुषदातहे ॥ इनहीकीसंगतसो
कर्मबंधकरेजीवइनऊकीसंगतसौंनरकनिपातहे ॥ इनहिकीसंगत
सोवसीयेनिगोदवीचजाकेदुषदाहकोनयाहकोनजातहे ॥ एईजग ८९
तजालकेफिरावनकोवडेभूपइनहिकेसागेत्वभ्रमणविलासुहे ॥ १२ ॥

अथमुनिकेआसन ॥ सवैया ॥ ३ ॥ एसीचारमुनिवरकेआसनतामेमुगतिहोन
केदोउ पद्मासनकायोत्सर्गासनकहियेएहविनुमुगतिनांहोयकोय परमदिगंब
रनिजरसलिनोज्ञानदर्शनथिरतामेहोय अष्टकर्मकोयांनभिष्टकरीशिवसंपतिवि
लसनुहैसोय १३ ॥ दोहा ॥ जैसोशिवषेत्तवसे निहचैद्रिस्वनिहार तैसोआतम
मेवसे करसंचकनविसार १४ ॥ इतिशिवचतुर्दशीसंपूर्ण ॥ अथनिरवांणकुंडलि
यत ॥ दुहा ॥ वितरागवांदुसदा भावसहितसिरनाय कहुकंडनिर्वाणकी भाषा
विवीधवनाय ॥ चौपई ॥ अष्टापदआदिस्वरस्वांमि वासपुज्जचंपापुरीनाम ने
मनाथस्वांमीगिरनार वांदुभावभगतिउरधार २ चरमतिर्थंकरचरमशरीर
पावापुरीस्वांमीमाहावीर शिषरसमेदजिनेस्वरवीस भावसहितवांदुजगदी
स ३ वरदत्तअवरइंद्रमुनिंद सायरदत्तआदिगुणवृंद नगरतारवरमुनि
उठकोड भावसहितवांदोकरजोड ४ श्रीगीरनारसीषरवीष्यात कोडबहो
तरअरुसेसात स्वयंभूप्रद्युमनकुमरदोयभाय अनिरुधआदनमुतमपा
य ५ रांमचंदकेसुतदोयवीर लाडनरिंदआदिगुणधीर पंचकोडिमुनिमुक

व ल तिमझार पावागीरवांदुनिरधार ६ पांडवतिनद्रवीडराजांन आठकोडमुनि
कतप्रमांन श्रीशेत्रं जेशिषरकेशिस नामसहितवांदोजगदीस ७ जेबलीत्त
९० इमुकतिमांगए आठकोडमुनिओरूनए श्रीगजपंथशिषरसविशाल तिन
त्रि केचरणनमुंकाल ८ रामहनुसुग्रीवसुडील गवगवाह्नलिलमाहानिल को
डननांणवेमुगतिप्रवांन तुंगीगीरवांदुंधरीध्यांन ९ लंग अनंगकुमारसुजांए
पंचकोडीअरुअर्धप्रमांन मुगतिगएसोनागीरसीस तेवादुत्रिभुवनपतिई
स १० रावनकेसुतआदिकुमार मुगतिगएरेवातटसार कोडपंचअरुलाष
पंचास तेवादुधरीपरमउलास ११ रेवानंदीसीधवरकोट पश्चमदशादिहां
छुट देचक्रीदशकांमकुंमार अठकोडवांदुभवपार १२ वडवांणीवडनयरसु
चंग दछिणदशागिरचुलनतंग इंद्रजीतअरुकुंभजकर्ण तेवांदुभवसाग
रत्रण १३ सोवर्णभद्रआदिमुनिच्यार पावागीरीवरशिषरमझार चलनां
नंदीतिरकेपास मुगतिगएवांदुनिततास १४ फलहोडीवडगांमअनुप ९०
पश्चिमदशाद्रोणीगिररूप गुरुदत्तआदिमुनिस्वरजेहं मुगतिगएवांदुनि

तनिहं १५ बालमाहाबालमुनिस्वरदोय नागकुमारमलेत्रिहोय श्रीअष्टा
पदमुगतिमझार तेवांदुनितसुरतसंभाल १६ अचलापुरीकीदशाईशांन
तिहांमेढगिरनामप्रधांन साढितिनकोडमुनिराय तिनकेचरणनमुशि
तलाय १७ वंशस्थलवनकेढिगहोय पश्चमदशाकुंथुगीरसोय कुलभुष
णदेशभुषणनाम जिनकेचरणकरुंप्रणांम १८ जसरथराजाकेसुतकहे
देशकुलंगपंचसेलहे कोडशिलामुनिकोडप्रवांन वंदनाकरुंजोरीजुग
पांन १९ समोवशरणश्रीपासकुंमार रेसंदेगीरनयणानंद वरदत्तआदे
पंचरुषीराय तेवांदुनितधर्मजिहाज २० तिनलोककेतिरथजिहां नीत
प्रतवंदनाकीजेतिहां मनवचभावसहित्तसीरनाय वंदनाकरेभवि
कगुणगाय २१ संवत १७ सेएकतांल अश्वनिसुदीदशामीसुविशाल ॥
भैयावंदनकरोत्रिकाल जोनिर्वाणकंडगुणमाल २२ संपूर्ण॥

करमकलंकषपायके भएसीधभगवंत नीतप्रतवांदोभावधरी जोप्रगटे

रत्न० निजग्यांन १ कहुंपंथएहजीवको कहिमधआवेजाय गुणथानकदशएह
९१ कह्यो धरेजनममस्तुजाय २ भव्यराशिकेंनिकसके मुगतिहोनकेकाज चढे
गीरेएहपंथमे अतहोहिमहाराज ३ चौपई ॥ प्रथममिथ्यातनामगुणथांन
ताकेभेदताकोपरनांम एकअनादनाममिथ्यात दुजोसाधिकहौंविख्यात ४ प्रथ
मअनादीमिथ्यातिजीव पंथतिनकेधरेसदीव चोथेपंचमछठमजाय गिरे
तोफीरमीथ्यापुरआय ५ सादिमिथ्यातिजीयजोधरे पंचसाततकेविसतरे
तिजेचोथेपंचमजाय सप्तमपुरलोपहुचेधाय अबदुजोसासादननांम ता
केएकगिरनकोधांम मिथ्यापुरलोआवेसही दुजिवारनांयाकीकही त्रिजो^
मिश्रनांमगुनथांन ~~मिथ्यापुरलोआवेसही~~ पंथदोयवाकेपरधांन गिरेतोपे
हलेपुरकेमांहि चढेतोचोथेथानकजांहि ८ चोथोहुअव्रतगुनथांन पंथपं
चभाषेभगवांन गिरेतोतीजेदुजेजाय मिथ्यापुरलोपहुचेधाय ९ चढेतोपं
चमसप्तमसही असीमहिमायाकीकही पंचमदेशविरतपुरनांम पंथपंचता ९१
केतरआंनि १० गिरेतोचोथेत्रिजेजाय अथवापेहलांदुजेजाय चढेतोसप्तमपु

रकेमांहि एहथांनकछुअधिकेनांहि ११ अबछठोपरमतवषांनि ताकि
पंथछहुपहिचांन गिरेतोपंचचोकत्रिकजाय दुजेपेहलांधरेभुआय १२
चढेतोसप्तमपुरलोआय असेभेदकहेजिनराय सप्तमअप्रमतपुरनां
म पंथतीनताकेअभिरांम चढेतोअष्टमपुरकेमांहि मरणकरेतोसचे
जाय गिरेतोछठेपुरलोआय असेभेदकहेजिनराय १४ अष्टमपुरनु^
अपुरवनांम शिवलोचनमगताकोधांम गिरेतोसप्तमपुरहिअधंक
चढेतोनोमेपरचंड १५ मरणकरेतोचोथेजाय असेकथनकहेमुनिरा
य नोमेनामअनिव्रतकरण पंथतीनताकेविस्तिरण १६ गिरेतोअष्टमपु
रकेमांहि चढेतोदशमेहोहिथिराहि मरेतोचोथेपुरकेविस तोहुनव
थितरहीनगीस १७ सुसमसंपरायदेशाकहे पंथतीनताकेएमलहे गि
रेतोनोमेपुरकीवार चढेएकादशउपसमधार १८ मरणकरेतोचोथे
पुरसही असीरीतजिनागमकही एकादशमसोहेउपसंत पंथदो
यतिहांकहेसिधांत १९ गिरेतोदशमेपुरनिरधार मरणकरेतोसोथेसार

व.ल० ऐसेजैदजिनागममांहि गोमटसारत्रिलोकसारग्रंथकीछांहि २० भाषा
९२ कहिनविकहितहेत याकेपढतअर्थकहिदेत बालगोपालपढेहेजेजी
व नैयातिसुषलहेसदीव २१ ॥इतिगुन॥पं॥संपूर्णं॥ ॥अथकालअ
ष्टकलिष्यते॥दोहा॥ त्रिकुपरकेपुरकुतसब वंदतशिसनमाय तिहांति
र्थंकरदेवसे वसतनहिजमराय १ जिनकीहूहकेफनकते कंपतसुर
नरवृंद तेजकालछीनमेलीए जेजोधासुरइंद २ जाकीआगनामेवसे
त्रिकुंषफकेनृप ताचक्रीधरकोग्रसे कालमहानयरूप ३ नारायण
नरलोकमे माहासुरबलवंत तिनषंफआगपावहे तिनकुकालग्रसं
त ४ तातेंकालमाहाबली करतसबनपेंजोर धनसिधपरमातमा
जिहकीनोएहजोर ५ औरनृपबलिष्टते वसतइहजगमांहि तेजका
लकीसालमे वसतरंचककुंनांहि ६ ऐसेकालबलिष्टजे जेजीतेजग
मांहि कहेदासभगवंतके कीजेतनकीसेव ७ कालवसतजगजालमे ९
नोतेंनकरतपोकार नैयाजिजगसागीये नमुताहि[redacted]नीं८ संपूर्णं॥ ९२
२४१२

उपदेशपचीसीषते॥दोहा॥ वितरागकेचरणजुगः वांदुसीसनमाय कहु
उपदेसपचीसका श्रीगुरुकेउपसाय १ ॥चोपई॥ वसतनिगोदकाल
बहुगए चेतनसावध्यांननहिनए दिनदसनिकसबहुफिरना ए
तेपरएक्याकरना हूऐ अढ़रभागअनंतमकलो चेतनग्यांनइहांलो
२१ रहो केनीसकतिकेंतिहानिकरना ऐ ७ प्रथ्विअपतेजअरुवाय व
नस्पतिमेंवसेअरुनाय एसीगतिमेंदुषबहुंजरना ऐ ८ केतोकालि
इहांतोहिगयो तिहाथीनिकसीविकलत्रेभयो ताकोदुषकछुजाइ
नेवरना ऐ ८ पशुपंछीकीकायापाय चेतनरहोतिहांलपटाय वि
नेविवेककहोक्योंतरना ए ९ इमतिर्यंचमंहीदुषसहे सोदुषकि
नकुंजाहिनेकहे पापकर्मतेइहांगतिपरना १०ए बहुरीपरेनर्ककेमां
हि सोदुषकेसेवर्णनेजाही षेत्रदुर्गंधनाकजहांसरना ऐ ११ अगनि
समांनभूमितिहिंकही कीतकुंशितमाहाबनिरही सुरीसेजहिनक
नहिवरना ए १२ परमअधर्मीदेवकुमार बेदनजेदनकरेहीअपार

अ.स० तिनकेवसतेंनांहिमवरना ए १३ रंचकसुष जेहांजीयकौनहि वसतइहां
मतिनीचीमांहि देषतदुष्टमाहन्नेउरना १४ ए पुन्ययोगनयोसुरअवतार
९३ फिरतफिरतइहजगतमझार आवतकालदेषियरहरना १५ ए सुरमं
दिरअरुसुषसंयोग निसदिनमनवांछितकेभोग छिनइकमांहितिहां
तेंटरना १६ ए बहुजनमंतरपुन्यकमाय नरककुंलहियेमनुस्सपरजा
य तामेलगोपाजरामृत्युदमरना १७ ए धनजोवनसबहीवकुराइ कर्मयो
गतेनवानिधपाई सोसुपनंतरकोसावरना १८ ए निसदीनविषैभोग
लपटांना समझैनहिकोनगतिजाना छिनछिनअर्बलवरना १९ ए
इनविषयनकेतोदुषदिनो तबकुंनुजुतेहिरसभीनो नैकविवेकहृ
दैनहिधरना ए २० परसंगतिकेतोदुषपावे तबकुतौकुलाजनेआवे
वासनसंगनीरजोजरना ए २१ देवधर्मगुरुंग्रंथनेजाने सुपरविवेक
हृदैनहिआंन कोहोकैसेंभवसागरतरना ए २२ पंचइंद्रिअतिवडपारे
पर्मधरमधनमुसनहारे षायपीयेयहतोदुषभरना ए २३ सिद्धसमां ९३

नेजो आप ततितेनोहिलगतनहिपापु षोलिदेषिपरघरहितुघरना
ए २४ श्रीजिनवचनअमृतरसवांणी पीवकोनहिमुद्धअगपानि जोनेहो
यजन्ममृत्युहरना ए २५ जोचितेतोएहजदाव नहितोबेगमंगलगाव
२ फेरयेहनरभोकहनाफरना ए २६ भैयाविनवेवांरंवार चेतनचेतनलो
अवतार हैदुलभशिवनारीवरना ए ८ २७ ॥दुहा॥ ज्ञानमइदर्शनमइ
चारित्रमइप्रभुनाव सोपरमातमध्याइये एहसोमोषउपाव २८ सतरे
सेएकतालके माघसरसितपष तिथिसंकरगनिलिजिये श्रीरविवार
प्रतछि २९ ॥इतिउपदेशरत्नमालासंपूर्णं॥ अथनंदीश्वरदीपकीजय
मालनिष्यते॥दोहरा॥ वांदुश्रीजिनदेवकौ अरुवांदौजिनवेन जासप्र
सादइहजीवको प्रगटहोहिनिजनेन १ श्रीनंदीश्वरदीपकी महिमा
अगमअपार कहुतासजैमालको जिनमतकेअनुसार २ ॥चौपई॥
एकअरबअरुत्रेसठकोड लाषचोरासीतापरजोड एतेजोजनमाह
प्रवोन अष्टमदीपनंदीस्वरनांम २ तामहिचिहुदिसशिषरउतंग ॥

तिनकोमांनकहूसरवंग। दिशापुरवगीरतेरसहंत। ताकीमहिमाजयकहं
९४ त ३ मध्येएकअंजनकेरंग। शिषरनपरवतोसरवंग। सहस्रचोरासीजो
जनमांन। धुपरवतदिष्योभगवांन ४ ताकेचिहुंदीसपर्वतच्यार। नजल
वरनमाहासुषकार। सहस्रसोचहुनतंगजहोय। दधिमुषनांमकहावेसो
य ५ एकाएकदधिमुषपर्वतपास। द्वैद्वैरतनकरअचलनिवास। एकअरु
नवरनागीरनाम। सहस्रचालिसउर्धप्रवान ६ एहविधतेरहगीरवरगने
तारचैसअक्रोतमवने। एकएकगिरपरएकप्रशाद। ताकीरचनाबनीअ
नाद ७ एकजिनमंदीरकोविसतार। सुनोभविकपरमागमसार। गिरकेशि
षरवरनतिहांरूप। रतनमइप्रशादअनुप ८ एकचैसालेबिंबप्रवान
एकसोआठअनोपममांन। रतनमइसुंदरआकार। धनुषपंचसेउर्धअ
धार ९ इमतेरहपुरवदीसकहे। तेसेतेरहदछणलहे। तेसेतेरहपश्चिम
जांन। इहविधतेरहउतरमांन १० सबबावनचेसालेकहे। ताकेभेदजि ९४
नागमलहे। छपनसेसोलहबिंबजसबे। ताकीभावनाभावेअबे ११ अनं

तगुंनजोआतमरांम। सोप्रगटेइहमुछधांम। लोकालोकविलोकनहारि। ता
परदेशानयहआकार १२ अनंतकाललोयहस्वरूप। सिधालेराजेचिदु
प। सुषअनंतप्रगटेइहथांन। ताततेजिनप्रतिमाउपरवांन १३। जिनप्रति
माजिनवरयोकही। जिनदशामेअंतरनहि। तोसुरनंदीस्वरजाय। पुजे
तिहांविविधधरीभाव १४ भेयानितप्रतशिसनमाय। वंदनकरुपरमगु
णगाय। यहध्यावेनिजपावतसही। तोजयमालनंदीस्वरकहि १५। इति
नंदीस्वरजयमालसंपूर्णं॥छ॥ अथबारभावनालिष्यते॥ चोपई॥ पंचपर
मपदवंदनकरौ। मनवचभावसहितउरधरौ। बारहभावनापावनजा
न। भावेआतमगुनपहिचांनि १ थिरनहिदीसेनानावस्त। देहादीकअ
रुरूपसमस्त। थिरविनुनेहकोनसोकरो। अथिरदेषममतापरहरो २
असरणसोहचरणनाकोय। तिनलोकमहिदृगधरीजोय। कोइनतेरो
राषणहार। करमवसहिचेतनसार ३ अरुसंसारभावनाएह। पर
द्रव्यनसुनांकीजेनेह। चेतनवेजडसरवंग। तातेतजोपरायोसंग ४॥

२०२ एकजीवतुंआपत्रिकाल उरधमध्यभवनपाताल दुजेकोयनातेरोसाथ स
दाएकलोफिरेअनाथ ५ भिन्नसदापुद्गलतेरहे भरमबुधतेजडतागहे
९५ वेरूपीपुद्गलकेषंद तुंचिनमुरतिसदाअबंद ६ असुचिदेषदेहादीकअं
ग कोनकुरतलगीतोहिसंग अस्थिमांसरुधिरअरुगेह मलमुत नलष
तसकुसनेह ७ आश्रवेपरसोकीजेप्रीत तातेबंधवडेविपरीत पुद्ग
लतोहिअपनोपोनहि तुंचेतनवेजडसबआहि ८ संवरपरकोरोकनभा
व सोषवेकोएहिउपाव आवनहिनएजिहांकर्म थिरपुरीहेषिरषि
मर्म रजाहि ९ निरजराभाव अधिकअधिकाहे निर्मलहोयचिदानंदआप
मिटेसहजपरसंगतिमिलाप १० लोकमांहितेराकछुनहि लोकआन
तुंमभ्आनलषाहि वहषटद्रव्यनकोसबधाम तुंचिनमुरतिआतमरा
म ११ दुर्लभपरद्रव्यनकोभाव सोतोहिदुरलबहेसुनराव जोतेरेह
ग्यांनअनंत सोनहिदुर्लभसुनोमहंत १२ धर्मसुआपस्वभावहिजान ९५
आपस्वभावधर्मसुमान जबवहधर्मप्रगटतोहिहोय तबपरमातमप

ये
दलषीसोय १३ एहिबारहभावनासार तिर्थंकरभावहिनिरधार हैवैरा
ग्यमाहाव्रतलेय तबहमनजलंजलदेह १४ भैयाभावकुभावअनुप भाव
तहोयतुरतशिवभूप अनंतसुषविलसकुनिसदीस इमभाषोस्वामीज
गदीश १५ ॥इतिबारहभावनासंपूर्ण॥ ॥अथकर्मकेनवबंधकीभाषालि
ष्यते॥दुहा॥ श्रीजिनचरणबुजप्रते वांदौशिसनमाय कहुकर्मकेबंधकुं
भेदभावसमझाय १ एकप्रकृतिदशविधबंधे भिन्नभिन्नतसुनाम गु
नलंबनवर्णनसुनो जागेआतमराम २ बंधसमुचेभेदयह उतकरष
णजुवढाय संकरमणजेरलसे अपकरषणघटीजाय ३ उदीरणला
वेनिकट सतानुंदेकरंत उपसमओरनिधतलषी कर्मनिकाचितअं
त ४ ॥चोपई॥ मिथ्याअव्रतयोगकषाय बंधहोयसबपरतेपाय थि
तअनुभागप्रकृतिपरदेश एबंधनविधभेदविशेश ५ प्रथमबंधप्र
कृतिजोहोय समुचेबंधकहावेसोय दुजोउतकरषणबंधएह थित
वडायकरेबहुजेय ६ तिजोसंकरमणजुकहाय ओरकीओरप्रकृति

DR BHAU DAJI

नीर्मलहोत पतवरीत

होयजाय। गतिविनुऔरकरमपेकही। बंधभेदनानाविधलहि ७ चौथाअ
२० पकरषणइमथाय। बंधवडेअथवागलिजाय। पंचकरषणउदीरणहेर
९६ लावेनिकटउदेमूघेर ८ सत्ताअपनिलिएवसंत। षष्टमभेदयहअत्रतंत
सत्तामिभेदउदेजेदेय। थितिजोपुरीबंधपरेय ९ अष्टमनुपसमनामकहा
य। जिहाउदीरनबलनवसाय। नौमोभेदनिधतजुसोय। उदीरणसंक्रम
णनांहोय १० दशमोबंधनिचितजिहां। थितिनहिघटेवडेनहितिहां। उ
दीरणसंक्रमणनांऔर। जिमबांध्योरसदेतिनठोर १० एदशभेदजिना
गमलहै गोमटसारग्रंथमेकहे। समझेधारेजेनरमांहि। तिनकेचित्त
विकलतानहि ११ गुनथांनकमेजिहांजोहोय। आगमदेविविलोकोसो
य। सबसंसयजीवकीमिटजाय। निर्मलहोयचिदानंदराय १२ बंधस
कलपुद्गलपरपंच चेतनमाहिनांहीसरंच। लोकअलोकविलोकनअ
वंत भैयाकहेपदप्रकटकरंत १३ दुहरा॥ गोरादशभेदलखैलखै। चिदा
नंदभगवांन। जामेसुषसबसास्वतो। वेदकुसिद्धमहंत १५॥ इतिकरम

कोभेदसंपूर्णं॥ व॥ अथसप्तभंगीवांनिलिष्यते॥ दुहरा॥ वांदुश्रीजिनदेवको
वांदुसिद्धमहंत। वांदोकेवलग्यानजो लोकअलोकलखंत १ सप्तभंग
वानीकहुं। जिनआगमअनुसार। जाकेसमजतसमझीये नेकभेदविचा
रि २॥ चौपई॥ अस्तनास्तगुनलंबनवंत। प्रथमदरवयहभेदधरंत। एगु
नसिद्धकरनकेकाज। सप्तभंगभाषेमुनिराय ३ इकअस्तप्रथमभनेएह
नास्तकहेदुजीभेदजेह। तीजीआस्तअरुनास्तनिहार। चोथीअवक्तव्यभने
निरधार ४ पंचमीआस्तअवक्तवकहि। छठीअनस्तअवकत्तवलहि
सातमीआस्तनास्तअवक्तव। इनकेभेदकहुंकछुअब ५ आस्तद
वकोमुलस्वभाव। नास्तपरनमतिपलटिनाव। अपरवाऔरद्रव्यसुनहिता
हिरुपथ्यानास्तिकहाहि ६ अस्तनास्तगुनएकेमांहि। इकगुनबंडअगहुलं
राहि। आस्तनास्तविनुदर्वनुहोय। नेसाधेमननहिकोय ७ द्रवगुनवच
नकह्योनाजाय। वचनअगोचरवस्तुथ्रुनाय। जोकहुएकअस्तुतोसहि
तोदुजीलागेनहि ८ जोकहुनास्तगुनहैध्रुवमांहि। तोअस्तताकेसेनहि

२० अस्तनास्तदोउएकवेर ॥ कहिनाजायवचकौफेर ९ दकुकोएकअचारनहो
९७ य एकआगेएकपीवेहोय ॥ कोउगुनआगेपीवेनही ॥ दोउगुनएकसमेके
माहि १० तातेवचनअगोचरइअ ॥ सातेनाषीनेभगवंत ॥ नेसमझैतेवस्त
प्रवानि ॥ नेसमझैजीववस्तुप्रवांनी नेसमझैजीयसमकवांन ॥ ११ नेनहि
लषैमिथ्यातीजीव ॥ तातेभ्रमनकरेहिसदीव ॥ नेयाजोजानेनहिभेद ॥ ति
नकेमीटैहिसकलभ्रमषेद १२ ॥ इतिसप्तभंगीवानिसंपूर्णं ॥ ३ ॥ अथ
सुबुधिचोविसी लिष्यते ॥ दोहरा ॥ चरनकमलजिनदेवकौ वंदुसीसनमा
य कहुसुबुधिचोविचके कवितकछुगुन गाय १ अतितचोविसीतिर्थंक
रकोनमस्कार ॥ सवैया ॥ ३१ ॥ निर्वांणसागरमाहासाधुविमलप्रभुसुधप्रभु
सीधरजिनेस्वरनमीजीयै ॥ सुदतअमलप्रभुउधरअगति नाथसंयमपु
ष्पंजलकेचरणचितदीजिये ॥ शिवगुनउछाहग्यांनेस्वरपरमेस्वरवि
मलेस्वरप्रायनांमनितलिजीये यशोधरकृष्णग्यांनमति सुधमतिअति
क्रांतिशांतियुक्तचरणनमस्कारकीजीये २ ॥ श्री अनागतचोविसीतिर्थं

करनाम ॥ सवैया ॥ ३१ ॥ माहापदमसुरदेवसुप्रभुस्वयंप्रभुसर्वायुधजयदेवचि
तमेचितारीयै ॥ उदेषप्रभदेवश्रीउदंकप्रश्नकीर्तिजेकीर्तिपुण्यबुधिहिरदे
निहारिये ॥ निकषायविमलप्रभुबहुलवनिर्मलचित्तगुप्तसमाधिगुप्तना
मनितलिजीये ॥ स्वयंभूकंदर्पजेनाथविमलदीवबादअनंतविरचोवि
सीआगमजोहारीये ३ ॥ अथपंचपरमेष्टीनमस्कार ॥ स० ॥ ३१ ॥ पंचपर
मइष्टसाउरमाहामंत्रनमस्कारजपैजीवलहेपारसागरनोतिरको शिव
कोभरेभंडारसिद्धकोसुपंथसारलब्दकोअनोपसारसारसुधहिरको क
ष्टकोकरैनिवारदुष्टदूरैहोयचारपुष्टपर्मब्रह्मद्वारसुष्टसुद्धधिरको पाप
कोकरैप्रहारअष्टकर्मजेतचार भवकोएहअधारग्यांनबलविरको ४
ग्यांन सवैया ॥ ३१ ॥ ॥ माहामंत्रयहसारपंचपर्मनमस्कार भवजलउतारे
पारभवकोआधारहै ॥ विघ्नकोविनाशकरेपापकर्मनासकरेआतमा
प्रकाशकरेपुरवकोसारहै ॥ दुखचकचुरकरेदुर्जनकोदुरकरेसुषभरपु
रकेपरमउदारहै ॥ तिहुलोकतारनकोआतमासुधारनकोग्यांनविस्तार

रस० नकोएहीनमस्कारहे ५ ॥श्रीरिषभनाथवर्णन॥स०॥३१॥ जीवद्रव्यतकदेषो
९८ दुसरोअजीवद्रव्यगुनपरजायलिये सर्वेविदमांनिहे देष्योग्यानमध्यजि
नवरश्रीरिषभनाथताकिभेदकहतअनेकहिविनानहे देवनकेइंद्रजेते
तिनकेसमुहमलिवंदेनितभावधरीसदाएबीदांनहे ताकोसदारुमकु
त्रणामसीसनायकरेजाकेगुनधारेमोषमारगनिदांनहे ६ सुबुधीवर्ण
न॥ स०॥३१॥ नमामीपंचनांमकोधायआपधामकोविकारमाराकांम
कोसुरांमकीलटालई कुरागदोषटारकेकषायकोनिवारकेसरूपशुद्ध
धारकेनिहारकेसुधामइ अनंतग्यांनज्ञांनसोकेचेतनानिधानसोके
सिद्धसमांनसोसुधारवीकयानइ सुबुद्धिऐसेआयकेअबंधकोदे
षायकेचटाकचितलायके-झटाकहुवहेगइ ७ सवेया॥३१॥ आदप्र
कतिसातकीजुहतेताहेघातकीतोचेतनावातकीमीथ्यातकीगहीदइ
लषीसुग्यानघातकीशरीरसातधातकीसुयामेकछुजातकीनचेतना ९८
कहानइ अंधेरीमटीरातकीजोनिवातप्रातकीप्रवांनी जीवजातकी

सुआपुचेतनामइ सुबुधीऐसेआयकेअबंधकोदीषायकेचटाकचि
तलायकेझटाकहुवहेगइ ८ ॥सुबुद्धीवर्णन स०॥३१॥ कटाककर्मतोर
केबटाकगांठछोरिकेपटाकपापमोरकेलटाकदेमिथ्यालइ चटाक
चिन्हजानकेजटाकचिन्हजांनिकेफटाकहियेआनिकेनटाकनृत्यग्यान
देषटाकनेषरीठई घटाकघोरफारकेतटाकबंधटारकेअटाकरामा
धारकेरटासुरांमकीजइ गटाकसुधपानकोहटाकआंनआंनकोघटा
टि आपुयांनकोचटाकसेवधुलइ ९ ॥परमतवर्णनं॥स०॥३१॥
केइनफेरकांनफटाकेइसीसधरेजटाकेइनन्नयेनस्मवटानृत्तेनटक
तुहे कोइतजिजाहिअटाकेइचेरचेलीचटाकेइपदेपढाकेइफम
घटकतुहे केइतनकीएलटाकेइमहादिसेकटाकेइतरुतटाकेइ
रसालटकतुहे भ्रम भावतनहिहटाहिएकमनाटिघटाविषेसुषर
टासाधहाथपटकतहे १० मुनिराजवर्णन॥ छप्पय॥ दुविधपरीग्रहत्या
गि त्यागकुनिप्रकृतिपंचदश गहिमाहाव्रतभारलहियनिजसारसुधारसः

स॰२ धरेहिसुधांनप्रधांन ग्यांनअंतररसचाषहि सहैपरीसाजोर अंतनिजनिकेरा
९९ षहि चढेहिश्रेणीगुनथांन पंथकेवलपदप्रापतिकरेहि तसुचरनकमलवंदि
नकरत पापपुंजपंकतिहरति ११ सवैया॥३१॥ जमरकीरीतजानिपरसो
नप्रीतिगनिधर्मकीवातजानीध्यावतघरीघरी जिनकीवषांनिवांनिसोइसु
रनकेआंनिनिरुचवरुरांनिदिढहैषरीषरी निजनिधपीबांनितवतयो
ब्रह्मग्यांनीशिवलोककीनिछांनिआपुमैधरीधरी नोधितविलानीअरी
सताअरुगनितवनयोसुधप्रानिजिनबेसीजेकरीकरी १२
तिनसेतेतालराजुलोककोप्रवानकह्योघनाकारघन
सिकोअसेतरअानिये उचोराजुवत्रदरुदेषोजिनराजजुनेतामेराजुएक
पोहलोपनप्रवानिये तामेहेनिगोदराचिनरोघतघटजेसेतेनेतेदत्ता
केनितइतरसुजांनिये तामेतेनिकसविवहाररासवढेकेहोइसिधकेई
जगमेवषानिये १३ जोजानेसोजीवजीवविनु ९९
औरनाजाने जोजानेसोजीवजीवविनुऔरनांमाने जोदेषेसोजीवजीव

वीनुऔरनांदेषैसोजीवैसोजीव जीवगुनएहविसेषे महिमानिधांन अव
नूतजुत गुन अनंतनिर्मलसे सोजीवइमपेषंतनव सिधषेतमांहि
वसे १४ शरीरवर्णनं स॰॥३१॥ अचेतनकीदेहरीनेकीजेतासुनेह रीसोओगु
नकीगेहरीमाहादुषभरीहे याकीकेसनेहरीनाआवेकर्म्मबेहरीपावेदुषते
क हरिजनयाकीप्रीतिहैरीहेअनादिलगीजेहरीजुदेषतहीबिहरीतोयामेकहाले
हरीरोमनकीदरीहे कामगजकेहरीसुरागद्वेषकेहरीतुतामेदुगदेहरीजोमि
ध्यामतहरीहे १५ ज्ञानप्रकाशनयोजीनदेवजाइइसोआ को
यमलेजुतहाइ रुपसोवर्णमाहादुत्तिरत्तकोकोटवीचित्रअनादकीनाइ
विसहजारजुपेढीविराजिततापेचसौतिर्यंचिगुसाइदेषकेलोकअकहि
अवनिपरसघवढेअसमानकेनाइ १६ तीनधरेशीवमंदकीउ
रमेकीतनाउकतेउपजावे ग्यांनप्रकाशकरेअतिनिर्मलउर्धकीमतअचि
तलावे इडनीजीतकेप्रीतकरेपरमेस्वरसुमनवाहिलगावे देषनिहार
- वीचारयहेकरमेकरनीमाहाराजकहावे १७ सवैआ॥२३ तोहिइहारह

वृंद० १००२ वोककुकेतकपंथमेप्रीतकीएसुषसोहे। पोषतजाहपीआचआजांनकेसोतो
निआरीआहोतनसोहे ॥ तुझमजांनतुहेतनहिममसोन्नमदुरकरोदुषको
हेदेहुसनेहकरमंतिहंशगएकरीजाकूनिवाहनहोहे १८ ॥
मृगमीनसजनसोकारनविनुवेरकरे असेजगमाहिजीवविधिनावानएहे
वननमेत्रिणपाहेदुरजलपीनजाहवसेवनमाहिनहिमारनकोधायहे॥
जलमाहिमिनरहेकाकुसोनकछुकरेताकोजायपापीजीवनाहकसताय
हे सजुनसंतोषधरेकाकुसोनवेरकरेताकोजीयदुष्टजीवक्रोधउपजाय
हे १९ ॥ अहिछत्रपार्श्वनाथ ॥ सवेया ॥ ३१ ॥ आनंदकोकंदकीधोपुनिम
कोचंदकीधोदपियेदिनंदअसोनंदअस्वसेनको ॥ कर्मकोहरेफंदन्नम
कोकरेनिकंदचूरेदुषद्वंदसोपुरेमाहासेनको ॥ सेवतसुरेदगुनगावत
नरेदनेयाधावतेमुनेंदतेउपावतसुषअेनको ॥ असोजिनचंदकरेबि
नकमेछंदसोतोअहिछत्रकाइदपासप्रभुजेनको २० ॥ मिथ्यातवर्ण १००
ना॥ स०॥३१॥ कोउकहेसुरसोमदेवहप्रतछिदाउकोउकहेरामचंदराषे

आवागोनसो ॥ कोउकहेब्रह्माबडोसिष्टकोकरेयायहकोउकहेमाहादेवउ
प्रज्यो [redacted] नजोनसो ॥ कोउकहेक्रिष्णसबजीवप्रतिपालकरेकेउला
गेरहेनवानिजुकेनेनसोयहेजुषांनोदेषीयेजिहांनविचवेसावाकेपुत
नयोवापकहेकानसो २१ ॥ वितरागवर्णन ॥ स० ॥ ३१ ॥ वीतरागनांमचेतीको
मसबहोहिनिके ॥ वीतरागनांमसेतिधामधनभरीये ॥ वीतरागनांमसेती
विघनविलायजायवितरागनामसेतिभवसंधतरिये ॥ वितरागनामसे
तिपरमपवित्रहुजोवितरागनामसेतिशिववधूवरीये ॥ वितरागनामसम
हितुनाहिदुजोकोइवितरागनांमनिसदिहिरदेमधारीये २२ ॥ वितराग[illegible]वर्ण
ना॥ स०॥३१ देषिजिनमुद्रानिजरूपकोसरूपगहेरागद्वेषमोहकोवहाय
डारेपलमे ॥ लोकालोकव्यापीब्रह्मकर्मसुअबंधवेदीसिधकोस्वभावसिष
धावेनिजथलमे ॥ असेवीतरागजुकेबिंबहे ॥ विराजमांनभव्यजीवलहेमं
नचेतनाकेदलमे ॥ मंडनिओमंडपकीरचनाअनुपवनीरयणपुररत्न
समदेष्योपुनफलमे २३ ॥ सुबुधवर्णन ॥ स० ॥ ३१ ॥ सुबुधिकीप्रकाशमे

सुत्रातमाविलाशमेसुथिरताअमासअमेग्यांनकोनिवासहै अरधकीरीतमेजिनेस्व
रकीप्रीतमेसुकर्मनकीजितमेअनेकसुषनासहै चिदानंदधाकरदीनिजपद
पावतहीडुखनकेलषावतहीदेष्योसबुपासहै वितरागवांनीदासकहे त्रलक्ने
सोत्रासमुषमेसदानिवासपुरनप्रकसहे २४ यहसुबुधिचोविसीका र
चीनगोतिदास जेनरपढैविवेकसु तेपावेशिववास २५
प्रणमुपरमदेवकेपाय मनव
चनावसहितसीरनाय अकोतमजिनमंदिरहेजीहां नितप्रतवंदनकीजेति
हां २ प्रथमपातालेलोकविसतार दशजातनकेदेवकुमार तिनकेनवन नव
नप्रतजोय एकएकजिनमंदीरहोय २ असुरकुमारनकेपरवांन सोचवसा
षचैत्यनगवांन नागकुमारनकेद्रसनाष जिनमंदीरचोरासीलाष ४ हेमकु
मारनकेपरतबि जिनमंदीरहेबहुतरलबि विद्युतकुमारनेकेबेताल ल
बबकुतरनमुत्रिकाल ५ सुवर्णकुमारनकेसबजांन लब[illegible]कुतरचेसप्रवा बि
न आगनिकुमारनकेप्रसाद लबछुकुतरबनेयअनाद ६ वातकुमारनवन

जिनगेह लछवीकुतरवांकुतेह उषधिकुमारअनोपमधाम लबबिकुतरन
मुनिसवांम ७ द्विपकुमारदेवनकेनाम लबबिकुतरकरुयप्रणांम लबबिं
नवेदिगाकुमार जिनमंदीरसोहेजयकार ८ एदशभौनकोटजिहांमान वं
दनाकरुनवनधरिध्यांन मधलोकजिनचैत्यप्रवांन नितप्रतवांदुमनधरी
ध्यांन ९ वीसबकुरगंजदेतनिहार तिहांनमुजिनचैत्यचितार तीसकाली
सलपर्वतशिस जिनमंदीरवांदुनिसदीस १० विजयार्द्धपर्वतपेकहे
जिनमंदिरसोबिकुतरलहे कुरद्रुवनदिशचैतप्रवांन वंदनाकरु
जोरीजुगपांन ११ श्रीव्रषारगिरीहिनरधरो चैत्यएसीनीतवंदनक
रो मांनुषोतरपर्वतचिकुओर नमुस्यारचैत्यकरजोर १२ ओरकक
जिनमंदीरथांन इक्ककारहचारप्रवांन कुंडलगीरकीमहिमासार
चैत्यचारनमुंनिरधार १३ रुचिकगीरीनामाहावषांन चैत्यचारनमु
ओरआंन नंदीस्वरबावनगीरराज बावनचैत्यनमुंधरीलाज १४ मध्य
लोकनवनजिननांन चैत्यचारसोअठावन तिनजिनमंदीरकोनीसदीस

व्रत० वंदनाकरुनायजिनसीसर१५ वितरजातअसंषितदेव चैसअसक्षनमुह
१०२ हनेव जोतिकसंष्यातेअधिकाय चैसअसंख्यनमुचितलाय १७ अबसु
रलोककछुपरकास जाकेनमतजिहांअघनास प्रथमस्वर्गसुधर्मविमं
मांन लाषबतिसनमुतिहांथांन १८ दुजोउतरश्रेणीइशांनि लाषअठाइ
सचैसनिदांन त्रिजोसनतकुमारकहाय बारहलाषनमुधरीन्हाय १९
चाथोस्वर्गमहिंद्रसुगांम लाषआठजीनचैसनमाम ब्रह्मओरब्रह्मोतर
होय लाषचारजिनमंदीरहोय २० लंतवओरकछुकापीष्ट सहसपंचासन
मुउतकष्ट शुक्रमाहाशुक्रअतिरांमचालिसहस्त्रकरुप्रणांम २१ सतार
सहस्त्र सुरलोक षटसहस्त्रचरनद्योधोक आनतप्रानतआरणअच्यु
त चारस्वर्गसोसातसंयुक्त २२ प्रथमग्रैवचैसजिनदेव एकसोअगारह
कीजेसेव मध्यग्रैवेकएकसोसात ताकीमहिमाजगतविष्यात २३ उप
रग्रैवनवअरुएक ताहिनमुधरीपरमविवेक नवनवोतरनोप्रतशाद १०२
ताहिनमुतजकेपरपरमाद २४ लरुचोरासीमंदीरदीस सहस्त्रसतांणु

वेअरुतेइस तिनलोकजिनभवननिहार तिनकीठीककछुउरधार २५
आठकोडअरुछपनलाष सहस्त्रसताणुउपरभाष चिकुंसीएक्यासी सी
जिनभौन ताहिनमुंकरकिचिसौन २६ धनुषपंचसेबिंबप्रवान एकसो
आठचैसप्रतिजान नवअडतअरुकोडपसीच त्रेपनलाषअधिकफु
निदीच २७ सहस्त्रसताइसनवसिमांन अरुअडतलिसबिंबप्रवांन ए ता
तेजीनप्रतिमागनिलिजे तिनकोनमस्कारनितकीजे २८ जिनप्रतिमाजि
नवरकेनेस रंचकफेरनांकसोजिनेश जोजीनप्रतिमासोजिनदेव इ
हविचारकरीभवीसेव ३० अनंतचतुष्टेआदिअपार गुनप्रगटेइहरु
पमझार तातेभविजनशिसनमाय वंदनाकरुत्रिलोकगुनगाय ३१
अकोतमअरुकृतमहोय जिनप्रतिमावांदुनितसोय वारंवारह
शिसनीजनाय वंदनाकरुभविकजिनपाय ३२ सतरेसेपेतालिससा
र भादोसुदीदशमीगुरुवार रचनाकहिजिनागमपाय जेजेजेत्रिभु
वनपतिराय ३३ दोहरा दशलिनिगुरुकोनिरष सुरषमिथिवेन

रुलु० तैयाजीनवांनीसुनै होतसबनकोचैन ३४ ॥इतिश्चितालाजेमालसंपूर्णं॥
अथचउदहगुनथांनकसंख्यालिष्यते॥दोहरा॥ वितरागकेचरणजुग वांदु
१०३ कुकरजोर कहुजिनगुनथांनके अष्टकरमदलमोर १ जिहांचलवोति
हांपंथको सोहुदेवहुसाथ तेसैपंथीकमोषके हुदलहैगुनथान २ चो
पई॥ चउदहथांनकपरवांन जीयकीसंष्याकरुडुवषानि ईहमारगचा
लेमुगतिसुहोय रहेअर्धपुद्गललोकोय ३ प्रथममिथ्यातनामगुनथांन
जीवअनंतानंतप्रवांन तिनकेभेदपंचविस्तार वरनौजिनआगमअ
नुसार ४ एकपक्षगहकेजोरहे दुजीनेनहिसरदहे सोमिथ्यातिमुरष
जीव ज्ञानहिनतेकहेसदीव ५ जिनआगमकेवचनप्रवांन यापेनिज
मतवचनअज्ञान सुजसहेतगुरुतामनधरै सोविपरीतभेदुषभरे ६
६ देवकुदेवनजानभेव सुगुरुकुगुरुकीएकेसेव नमेभगतिसोवी
नाविवेक विनेमीथ्यातिजिवअनेक ७ भातिभांतिकेविकलपगहे ॥
जीवतत्वनहिसरदहे सुभ्रहियोडोलेहेरांन सोमिथ्यातिसंसेवांन ८ गे १०३
हलरूपवरतेपरनांम दुषीतभाहातेपावेधाम जाकेसुरतिहोयनहिरंच ज्ञा
नहिनमिथ्यातिपंच ९ दोहरा एइपंचमिथ्यातवस जीववसैजगमांहि ए
हिसागपनपरचढै तेशिवपंथकहांहि १० सासादनगुनथांनसो अरुअ
जोगपरयंत उत्कष्टिसंख्याकहि भाषीश्रीभगवंत ११ चोपई॥ सासादी
नगुनथांनकनाथ बावनकोटिजीवतिहांथांन एकअर्बअरुकोडजन्मा
र मीश्रनामत्रिजोभरधार १२ अव्रतनांमचोथोगुनथांन सातअर्बजीव
तिहांवसांन पंचमदेशव्रतपुरकहे तेरहकोटिजिवतिहांलहे १४
पंचकोटीअरुआएुलाषसहस्त्रअगाणूभपरभाष छैसेजीवछठेगुनथां
न परमादीमुनिकरुवषान १५ अप्रमत्तसप्तमपुरत्तबि कोटिदोयअरु
बाएलष सहसनवांणवेएकसोतीन एतेमुनिसंयमपरविन १६ उपसम
श्रेणीचडेगुनथांन अष्टमनवमदशमपुरवांन छैछैसैननाएुवेकहे
पंचमअष्टम [illegible] सबसरदहे १७ अष्टमछिपकपंथजीयजोय सत
पंचअगाएुहोय नोमगुनथानकजीयजवे सतपंचअगाएुसबे १८ दशा

व०२ मेगुनथांनकमुनिराय सतपंचअवाणुथाय एकादशमअेलीउपसांतेसेओ
१०४ रनिनाएंतंत १९ द्वादशमगुणषीणकषाय पंचअगाणुसबमुनिराय अब
तेरमेकेवलग्यांन तनकीसंख्याककुंवषांन लाषआठजेकेवलिजिनसुनो
सहस्त्रअठाएउपरगनो सतपंचअरुउपरहोय अेतेश्रीजिनकेवली
होय २१ अबचवदमअजोगगुणथांन पंचअगाणुसबनिर्वान तेरहेगु
नथांनकजीयलहे सबकीसंख्याएकहे २२ आठअरबसतबकुतरको
डलाषनताणवेउपरजोड सहसनताणवेषटसोजांन नवेसातशिव
पंथप्रवांन २३ जवलौंजीयइहथांनिकमांहि तबलौंजगवासीजुकहाहि
इनहिउलंघीमुगतिमांजाय कालअनंततिहारहाय २४ सुषअनंतवि
लसेतहांथांन इहविधभाषेश्रीमुनि वृषांनभेयासीदसमांननिहार नि
जघटमांहिवहेपदधार २५ संवतसतरेसेतालिस मागसीरदशमीशुकदि १४
स मंगलकरनमहाशुभथांन सर्वसिद्धप्रतेकरुप्रणांम २६ ॥ अ ॥ इतिगु
नथांनकसंख्यासंपूर्ण ॥ अथ १५ पात्रचोपइलिष्यते ॥ दोहरा ॥ नमोदेव

तिनदातारलहेभवपार ५ उत्तममांहिमध्यकेअंग श्रीगणधरवरलिसरदीग ३६

अरहंतकुं नमुसिद्धसिवराय नमोसाधकेचरणको जोगत्रिविधकेलाय
१ पात्रकुपात्रअपात्रके पनरभेदविचार ताकीकुंरचनाककु जिन ॥
आगमअनुसार २ तीनपात्रउत्तममाहा मधमतिनवषांन तिनपात्र
फुनिजगनहे तेतिजोपहिचांन ३ तिनकुपात्रप्रसिद्धहे अ[illegible]हअपा
त्रफुनितिन एसबपनरभेदहे जानकुग्यांनप्रविन ४ चौपई उत्तम
माहिमाहाजेश्रेष्टतिर्थंकरकहियेउत्कृष्ट मुनिमुद्रामेलेहिआहार ॥
आरग्यांनसंयुक्तप्रधांन द्वादशांगकेकरेवषांन ५ उत्तममांहिजघनजे
होयःसामांनीकमुनिवरनेसोय ६ भावितभावितशुद्धअनुप पर्मदयाल
दीगंबररूप ७ मध्यमपात्रअनुव्रतधार तिनकेतीनभेदविस्तार
८ भावितभावीतगुनसंयुक्त रहेपापक्रियासुमुक्त ९ उत्तमअइलश्राव
कपास एकलंगोटीपरीग्रहजास मठमंडपमांहिकरेवसेसा एकद
शात्रतंग्पाभास ९ दुजोश्रावकक्षुल्लकनांम कछुअधिकोपरीग्रहएह
नांम पीछीआरकमंडलधरे मधमपात्रएहीगुनवरे १० औरदशाप्र

१०५ तिमाधरैजेह लघुपात्रनमेवरनेतेह इहविधएहपंचमगुनथान मधमपा
त्रिकुभेदश्रवांन ११ अबलघुपात्रककुसमझाय उतममधमजगनकहा
य उतमछाइककसमकीतवंत जिनकेभावनकौनहिअंत १२ मधमपा
त्रउपसमकेवार जाकीमहिमाअगमअपार वेदकसमकीतजाकेहोय
लघुपात्रनमेकहियेसोय १३ तिनकुपात्रमीथ्यातिजीव द्रव्यलिगजोरहे
सदीव ग्यांनविनाकरनीबकुकरै भ्रमीभ्रमीजोसागरमेपरै १४ मुनि
कीममसुद्रानिरधार सरुपरीसाबकुपरकार जीवस्वरूपनांजांनेभेद
द्रव्यलिंगीमुनिउतमसेव १५ मधमपात्रश्रावककेभेद द्रवितकरीया
करैविवेक अंतरसुन्नआतमरांम मांनतहेजिनकोगुनथांन १६
जघनपात्रककुविष्यात जाकेवरतेजरमिथ्यात समकीतकीसीउपरसी
त अंतरसत्यनहिपरतित १७ ककुअपात्रउकुविधभिष्ट द्रवितभावी
तक्रियाअनिष्ट परीग्रहवंतकहावेसाध मिथ्यामतिभावेअपराध १८
श्रावकआपकहेजगमांहि श्रावककेगुनएकेनाहि लबालबनाजांने १०५

भेद मधमअपात्रकेरबकुषेद १९ जघनअपात्रएहविरतंत कहेआप
कौसमकीतवंत नीहचेऔरनहिविवहार द्रवितिभावतदकुविधगार
२० द्रवितगुनसमकीतकेजेह ग्रंथनेमेबकुवरनेतेह तेमाफकनहिजी
यचाल तेमिथ्यातिजीवत्रिकाल २१ भावितसमकीतजीवसुभाय सो
निहचैजानेमुनिराय केजानेसोवेदजीव औसगणधरकहेयसदीव
२२ एहविधपनरपात्रके गुननीरषेगुनवंत यथावस्थित
जोनके धारेरहेरुदयसंत २३ निजसभावरमलिनजे तेपकुचेशिवऔ
र मिथ्यातिभ्रष्टकतफीरे विनवेदासकिसोर २४ इति १५
असीकेसापंचपद वांदुसी श्री x
सनमाय कहुब्रह्माअरुब्रह्मकी ककुकयागुनगाय १ ब्रह्माब्रह्मसब
कहि ब्रह्माऔरनाकोय ग्यांनदिष्टधरदेषीये एहजिवब्रह्महोय २
ब्रह्माकेमुषचारहे याकुकेमुषआरहे आंषनाकरचनाभवन हे
षकुहियेविचार ३ आषरूपकोदेषीये ग्रहणकरेनिरधार रागीदे

ॐ

२० बीच्यातमा स्वादकुस्वादनहार ४ नाकसुवाससुवासकौ जांनतहै सबभेद
१०६ रचेविरचैआतमा योमुषबोलैबैन ५ रसनाषटरसभूजतहै परीरहे
मुषमांहि रीजेषीजेआतमा मुषजातेमहुराहि ६ श्रवणशब्दग्रहण
कुं इष्टअनिष्टनिवास मुषतोसोइप्रगटहै सुषदुषचावतासु ७ ॥
एइआरमुषवने चिकुमुषलेतआहार तातेब्रह्मादिवएह सहिसीष
करतार ८ हिरदेकमलपेबेगके करिविविधपरणांम करतानानाक
रमकौ ब्रह्माआतमराम ९ च्यारवेदब्रह्मारचे इनकुंच्यारकषाय
सुधअवस्थावेनयें एविनुसुधकहाय १० नानारूपरचेनए ब्रह्म
विदितकहांन नामक्रमजीयसंगले करतअनेकविनान ११ ब्र॥
ह्मासोईब्रह्मसिहै यामेफेरनांरंच रसनासबयाकीकरे तातेकहौवि
रंच १२ जेतेलबनब्रह्मके तेतेब्रह्मामांहि ब्रह्माब्रह्मनांआंतरो॥ १०६
निहचेयोठहराहि १३ जोजांनेगुनब्रह्मके सोजानेएहवात भैया

योरेकथनमे कहिकथाविष्यात १४ ॥संपूर्ण॥ ७॥ अथअनीत॥२५॥ लि
ष्यते॥सं०॥३१॥ नरलोकनकेइसनागलोकनकेइससुरलोकनकइसजाकौ
ध्यांनधाइये नायनायशीसजाहिवंदतमुनिसनित अतिसेचौतिसआअ
नंतगुनगाइयै कौनकरेजाकीरीसकर्मअरीडारे पीचलोकालोकजिहां
दीसंपयकुवताइये ताकेचर्णनिसदीसवंदेनविनायसीस असेजगदी
सपुन्यवंतजीयपाइयै १ दोहरा परीकालकेडाडमे मुरषकरतगुमांन
देहबीनकमेछांडदे नीकसजायगेप्रान २ स० ३१॥ मिथ्यामतनाशवे
कौग्यांनकेप्रकाशवेकौ आपापरनासवेकुजानंसीवषांनिहै विकुड
ष जांनवेकौबंधविधनोनवेकौ आपापरजांनवेकुपरमप्रवांनीहै॥
अनौनौवतायवेकौ जीवकेजतायवेकौकाकुनासतायवेकौनवनूरआंनि
है जिहांतिहांतारवेकौपारकेउतारवेकौसुषविसतारवेकौयाहिजिनवा॥
निहै ३ दोहरा॥ आजकालजीमलेतहै तुजोरतहैदाम लषकोरजोयर
चंते आवेहैगेकौनकांम ४ स०॥३२॥ पंचवर्णविचनसुपंचवर्णफलीसा

सू०र तमांनषंजससवेनदेषैमांननासहै ॥ दयाकोनिवासससोइवेदकोप्रकाश
१०७ तसैरूपकोजुकोटसुतोनोकर्मनासहै ॥ ऽस्मकर्मनासहेमकोटीमध्यराज
तहैरतनकोकोटनावकर्म्मकोविलासहै॥ताकेमध्यचेतनसुआपजगदी
सतसैसमोशरणज्ञानवांनदेषैनिजपाशहै ५ ॥दोहरा॥ लागोहैजमजीव
के बोलतएसेगाजि ॥ आजकालजीमलेतहै कहांजायोगेभाजि ६ ॥स०॥३१॥
देषकुरेदरूएकवातपरपबिनइअबनकीसंगतविचरूएन्नलोनाहै ॥ वि
नाबीकलबताहिव ब सोविलोकथीरवहुजायगछतवफिरेओदीवानोहै
वस्तजोनीबताहै नब तूहैरेनदीनपोषवकुपबाकरैमछतोलोनानोहै
स्वबनिजअबनसोविलबनकेनपासमोहजसलागैवबऐसन्नरमांनोहै ९
॥दोहरा॥ जगहिचलावतदेषीये ॥ कोउसांऊकोओर ॥ लादिलादिकृतकर्म्म
कोनांजानेकीहओर ७ स०॥३२ नरदेहपाएकहापंडितकहाएकहातिरथनवा
येकहातरीतानजेहरे ॥ लबकेकमाएकहाअबकेकुमाएकहाबत्रकेधराएकहा १०७
बिनतांनओररे ॥ केशकेमुदाएकहाजेस

केवनाएकहाजोवनकेआयकहाजराकुनाषेहरै ॥ न्टमकोविलासकहा ऽुर्जनमेवा
सकहाआतमाप्र काशविनापीबेपबतारुरे ८ ॥दोहरा॥ ऽुषीतसबसंसार
मे सुषीतसैनहिकोय एकसुषीजिनधर्म्महै ॥ जिहघटप्रकटहोय १० स०॥३३
नरदेयपायेकहेकहासीध्नइतोहिविषेसुषसेयेसबभुक्तगमायोहै ॥ पंच
इंद्रीपुष्टतिनोपुष्टकरीपोषराषीआइजरातबजोरविलषायोहै ॥ क्रोधमां
नमायालोभआरैचितरोकबैगेनरकनिगोदकोवेगोआयोहै ॥ षायचलो
गंपावकोकमाईकोडीएकनहितोसमांनमुढऽुसरोनढोकोनपायोहै ११
॥दोहरा॥ जाकेपरीग्रहबकुतहै ॥ सोबकुऽुषकेमाहिं विनुप्ररीग्रहसागपके
परसौछुटेनहि १२ ॥सवैया॥३४॥ यांनिहिकेमांनितुमथिरताविशेषइहांकत
वेकीचिंताकछहेकेतोहिनहिने ॥ जोरतहैलबकुपापकरैरैनदीनसोतोप
रतछपापचलेवोउचाहने ॥ घरीकीषबरनहिसोंमासोवरषकीजेकोनपरव
नीताविचारदेष्योकाहिने ॥ आतमकेकाजविनुराजसुषसबजातसुनोमाहाराजकरीकांनकीनिदाहिने १३ ॥दोहरा॥ सेनकरतहैरैनको ॥ कोटीफजअरुरोक
सपनेमिंदोउएकसे वरतेसदानिसंक १४ स०२३॥ नटपुरनगरनामएकसुंदरतामिन्र

२ल० सरोहिचिकुओर नायकमोहनचावतसबकोलावतसांगतएनितजोर उच
१०८ रतगिरतफिरतचक्रीदेकरतीभरमनानादीकघोर एहिजगतजीवसबनाचतरा
सतनहितिहांकिसोर १५ ॥दोहा॥ कर्म्मनकेवसजीवहै जिहांबेसेतिहांजाय
ज्यौ नचावेत्यौंहीनचे देष्यौत्रिभुवनराय १६ ॥सवैया॥ २३॥ इंदुहरे जिहां
चंदहरेसुरइंद्रहरे असुरादीकजोइ मुनीसहरेअवनीसहरे चक्रिहरे
२ वलिकेशवहोइ सेसहरेपुंदेशहरे सबजेसहरेथितकागतीषोई दा
शाकहेशिवरशिवनायकुकालसलीबलीसोनहिकोई ॥दोहरा॥ ऐंधर्मजि क
नदेवको वसेजासउरमांहि ताकीसरनंजगतमे अरउसरोनहि॥स
वेया ३१॥ पुरवहिपुनककुकीएहैअनेकविधिताकेफलउदेआपनदेहिपाइहे
इहाआयविषेरसलागोअतीनीकोतुहिताकेसंगकेलिकरेवकुनिधिपाईहे
आगेअबकहागतिहेचिदानंदरामचेलवेकीथितिसांऊनोरमांहिआइहे सा १०८
यकौनसावलनांसांचकछलेतमुहआगेकहातोहिसुषसेजलेवसाइहे २९ ॥दोहरा॥
दोदोलोबनसबधरे मननहिमूलकराहि समकीतदिष्टीजोहरा विरलेहेजगमांहि २०॥
सवैया॥ ३॥

वर्षसोपेषासमांहिजोतेसबमरीजोहिजेतीतेरीइष्टविषेदेवतुहेबावेरे उ
नमिकोवचनेकोकालपांहि थावरकछुत्रिआरसहितमरावेर जमहीको
जमामांहियरीपनुवलेजाहियेहैतदीआउकछुनकुकोउपावेर आजकु
लतोदुकोसमेटकालगालमांहिचाहिजोहेवतदेषापीछेनहिदावेरे॥दो
हा॥ जोवांणीसरवग्यकी तामेकरनसार कलपीतजोकाहूकहे तामेदोष
अपार॥सवैया॥ जाकेहियकोपताहिबोधकोनलेसकछुजाकेउरमानता
कगुरुकोनमोनहि जाकेमुषमायावसेताकेपापकेईजसलोनकोधरीपाता
कोआरतकोध्यानहे च्यारएकषायसोतोदुरगतिलेयजायतेयापदतोवचा
यकछुजोरबलचोनहे आतमाआधारएकसमकप्रकासयाहितेउधारजो
नथांनधरमांनहे॥२२॥ ॥दोहा॥ आपनिमटनिजदृगते विकटस्वर्मदृगहो
य जाकेदृगजेसपुलेतसोदेष्योसोय २४ ॥स॰ २३॥ ओसेनयपोनिजेतोवा
तनिजजानिनालुलषजीनवांनीजामेमोषकीनिसोनोहे काऊंलेकुबुधिसो
सोनिपोसवीपरीतआनितोहितोपीजोनितोउतयोवृत्तपोनोहे याकेना

२॰ उऔर बानि विवाद राग के वर्षानि पै आन्यानी ताकौ बुधि न रमानिये वारंवार
कानजामर रहै नहीं समधानी कुरन के मन न मांनि काल की कहोनिये २५॥
१०९ दोहा॥ एह अनीति पचीसिका दोहा कवित निहार नेया चेतौ आपुकौं जि
नवांनि उरधारि २६ ॥ इति अनीति पचीसी ॥ अथ कर्मप्रकृति...
दोहा॥ नमो देव सरवग्य कौ वीतराग जसु नाम मन वच शीश नमाय के क
हूं त्रिविध परणाम १ ॥चौपई॥ एक जीव गुन धरै अनंत जाके कछु कहिये
वृतांत सब गुन कर्म आछादित रहै के स भिन्न भिन्न ते कहै २ तामें आ
ठ मोख्य गुन कहे तापै आठ कर्म लगि रहै तिन कर्मन की अकथ कहांन नी
हचै ताजो नैता गावौ न ३ कछु विवहार जिनागम साख वर्णन करौं जिना
गम साख ग्यांनावरण करम जु बराय तव निकुम्पारे ग्रा स्त वथाय ४ ता
के भेद पंच विस्तार तथा अनेत अनंत अपार जैसे करम घटै जिह थान १०९
तैसे तहं प्रगटै ग्यांन ५ जैसा प्रगट ग्यांन जहां होइ तैसौ करम कैर जिय पै
हो ३ जो दर्शनावरन और गयं जीव देष सब ठोर ६ ताकी नाव प्रकृति

व कहे ताकी सकति सब दब रहै तैसे घटै आवरन जोय तैसो तिहां
दर्स जीय कै होय ७ निराबाध गुन विज्ञ एहि ताहि वेदनी हांकी रहे साता
और असाता नाम तामांहि गर्भित चेतनराम ८ एसी है प्रकृति घटी जो
हि तसी तहां निर्मलता थाहि जैवे वेदनी सब परी जाय तब पंचम गति
पडु बंध्यय ९ चौथो मोह महा परधांन सब करमनि के सबल सबल बांन
समकीत और चारित्र गुन सार तिन्हंकि नाना प्रकार १० जहां जिम घटै
मोह की चाल तिहां तिम प्रगट होय गुन माल जो जो घटै मोह जीय पास
सो सो होय सम्स गुन तास ११ ताकी प्रकृति अठावीस कहि ज्यां जो ग्यांन
कहै न रहे जगत जीत सब चिर काल सो सब मोह अछादित बाल १२
मोह गये सब जानत मर्म मोह गए प्रगटै जिन धर्म मोह गये केवल पद हो
य मोह गए थिर रहै न कोय १३ पंचम आयु करम जिन कहै अवगाहन गु
न रोके रहै जब वे प्रकृति गति नाम ताके गए लहै शिव धांन नाम कर

१०९ मङगविरलंत केरजीवकमुरतिवंत ।७। अमुर्तिकगुनजीयअन्वय
ताकेलषीअकतिजरूप पुग्गलसंगकलवेजीव एकेंद्रीपंचसदीव
११० ।७। उदेजोरनानापरकार चेतनवंसेसरीरमकार जेसेतनमेकेरनिवा
स तेसेनामलहेजिनतास ।८। तनकोसंकटकष्टअपार सहेसेकर
जीवबहुवार जनममरनअनंताकेर ताकेदुषकउकोनवेर ।९। त्रेक्र
तिचालेखताकोकहो जगतमलनएईबनरहो जबएहत्रेकृतिआवलए
जाहि तेवअरुधीलसकहोहि ।१०। सतमगोत्रकेरमजीयजान उचना
चजीयएलषधान गुनअगुरुलघुहाकोरहे तातेउचनीचसब
कहि ।११। जबएत्रेकृतिआवरजोहि तबपड़ेचेपंचसगतिमाहि अष्ट
मअंतरायचत्रीनाम बसअनंतहाकेअनिरंमन ।१२। सकतिअनंतिजी
वस्वभाव जाकेनांउदेषगटथाय जोजोघटेआवरनकहा सोसोचेत
नजांनलहा ।१३। पंचजातिकेविकटप्रहार याकोनटसेवसुषसार ईनवि ११०
नुगाएनाजानेमूल ईनविनुगएरहेजीयफूल ।१४। एगएसबेसुषकेदरसा

न एईसबकेआगेवांन जबएअंतरायमिटजाय तबेचेतननवकेसुषथा
य ।१५। एईआठकर्मसत्र ईनतेमगतिसंकु ईनकोसववितासके
प्रगटकेरनिजवंश ।१६। ईहविधजीवअनंतसव बसतएहिजगमाहि ई
नहिसाफनिर्मलतए तेनिजरूपकहाहि ।१७। नेयामहिमाब्रमको असेबन
अनादि पथापथकिकहुवरनस जिनआगमपरसाद ।१८।
केवलग्यानसरूपमे राजतश्रीजी
तएव तासुचरणवंदनकरू मनवचत्रिसनमाय ।१। कहुसुपंथकुपंथको
कवीतपसीववषान जाकेसमततसमफीपे पंथकुपंथपहचान ।२
तेयनामकसवहुईवाकोनराषेतेरोनामकामधेनुकांसतानुरहेतहे ते
रोनांमचिंतामनिचिंताकोनराषपासतेरोनामपारससोदालिदउदरहु
हे तेरोनाममअमृतपीयेतेजरारोगजायेतेरोसुषसुषदुषकोहरनुहे ते
रोनामवितरागधरेउरवितरागनवसोहीपापनवसागरतरनुहे ।।३। स
अ सुतकेजिनवांनीजिह्वांनितजेरागदेषतेईधनधनजिनआगममेंगा
यहे पंचमहतसमांनजिहांलहितुरआनितेईमाहामुहपातितेनावरीन

श्री

आयेहै ॥ याकीजिनवांनिकौसर्वारसुषवांणेजिनतेंईमाहाराजनतए क
रमनसायहै ॥ तातैऊगिषाललैयालेहोजिनवांनिजषसुखकेसमूल्य
वयादिनेवनायहै ॥ आपनेस्वरूपकौंनजांनै
१११ आपविदानंदवहैनमनकूलिवहमिथ्यातनामपावैहै चेतनअचेतन
है हेंसाकैवेनारगैरवायुरैविव्हारजीवनादकसतायहै देवगुरुधर्मप
थसांचकौनजांनैतेदजिहोतिणांकूदेवमांनसीसनावैहै जलकेनधा
केनपोनअग्निफलकेनत्रिसतावरिाधेमरहैमिथ्यातिकहावैहै ॥
केईनएसाढकेईनएपातसाढप्रातःसीपेकेईनएमा
रकेईवडेफकीरहै केईनएरायराकेईनएरांकनए विललातकेईन
एकायरओकेईनएधीरहै केईनएईदकेईचंदरुविवेंनतेसकेईनये
पोनअरुकेईनयेपनिरहै केईएकविद्यानंदकेजकरकौलीलस्वांगधरेते
यनजीवनमासगिरकैनतेहै ६ परवानस १११
वेविधिजांनतहैअरुजानतहैमतसतत्हरै करीयाकरकेकमजोरत
हैनहिंकिरतहैत्तसत्तेपहरै उपदराम्रततेमधेरपरमावनकोनरनाहि

डाक्टर भाऊ दाजी ...
DR. BHAU DAJI
MEMORIAL

है निजआतमकेअनेंनकरेनपरेनवसागरमेगहरे ७ ॥
दुरनरपेस्नरनकेकारनदेषतहैनरकौविजनाये कूरषांचवो
लनयाकैहिंनपापकरननहिंनेकरायै नअरनककवुनांविचारनदीन
आरातमलेसोषाये नतमतरलोपापअकारतपावतवादजनमसव
आये ८ ॥ करतासवनकोकरमकुलाजेजमजा
केउपजायजीवजगतमेंजेतए सुरतिर्यंचनरनारकीसकलजंतअोत्र
ह्लंरुसवरूतनएनएतासोवरवेरकरयेकुत्रगरकहसुआय ओसोसाढ।
वलिज्ञहिपातीरमैंतिजए ॥ दुहविरूओरनहिपांविककवुताकोबोरव्रलाजस्क
सिष्टकौंवाराय वारलेगए ९ ॥ चौपरकैषेजतमंत
मासाएकलेयाटीमजगतकीरीतसवयाहिमेवनाईहै ॥ चारोंगतियारदा
वफिरवीरदआविनावकर्मवर्तिजीवचारमतिविवुए ईहै तिनजोगपामाप
रेताकैतेसदावफेरशुभअशुभकर्मतारीजिसिमाईहै फिरवानरसौजवक
र्मषपजाहिसवेपंचमगतिपकुवेनेयोंवनुताहि १० ॥

ताकि ४

दिहकेपवित्रकीआतमापवीत्रहोएअसेमूढलिरहेमी
थ्यातकेतरममे कुलकेआचारकुंविचारकुंसोईजानेधर्ममूलकेदष
११२ एपुसपापकेकरममे सुदेवकुदेवमानसहानहिजानेधर्मअधर्महिंसाद
याएकहिमिलापमे असोदुरबुधिअविवेकीतेरपापकीयासुंरहेसंसारअसो
अधर्मीनरकमे ११ नदीकेनिहाररहीआतमानि
होराजापत्रपापकानमपोनवेतदषेद्रछिद्रके एकनीरतयाआएएकथ्या
रोगव्याजायईहाथीरवलायरषोनरसुरके ताहिमेकीजोसकेईग्रांतिक
तरंगउठेविलसेकुनिताहिमेअनेकथाउठरके तिसेंअपआतमामेके
परणामहोहिऔरपरवानदेअनंतशक्तिकरके १२ ॥करतावरणन॥
॥जगतकेजीवनेजीवावेजगदीशकोउवाकोईबाआवेतवमार
डारायतुहे वाहिकेहोकमसेवेतिकाजसबकरेजीवबीतुवाकेदुःकमन ११२
तिनटारीयतुहे करतासबनकेकरमनकोवहेआपुलोगताउकुमकोन
जोविचारिअतुहे करतासोलोगताकोकेरऔरतोजेआकेकछुउतरसुधा
धारीयतुहे १३ जोलोंईहिजीवकिमीथ्यातदृष्टि
लागीरहेतोलोंसाचकदूअसूऊकुअसुजेसोवहे रागद्वेषविनादेवसाहिक
हेरागीदेवजीवकोनजानेतेदमानतत्वपश्वहे वस्तुकोसुभावकोनजा
नेएहसोंवाधर्मकीयाकोधर्ममोतेमदराकीमावहे संसारसवोलिसरव
गमिलिवर्षानिदेयाताहिनोपिलोलिसोलोनाविकर्मनावहे १४
कोनुकहेदेवसुरसोमदेप्रतछदानकोउकहेरामचंद्ररावे
आवागोतसों कोईकहेबलावड़ोसिष्टकोकरईयाईहकोनलागीरहेतवी
तीजकेनोनसों वहेलपानासोचादषीयेजिहोदावित्रवेदपावाकेपुततय
बापकहेकोनसों असदोतरससांनेजीवसंसारमांहिसबहीतेफरतरहे
दुररहेमोषसों १५ निमदीसवहेमनलागोर
हेमुनीराय्यकेपायकवेपरसो जिनदेवकेदेषतकीरटलाकीमजायविदेह
वितापरसो कवधेमग्रीवलोकमेजायवसोसुषसीयलकुंतलीकेजरसो क
बजागमेजएमवांचतहेनविसाजेककालकीयोंपरसो॥१६॥

वृ॰ नाम स॰ १४॥ जाकि कुलधर्म मांहि सरवग्य देव नहि पुजै तै कोन पाहि हिरदै की
वात को। संसठ रघुरर हो गपान गुन तुरर सी माहात मन त जरही लषे सरागा।
०१२ गात को। मिथ्यात का लपरम्भा वसा व कोन पंथ पावै जिहां तिहां तू लिख्याक
रजी वघात को। जुगाई पुरान मानै कुगाई देव गांवै जे सो जस्म अंधन रहै षेना ष
नास को। १७॥ कुपंथ वर्णन॥ स॰ १५॥ राजा परजा सबै बैरा बैरी को सम माने ये
दसो प्रत जु वात जो कम सफल नहि। आप जगाई सब अवतार धरयो अवतार
कुंजे सके लकरी सो के नाम कान है। परमेश्वर के रूप रव फसौं अवतार के
हतन आव ताजे असो ई पुरान है। अहो महाराज कौन को जमत कौ नो जगत
केडो वैवि कौ ऐसो सरधान है। १९॥ श्री वर्णन स॰ २१॥ वडी नीत लघु नीत के
रतहू वाय सरस्तव दरबाय तरी। कौडा बकुत फनगनी मंडितस कल देह
मांनु रागदरी। श्रोणीत पाडुमो समय पुरात ता परारी ऊधरी धरी ऐसा नीर ११२
षक्रर के मांव रस क त्री या तुम कांहि करी। १९॥ नाजि दैव वर्णन स॰ १७॥
जो जुग कु सब देषत है तुम ता हि विलोक के का हि नो देष। जो जगकुं सब को

न तहै तुम ता हि जो जाने तो सुषो है लेष। जो जग में थिर है सुष मांन त सो सु
ष वुद तको न विशेष। हियरे नप्रगटैत बहै जवहै तुम आपनि रके रेष
२७॥ कुपंथ वर्णन॥ स॰ २२॥ सोई तो कुपंथ जहां दया को न जांने नेद सोई तो
कुपंथ जहां लागीर है परसों। सोई तो कुपंथ जिहां हिंसा में वषाने धर्म सोई
तो कुपंथ जिहां केहै मोष धरमें। सोई तो कुपंथ जा कुं पंथ जो कुं शिल पसु है
व कहै सोई तो कुपंथ जा कुं लंगपट्ट रसो। सोई तो कुपंथ पंथ पंथ विना जांके
नहि वितापथ पाय मूढ केसे मोष दरसो। २४॥ स॰ २३॥ पंथ वहै सरवग्य जीहां
प्रभु जीवन जीव के न दरसपाहि॥ पंथ वहै जो निग्रंथ महा गुरु देषत रूपम
हा सुष पाए। पंथ वहै जिहां ग्रंथ विरोध न आद अंत लोक जषाए। पंथ व
है जिहां जीव दया धर्म कर्म षपाय के सिधमे जाये २२॥ जस पंथ वर्णन स॰ २४॥
पंथ सोई जिहां जुग कर्म चक है जुगा पंथ सोई जिहां जुग गुरु मानत ए। जुगा पंथ सो
ई जिहां ग्रंथ सब कुगा वाचि ज जुगा पंथ सोई जिहां सम को वषांन ए। जुगा पंथ सो
ई जिहां दया को न जाने तद जुगा पंथ सोई जिहां हिंसा को प्रवानिए। जुगा पं

६५ः सवेलेकिसमोषपंथपापतिहिविनामोषपायेतेयासुषकेसंजानिये २३
पंथवृद्धिजिको आयुविराजतलोकअलोककोईसजुगाये
११४ पंथसोईपरखोनविदानंदजाकेचलेतनचनुलिनोआये पंथवृद्धिजिको मोषमा
रगसुधोअवलोकिवलोकेजोय २४
केवलिकेग्यानमेप्रवानआनिसबवओसंजोकअलोकनकोजितिकछुवात
है अतीतकालनईहैअनागतमेहोयगीवर्त्तमानसबैकोवदितपोवि
ष्यातहै चेतनअचेतनकेतावविद्यमानसबएकहिसमैमेजेअनंतहो
तजातहै एसोकछुग्यानकीविशुताविशेषवनीताकोधनीअहोदेश्य
केसैविजलातहै २५ एवेहजारना
रकिनक्षसदीनोवारअरमततोनिलारकाहैकुंडरतुहै कछुषंडको
विभूतखोइतनेवरकोनोसमअनुरागतसोनहनोधरतुहै नोनिथा ११५
भआदजेअवगुदहरतनसागदहसतोनहतोरीवनविसरतुहै असीवि
नोतसोगतववितेवजितकोनोनहितेरीकछुकेतिधिसोचकुकरनु

दोहा २६ यहसुपंथकुपंथके कवित्तपसिंचचसिंह तेयापदत्तविवे
कसों लहियेआतमरीद्ध
परमगुजसरखंगहै तारणतरणत्रिकाल ताकेवरणवेदन
करं छोडिआलजंजाल १ एकमोहतेमगतसुं नमतसबैसंसार दूषणअ
रुसमकेतही असोमोहलविकार मोह
केतरमसोकरमसबकरेजोवतलजोतेपुंसअरुपापअसोमोहकीम
हलमे जगतसबगाईयेमोहधरीदेहपरतेहपरसनकरेतनमकोत्रल
मेधर्मकहोपाइये चरमकोदीपसोपरमकेकुंदषायत्तमोहसोनरलियहै
चरमहरमाईहै चेतनअचेतनकोजानतहैतनभिन्नभिन्नमोहएकमेकु
लेषतेपायोवताईये अस्याअरुविष्णुमाहादे
वतिन्होएकरूपकहेपरमस्वरूपकेअराचनाएहै विरंचओरांकरेनआयु
संमयुधकोनोषरसोमहेदनसुएथनममायहै विष्णुआपअवतारलीनो
जगमांहिजनकहेकाहेपहेकाऊतेवतायहै सिवरषिपीछेकरीवहै

७वृ॰ जेपवनपां निंद्योईसनैकृष्णोननहिंञसोनरमांयेहै ॥ ४ ॥ कुदेवधुकत्र्ण
ना॥स॰॥२३॥ कोंनकरीकूंजनेमकेजपरनारीसांएंसविभचारीनसोईसके
१२५ संकहीये माहादेवनागेहोयनाचेसाप्रसीद्धवातनजनांलजातकहे ईमजा
हियेब्रमानेतीलोतमाकोदेषीमुषच्यारकीनेईतनोविचारनहिईनेंऐसोच
होये कहेतहेईसकुगदीसएवतारञ्चापईनहीकेवरनविकालगाहिरह २
च ५ ॥ मिथ्या अवतार वर्णन ॥स॰॥२४॥ अर्जुनकूंतीनलोकमुषमेदषायदीनजिन
घुमनहेरसुधककूतांलोकजाहतहै सेकरसुसीसकोटिहुहतगए अरु
कोतिनलोकमेनकूराजलेगएहतुहै ब्रम्हादुकोसिष्टकोचोरायजेबगएथो
स्वीतलोककरतापहुहतरहतहै रांमचेरत्रीताकीसुधिपुछतसुधेछ
नसोताकोलोकजगतकेईस्वरकहेतहै ६ ॥ परमेस्वरहानजीने अवतार
वर्णन॥स॰॥२५॥ मछकोसरूपधरीगएजोपातालमांहाच्यारवेदच्योरसा १२५
सब्रोंनिईल्योधोहै कहुहेअज्ञासीसवजातजनकोहलधरीकोटसेसमुद्रमेस
थनपीवकेरहै पृथिकोपातालतेअआएआपुसुअरहैसंघकोसरूपधरी

हणीकन्नाहेरहै परमेस्वरपरमगुरूअवनासीजोतिरूपताहिकहेपसु
हहआयेअवतरेहै ७ ॥ अवतार वर्णन ॥स॰॥२६॥ रांमओफरसरांमआपु
समेयुधकीनोहोउअवतारओराईस्वरकोंलेरहै कृष्णअवतारमांदिति
नजोकरापतहैहारीकोंनरावनकेजाहोसबजेरहै बधकेविचारमुहमा
सनवकीनोसबपापविस्तरनरकमांछिपेरहै वावनहेजासुबलिईस्र
हिलीतोबलिच्छनकूपातालहारपालनएषेरहे ८ ॥ मिथ्यादिष्टवर्णन॥स॰॥२७
३१॥ पंचसंगुतथोनकजोश्रावकजोउत्कष्टीप्रतिमाधरहोय ससीतसाग
ताकोजिनबोलतएकपटपरीग्रहमेजोईसाधचतुर्दशापरीग्रहराषपं
चपोनमांहीएकनहोय तिर्थकरहहेउइएवाकलाकहेतजाजनहि
आवेलोय ९ ॥ मिथ्यादिष्टीमतकहनीयवर्णन॥स॰॥२८॥ बापुरेवीचारेमि
थ्याद्रष्टिजीवकहेजातेकोंनजीवकोंनकर्मकेसेकमिजापहै सदाकाल
कर्मनसोंएकमेकहेहितिनतानजासीकोंनकर्मकोंतच्यापुहे पदतोंस
रवपदेवदेख्यानिंनरूपविदातदग्पोंनमईकर्मजडवापुहै सिद्धतांति

ब्रह्म मोह बीनज्ञाने सरधानवानज्ञानसरस्वरूपदेष्यो तसोपवतापहे ॥ १८ ॥
नमोपदारथ्य सारको नि
११६ जन्यप्रकास सर्वदर्वव्यापीवसु केवलज्ञानविलास ॥ १ ॥
स० ॥ त्र ॥ दल्यारीतगवोलकरेनहीपोनपानरहेकोदीपुरको
जगमेप्रसीद्धहे ज्ञानतफिरतघंडडगतकनरतकऊपरसंगत्याग संगरहेस।
केतिस्रकदे बोलनअमोलबोलजावलेटहालेनदीदेषे अरुजोनेसबर
उनाअवंधहे असी अवर्णवातमिथ्यासुरकेसमातज्ञानेसाविदोषवार
जाकेग्यानतनीथीहे ॥ १२ ॥ देषतजिनदेवकोद
षसरूपनिज्ञदेषतहेलोकालोकलोकग्यानउपजायके बोलतहेसो
लअसेबोलतनकोउजैसतीनलोककथनकोदेतदेवतायके बकुको
यरावेवेकोअपानोधपायवेकोसुषसुअघायवेकोरीहहदिषायके ॥ २ ॥
मंदीरवनाउमुरति अनंगस्तनासंधारकु तोलित
कुदलवकदकु मुनिमुद्रासिषकु सवैअर्थतेदेतयाकहतदाअदीषदेष
सलवेननावेकीपरडूवनावेकीकहेसमझायके करमनसायवेकोउ ३
११६
कुमरी अक्रोतमप्रतिमातिरषतसुकरीनयरीनलरीनथरी
कलासरसातिकेकंथ कऊवीनानगुरकोहे कनेतकोकलावाउ
वकुतसोकहियेजोहे नृपतिकेकरसंगकला साधरजेकिद्यानकउलो
अवरथीकलाकेरसमवानीक श्रीहंस्रारायकीनोसोकीजेनवीजनदासस
बअरथअंतयपुतेसुन श्रीवीतरागसेवहुसदा ५
कलाधर्मकलाकर सदाचित्तमेकाधारीये प्रभुप्रीतकीजेकला दानकी
कलाउचरीये आश्रवसोकीमजित पंचपरकेकलागहीये गुरुसिषाकिम
रहेईरुज्ञानकोकलागहिये सबप्रश्नवेदाउतरकहत निजसरूपमनमेध
रो नेयाविवेकतेनविकजन सदादयाप्रज्ञाकरे ६ पुकसदेजन
जेनको चिदानंदसोवात आयेलोकीहदरात कहोकहाकोजात ७
स० ॥ दरातोप्रसीघहे निगोदनाम सिद्धमाहातिनसेतेसासचाउज्ञाको
परवानहे तिहकेवसीयाहमेचेतनाकेवेचधारेवसतअनादकालविसो

Dr BHAU DAJI
डाक्टर भाऊ दाजी

बिनु ग्यांन है तिहीं थांनिक सकौ उ कर्म सुत योग पाप आय है मई लंसु ने
पुरुष व्रथो नहै ताके पाय परवे कुं महाव्रत धरवे कुं अलग्यांन ज्ञान वे कौ
११७ चलवो नितिं दांन है ८ एक दांन एक गोरमज ग्यांन चारी त्रै सुं पुछी
तीन वात कल्याण वे कौ वास है बोले ग्यांन स स्वरूप चिदानंद नाम अनंत अ
संख्यात परदेश ताके पुरषास है एक एक देस मैं अनंत गुन ग्यांन वसे ति
हां कौ वसीया है मैं चरनन के दास है ताऊ वल मैं रीसं गदकु मति कुं है सुष
मैं री आषते रपाय मिलो यो गुष्यास है ९ ज्ञा
न वस्त्रे पहरे सो देह तो न जाय देहा यत्रा लि देह न ई देसजा नै तो ना मानीये व
स्त्र के पुरांने न ए देह तो पुरानी नई देह के पुरांने जीव जीरन न जानीये व
स्त्र के नास कछु देह कौ न नास होय देह कौ नै नास कहे अनास नांव षाती ११७
ये उ अदेह पुद्गल की चिदाग्यांन मई होउ नीन रूप है पावउ स्यां निये १०
आगम्या आगम पठन व पुरुष मिण्याच ज्ञीप करे

वषान देव पदेश्ना न अस मज्ञाव तै ते पाव तप द वि निर्मौन अपने उरमे
मोह गल ता नहि पाव तस सार्थ वांत ऐसे ड असुरत के पाठ फिरे जगत
नोषेन गवांन ११ दर्सन त्रिश्नि हिसोई चेतन दर्सन नी
हसुग सील नो होय चारी त्रैल स्वतै स्तव सागर ऐ अवर ज पुछ तसी ष
काय १२ तेरह विधि चारी त्रै जाय रेतो विनु तजे तो सागर तेर ज्ञव
एनाव के रउ रतासा तवल है जीव मुगति पद वासा १३
मो सहाइ लोकु संत पुरी तव नाई कऊ वाम सुजंपरी ता पेरामके
ग्रालाये है ता मैं मन मुत त री कम की कोट धरी राग संवेकर लोक मेल
आये है बोले पदषान षान वा नुदी ये गारी ज्ञाप आग को न धरे पाउन ता हि
तैं ज्ञानाये है ऐसे मोह नमत मै आ ना दिके न माए जीव देषे परत ति त
उ तृष मोह गए है १४ एह आवर्ण चतुर्दशी पढत आवे ना होय ते
या लोग्य न ग्यांन के पोसत नवेस व काय
सर्व दोष न्याय क परम केवल ग्यांन जीलंद तासु वरण

पं. वृ. वंदनकरूं ॥ मनधरी परमानंद ॥ स० २३ ॥ रागद्वेषमोहकी परणति है अना
दनादि मुलस्वभाव चेतन सुध फटक मनि जिसे रागादिक जु रागलभाव
११८ वाहिराग सकल मोह सु मिथ्यामति नाम कल्पव समदृष्टि सुं लखेद्कुं दल
यथायोगव रलैक रासीवा ॥ दोहा ॥ जो रागादीक जीवके है करू मुलस्व
भाव तो लहै तरीव जो केमे दुषन लेवतु रकरी भाव २ सर्व कर्म एती लहे
जीव जगतके मांहि निश्चेनय सुं देषीये परसुं रागकछु नाहि ३ ए रागा
दीक भाव जे कर्म संयोगी आहि ह्ये नादई है जीवके मुलस्वभावी नां
हि ४ रागादीक सुं तिन्ह जब जिव लयो जियकाल तबहि पायो मुक्ति पद
तोरी कर्मकी जाल ५ एई कर्मके मुल है रागादोष परीणाम इनहि तें स
बहो तहै कर्म बंध तें कांम ६ ॥ अडिल छंद ॥ रागी बंधे करम भ्रमकी
भरतसो वैरागी तर बंध सरूप भावरतसो आरबंध अरु मोह बंध है केस ११८
मजायके फुनी लांहो जीदेषो वतु रसु जांण भाव सनपतायके ॥ सवैया ३१
रागी द्वेषी मोहकी परनती लागी अनादी जीवके होय तिनको नमतप

य परवानुबंध होय तब सुं नेह हि सोय तिन तें होय देह आऊ ई इत्र्यासिही वि -
षरस सुं जसलो जाय तिन मे रागद्वेष जो भप जतें तहि संसार फिरवत फिर ए
होय ॥ दोहा ॥ रागादीक नसो कहो थोरे में समझाय भैया सम्यक नेनतें ८
लिजो सब लषाय ॥ १० ॥ सवैया ॥ अथ पुन्यपाप जगत स्वरूप लिख्यते ॥ दुहा ॥
परमातम पर तत्व है सिध सकल अरीहंत निति प्रति वांदो भाव धरी क
रुं जगत विरतंत २ ॥ श्रीमदुरकुं नमस्कार ॥ स० ३१ ॥ सो सीमंधर के पायप
र्ष्यां नथरी विनती करत तबद्कु कर जोरके तुंभ जगदीस ईस तिहुं लोक
के नकि जत संगकी ने तो भयतारिके दुख सरव गए सब जीव रव्या कर
तजीव की जाति हम कहत मह बोर के सेवाई है विधि केरनामहि रटंघे
जपति जिन देव देव वजफारके २ ॥ पुन्य पाप अवस्था वरणन ॥ स० ३१ ॥ आ
गे भनद भातेग जपा छेको जरदि सजिंदे ष अरिजाहि नजिव लवतंमे ऐसा द
लजाको संघरूप तो वन्सो अनेग समभ्वतु रंग ज षीधुन थतंम पुन्य जव पसी
जाय पसो पसो विल जाय पर हुतो भसो जाप पापउदेत नो ल ऐसी ऐसी

तनकीअवस्थाकेईघेरजीवजगतकेवासीजीवहासीआवेमरनमे ३ ॥ पु
ण्यपापउदैवर्णनं ॥ छप्पै ॥ पुन्यउदैजबहोयजीवनरदेहिपावै पुन्यउदै
जबहोय तबघरलछीआवै पुन्यउदैजबहोय तबसिवठौरधरावै पुन्यउ
११९ दैजबषसीजाय तबपापउदैआवैनिकट तबपरैनरकमेजीवह सहै-
घोरसंकटविकट ४ ॥ पापपुन्यउदैकथन ॥ छप्पै ॥ पापउदैपरतछ
ईसननहिपुजेमनकी पापउदैपरतछ विथाबहुभांतितनकी पापतं लछ २
नहिघरमेआवै पापउदैमीटजायजब पुन्यउदैआवैधनलहै तबवहैजीव
सुषभोगवै जथलपाथलईमजगतथल ५ ॥ अथअपपापनाशवर्णनं: स
वैया ३१ ॥ पापकीएसोहंसमामलिननिकर्ष होयएहसोजबहुकोयप।
पहीकरतुहै जलथलजीवमांहिकहेवेदसुषितमेपासपासजीववहैस
बुएसमरतुहै छोटबडेदेहधारीसबमेविरोजेविष्नुताकेतोविनासपा ११९
पकेमेनानरतुहै ईसनोविचारनहिपापकोयमुक्तिजोहितोदितोअगपां।
नीजीवनर्कमेपरतुहै ॥ ६ ॥ जगतब्रह्मवर्णनं ॥ स० ॥ ३२ ॥ चामकीशरीरमो

होवमतलबातन होदषत अपुंवितोउसोनहोयतनमे नारीजनीका
देकीविचारकछुकेरनहीरीऊरीऊमोहारसोचामकेवृदतमे जनमीके
काजमहाराजपदछाडदेतहेछतदेसंकजसेसेोनकीलगनमे तनकेस २
आवपेतपायकोतुकोटीकरेजगतकेवासीदेषीहांसीआविसनमे ॥ ७
॥ विहा ॥ स० ॥ ३३ ॥ नागरीनिसंगकोईसागरनीकेनकीनीरागरंगनारक
सातगनोंअघायहै नयेदेहपायतुमआपपरसिननईतिहांजुविष
कीकीलोलतानानानालगायहे जिहांगएतिहांतुमविषसंविनोदकीनोत।
हिसेनरकमेअनेकदुषपायेहै अजहुसंसारविषेडारेकोंनचिदानं
दजाकेसंगदुषहोहितोहिसोंलीनायेहै ८ ॥ पुरुषंगवर्णनं: स० ३४ ॥ जिहां
ताहिसजीवोहेसाथतुसहांकोहुदईहांकेहिजोगनमोरसोतुलीनायरे सं
गतेरकोंनवेलेदेषतुविचारहारपुत्रकलत्रधनधांनाएककोईरे जाकेका
जपापकेरेनरतुदेपंडनिजकहेकोशापायेतेरेलकेजबजायरे जिहांतुअ

५४ै मई कल्लपारनापाईये मुनीराजसबजीतीरहै श्रोषधस्तावनानाईये
१४ एकादशएदवेदनी कर्मपरीसहतानि मोहसहितबजवा
१२४ नके मोहगएवलहीनि १५ नगनकेरह
वेकुंभारहाकष्टसहवेकुकर्मविलहवेकुंवडामहाराजहै देहनेहतो
रवेकुंलोकलाजलोरवेकुंबमधीतजोरवेकुंजाकोजोरकाजहै धर्मपा
रापबवकुंपरन्नावनापवेकुंसुधारससापवकोध्यानकासमाजहै अंब
रकेसागरीगंवरकहएसाफवकुकायकेअराधिअतिभिरताजहै १६
प्रकृतिविरोधआहार मंवेमुनि जोउ
वपावे होयअरतपरनाम तासमतारसतावे औरिपरसंयोग हो
तदुषउपजैतननाम तिहंआरतिपरणाम सोगथिरताधरैमनमै ई १२४
मसहसाफदुषपुंजवहु तबकुछिमाविहितरटरत तेयात्रिकालमुनि
राजसौ आरतिजीतितिशिवपदवरत ॥१७॥

आपतनकेरतमोनदिपकपरेपतंगनाह्राकोकोरतमोननवर तुलातेहै का
ननकारतमोनमगोषावतरुपांतनिजफरसकोरतगजुलेपाजरीवानाहै
रसनाकारतमोनमछीषावतरुपांननिज [redacted] संह तदुप [redacted]
[redacted] जीवकेअसोभ रमातेहै ऐसेजेतुलारगायमुनीराजसबहीजितलेयेजग
तमेसाफसेएयनयलमानाहै नारकेनिहा
रतखिवारसबन्तलिजायनारकोनिहारतवणांभफरीजातहै नारके
निहारतअग्यांनतावआपजुकेनारकेनिहारतसोशिलगुनपातहै ना
रकेनिहारतनोसुरवीरधीरधीरजोहनाकोमारलेअडीगहरातहै असर
तारनगनकेनैनकोविसजितनएहेअतीतमुनिजगनविष्यातहै ॥१९
तववहोयमोनतिहंमोनतजिहेत
सुषअपमोनहोयतिहिमरनकसमोनहै मोनकेगुमानआपुमाहारजा
मोनरहहोतअपमोनमुदहदेसघोनहै मोनद्दिकोजाजसहतअनेक

दुष अपमान होय धरेन रकनि दीन है। ऐसे मान अपमान दोउ दुष्ट नाव
ताजि मानत समान मुनि रहे सम भाव धीन है २०॥
१२५ जब थिर होय मुनिंद एक आसन दिढ धारैं जब थार होय मुनिंद ओग
को न हिंदि टारैं जब थिर होय मुनिंद कष्ट जिन आवहि केते जब थिर होय मु
निंद तान सुषसहैं जेते एम सहै मुनि कष्ट अति राग द्वेष न हिय रत मन
अनेक कष्ट होहि एक वेर जो सर्व चैन ईत्या परीमान न २१॥
कुवचन बान समान जो गति होमार गारावे कुवचन
आगम भान पर गुण पुंज जलावे कुवचन वज्र विसाल ताव गार ह्ना ष्टपव
मे कुवचन विष को फाल पार दुषदेवे कल मे कुवचन माल दुष पुज यह
वचन लगे न हि जगतजन ऐयात्रिकाल मुनि राज तिन्हें जित तहि निज अ २२५
ष धन २२॥ ॥ अजाचित न धरत है जास
नान करत है ईद्रिय मद सर्प है माहा सैतोष करके रागादीकनावदलैं हि
क्रोधादि बंध गल्ते है मुनि शुध भाव वढ तु है मनोविकार हर के मरन सो
न डरत है तप स्यो जोर करते है अनेक कष्ट दूर्त है बिमा सुषद गाधर के दया
से उपार कर्ते है सु साध ऐसे तर्ते है नेयाव णांम कर्ते है त्रिकाल पाय परके २३
सम्यक ग्यान प्रकास होय मुनि कोय
तु तन ति सुने जिनेस्वर वैन याद न हो र दरती मोन तावर ण परगट बुधन
हीन ग्रटजा की पुर वन नव थि सबंध ईह कतु वेवेतन ताकी ईम सहै त
कष्ट मुनि ग्यान के होय प्रवल परीसह जीय तिन ति निज रूप सो
लह न तु धन अनुतन ही य २४॥ ॥ प्रग्यावत
होय तिन्हों विद्या न हि आवे प्रग्या प्रवल होय तिन्हों न हि पद पद आवे प्रग्या
प्रबल होय तिन्हों सर स्या न हि सुझे प्रग्या टीक लु अरथ न तो बुझे ईम बुध वि
न पवन होय जिन तिन अनेक परिसह सहित नेया त्रिकाल मुनि राज
तिन्हे जित शुध अतो नो लहैं ते ॥२५॥

९ वृ समेषक्रतिमिथ्यात जामतरेतनहिरेय सोजीयगुणवंत तथाविरकपर
धरिय दर्शननिर्मलनहि मोहकोपक्रलिलषाव ओर दर्शनकष्ट कहतके
१२६ संबनआवे परलामषटबहुविधकरत नवकुनिर्मलहूयनहि नेया
त्रिकालमुनिराजतिन्ह जितरहेनिजआतुमांहि २५
अंतरायकर्मकेउदेसुजोअलाभहोयताके नहदोयकहि
निश्चविवहारहि निहचेतासरूपमनथिरताविनाघरहे वहेअंतरायजोरहे
नाएकमारहे विकलअंतरायमलिनआहारजोगअर्जुकुश्वतेकनदस्मक
पक्षधारहि असेसीअलाभकेपरीसहजितसाधनएदेआतितनेपाव
हनिरधारहे २७ ॥अथमुनिराजस्तुत॥ माहपरीसहविसके
हेजातनकोधीर धनसाधसंसारमे वडेसुरमावीर वडेसुरमावीर नीर
नाकोजेप्रधारि कर्मरातुकोजित नहामावकेअधकार धारी तिजनिधि १२५
संचि पंचपरजिदेवत नयाकरहित्रलोम परीसहजेसामाल ॥२८॥

मऊ
हसेवनवासमास फागुणसुषकारी सुहिवारसगुरुवार सारमुनिकथा
सवारी विकथपरीसहजीति होतजेशिवपटगामी तेत्रिभुवनकेना
थ थानठजगअंतरजामी तिनिचिरननमनहिरदेहरष परविगुनको
माल नेयादकुकरसोरके वंदनकरत्रिकाल २९ ॥ हिरदेरामनउप
दसेत नएकवितएसार मुनिकेगुनजेसरदहे तेपावेतवपार ३०
मदोसरहितआहारको
अरिहंतसिधसितारवित आचारजवउझाय साधसहितवंद
नकेर मनवचसीसनमाय १ दोषछयालीसटारके मुनिजोलेहीआहार
ताकेनामकथनकर्कु जिनआगमअनुसार २ आसीविर्मसु
कअकहे दिइदषितोजनपरहेर उपजेकुटचकोचवेत ज्ञिज्ञपीसति
इपतटले ३ गोवरषोपमाटीवुव कोरवस्तोनटजोडेवे वुलोजरता
नेननिहार ताधरमुनिनहिजेतआहार ४ सिरधनातिदोसकोय सा

२ १२९ सकोंकसीकरसीलिय कांचपांणीफरसेच्चंग तापरमुनिवरफिरहिप्रैंने
ग ५ करवोबोहोदोसकदी गणणाकाटोहेजोनदी दिष्ठबुहारिदिष्टिपरे
१२७ तापरन्थ्याणपासाफिरे ६ अनादिकसुकनकोयरे मिथ्यातिनेटलिदिय
र अकोयकपानिहार तापरमुनिफिरिजाहिविचार ७ नेटेकाकस्वा
नमंकार रामकंबलपरसनपरहेर अगिनदाहजोदिष्टपरे रावतसुनि
आहारनेकरे ८ प्रतिमानेगसुनेजोकांन सास्त्रजेरईमसुनेसुंतांन
प्रतिमाहरिनयाजोनार तापरआयेफिरेहेकिरार ९ विनधायपटपै
हरहय पढगाहेश्रावकजोकोय तापरआहारनलेहिसाध अनुविदो
पलगेअपराध १० करकसवचनसुनेविकराल विनहानजोहोयदया
ल लागेचोरिलिलाटदिपेषि फिरहिसाधनुरतनरदेषि ११ विकलत्र
यआवतिकुंगार नपकेआदीआवनेपार पांनिबुंदपरेआकास तापर
मुनिफारहोजिहोविमासि १२ षाजसहितरागिनरहेषि पांवबहोसपी
डतमुनिपषि जाकुदिष्टपरेजुकरी तामुनिअसनलेनकरहि १३ मा
Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
१२७

सादिकमलदिष्टेपरे कंदमुलमस्तकपरहेरे फलअरुबिजहोहिदिति
हिगार जोमुनिलेहिनएकोकार १४ विनाबिजअगजोफार तानिरषसा
नहिजेहिआहार अमहोषबहुपालीसदान तजहितादिसंयमपरवान
१५ उतमकुलश्रावककोजानि हारेपषनशुद्दबानि बिनेवंतप्रासुककक
रनीर बोलतिइस्वामिजगवीर १६ तापरदिष्टिविजोकहिसाध ईहानके
जोअपराध नववीहामंदिरमांअनुसरे प्रासुकतमिनिरोषिपगधरे
१७ श्रावकजोप्रासुकआहार कोतोदोषबहुपालिसटारि निजहितपोष
नेकोपरीवार तामहितेकछुनिनलिकार १८ ऊकरजोरिमुनिस्वरल
य श्रावकनिलकिरसोहिदेय फुनिकरिफेरिनीरकोधरे प्रासुकजल
लिहंकरसकरे १९ लेयआहारनिरसिहिठोर जिनकलिपउतमअवार
मार थिवरकलिपकीअेसीसाल दोउमुनिवरटिनदयाल २ दोउवन
वासीनिग्रंथ दोउचलेजिनेस्वरपंथ दोउतपजपकरियाकरे दोउअनु

१० तोहिरदेधरे २२ जिनकल्पिएकाकिरहे थिवरकलपीसीषसापागहे श्री
गाईसमुत्रगुनसार तेतसाधपाउलिरधार २३ द्रवसश्रुतसमगुण
१२८ गण होतरहेपरमपरधांन पुरवकोडवरषवसुघाटि ईतकेइवरते
ईहीवाति रहू केवलज्ञानहोतनुपज्जाय पंचमगतिमेपहुंचेथाय सुष
अनंतविलसेसिद्धीसार तातिकहेजगतनिहारसार २४ संवतसत्रहसेप
चास जेष्टसुदिपंचमीपरकास तेयावंदतमनहुलास जेजेमुक्तिपंथ
सुषवास २५ प्रगटदेव
परमातमा चिदानंदभगवान वंदतहोतिनकेचरण नायसीसधरि
ध्यान १ धनिरजिनधर्म जासुमांहिदयाजेते
विध धनिरजिनधर्म जासुमांहिलवदिसापुविधि धनिरजिनधर्म पंथ १२८
शिवकोदरसाव धनिरजिनधर्म जिहंकेवलपदपावे धनिजिनधर्म
पहुंसुषअनंतजिहंपाईये तेयात्रिकालनिजघटविषे सुद्रिष्टधरिभा

इये २ जिनधर्मकामर्म
दिष्टसमकातिसुहु जेनधर्मकामर्म मुढकेसबुझ जेनधर्म जीवशिवगा
मीपावे जेन नाथत्रिभुवनकोगावे जेनधर्मजगमांहिश्रगट दयादृष्टी
दिपषीये तेयाविवक्षतविकजन जेनधर्मनिजसीषीये ३
जेनधर्मजेवंत संतसबकोसहकारि अेसजाकोनहिकबहुं
जेनधर्मजेवंत वातिघातिश्रवहु जेनधर्मजेवंत गुंतसबकोसहका
री जीनधर्म तंतसावकेअधकारी जेनधर्मजेवंतजग प्रगटपरमपद
पषीये तेयात्रिकालजिनधर्मते सुषअनंततसलेषीये ४ कल
पत्रजिनधर्मईससबपुरेमनकी चिंतामणीजिनधर्म चिंतासबटारेम
नकी पारससोजिनधर्म करेलोहादिककंचन जिनधर्मपरमपदउत्तंघ
सुषअनंतजिहंपाईये तेयात्रिकालजिनधर्मते मुक्तिनाथतायगाइये
५ उदितसुतजपसाप होतदीनरुजयकारी तमअगणा
नविनास नासनिजपरउपगारी सबकोप्रीतलकरय उपकोधादिकटा

११२ रय श्रीमस्त्रमीवरपंत श्रीतिरमश्रतिविस्तार नेयाश्वकोरश्रोबुजनवि
क सबप्राणीसुषकरय सोजिनधर्मजगवंदमम सवतदुषसंकटहरय
६ ॥जिनधर्मविनुजीव॥ जीनधर्मविनुजीव जातहोऽ नां
१२५ तरी जीनधर्मविनुजीव रीतकालकरयतरी जिनधर्मविनुजीव ग्यानवी
रीत्रककुनाहि जीनधर्मवीनुजीव प्रकीतिपरजादिनामाहि जीनधर्मविनु
जीव नाहिदयानेतमुजैनतीम नेपालिहारीनजयरविषे जिनधर्मसु
मोषमग ७ छप्पय॥ जीनधर्मविनुजीव नाहिशिवपंथनांसुजे जीनधर्मवि
नुजीव अपापरकोनाहिबुझै जिनधर्मकेवलपदकिलकुनाहि आजस
मालविरकालहू चिदानंदचेतनाकहा ८ ॥जिनधर्मनिरूपण॥ जिनधर्मको
जीव अपापरकोसबजानै जीनधर्मकोजीव बंधअरुमोक्षतत्ववानै जीन
हीपनिहचेवेरागी जीनधर्मकोजीव सतवादीपरत्यागी जीनधर्मकोज १२५
गतजन अजरअमरपदविजहै नेयाअनंतसुषनेगवे दुषआचारजन
हवियकहै ९ ॥जिनधर्मकोहोतदेशासनानरा॥ पापनकेकोटजेतेदुर

तेरघरमाहिकुतेगिरकोजनकेसबविनिधहरतहै जोगजगिमिथ्यासनानल
लिकेसकनावनितुत्तिनकुकेपटलप्रनालजोफटतहै अपनीसुदीष्टहोत
प्रकटप्रकाशज्ञानतितिहलोकमेउद्योतसमसतगतहै ऐसेजिनधर्मके
प्रभावतेप्रकाशहोत अनंतसंसारतेयाकोहेकुटरतहै ९ ॥छप्पय॥ जोप्र
रोहंतसोजीव जीवसबसीधनलीजे आचारजफुनिजीव जीववेतन
पदराजेसोतेरघटनिकटदर्षनिजशुधविराजै साधपुरुषसबजीजीव नान
नीहेचपदराजे सबजीवद्रव्यसबएकले केवलग्यानसरूपमय तसु
ध्यानकरतऊनध्यजनजोपावेपदविश्रषय ९ स०३३॥ जोजनदेवको
सेवकरेजगमाजिनदेवसुआपनिहारे जोसिवलोकवसेपरमातमा
तासमआतमशुद्धविराजे आपुमेआपलषेआपनोपदपापरूपुनस्त
ऊनिरवारैसोजीनदेवकोसेवकरजीवजोईहलोतकियाकुरीतारे ४
॥स०३१॥ जीवद्रव्यसअनंतगुनविद्यमानएकएकगुनमअनंतशक्तिहै
षीये ग्यानकोनिहारीयेतोनपायकोनहिलोकअलोकसबपालिसविशे

१२० षीये दर्शनको और जु विलोकीये तो वहि जो रवि कुदेव तिन तिन विधि
मो न पषीये धारी न सुथिर ताथे नंतका जथी रूप ऐसे दर्शनतगुन जेने
यासे वजु लेषिये २२ ॥ निश्चै सम्यक्त लक्षन व्यवहार सम्यक्त लक्षन ॥ छप्पय
१२१ जी कुदेव जिनवर तत्व जे तत्व ताके सब जाने दोष अठारह रहित देवता कौ परष
नै संयम सहित सुसाधु रूप निर्ग्रंथ वैरागी मत विरोध लस ग्रंथ नादि मानै
परस्योग केवलज्ञानी तिधर्मधर गुनथानक वुझे मरम ये व्यवहार विवहा
रयह ॥ सम्यक्त लक्षन ज्ञान धर्म ॥ ... ॥ सं० २३ ॥ जाकै निह
चै मिथ्यात्व गुन सम्यक दर्शन ता नाद अपार ताके हृदै गई विकलता
प्रगट रही करनी विवहार जिहं विवहार होत है निश्चै है यह जैन प्रकार
जिहं विवहार प्रगट नहि दीसे तिहां न निश्चै गुन विवहार २४ सं० १२२ औ
पिंड षो रूप जिहं दोरन हि जोगे तिहं सुते जिहं कानन तिहा तु हि सुने वात है १२३
जिह्वा रस्वाद ष्षे ताकौ तो विचार करे ताकै वृत्ते वास तिहं तुहि विरमात है
फरसकौ जु आठ ज्ञान तिहं कौ न त्रात जो हां तेहां तेरे नाम प्रगट विष्या तहै पा

१

हिरदै देव जिनेस रूप देवता कौ करै सेव मन दोरी करे होजा तहै २३॥ सं० १२४
जा सूं कहे पर ता मेड रते कोहिक सबनि विराजे दें सविषय रस जागो है तिर
वे कोइ रअ रूट रखा गपा तहु को वस्त राष वे कुडर अरूड रजा गो है पट
नरवे कोइ री राग श्री कमा लाहु र लोकन कीला जडर ता गो है इरजमए
जडु कोड़ा रतु लिड़ा कनयो असो मो हा तनेन निवास तो हि इगो है ८ सं०
१२५ रागी द्वेषी दोषी देवता कौ नित करै सेव ऐसे देव देवता कौ के से पापष
पतौ रागी रागको इसं गविष कौ ते वे तु रंग सादि मे अतेग रे ने हि नकरे तप
नौ आरत और रुद्र ध्यान दोउ कौ प्रसंगवान पंसेपंवे है कल्यान दोष है र
उपनौ और मी आचारी तिविमा रागति दोतहाय जे कुधारी पाय मारतें दे औ
पतौ २७॥ छप्पय ॥ जल मज्जन रागरूम रस्त पाप संताप विनासय ऐनासो
कलुष हरैय सर्व संताप नपनासे रीत सीद अनुसरैय विविधि विद्या परगा
सय नित्त निधलदे प्रकाश मोनय वुता गुन ता सय अष्ट कर्म शत्रु सब जी
तके केवलपद महिमा वरय सो जिनधर्म जैवंत जग जासु देव अब संव

बृ॰२२ २४ ॥छप्पय॥ जैनधर्मप्रसाद तिवमीण्णामनलषंडे जैनधर्मप्रसाद चक्र
तिवरसातविहंडे जैनधर्मप्रसाद इन्द्रषट्पदहिचांने जैनधर्मप्रसाद अ
१३१ पापरकोधअगाने जैनधर्म॰ लहसरूपअनोलोकरे नेथानेतसुषभो
गेव सोजैनधर्मजोमनधरे २२ जैनधर्मप्रसाद बैरीनांतोमकावे जैनधर्म
प्रसाद अपापरप्रलकछावे जैन॰ जीवसवकर्मषपावे जैनधर्मप्रसादसे
सुषअनंतनविलसंतऊव सोजिनधर्मजेचंतनगनैपजिघरस्वगृहकुव
२३ ॥सवैया॥ सुंनमेरेमीततं नचितवेकेकछ्बेगेंतेरपीछेकसैगात
लोगअतिजोरहे छिनअपानतिपिलतअसिवालतेरें हारस्त्रंधरीतें
याकोपेजातनोरहे जागवतोजागअबकछतेपोकारतोहिगोलेननेषां
लिदषपासतेस्वोरहै फेरकेसकतनिंत्वोरकोमंगरारबांधतेसोबपवा
तआगेबोरकैकेकोरहे २३ ॥कवित्त॥ विकुगतमंतरबडे बडेतिनमे १३१
समरछी साफपदवितृतकष्ट साफनतेफुनिवडे नामतवऊायक
छावे नुवज्ञापनतेवडे पंचआचारवतावे आचारतेवडेजीन वीतरा
गतारणतरण तिनकहोधर्मजैनजगतमे नेयाततासुवंदनचरन ॥२४
॥दोहा॥ जीनधर्मसबधरममे सोतिनमुकटसमांन जोकसिवकनभजन
पावतपदनिर्वाण २५ जोंदिपकसंयोगसे बातीकरउद्योत सोंभावतप
रमातमा जीयपरमातमाहोय २६ श्रीजीनधर्मउद्योतहे तीनलोकपरसी
थ नेयातिसंवदसदासपावेनिजरोध २७ संवतसंपंचासके उतमआरवो
मास शुदपुसमस्वरसाकहि जैजीनधर्मप्रकास २८ ॥इतिजैनधर्मस्वरू
पं॥ ॥अथअनादअज्ञीसीलिख्यते॥दोहा॥ अष्टकरमअरीजीतके न
रतिरंजनदेव मनवचसीसनमायके कीजेतनकीसेव १ दूरुषअवा
रहि जगतमांहिजेवंत कोकासहीकरतानही योनांषिनगवंत २ अपने
गुणपरजायमे वरतेसवनीरधार कोकाहूनेटेनही यहअनादीवस्त
२ ३ द्रव्यएकआकारहे गुनजाकोअवकाश परतामापुरनरुसो अंता
नावरनोजास ४ दुजोपुद्गलदरबहे वर्णगंधरसपास बापाअकृतिते उडु

१७३ ति ए सब ज्ञान विलास ५ त्रिजो ई अस धर्म है चलत फिरत हाई होई फुलफल
फुलि अरु जीवको सुख सब पावे जाय ६ चौथो ई अग्र धर्म है जब थीर ते
१३२ सताय दद जीव फुल दल जो कदर लो जाय ७ पंचम काल त्रसी है व
सीना जासु सुनाय समस समेरु रतिजा ते जो कदर लो जाय ८ लोक रिजे
परजाय ८ ब्रह्म वेतन ई अहे दर्शन पांच सताव परम भोपर पोत
सो शुद्ध अशुद्ध कराव ९ हम नादि वत लंउए कूड अनको वास लोक है
दलनई आंगण कन्यकार १० सुरवंद नासदीन फेर तारा गण बकु चल
एह अनादि सुनाव है जीन एक दोय नाम ११ कीहां मांन है नीज पेरीत
वीन उपजे नाहि सब अनादि सुनाव है सब फेर अमनमांहि १२ बीव
तद जीहां बिज को उपजत साको अंड नाहि को रसवट लहै पवनात १३२
परत छु १३ को बावत है वक्षको कास चैनित जाय फल फुल नकरत है
लहै एह अनादि सुनाय १४ वनस्पती फुल फले रात वसंत के हेत को

DR BHAU DAJI

सिघव तहे ब्रह्म को ईहदीन करे उद्योत १५ वरषत है जलधर नीव उपजत
सब अनराय अपने अपने रस वेउ ईह अनादि सुनाव १६ जोपहेलि कहे
बीज है बीज कोपाकी हगार यह बात न दिसे तेव एह अनादि की हार १७
जो पहलो कहे ब्रह्मको तानो बने ए द्वाव विना बीज उपजे नहीं एहतोय
गट सुनाव १८ कहो मीनको बालको कासो पवत है वीर जनम तहितर
वातिहं महा उदधी को नीर १९ कोन सिषावे बाल को जागत मांग तथाय
चुचितपट नेरसदा एह अनादि सुनाय २० पंषी चले आकास मे कोन सी
षावनहार यह अनादि सुनाव है वरना जगत विस्तार २१ कोन माप
कवरतप वीय उपजे वीर यह अनादि सुनाव है दषागुन गोनीर २२
कहो सिंघ का बालका सुरपनो कव होत कोट गजन के पुंज को मारीन
जाव पात २३ पृथवी पानी पौन फल अग्नि अन आकाश यह अनादि के जग
तमे सर्व दर्व को वास २४ आपते रस हजर सर्व उपजत विनसत वस्त हे

७२ नादीकोजगतपद ईऌप्रकारसमस्त २४ चेतनअरुपुद्गलमले उपजेकोई
वीकार तासुविनुसमझेकहे रमेसोकिनहिंसमार २६ यहअनादीसंसारके।
१२२ ईहलोंतिष्ठित्रिआय उपजेविनसेथिररहे सोसबवस्तुजाय २७ कोकहु
करतानहो करसोनामतासआप यहजीवअरुपातमे कहेपुंनअरुपाप २
८ पुं नपापजगबीजहे याहितेविस्तार जनममरनदुषसुषसहेनैया
सबसंसार २९ पुंनपापकोनासजे ताएतीहतआवान अजरअमरपद
विलेहे सुषअनंतजितंथांन ३० यहअनादब्रतीसका वरतीवातअ
नाद नैयोआपुनिफारीये आरवातसबवात ३१ ससरेसपंचासके
अध्यनीपदलीपअ तिथतरसरविवारके कहिअनादप्रतछ ॥७२॥
अनादबत्रीसी संपूर्ण ॥ अथसमुदघात लिख्यते ॥ दोहा ॥ चरनकमल १२३
जीनदेवको वंदनहुंकरजोर जासुप्रसादनिजसंपदा लहुकर्मदूरसो
२ ॥ समुद्घातजेसातहे तिनकोकछुविस्तार कहुजिनागमसाषतें जे

जीयपरदेसविचार २ उदेकषायमबंधउके निकसतजीयपरदेस दसी
दुजेनरदहको बकुरीनकरतेअवस ३ रागादीकसंयोगते उपअपरस
नकाज निकसजातपरदेसलो आवनकीयअलाज ४ केवलज्ञांनीअ
समो लोकहदलोजाय परदेसानपुरनकरे उदेकछुनावसाय ५ मरण
समेईहजीवको समुदघातथितहोय प्रथमपरसंगातिआयहे बहुरीजा
तहोय ६ देवमनुनयानकमलो उपजेकहुसदेह प्रथमकरतजोने
वको निकसतअनुतदेह ७ देवनारकीविक्रियक नानावीररमांहि
सबथोनकपरदेसजाय नीकसीआवेजांहि ८ तेजसमुनिरायकेनि
कसतउतेप्रकार असुतअसुतकेकाजको समुदघाततिहबार ९ तेतुस
बलागीरहे सुषदुषआपुनीजाय दहदीकपरसंते परदेसानमेथाय
१० येपावातआगमहे कहतसुनतनकीनोहि जांनतभीजिनकेवल
जेलहनतजीयमांहो ११ ॥ संपूर्ण ॥ अथामृताष्टक ली ॥ दोहा ॥ चितमुर
तिचितारचित पुरनवातीतआस आम्वसेनअगजनीलो नमुजिनव

१२६ रणाम ४ अपनोसुधस्वभावदै करनोकबहुभांत लोगेफीरेपरइअसुध प-
मुदनकोरीत ५ चौपई मुरषकेहेतैथपदिषीवानी सांचकुंकोनिदनतो
१३४ नी ज्ञाकबुलषासोइममांनी मेरेरुदैएदेवदषांमो ९ रूपमांहिज्ञोक
रत्नोधरो मुरजमस्पतीतसविरा हमाकरसपुंमबहुदेय अैसोलषोसत
मुनिसोइ ७ माकहिज्ञोवांफवषाने करमनदोयप्रतिपरवाने जोमोको
तुपरंमाइहीअैसो सोमेकछुसबेतसो सांचसागजुतअलाप जुहरुवनस-
सकेथाप हिरदेसुंमसुमोमममबदी नकविवेकधरयोनहिकेवहि ५ एसे
सुमहीअजापांनी सिकलजगकीबनीनीसांनी तीनकोदषदयामनधरी
ये वादधीवादकबुनोकरीये ७ दोहा गांनवंतसुनवीनती सहितसुध्या
नमरांम थ्यातनएजेकर्मनज ताहिकरोंप्रणांम परसोनहिकोम अैसो
नोम्यातमरांमको नेयालषोनिजधांम ८ संवईआ अथसम्यकीतपरमाजि १३४
ष्पत दोहा सम्यकअदिअनंतगुन सहितसुध्यातमरांम थ्यातनएजेक
र्मतज ताहिकरोंप्रणांम १ उपसमवेदकष्याईक समकीततीनप्रकार ताहि

कीतेनदरुहै कछुएकअनुसार २ चौपई उपसमसमकीतकहियेसोई सा
तप्रकतिनदउदेहोय ६ दर्सनमोहनीतीनप्रकार अनंतानबंधकीच्यार
८ मइमीथ्यातमीस्रमीथ्यात समप्रकतिउपसमवीथ्यात षेउपसमसम
कीतकोनांम जबबरतेषउजोएएनांम २ अनंतानच्यारकषाय माह
मीथ्यातमलेषजाय छप्रकतिउपसमदेरहै तासुषेउपसमफुनिकहे ३ षे
षरजाहिप्रकतिजीहगाउ समप्रकतिउपसमदेनाउ ऐषेउपसमतिनवर
धकदो अबवेदकवरनोसरदोहि ४ जिहांच्यारप्रकतिषापरहै हेउपसमवे
दकलहै षेउपसमवेदकतिकुनाम केहुंएथमेएबकुवास ५ पंचषपहै
उपसमएक समप्रकतिवेदेगहिटेक दुजोनदएदसिरदार अबकुजोको
सुनोविचार ६ छकुप्रकतिजाकेषजाहि समममीथ्यातमेरतितांनांहि
सायकवेदकतेउनएछ कयामनहिसदहै ७ उपसमवेदकेकहियेति
९क हो उपसमवेदजेजिहो ताएकेसमकीतजुवितबलदे तासोप्रकतिमु
तसोरहै ८ जबलगप्रकतिएनहिजात सबलगाकंदोयजीवमीथ्यात

२३ तिनकेउरकोपैतेजीव सम्यकद्रष्टीकेहैसदीव ९ जलकोथीनपुरीतवहो
य तववेषोरफीरेनहिसोय षरेषेनिजगुनप्रकटलहैं सोमुनकालअने
१२५ तोरहै १० जगुनप्रगटनएतजिकर्म जेसोप्रभुयेदेष्योमर्म तैसोहोयई
नकोसरधांन तैसोरूरपमाहिजिमजान ११ सम्यकवंतजीववैरागी जो
वनसोसबईनहिकोरागी निश्चलपडरूकरेब्रततसहि अवप्रसोषांलगे
देयघटमांहि १२ मनवचकाययोगत्रीकहाले जेषेअपनीकर्मकलोले
जितनीकर्मप्रकृतिषिगई तितनीकलुतिर्मलताभई १३ प्रगटीसगति
ताहिपहिच्यांन अरुजिनवरकीआग्यामांन अहतकविराधकोए
ताकोरमतवहेतजगहोय १४ तातेंव्रतपचषांननाकरे जिनवरके
आग्यासुइरे लषवतजेनांजहैजीव तिमाहापापीकहैसदीव १५ अब
सोषांनजायतेजीहं व्रतपचषांनपालेनहितिहं सम्यकद्रष्टिपरमसु १३५
जांन धरैसुषअनुतोकोध्यांन १६ अनेसोसेआतमरसलसे आतम
रससेमिटिवेसुषवसे आतमध्यानधरैजिनदेव तातेंलयेमुकितस्वयमेव

१७ मुक्तिहोनकेवीकुलनीहार आतमध्यानधरोअरीहार तवपावोपंचम
गतिनारंभार यामेनहिकुछफेरगार १८ जोजोकर्मविलेषजाहि सोसो
सुषप्रगटैघटमांहि अनंतसुषतेजीवलहै कालअनंतसंक्रवतेरहै १९
प्रसोषांनओप्रसोषांन केस्वकचरूस्वहेगुनथांन आगमाहाध्यांनधरधी
र कर्मशत्रुजीतेबलवीर २० प्रगटकरेनिजकेवलग्यांन सुषअनंतवि
लसतिहियाल लोकालोकसबनिजलकंत तातेंसबजांनिलगवैत २१ आ
रकर्मअघातीटारि तवविपडैवेमुगतिमझार कालअनंतसक्रवतेरहै
तासुवरनसविवेदनकहै ॥ दोहा ॥ सुषअनंतकोनीमए ६ सम्यकदर्श
नग्यांन यातेंतशिवपदमंले नैयाकिहोपहिचांन २२ सतेरसेपंचासके
मागमासशिसपक्ष तिथलंवनधर्मको मगपतिलियप्रतक्ष २३ इतिसम
कीतसंपूर्णं ॥ अथवैराग्यपचीसीलिष्यते ॥ दोहा ॥ रागादीकदोषनतजे वेरा
गीजोदेव मनवचसीसनमायके कीजेतनकोसेव १ जगतमुलवेरागहै

१९२ मुगतमुलवैराग मुनहुकुकोएकदे जागमेकेसोजाग १ क्रोधमानमाया
धरतजगतमेंहितपरवान एईतेरेसत्रुदे समजोग्यातमरोम २ एईते
१३५ रेसत्रुकी जिजीतेजगमांहि सापावपंथमाद्दीको यामेंयाषोनांहि ३ जा
लछीकेकाजतु षावतदेनीजधर्म जोलछीसंगतांचले कोहेनुलतलरम
४ जाकुटंबकेहेतलं करतअनेकउपाय जेकुटंबअगेकरी तोकुंदेत
जराय॥५ पापतहिजोदहकुं जोगत्रिवधकेलाय सोतोकुंछीनएकमें दग
देयषारजाय ६ लछीसाथनअनुसरे देहचलेनहिंचेग कादिरस्जु
नकरे रूपजगतकेरंग ७ कुलेनदजाइछांतसों सीनरेतोतुमपाय वि
विसुपनकेकारने सरवसुचलेगमाय ८ जाफिरतहोजगतमें सोतोक२
योविचार चितलअबकेनेचतहो नसोतलहोअतिसार ९ एसीमतवी १३५
नमनई विषयनलागतधाय केदीनछीनकघरी १० सुषथारमहाय
११ पीतोसहासुनायको जीतोककुंसुनाय सारीसोकोजातदे विसातसो

जाय १२ मिथ्यादृष्टतकष्टअति जेषनांईष्टअनीष्ट निष्टकरतदेसिष्टको
सुधसिष्टदेपाष्ट १३ चेतनकर्मउपाधतज रागद्वेषकोसंग जोप्रगोटेपरमात
मा शिवसुषहोयप्रसंग १४ बांमनकेतोमेनहीं भ्रमिदुंफुनिनांहि वेत्रप
सुरहोनुनहीं चिदानंदघटमांहि १५ अवयहईनतनसु सामवबीनसोजा
ये तासुजेअपनोकहे नसुरषसबमांहि १६ पुदगलकोजुरुपहे उपजेविनसे
साय तुअवनासीआतमा सोकबुआरनोंहोय १७ रुपअवस्तागतोकर को
नदुषतोहिहोय बहुरीमगनसंसारमें सोनांनतहैतोअ १८ अथोसीसतर
धवरन कोनअसुचिआलार थोरदानकोवातएह नुलिजातसंसार १९ अस्थि
चरममलमातमे रतदीनकोवास देषादीषघनावते नाउनांहोतउदास
२० रागादीकपीइतरहे माहाकष्टजोहोय नवकुभुरषतीवयह धर्मतांचितेको
य २१ मरणसमेविललातहे कोउरदेवसाय जोएजतांजीवीये जारनोंक
बुवसाय २२ सुगरूवचनसंषपसुं करेनवित्तलसमजाय जोचेतेतोचेती
ये अहीजगतकेराय २३ तयाकोईहवीनती चेतनचीतहिविचार कौन

२५२ दर्शनधारीत्रेम आपोजेहोनीहार २४ एकसातपंचांसके संवत्सरसुषक।
व कापसुकलतीथीधर्मकी जैजैनीज्ञसपतवार २५ इतिधरागपत्रा॥ रु
१३७ संपूर्ण॥ अथपरमातमप्रकासीलीख्यते॥ दोहा॥ परमदेवपरमात्मा पर
मजोतजगदीस परमनाववरत्रोनके चरणमतकुनमुसीस १ एकजुवे
तनरूपहे तिनमेतिनप्रकार बहिरात्माअंतरकहे परमातमपदसा
र २ बहिरातमातासोकहे जेषनाभ्रमसरूप मानरदेपरद्रव्यमे मिथ्या
वेतअनुप ३ अंतरआतमाजीवसो समदृष्टीजीयजोय चोथेकुनिज्ञा
रूबारए गुनथानकसोंसोय ४ परमातमपदब्रमको प्रापरसुधसुना
य लोकालोकप्रवांनसब झलकेजिनमेआय ५ बहिरातमातावननजे
अंतरआत्माहोय परमातमपदभजतहे परमातमहेसोय ६ परमा
तमसोईआतमा औरनाउजोकोय परमातमकोध्यावते यहपरमातम १३७
होय ७ परमातमएहब्रह्महे परमजोतजगदीस परसोभीन्नतिहारी
ये जोअलषोईस ८ जापरमातमसिधमे सोहिआतममाहि मोहमेंड

गरहो वीतसुजेनोहि ९ मोहमेजरागादीक जावीनुकीजेनास ताज्ञान
यहपरमात्मा आपुहिलहेप्रकास आतमसोपरमातमा परमातमसोसि
द्ध विचकीदुविधामटगई प्रगटभईनीजरीध १२ मेहीसिधपरमातमा मे
हिआतमराम मेहीपातागदको चेतनमेरोनाम १३ मेअनंतसुषकोध
नी सुषमेमोहिसुहाय अचलासाआनंदमय सोहत्रिभुवनराय १४
सुधहमारोरूपहे सोभितसीद्धसमान गुनअनंतसंयुगतए विदानंदभग
वान १५ जेसोसीवषेतहो तेसोयातनमांहि निहचेद्रष्टनिहारतो फेर
रंचकउनाहि १६ कर्मनकेसंयोगते भएतिनप्रकार एकआतमद्रव्यको
कर्मनटावतहार १७ कर्मसंघातिआदके जोरनाकछुवसाय पाईकला
विवेककी रागद्वेषविनुजाय १८ कर्मनकीजडरागहे रागजेरजरजा
य प्रगटहोयपरमातमा नेयासुगमउपाय १९ काहेकुंभटकतफीरे सि
द्धहोनकेकाज रागद्वेषकोसागदे नेईयासुगमईलाज २० परमातमपद
कोधनी रंकभयोविललाय रागद्वेषकीप्रीतसो जनमअकारथपाय २१

श्री: रागद्वेषकीप्रीततुम भूलिनकरोजिनरंच परमातमपदहांककै तुमे
कीयेतिर्यांच २२ तपजपसंयमसबनतै रागद्वेषजौनाहि रागद्वेषजौ
१३८ सागेतएसबमोयेजाहि २३ रागद्वेषकोनावेते परमातमपरकाश रा
गद्वेषकैनासते परमातमपदतांव २४ जोपरमातमपदचहै तौतुंरा
गनिवार देषसंयोगीस्वामकौ आपनहियेविचार २५ लाषवातकीवा
तयह तौकुंदईबताय जोपरमातमपदचहै रागद्वेषतजिताय २६
रागद्वेषतागपाबिना परमातमपदनांहि कोटकोटतपजपकरो सबवृ
कारथजाहि २७ दोषआतमकाग्रहे रागद्वेषकोसंग जैसेपासमजीव
मे वस्त्रऔरहीरंग २८ तैसेआतमदरवकौ रागद्वेषकोपास कर्मरंग
लागतरहै कैसेलहैप्रकाश २९ इनकर्मनकौजीतवौ कठीणवातहैवी
र जरषौदविनुनहिमरै दुष्टजातवेपार ३० जैताचपतैकेकीयो एमीरखे १३८
कीनाहि ध्यानअगनप्रकाशते होमदेतसेमाहि ३१ सौदासकेगजकोन
रेतजैवेसकाय तनकआगसंयोगते एकछीनमेजउडजाय ३२ देहसहित

परमातमा पदअवरजकीवात रागद्वेषकोसागदे कर्मशत्रुजरजात
३३ परमातमकेतेरहै नकलंसकउपरवांन सुषअनंतमेएवसे क
हिवेकेहथांन ३४ तेपावहपरमातमा सोईतुममेआप आपनीशक्ति
संभालके लेषवेगदेताहि ३५ रागद्वेषकेसागते ग्हैपरमातमधांन
जोसुषपावेसासतौ तेयाएसकभोन ३६ रुपतिवेरुमहेसके संवेसं
पंचीस माघशिरसवनाकहि प्रथमपरसुतिलास ३७ ।। इतिपरमातम३
संहली ।। अथनाटकरुपलिष्यते ।। दोहा ।। कर्मनाटकतोलतोरकै नयजग
तजिनदेव नामनिरंजनपदलहु करुंत्रिविधेतहसेव १ कर्मनकेना
टकनटत जीवजगतकेमांहि तिनकेकछलछनकहुं जिनआगम
कीबांह २ तिनलोकनाटकरावन मोहनचावनहार नावतहैजीय
सांगधरी करीकरसपअपार ३ नावतहैजीयजगतमे नानासांगबना
य देवनारकीतिर्यचमे अरुमनुष्यगतिआय ४ सांगधरेजबदेवको
मानतहैजिनदेव उहिसांगनाचतरहै पदअमांनकीटेव ५ औरनसो

३८२ औरकोहै आपकेहृदमंदेव गटिकेस्वांगधारीको नाचतहैसबमेवदै न
एतरकेमनारको आदिदेनिततोय पढ़स्वांगनिर्वाहहै नृत्यपरोमतको
१३९ य७ तियानिगोदकेस्वांगको आदनजोनजीव नाचतहैचिरकालके न
अनंतअसरीव८ इतरनामनीगोदहै तिहांवसतहेहंस तिसबस्वांग
दिषेलके बहोरीधरोयहवेस ९ उतरकेगिरपरे तेआवेइहिगार मिथ्या
दृष्टिस्नावधरी यहस्वांगसारमार १० कबहुंपृथ्वीकायमें कबहुंअग्नि
स्वरूप कबहुपांनिपोनमे नाचतस्वांगअनूप ११ वनस्पतिकेनदव
हु नाचआगारहलार ताससनाओजीवयह धरिस्वांगअपार १२ विकल
त्रेकस्वांगमे नाचतचेतनराय उदोरूपहैपनेए वर्णकेसेजाय १३
उपजेआयुमनुषमे धरेपंचेद्रिजांग अष्टमदनमातेरहे मानोबोयेभं
ग १४ पुनजोगनपतनए पापजोगनेएरंक सुभअसुभआयुहिमांनके १३९
नाचेतफरेनिसंक १५ नारितपुंसकनरनए नानास्वांगरमाद चेतन
सोपरवेनहि नाचभिरतादि १६ ऐसेकालअनंतलौं चेतननाचि

तनोहि अजहुआपुसंसारकें सोंचबंतकितहोय १७ सोचबोमजे
जीवनए तपकुवेषसिवलोक नाचतनाचसबस्वांगके विलसततसुष
कोथोक १८ नाचतहैजगजीवके नानास्वांगरमंत देषतहेतिहांनरक
को सुषअनंतविलसंत १९ जोसुषदेषतहोतहै सोसुषनाचतनाहि
नाचरमेदुषसहे सुषनिजदेषनमाहि २० नाटिकमेसबनरकहे सारव
स्तुकछुनाहि ताहिविलोकोकोनहै नाचनहारोमाहि २१ देषताकोदेषी
य जोतेताकोंताहि जातोकुंसिवचाहिये तोताकोपहिचांनि २२ धारा
होतपंरमातमा षांतदिष्टकोदेत जोकालोकत्रवांनसब लिनईकमे
जावितेत २३ नैयानाटिकमेंमें नाचतसबसंसार नाटकतजिसा
स्त्रये तपकुवेरवधार २४।।नाटकरपसंपूर्ण।। निमित्तउपादानको सं
वादलिख्यतेदोहा।। पायप्रणमीजिनदेवको एकउकतउपजाय उपा
दांनअरुनिमित्तको कहुसंवादवनाय पूछतहैकोउतीह उपादान

३२ वृ॰ कौहिनाउ कहौनिमीतकहियेकहा कबकेहीईहगाउ २ उपादाननिजश्रु
क्तिहै जीयकोमूलसभाव हैनीमीतपरजोगतै बन्योअनादिबनाव ३ निमि
१६० तकहैमोकुसबै जानतहैजगलोय तेरोनाउनजानहीं उपादानकोहोय ४
उपादानकहैरेनिमित तुकहाकरैगुमान मोकुजानेजीववे जोहैसम्यकवां
कहैजीवसबजगतके जोनिमितसोहोय उपादानकीवातको पूछतहैन
हिकोय ६ उपादानविनुनिमीततुं करिनसकैकोईकाज कहाभयोजगनां
लेष जानतहैजिनराज ७ देवजिनेस्वरगुरुजती अरुजिनआगमसार
ईहनीमीततेजीवसब पावतहैभवपार ८ यहनिमितयहजीवको मल्यो
अनंतीवार उपादानपलट्योनहीं तोभटक्योसंसार ९ केकेवलकेसाध
के निकटभव्यजीवहोय सोक्षायकसमकलहै ईहनिमितबलजोय १० १६०
केकेवलमुनिराजको पासरहेबहुलोय पैजाकोसुलट्योधनी क्षायकता
कोहोय ११ हिंसादिकपापनकीये जीवनरकमेजांहि जोनिमीतनहीको

तोईमकाईकहांहि १२ हिंसामेउपजोगजिहि रहेब्रह्मकेराच तेईनर्कमे
जातहै मुनिनांहिजांहिकदाचि १३ दयादानपूजाकीये जीवसुषीजगमा
होय जोनिमीतझुंठोकहो यहक्योंमानेलोई १४ दयादानपूजाभलि जग
तमांहिसुषकार जहांअनुभोकोआचरन तहांयहबंधविचार १५ यहतो
वातप्रसीधहै सोचिदेषउरमांहि नरदेहिकेनिमीतबीनु जीवक्योंमुक्तिनां
जांहि देहपींजराजीवको रोकेशिवपुरजात उपादानकीशक्तिसो मुक्तिहो
तरेभ्रात १७ उपादानसबजीवपे रोकनहारोकोन जातेक्योंनहिमुक्तिमे
२ विनुनिमीतकेहोन १८ उपादानअनादिको उलटरह्योजगमांहि सुलटतही
सुधेचले सिद्धलोककोजांहि १९ कहुअनादिविनुनिमीतही उलटरह्यो
उपजोग असीवातनसंभवे उपादानतुमजोग २० उपादानकहेनिमित
सुनि हमपेकहिनजाय असेहिजिनकेवली देषत्रीभुवनराय २१ जो
देष्योभगवानने सोईसाचोआप हमतुमसंगअनादिको बलिकहोगेजांहि २२
उपादानकहेवलि जाकोनासनहोय जोउपजतविनसतरहे वलिकहा

२३ः वैसोई २३ उपादान तुम जोर है तो क्यों लेत आहार पर निमीत्त के जोग सौं जी
वत सब संसार २४ जो आहार के जोग सौं जीवत है जग मांही तो वासी संसार
को मरतो कोउ नांहि २५ सूर सोम मनि अग्नि के निमित लखै ए नैन अंधका
१४२ र में कित गयो उपादान दृग दैन २६ सूर सोम मनि अग्नि को करैं अनेक प्रका
स नैन शक्ति विनु ना लखै अंधकार सम भास २७ कहै निमीत वे जीव को
मो बिनु जग के मांहि सबै हमारे वस परे हम बिनु मुक्ति न जांहि २८ उपा
दान कहै रे निमित ऐसे बोल न बोल तो कुं तजि निज भजत है तेई करै क
लोल २९ कहै निमित हमको तजि ते कैसे शिव जात पंच महाव्रत प्रगट
है और क्रिया विख्यात ३० पंच महाव्रत जोग त्रै और सकल व्योहार पर
को निमित खपाय के तब पहुंचे भव पार ३१ कहै निमित जग में बड्यो मोतें ब
ड़ो न कोय तीन लोक के नाथ सब मो प्रसाद तें होय ३२ उपादान कहै तु १४२
कहा चहुंगति ले जाय तो प्रसाद तें जीव सब दुखी होय रे भाय ३३ कहै
निमित जो दुख सहै सो तुम हमहि लगाय सुखी कौन तें होत है ताको देहु ब

ताय ३४ जा सुख को तूं सुख कहै सो सुख तो सुख नांहि ए सुख दुख को मूल है
सुख अविनासी मांहि ३५ अविनासी घट घट बसै सुख क्यों विलसत नांहि सु
भ निमित के जोग विनु परे परे बिललांहि ३६ सुभ निमित इह जीव को
मिल्यो कई भौ सार पै एक सम्यक दर्शन बिनु भटकत फिर्यो गंवार ३७ सा
म्यक दर्शन भए कहा त्वरित मुकत में जाय आगे ध्यान निमित है ते शिव
को पहुंचाय ३८ छोड़ि ध्यान की धारणा मोड़ि जोग की रीति तोड़ि कर्म के जा
ल को जोड़ि लई शिव प्रीत ३९ तब निमित हार्यो तहां अब नहि जोर बसाय
उपादान शिव लोक में पहुंच्यो कर्म खपाय ४० उपादान जीत्यो तहां निज ब
ल कर परकास सुख अनंत ध्रुव भोगवै अंत न बरन्यो तास ४१ उपादान अ
रु निमित ए सब जीवन पै वीर जो निज शक्ति संभारिये सो पहुंचे भव ती
र ४२ भैया महिमा ब्रह्म की कैसे बरनी जाय वचन अगोचर वस्तु है कहि
वो वचन बताय ४३ उपादान अरु निमित्त को सरस बन्यो संवाद समदृष्टि
को सुगम है मूरख को बकवाद ४४ जो जानै गुन ब्रह्म के सो जानै यह भेद सा

उपाध्यायतेजो अमानो स्वध्याय॥

३४ व्रू॥ षजिनागमसोमले सोमसीकोजेषट ४५ नगरआगरेअग्र जेतीजनको
वास तिथिथोनकस्वनाकद सेयासुमतीप्रकाश ४६ नृपविक्रमादित
१५२ को सत्रसंपूर्वास फागुनपक्षसेपदतमे दश्योदशापरकाश ४७

विसआरजगदिस्पको वंदोसीसनमाय करुतासजयमालका तोमक
थनगुनगाय १ जयजयरिषभजिनंदरदेव जयत्रिभुवनपतिकरसेव
व जयअजितअनंतजोर जयजयजितकर्मदरेकतोर २ जयजयसं
भवजिनवरस्वरूप त्रिभुवनायकगुनअनुप जयअभिनंदननाविंका
२ जयकर्मकीयेनिवार ३ जयजयश्रीसुमतिप्रकाश जयसर्वक
र्मनिर्नास जयपदमप्रभुपदमजेम जयरागादिकअतिततेम ४ ज
यसुपासदेवसुपासपास गुनशुनिकरनिवास जयजयचंद्रप्रभुचंद्रका १५२
ति जयतिर्कुपुरजनदरनज्योति जयपुहुपदंतमहंतदेव जयबटद
र्वतिकदतितेव जयजितशीतलसीतमुल जयमनमथमदगालत

न जयजयश्रीजिनश्रेयांसनाथ जयपरमेस्वरहोश्रेयनाथ जयश्री
जिनवासपुज्य जयपूजनकेपूज्यपूज्य ७ जयविमलप्रभुमहंतदेव ज
यसुषदायकहोअनंतनाथ जयशिवरमनीजुहननाथ ८ जय
श्रीधर्मजिनंदधन जयनिर्मलकर्नमन जयश्रीजिनशांतिस्वरदेव
जयचक्रितिर्थंकरेव ९ जयश्रीकुंथुकृपानिधान मिथ्यातदनेतान
जयअरिजीतनअरीनाथ जयभविजीवनमुक्तिनाथ १० जयमल्लि
नाथमाहाअनीत जयमोहनरिंदजान जयमुनिसुव्रतनमसुग्यां
न जयतिकुंतवतदिसतान ११ जयनमिनाथनिवासमुष जय
तिकुनवृननिष्करतरुप जयनेमीकुमारस्वंद जयअपानतमके
निकंद जयश्रीपासप्रसीधनाथ जयभविदायकमुक्तिसाथ जय
श्रीजिनवर्धमान जयअनंतसुषकेनिधान जयअमितनयेजदेव
जयअनागतदेवतदेव १२ जयजानदेजेवीद्यमान जयसिनवोड
षरीसुभान जयजिनप्रतिमाजिनस्वरूप जयश्रीअनंतचतुष्टयन

जयरज
प्रभुरवर
करदेजोव॥
जयर॥

DR BHAU DAJI MEMORIAL

२५१२ ५ २५ ॥ जयसनमतश्रीमहावीरनाथ जयश्रीनेमिनाथसुजाय ॥ ॥ निज
रूपनिहारेआपुविचारे फेरनाश्रवकरतेहकहे तेयाएमवंदेंत्रिकरनं पि x
१८७ देसुषआनंदतनिजमांहिलहे ॥ २६ ॥ रागनावबुधजनहूं मिथ्या
नअंतरदोष संततवांछकूर्मकी हापकहांमामोष २७ ॥ इति श्री चौवि
सतिर्थंकरजयमालसंपूर्ण ॥ ॥
प्रथमप्रणमीजीनदेवकों बहुरप्रणमीजिनराय साधसकलकेचरण
कुं प्रणमीसीसनमाय १ नमोजिनेस्वरदेवतकुं जासजीवसुषकार जा
प्रसादगुनरयणरत्नपुले जहांयेबुधिअपार २ एकदीनउद्यानमें बैठेश्री
मुनीराय धर्मदेसनादेतहे नवजीवकेकाज ३ सम्यकदृष्टिश्रावककेती
हे श्रीरमलेबहुलोक वीद्याधरक्रीडाकरत आयेगयेबहुथोक ४ च
लीवातवाखानसे पंचेंईद्रीदुष सोसेएहुषेदेतहे जोजोकीजेपुष १८०
५ वियाधरबोलेतिहां करीईद्रनकोपष स्वामीहमकुंदुषकहे देषो
वातप्रतक्ष ६ हमहांहमबजगलबे ईद्रीयतनईहनाम केईडा दिक

आदहे पंचकहेजिहांनाम ७ हमतेजपतपहोतहे हमतेंक्रीयाअ
नेक हमहिंतेसंपमपले हमविनुहोयनएक ८ रागीद्वेषीहोयजीव
होसहमहोकमंदहु मावहमारेकीजीये ईहविरतिसुनलिह ९ ह
मतीर्थंकरदेवमें पंचेंहांपरतछ कहोमुगतिकोजातहे निजभावनक
रीस्वछ १० नाककानतेनमंहे रसनाफरसविख्यात हमकादुरोकोत
हि मुगतिलोककुंजात ११ स्वामीकहेतुमपष्वहे तुममेंकुंणसीरहा
चरचा x र तिनसोंसरसाकीजीये अहोअर्थनीरधार १२ नाककहेंउतुंमेंवडा
मेमुंवडोनकोय तीनलोकरूपाकरे नाककमीजनषेय १३ नाककहे
तेंमबरसो नाकगोयसबजाय नाकबरोबरजगतमें औरनवडोक
हाय १४ प्रथमवदनपरदेषीये नाकतवकसआकार सुंदरमरहासोहे
मणि मोहेलेकेअपार १५ सीसनमावतजगदीसकों प्रथमनमतहे
नाक तालिसिलकविराजतो ससारपजगवाक १६
नाककहेजगहुंवडो मुकुवातसुणोसबकोई नाककहेंपतितो

३८ पृ० कमे नाकगणपतिषायेरे ना१ नाकराषणके कारणे रामचंद्रयुधकी
धीरे निला आणीवलकरी वलतो संयमलीधोरे ना२ नाकराषणके
१४४ कारण बाहुबलबलवंतारे दुस्यातजोइच्याग्रही पणानांनमो चक्रेसरे
ना३ नाकराषणसीताकीयो अगनीकुंडमांहीवतीरे सुंघासणदेवेंरा
आ तिनपरजई वेवीरे ना४ लागनतरमा हेमुनी नाकराषणव्रतली
धीरे इंद्रतमाचरणेतिहां मांनसकलतजिरीधोरे ना० सागरकुवीसु
रथली वलथी दत्तालीधिरे नाकतणीजआकरी फेरनवमनसा कीधीरे
ना७ अतयकुमारप्रणीकतणी बेटाआपाकारीरे तातितुकारादर
या ततक्षण दक्षाली नीरे ना८ नामकडुकेतातणा जीवतराजगमां
हीरे नाकतणपरसादथी निवसंपतविलसाहिरे ना९ सुषविलसेसं
सारमां तिमुजमवपरसादरे नानावक्षसुगंधला नाककेअस्वादरे १४५
ना१० तिर्थकरत्रिभुवनधणी तिहतणा नीवासोरे परमसुगंधमाहिले
सो तिहसुषनाकनीवासरे ना११ ओरग्नेकसुगंधके तसवनाके जीणो

१ आनंदमेंसुषलोगवे नेयाएमवषाणीरे ना०॥दोहा॥कांनकहेरेनाक
सुंन मुंकलाकरगुमांन जोवाकरआगेचले तुंतहिमुफसमांन १२ नाक
सुरपाणीफरे वेहसंजषभआपार गुंगनकरीपुरारसो लाजेनहीगमार
१३ तेरीलीकसुंनजको करेनअतमकाज मोटेनोहाडुरगंधमें तायनआ
वेलाज १४ व्रपतेतरटतारातारष ओरजीवजगमांहो जातलाततोकुहै
दीये तोअलजालाहो १५ कांनकहेजीनवेंनकुं सुंनोसदासीतलाय जोग
वादईहजीवके सम्यकदरसनिथाय १६ कांननकुंइलफजकता मणिमोता
फलहार फिगमरारकेरहे देषसवसंसार १७ सातोसुरकोगायवो अदन
तसुषकोसाद इनकांननकरीपरषवो भिंगेमिंगेनाद १८ कांननसुंणी
श्रावकतये कांननसुंणीमुनिराज कांननसुंणीगुंनहुआके कांनन घघ
वेकोसीरताज १९ कांननसुनिध्यानधाइय
हो विनमुरतिविततपार बाहरवेनकेगुनसुंतहो जोनसकलविचा
र १९ संघचतुर्विधसवतरहो कांननसुंणीजीजवर निजआतमसुषरे

२० तुम्हे वेहो पावैशिवपद अैन कां॰ २१ सांगवांनीसुणीहो कांननकेपरसा
द गणधरतोगरुवा भयाहो दर्वसुरतिसब याद कां॰ २२ कांननसुणीनरते
१४५ स्वरुहो प्रभुकोरूपसोग्यान कांयामेहोठ्ठवद दर्ससुंहो पायापदनीरवांण
कां॰ २३ विकटवंनथनिसुनीहो निकस्यौतजिग्रवास दृष्यांहि करिया
करियाकहियो पायांशिवगतिवास २४ कां॰ साधअनाथीसांसुणीहो
श्रेणीकजीवविचार भाईकसमकीतजघोहो पावैगांतवदधिपार २
५ कां॰ नेमनाथवांणीसुणीहो जिनेमंसंयमभार तेहारिकाकेदादसोहो
तवरहो जीवअपार २६ कां॰ पार्श्वनाथवांनिसुनिहो मालमैं नवका
र धरणेंद्रपदमावतीहो नरदेंअइहितदीवार २७ कां॰ कांननसुनितजि
वतरागयेहो नृपतिनतजिब्रकुरा कांजमवारीआपतोहो केवलग्यान
नुपाय २८ कां॰ जिनवांनिकानन सुनहो जीवतरजगमांहि नाउकहत भो १४७
नीनीयेहो नेयाजशिवपुरीजांहि २९ कां॰ श्रोपककेरत्रकांनिसुनि
श्रीसोकरी अहंकार भवनकरीमुघोरदे जोजनदिलमार ॥३०॥ सजिबुरि

सुणतारदे नोडेतरलसनेह तोमांदुष्टनकुमरे थासोईएणहीदेह ३१ दु
ष्टवचनसुनलीक रे माहांकोधउपजेत तातश्रवादे नजीवबंध नरकजा
यपडंत ३२ पदमोतोकुंवधीये नरनारीनके कांन तोप्नवीजाजनतर
द बंकुरिथसिआतिमांन ३३ कांननकीवांनसुंनी सांचीकुधीदा आं
षनदेषिवातजो तामफरनकोई ३४ इनआंषिनसुद दिषियै तिर्थंकर
कोरूप सुपअनंतहोवइ २६ सोजाने चिद्रूप ३५ आंषिनउपिरक्षा
कर उपजेपुनअपार आंषिनकेपरसादसों मुषिहोतसंसार ३६ आं
षिनसेसबदेषिये मातनातसुतजात देवगुरुअरुग्रंथसब आंषिन
तेविष्यात ३७ आं
षनके परसादसे देषेलोक सबेरी आवेनीजपदयाद प्रतिमापेषतबेरी
३८ देषुंदगमांहिदिन ग्रंथअनेककहारी जेनाण्यानगबेता दर्वितजाद
जधारी ३९ समवसरनकी रिद्धदेषतदुखधेरी प्रभुदर्सनकजसीद
नाटककांणगंणरी ४० जिनमंदिरजेकार प्रतिमापर्वतनीरी देषतदर्ष

१८२ अपार मतिवहीजायपनेरी ४१ ईर्षासुमतिनिदार साधवेतनूनतेरी
तेपविसीवनारि सुषीकवफलेरी ४२ आंषनविबनिधार समकीतसुध
१८ लधारी गोतर्तीर्थकरप्रभरि रावणनामकस्योरी ४३ आरोपरतदबुध द
षतनावकरोरी लीलितजआतमशुद्ध नवजलवानतेरी ४४ पुरवज
वआहार देतदिष्टपरोरी ईलाचीविसीचार ओमकुमरजुतिरोरी ४४
वाधिनसाधविहार देतहीदिष्टधरेरी पुरवजवनिहारि सागदत्तके
रेरी ४५ सालसरकुमार अतिकदिष्टपस्योरी गदिसंयमकोतार आत
मकाजकस्योरी ४६ इम्पाजुधन्नकोज दिष्पाविराग्यधोरी पांडवतजिस
बराज निजनिधवैराग्यधोरी ४७ कहेकहोजोनाव जीवअनेकतस्यो
री जेयाशिवपुरीजाय ओषिनतेजायपनेरी ४८ जीतकदेरज्ञो
षितुम कादिगर्वकरोदि काजतकरिजोरगोपि नादिनदितजोदि ४९ १८
कायरजोऊरतीरहे धीरजननहजगार वातवातमेरायदे नादिनदिन
जादि ५० जहांतहांजागनकीरे दषिसजोनोरुप नेरदिपरसादने दुष
पविविरुप ५१ कहाकहुडिगटोषने मोपेकहिनजाय देषवीनासीव
सुको बेहरितहांतजन्याहि ५२ जिनकेओतेसवे जिवलदेसंसार
षटरसनुजुस्वादको पाजुसवपरीवार ५३ मोविनओषिनसुजसके
कोनसुनेनदिवेत नाकनसुंनेवासका मोविनकउनचेन ५४ मंत्रज
पनइहजीनसो आवतसुरनरधाय किंकरदिसवाकेर जिनहिके
सुतसाय ५५ जीनदिनेजंपतरहे जगतजीवजिननीम जसुषजगटने
सुषतहे पविवतमनोम ५६ जती
वरजीजीवबडिसंसार जंपपंचनवकार हादशांगवाणीभावेजी वोलिव
चनरसाल जे अरथकदेसुत्रनिविसेर सीषवेधर्मविशाल ज॰२ दुरज
ननेसमुजनकरेजी बालतमीवबोल अतिसीकजानओरपजी कोनओ
षिंकहितोल ज॰३ जीनहीतेसबजीतीयेजी जीनहीतेसबहारि जीव
हीतेसबजीवकोजी काजनकुपरउपगार ज॰३ जीनहीतेगणधरभए
जी नमेतपंथदेषाव आपुनशिवपरगएजी कर्मकेजकषपाय ज॰४

स्त्र॰९ जीनहीतेउवजापनएजी पावेपदपरथोन जीनहीतेसमकातलद्योजी
परदेशीपरवोन ज॰५ मथुरानगरीमहुवोजी जंबुनामकुमार कहि
१७ केकथासांदांमनीजी चतिबोधपरिवार ज॰६ रावसोविस्ने़ननिजी
बालमाहामुनिबालि अष्टापदमुगतेगयाजी दषोग्रैथनिहाल ज॰७
मिटेव्ररजकरकोसबजी पुष्टतपव्रतसब धमटजेहपरमातमाजी
विनसेरमकपन ज॰८ तिरलोकमेजी बंदजी दुरकेअपराध तो
तिक्रमणक्रियाकरेजी पटहिसफायहिसाय ज॰९ जीबहातेसबजा
इयेजी जीनहिपडियेवेद जीनहोतेजसजेपायेजी सातासुरकेनेह
ज॰१ तोअनुजीवहोसोजीयेजी उतरजीवहहिये जीवर्जुजीवषमाई
येजी जीवसमानहीकोई ज॰११ केतेजीवमुगतेगयाजी जीवहीकेप १७
रसाद तोग्रकहिलोलोजायिजी तेयावातग्रलादि जी॰१२ फरस
केरजीमन एनागजेकरंत तोलागोफुकोकेर ताकुंनोदिंजाजेत ३ क
हेवनकरकसबुरी उपजेमहाकलशसोरहिपरसादंते निरहिउम
रनेरगा १३ तेरहोस्मकाजकुं करतआस्तअनिक तोहीत्रपतकोहानहो
सोसोसबउरेक १५ तोमेतोओगुनघनो कहतनआवेपार तोपुसादसीम
को जातनलागवार १६ जुग्रंथनत्हपेट दजुगोउपदेश जीपकोजगत
फिरावनी औरकहाकेस्रा १७ जादीनथीथावरवसन तादिनतुममेको
न कहागवेषोटोकर ताकआबिमुबओन १८ जीवअनंतेसहमधेर तुम
तोसेषअसेष तीनदुतोहमविनुनहि कहा उवेलिहांऊंषि १९ ताकको
नेतनासका जोनकहागनीय सबकोउगिरनायके लागतेमेसपा
य २० जुविरसबकहे साचिकहेनाकोय विनुकायाकेतपतेप मुगतिक
होसोहोय २१ सहपरीसहवीसहे माहाकाविनमुनिराज तबतोकर्मष
पायके पावरोहेशिवराज २२
महासाधजीफरसवडोसंसार कहकेईउपगार मोरासाध॰क॰
१ रजुतकरसुधिद्रिपरि दातजेलस्वरदव तोविहिसोतापदजहेरे मिटे
भरतकोटव॰२ दानेरउमुनिराजकोर पावतपरमानंद सुरतरकोहि

Dr. BHAU DAJI

१२० सेवाकोरेर ग्रतपत्तजदिनंद मो॰२ नरनारीकोवथरेर मिलजग्रतविसीरदा (
र सुषग्रनंतसोजीयाल्होरे देषोफरसउकार ४ तपकरीकायाकसक
१४८ सेर उपजतपुंसग्रपार सुपविलसोसुरखोकंकेर ग्रथवोनोदाधिपार मो॰
५ नावजुंग्रातमनावतोर सोवेगोमोक्षमांहि कायाविनुंकरीयानहोरे
करीयाविनुसुषनांहि मो॰६ गजसकोमाजगिसोनहिरे फरसतपतनई
जोर कवलग्यानउपराजिकरीरे पऊचोमिवगतीग्रोर मो॰७ वंदकरिषषा
लवतारेर सघोपरीसहजोर गुरववेधहुटोनहोरे घटिगयेकर्मकेवार
मो॰८ सवधुदर्सनकोदीयोर राजंडउग्रहार संदपरीसहनावसुर पगडेग
पुलग्रपार मो॰७ घसनवेरासरफरसीयोरे फिरिजुगएसवतोव नर्कोहि
तजिसोगतिलहीरे देषोकुफरसउपाय मो॰८ जेतजीवमुगतेगयारे फर
सहीकेउपगार पंचमाहाव्रतविनुथरेर कोउनउतरोपार मो॰९ नाउकु १४
हेलोलीजीयेरे विसोकालग्रतंत नेयासवउपगारकरे जोनतमीनगवं
त मो॰ मनवोलोतिलीवार चोरफरससंसारमे नुमुरषमिारमो

२ कहागविजुगोकेर ॥ एकग्रंगुलपरवोन गोगाग्रोनेकनररहे कहाक
स्ग्रनिमान दषिग्रवस्थानर्ककी पंचोग्रोवृतसार तिनसेतिनतपोषी
य उपजकाईविचार नोहितुसमजेनहो ३ किनएकमेषिरजाय दषदि
षसरीरषह एतेपंगजाय तोनेमुरषकोनहे ४॥दोहा॥मनराजामन
चक्कवे मनसवकोसिरदार मनसोवडोनहुसके देषोएहसंसार ५ मत
नेसवकोजांनीये जीवजेतजगमांहि मननेकर्मषपायके मनमस्सनाको
उनाहो १६ मननेकरुणाकीजीये मननेपुंसग्रपार मननेग्रातमतत्व
का जषीयेसवेवीचार १७ मनसंयोगीस्वांमीपे ससरसोनहराय चारके
मीकेनावेसे मनहिनाच्योजाय १८ मनईउनिकोमूपदे ईडिमनकोदास
यहलोग्रातप्रसादहे कोनिजिनपरकास १९ नववोजमुनीराजजी मन
कीगवेकरंत दष्याहोताधुजमनको नुमतेनर्कपरंत २० पापीजीवकोउ
करो लग्रनमोहोनाहि नासमपापीनुकह्यो ग्रनरथलहविसाहि २१
ईद्रिसोवेवोरहे नृदोरनिसदीस किनरवीधेकर्मकोदिषरहेजगदीस २२

३-७१ बेहीतबातकहीयेकहा मनसुनिएकविचार परमातमकोंध्याईये औ
लहियेभवपार २३ मनबालामुनिराजसु परमातमकेंकोन स्वांमितादि
१४९ बताईये जोलहियेसुषतान २४ आतमकोलषजांनेन जोराजतपरमा
दि परमातममकिहीतारहै दमतोजांनतनोंहा २५ परमातमइहिवारहै
रागंदुषजितांमादि ताकोंध्यावतजीवयह परमातमहेजोहि २६ परमा
तमहेविधलेष सकलनकलपरवांन तासमतेरघटवसे हिषदीष्टधरि
ध्यान २७ ॥ कपूरेलयत्र्यालितजलोरिपहे ॥ आतमधर्मअनुपरग्रांनी जा
मबगाहचिद्रूपरग्रांनी आतमधर्मअनुपरे ईडीनकीसंगतीकोपोरे जीव
परेजगमाहीरेग्रांनी जनममरनबहूदुषसहेरे कमलमुदितरहेरेन
रेग्रां० केतकीकांटलवीधियोरे कडुपनपायेभ्वरेग्रां० आ० २ कांननकी
संगतिकीयेरे मृगमारीआवतमांहिरेग्रां० अग्निपकरसारसंकांनकेर कि १५०
तकुलुटेनांहीरेग्रां० ३ आषनरूपनिहारकेरे दिपपरतहिध्याय दमोहे
आरंपसंगकोरे पावतअपनीकायरेग्रांनी ४ आ० रसनारसमद्भमारी

योर दुरजनकरीबासबासरेग्रां० यातेजगतविगृचियोरे सहेनरकदु
षबासरेग्रां० ५ फरसइंद्रीगजवसपत्योरे बांध्योसोकललतेनरेग्रां० न२
षषासबहुदुषसहेरे किहिविधकरूंवषांनरेग्रां० ६ पांचोईद्रिदिनम
तेसेवोर जिवसहेदुषधाररग्रां० कालअनंतनाउगमफीरीयोरे कहुंयनपा
वेगाररेग्रां० ७ मनराजाकहियेवडोरे ईद्रिनकोसरदार आठपारफेरत
रहेरे उपजोकांईअविकाररेग्रां० ८ मनईद्रिसंगतिकीयेरे जीवपडेजग
जोयरेग्रां० विषयनकीइछावडोरे केसेशिवपुरहोयरेग्रां० ९ ईद्रिनतेमन
मारियोरे जोरियेआतममांहिरेग्रां० तोरांयेनानारासोरे फार्सीयेकब
सुमांहिरेग्रां० १० ईद्रिनतेहनीवारयिरे टारीयेक्रोधकषायरेग्रां० धारी
येसंपतीस्वासतीरे तारीयेत्रीभुवनरायरेग्रां० ११ गुनअनंतजोसंलसो
रे दवलदरशनआदेरे कवलग्यांनविराजतोरे चरनविमलअनादरेग्रां०
११ थिरताकालअनादिजोरे राजेजेदिपरमांहि सुषअनंतस्वांमीवहो
रे दुजोकोउनांहिरेग्रां० १२ सकतिअनंतविराजतिरे दापनजोसदिकाय

७२ ३०
समकीतगुनकरीसोरतोर वेरतलोगियसोईरसा।१३ वेटयटेकबंदु
नहीरि आविनासीआविकारिरपी। जिनरेहपरद उभैरे मोबेतननि
१५५ रधारैरपी।१४ फेववरतोमंजोलहिर नहीफवरसमांहि आवकरमस
तिनरहोरि गंधदोनकोनजाधिरपीति १५ जोनतजोगुनइआकोर उ
पजूरचितसतकोउ सोआवतासोआलभोर चिहेनहि चिहृदपाउ
रपी।१६ गुनआतेतथाव्रतलकेर कहिओकिहियधिसोमरपी। तेपाम
नवयकापेसोर कोजेसहपरनोमेरपी।।१७।।दोहा।। परउअनसोसित
जो मीकोसावरसलीन सोवतनपरमातमा दुष्षागपानष्षीन ४८
जोदुष्षागुनइओको जोनसबकोनेद सोपाघटमघ्रगटदे कालक
रतदेषद ४७ सुषआतेतकोनाथवदि घिहानदसावांन दर्सनपां
तंविराजतो देषनिजघरीध्यांन ४८ देषनहोरानलयफ घटस्पस १५६
त्रुमिष्यातमकेनासेते सुफसबकोस्वस्त ४९ जेसोसिवेतसोआहं ते
यफिरनकोय देषोसमपकेतनसु पगाटकिरोजसोई ।।१२ निकटगो

नहिगदेषेसे विकटयमेडूगहोय विकटमेटेजबरागको प्रगटविदा
नंदजोय २३ जिनवानीजमगवती दासतापजोहोय सोपावेसुषस
स्वतो परमधर्मपदहोय २४ संवतसनरएकातवे नगास्थागरामांहि नादोसु
षिसुनइजेको बालष्याजवगटोहि २५ सुरसमांहिसवसुषवसे कुरूसमां
हिकछुनोहि कुरसवासएतनीयहे पुरसबगरसमुफोहि २६ गुनलिजे।
गुनवतनर दोषनतीजोकोय जिनवानीहिरदेवसे सबकोमंगलहोय
२७ ।।इतिपचबिसीकीचोपईसंपुर्णं।।अथईस्वरनिर्णेलिष्यते।।चोपई।।लिष्य
ते।।दोहा।। परमेस्वरपरमगुरू परमजोतजगदीस परमभावउरआनि
के वंदतहोंनमीसीस १ ईस्वरसबकहि ईस्वरलषेनकोय ईस्वरतोसोई
लषे जोसमदष्टिहोई २ ब्रह्माविस्नुमहेसजे तपावेनहिपार ताईस्वरको
आरजन कोपावेनिरधार ३ ईस्वरकोमतिभ्रमहे पारनपाईजाय
कहिवेदसासतसबे नामनजोस्नाय ४ ।।कवित।। ब्रह्माओरविस्नुमहेस
तिनोपिविहरेकाहूननिहारेषजुकेसेजगदीसहे दसअवतारमांहि

कौनधोजनमलिनोलिनकूपायपरग्रहलैं ऐसैंहैं सदे. सुपरजोरहुरखासो
लोभरिषकनि एकिनकूनकंदै ऐसैं आपुविधाबीसदे. श्रावतश्रवंधेनोयहे
धावतसकलजगपावसनकोजताहि नोबकादेसोसदे ५ एकमतवा
१५२ रेकदेश्रसमतवारसबमरमतवारपरवारमसमोरदे. एकपंचतलवारे
एकएकमतवारएकरमसमतवारएकरमोरदे. जैसंमतवारतकैतस
मतवारबकेतोसोंमतवारतेकोविनासतमोरदे. शांतरसवारकदेसम
कोंसमतवाररदेसेपानपारजहै ओरसबवारदे. ६ श्रेश्रगानश्रात
मानतंजेषनरूमहातमालगोहेतोमहानमानिजातिमनस जेई प्रसिध
जोविष्यातमा बीरजेगातगातमाकेदेवपातपासमांचिदातमानसुफर
मिथ्यातमोहमातमाजगपोसुजीवघातमाकोधादिवातवात मांश्रगपात
मोदिकुदई अनंतशक्तिजातिमावयातसुधनातमानसफेषंधश्रातमा १५३
रुवंधमश्ररूजतेई ७ दंसाकेकरईयाजोपंनदेसुरलोकसर्वनिधिनर्कसोदि
कदोबुधकोनजीवजाहिगे लोकलथरा फोसंबेदतपरायपोसतिसतेपि

सावकहे ओरकोकहादिगे ऐसेदुष्टपापीजेसंसाथापरजीवनकेतेसो
सुषसंपतसोकैसंकेश्रघाहिगे एंहोगंनवंतसंततसकविचारदषीबो
वेजंबंवूसेसोश्रंबकेसंषाहिगे ८ ॥कुंडलिया॥ सुषजोतुमकोचाहोजे सोसु
षसबकोचाह. धानपांनजीवनरदे धनसनेहनिरबाहि. धनसनेहनिरवाह
दाहदुषकोहिनमोप. थावरजंगमजीव. मर्णसेथिरकोकंपे. आपंदषविच
रहियकेश्रापुसनमुष. सेयायटपरषाहि. बोलिकाहेकोनसहेसुष ९ ॥सवै
या॥ वीतरागवानीकोनजानेवासपानिमुदवानीनेक्रियाश्रनेकश्रपनिरवाह
वी. कर्मनकेबांधकोनश्रबंधकसुझेतोहिरागदेषपालिनसोंहोतजेगवा
गवी. श्रातमकेजीतकोनरीतकडुजानेरंजतंथनकेपाढतंकरेकलापवा
पवी. मोहकोनकोपोनासमकडुनाहिरंजतंथनकेपाजीयेनासमुत
नकपासकरकोजिसेनवानवी ९ हपीघोडापालकीनगाडीरथसोनको
नवकचोलचालकोनश्रवडीराजयसुदे. स्वेतपटजालकोनदेषिदुलनाल
कीनमांनकोजीपतुमानकरिलेनुदे. सेजबागतानकोनतनजेतलाल

५३ कौन दयाव्रत वाल कौन देउ दिजिय सुहि ईर्षा नि काल कौन नाहि कौन
हाल कौन वाञ्छि चूब गाल कौन बाना लाजाय सुहै ११ जैसे कोउ स्वान पस्यो
१५२ कांच के महल बीच गरजे रस्वान देखि तसम भस्योहै वैर जैसो मुनि बिंब पस्यो
एपराय वसि कुएं मैं नहारि सिंघ आप कुं दीप सौहै फटक की सीला में विजे ।
की गज जाय आरी लतलीन सन्त्रा दाकी कौन धौप कत्यो है तैसे हा अनादि कौ
अभ्यास ताव मानि है सत्रप तोस्य तावजगत मैं फस्यो है १२ ईस्वर
कैसौ है लहा अविनासी अविकार नाहि कहे सबेद प्रद जिनो जग अव
तार १३ जो ईस्वर अवतार ले मरि बहोर फुनि सोय जनम मरन जो धरे
सुहै सो ईस्वर किम होय १४ एकी नकौ या होय कि मेरे एक ही आनि ता सौ
जो ईस्वर कहे तिमुरष पछि चांनि १४ ईस्वर के सब एक से जगत मांहि जे जी
व काहु पन हि द्वेषहै सब पै सोतिम दीय १५ ईस्वर सो ईस्वर जरे ईस्व १५२
र एक कि होय फुरसरां मन्त्रा रांमकों दुष कुं किन कु जग लोय १६ मदुध्यां
न वर्तें जिहां तिहां धर्म को महोय कर्मबंध निहदसा ईस्वर कहिये सोय १७

बुमाकि परसी सेहे तौ उदन को योईस नाहि मिष्ट करता कहि रष्यान आप
तो सोय १८ जो पालक सब आतम को रूप नाम मन पाल सो मारे किंवा न के
पांन तजो सत्र काल १९ माहि देवबरदे तकी दीनो हो पद याल आपु रुपु
न ताजन फेर रावलि यो गापाल २० जत कौ जग ईस्वर कहे तिस ईस्वर नां
हि एई ईस्वर या वते सो ईस्वर घट मांहि २१ ईस्वर सो ई आतमा जानि हिए
कहे सेत कर्म रहित ईस्वर भए कर्म सहित जग जेत २२ जो गुन आतम द्रुअ
को सो गुन आतम मांहि जड के जउ में जो लिये या में ता लम नाहि २३ दर्शन
आदि अनंत गुन । जो वधरे तोहु काल वर्णादिक पुद्गल के र प्रगट द्रु कौ चा
ल २४ ससार ष्प पष्ठ लोडिके जेषम ष्या की ओर तमुरष संसार में जेह्लव को
छोर २५ जेपा ईस्वर जो लृष सो जाय ईस्वर होय यो दृष्टा सरव ग्पजी यो में
फेरन कोय २६ ॥ इति संपूर्णं ॥ अथ करता अकरता पचीसी लीष्यते ॥ दोहा
करमन को करता नहीं हरत सुध स्वभाव ता ईस्वर के चरण कों वंदौ सीस न
माय १ जो ईस्वर करता कहे तुका कहिये कौन जो कर्ते सो ता गता यह

भ्रमु॰ न्यायकाशोन २ दकुदोषतेरहतहै ईस्वरताकोनाम मनवचसीसनम।
यकेकरोनाहिधनाम ३ कर्मनिकोकर्त्ताबहजोपिंणानहोय ईस्वराणा
नसमुलहै कामकरताहैसोय ४ ग्यांनवंतग्यानेकरी केरआपानआपान
१५२ जोग्यांताकरताकहै लोरोदोषऋसमांन ५ ग्यांनिपेजइस्ताकहैकरता
ताकोहोय पंडितएहिविचारके उत्तरदीजोसोई ६ आपानिजुउतामई
केरआपाननिसंक करतानोगताजीवईह योंताषनगवान ७ ईस्वर
कोजायजानुहै ग्यांनितथाआपांन जोईहेनकरताकहै ताहेवातभ्रमां
ण ८ आपांनिकर्त्ताकिहो तोसबबनोबनाय ग्यांनीकुजइस्ताकरे यह
नोबनेबनाय ९ ग्यांनिकरताग्यांनको केरनकऊआपान आपानिजउ
ताकिर यहतोवातप्रमांन १० जोकरताजगदीसहै पुंनपापकाहोयसु
षदुषकाकोदीजीये साथकरहिबुधलोय ११ नर्कनमजीऋडारीयेपक १५३
रिरकेबांधि जोईस्वरकर्त्ताकहै तिनकुंकहागुनाह १२ ईस्वरकोआग्यावि
नाकरतनकोउकाम हिंसादीकउपदेसको कर्त्ताकहियेराम १३ कर्त्ता

आपनेकर्मको आपानिनिरधार दोसदिसजगदीसको यहमिथ्याआ।
चार १४ ईस्वरतोनिरदोषहै करताजोकानांही ईस्वरकोकर्त्ताकहै तमुर
षजगमांहि १५ ईस्वरनिर्मलमुक्तवत तीनलोकआस सुषसातांच्येत
नेम निश्चयणानविजाग्या १६ जाकेगुनतामवसे नहिओरमेहोय सुदि
ष्टिनिरताहोषनलागेकोय १७ वीतरागवांनीवामल दोषरहितनिकु
काल ताहिलेषनहिमुजजुन जुवगरूकेबाल १८ गुरुओयमिथ्याग्रंथको
ये लेषनबाटकेवाट विनवहुतरकसफिरे लेषनहीकपाट १९ जो
सोमिथ्यादिष्टहै तोलोकर्त्ताहोय सोउनावितकर्मको दर्वितकरनको
य २० दर्वकर्मपुद्गलमई करतापुद्गलतास ग्यांनदिष्टकोहेतदे सुद्धा
सवपरगास २१ जोलोजीवनजानमई वहेकार्यकेविर तोलोरकाकोन
ही केरसालसथीर २२ जासतेसबजीवको मानतआपसमांन रंगा
योतंकरतहे सबमेहरानमांन २३ आपनेरसदतको कर्त्ताहेसबदर्वह
दधर्मकोमुलहे समजतिकुजीवसर्व २४ सेयावातआपारहै कहेकरो

१५३ लोकोय थोरही समझाइये ग्यानवंत जोलिय २५ सेवैसंपका नेव पो
समुकलतिथिवार जोईसुरके गुनलषे सो पावे भवपार २६ ॥ इति संपूर्ण
१५४ अथ द्वादशपचीसी लीषते ॥ दोहा ॥ केवलग्यानस्वरूपमे बसे चिदानंद दे
व मनवचसीसनमायके कोजे तनकीसेव १ एकसुधपरमातमा उवि
धतासपद जांनि त्रिविधनमतहे जोरके चिकुंगतिपनमांनि २ सरसती
बरसतीमिथ्याजीम जिनमुषग्रमतवांनि पीवतहे नम जीवके तिसुषदा
दपरवांन ३ जीयदयासाजगमे बुरी देसाफलदुषदेरत मकरीसाषीसो
ती ताछिवरीनछिलेत ४ जीयदयाकेरतनह धेरैतेसुदसुसाय तो
देषमुनिराजको सेवतसुरनरपाय ५ जुवतेलोनछिजगतमें दुषकंकि
नदुमजाय जुवातेतीवांजती ताछिनरहेनकोय ६ मांसवडोसंसार
में मांनतसबपरवांन मांसभक्षाकेहोतभकों सुनतसवैधरीकान ७ वि १५५
नदिनोंजैसेतदे ताछिनेगंकरूंपाय वारहितसरीदिजोय दैषोजगसंताप ८
जेतनदीपरइवकी हसतकलपरसाग ताउछितगवांनको रहतस्वरत

उगसताता ९ जिलहतपालनदा नोलिपरतीअनुप वेषकुरावनआदिकु
फलनरकके कूप १० मनवचकायापोगसुं जिलवतहराय सबसुरवी
नेरषिये सुरगनदेतसहाय ११ परिगहरावनकेतले परिगहदुषको मुल नां
माषीमध्मकोजोरती दुषकुदुषकोसुल १२ जिनकोपरागहस्वतपी मा
नतामातनिमचाल तेदिमुनिवरकेईउजो सवतस्वरणत्रिकाल १३ मनव
चकायाजोगसौ सबैसाग मुनिराज करुसाभीजाअनुत्रनी तिर्नदिसार
ताज १४ रागनकोजिजगतमे रागकोएदुषदेय दुषकुकोकालपंजेरग
हिजारतदिसोई १५ दषवो इसापकरके आहिरनतुपरडारि आगहिषए
सोपीटिये जोहेसंघनिवार १६ स्नेहनकोजिअनसों स्नेहकोएदुषदाय सी
हसंगतिलपीलीये उगिमित्रसांफीजोई १७ परसंगतकोजिनही कुर्दिमिलि
दुषपप पांनीकेसेपीटीये वस्त्रमेलदुषदेय १८ पांनतेरमुसकोको मसक
युजहेजाय दुषकुसंगतदुष्टकी पोनदिहदजराय १९ चेतनवेटतनसकों
करमसोंलेपटायि वोजतदववगुरुमोरके सीषजलीयफुरजादि २० कुगुरु

[illegible] क्रमतकेसारथी मुदनांकोलोजाहि दसोकेउपदेसपाइ धर्मकहासिहमां
हि २१ रहननकेहितदृबसो सबकेसबमोंप्रीत अलिजोंबुजोंपषीयों उ
दरकरदेममीत २२ परस्तावनकोविरखकेके निजतावनकोध्यान जोईहे
१५५ मारगअनुसरे सोपावेनिर्वाण २३ बहोतवातकहियेकहा थोरहीदीहा
त जोपावेनीजआतमा सोपावेनिजअंस २४ सेयानिजपीपविना रमत
अनंतकीन नईनरसंसारमें त्रिहुआपोलषलीन २५ एकसातपणहोयके
अस्वसीजुहीपरकार षहडहसपचीसका कहिनिमोतिदास २६ ॥इतिसं
पूर्ण॥ अथमनप्रबोधलिख्यते॥ ह्ला॥ दर्सनगांनचारित्रमें सुषअनंतप्रतिमास
बंदतकुसिहदेवको मनअरपरमनुलास १ मनसुंवंदनकीजीये मनसोंध
रीयेध्यान मनसोंआतमतत्वको करेकोननिरधार २ मनसोंषोटीजीवको
अरहुसरोकोन षोजगहेत्रिविनाथको जहेसुषकोतोरा ३ जोमनसुसेअ १५५
सवसा x पनो तासुंकेवबाच जोजलटेसंसारसो सोमनसुंऊंकावय ४ सस अस सअनु
सेअव मनकोआरअकार रावजुकेसंसारमें होपहुचपार ५ जोमनसो ५०

गोअतोको तासुधहोवअपार जोनरकनतमनतावसु तोडुषपावेनकाल
१ ७ मनसुंबजनांडुसरे देषाईहसंसार तीनलोकमेंफीरसदा जाहि
लोमवार ८ मनरासनकोदासहे मनतपतकोरुप मनअवतनयो
गहे मनकोकथाअनुप ९ मनराजाकोसेजसव ईद्रितसउमराव रातदी
नादोरतफोरे करेअनेकअमाव १० ईज्ञानकेउमराववजिहि विषेदसविर
तंत नेयातिहमनतुपको कोजितिविनसेत ११ मनसेवहमनचर्फअति
मनवऊकेपास मनजितविनआतमा मुगतिकहोकोहांजास १२ मनसो
जोधाजगतमें औरहुसरोनांही ताहिपछोरोसुनट संुजोतिजेहेजगमांहि
१३ मनईद्रिनकोनृपहे ताहिकरोजोजोर सोसुषपावमोक्षको यामेंक
छुनफेर १४ जबमननोंधोध्यानमें ईद्रिगणनिरास तबहिआतमब्रम
को किनोनिजपरगास १५ मनसोंमुषजगतमें दुजोकोनकहाय सुष
समुदरकोछांडिके विषकेवनमेंजाय १६ विषनबरते दुषवडे जानेसव
संसार तवडुमनसमझेनहीं विषयनसोसिप्पार १७ बहुषंडके नृपस

३५४ व । जिनकी पनिज दास जो मनाए केजी तिहै, सहि नकें दुष वास ॥ १८ ॥ ब्रां
ह्मिनकी फेंपरी और जंगा टीसार सुष अनंत सपत है, मन जित मुनिर
१५८ ज ॥ १९ ॥ का रमताई सत्रपद ग । ब्रम्हि सत्त्व विमांन मन जीते विनु ईदु ना
सो हम नै दुष ओंनि ॥ २० ॥ डांडि यर वन में चले मन जीतन कों काज तो है
श्री मुनिराज कुं विख सत क्षिव पूरराज ॥ २१ ॥ श्री दुजीतन के जोर है, मन जी
तन कों धांम देष त्रिषंजी नपती पर्वत नके मे धांम ॥ २२ ॥ मन जीति जे जगत में
ते सुष लै है अनंत ए हतो वात प्रगाथ है, देष्यो भी नगवंत ॥ २३ ॥ दषि वेऊ आ
रंजनसुं चक्रवर्त्ति जग मांहि, फेर तलिम नायक कों चलि मुक्ति मां तो हि ॥ २४ ॥
बाह्ज परिग्रह रे च नहि, मन में थे रविकार तां दुलम क्षनि हरीये पंडन के
जीरवार ॥ २५ ॥ भाव नहीं ते बंध है, भाव नही ते मुक्त जो जांनें गति ना वकर
जो जांनें यह मुक्ति ॥ २६ ॥ परिग्रह कारण मोह कों, एम कहां भगवान जिंह १५९
जीय माछनि वारीयो तिन पायो कल्यांन ॥ २७ ॥ [illegible] कहन न पाव ह दसिर्थ
फिर अड्सबका कहे हायत नदेह रे नदिन काव का । काहूं तितसिर्थरट

राम सुष पाव का फुनि हं जो वस नो दिहा हप वेरी और का ॥ २९ ॥ काहु सुट ।
एम्सु ह एवं सकलप रका कहत न चाए गंगन दिकै सटका कथा कथा के सु
ने वचन कें पाव का दो वं फुनि जो वसन दिहा हि पंढ आव का ॥ ३० ॥ [illegible]
कहा कहुं जापकाज इताइ । मों पें कछु कहिय न जाई । आर जषंड मनुष नो
पाय । सो विषयन के संग गमाय ॥ ३१ ॥ आगे कहा कों नग तिज है, त्रिसत न्म
बहुर फुनि आ है, और मुरष वेतस वेर आवत का सबै नि बानि नेर ॥ ३२ ॥
जब लों तन म कों काज नां आये तब लों मन कों तिस मत्ताये । आतम तत्व
सिद्ध सम राजे ता हि विलो के कर्मन कुं ताजे ॥ ३३ ॥ बहित बात कहिये कहुं
कहि । कारज एक आम के वे नी चमल बैसोई सुष पावे । जिया सापर ज्ञास
कहिये ॥ ३४ ॥ नगर आगार जिनती वसे । सुमन करी ग्रथ करालसे । तिहां थान
कव्रलि थकासा । रसना कहि नेमा ती दासा ॥ ३५ ॥ [illegible]
[illegible] सुपनावत संसार मां । जोग भी ज्ञान राज ति
न के चरण चिंतार चित वंदत हो मन लाय ॥ १ ॥ माछनी दंमे ज्ञाय को वितग

॰ब्रु॰ याचिरकाल जागीनकबकुं आपकी कीनीसुधसंताल २ जोनरहिसब
जगतमें एतनेरहवोनांहि पाषतदेकोहजावसुं मोहगेलताभांहि ३
१५७ मेरमीतउंचतते हवेगेकोहबोर आजकोजउमेलेतदे जुसपनेरमा
ओर यादेषतर आपसुं पहतनविनसोजाय एतपेंथारमांनीये अहो
मुहसाररापा ५ जोपनातकोदेषीये सोसंध्याकुंनांहि ताहिसावकरमां
नीये नमक्करुकलाकलोहि ६ जोसपनेमेदेषीये सोदेषतत्रतक्षसेवा
विनासीवसहे जातिहाय कमेंनाउ ७ सपनेमेरमदेषीये फरकहीविवा
र बाकुंमेरमनलहे याहिमेंरमवीर ८ सपनेमेरमदेषीये जागतहु
रमरहे ताहिसाचसबमानिके रहोजगतमेफुल ९ सुपलावतसंसा
रमां मुहनजोनेलेव आपपोहरअपानके गहरिहेरमभव १० सपना
मेंकहेजुठहे जागकहेनीजगोह तमुरषसंसारमें लहेनीतचकोबध ११ १५७
१ कहासुपनमेजोभवदेकोहजागतेमेसाच नउमुहथारमांनके नाचत
उजतसाच १२ ओषलमुदेषुउकहो जागतकोउनांही सोचितसबसंसा

मं॰ मोहगेलतामांहि १३ मोहनिंदकोसागके जलिअनेपसचेत तेजोमेंसारमें
अबसासासुषलेत १४ अबसासीपरब्रमको सुषअनंतकोमुल जागतहेजेजगत
में तेपायोनवकुल १५ अबसासीघटघटप्रगट जषतकोउनांहि सोपरहेरमनि
दमें कहिसमझवोमांहि १६ आपकहेरमदहे औरनकहेअपान यहसुप
नकीनुउमे कहाहेअसिमांन १७ मांनआपकोनुपति औरनसुकहेराक
हेसपनकीसंपदा मोहतमोहनिसक १८ देषसुपनकोसाहबी मुरषरहो
नुलाय तिनएकमेतयजापगी क्रमसेलकेधाय १९ कहासुपनकोसाहबी
मुरषदियेविचार जेमजोथाएकडीनमें लहेनीदिपचार २० सोवतमेंईदजी
वको मुरतरहेतस्व आपकहुमोनेकहु सबेरमपरपंच २१ मुरषएहीआ
तमा कोहिसमझतनाहि देषसपनावत आपको बहोरीमगनतेहमाहि २२
जातलहेजमराजकी आवतकोजपबेर मारकरीएहदेहको छिनएकमेंस
तषेर २३ असाजमकोनपनहो वाषतहेमनलाय तिनतेमुरषजगतमें हुलो
कोनकहाय २४ मुरषसोवतजगतमें मोहगेलतामांहि जनमेमरनबहुउप

५.३ सदे तबकु जागत नांहि २५ जब तुप रजम तो रहे जब सौं जम तु रांहि तिनके पद
जो सेवीये जनकी कहा वसाय २६ जिनके पदकौं सेवते निजपद प्रगट होय तिन ते
१५४ बडो न दूसरो और जगके मैं कोय २७ निजपद प्रगट होत हैं शिवपद मैं ले जाय
जनम मरन बहु दुष मेट जम विलषो होहि जाहि २८ जम जीते ते जगत मैं सुष अनं
त फ्रव लोय बहुरी कबऊ न सो जाग कहा वसाय २९ जम जीते जीते वहे जागव
हे पुवांन वहे सब वन सार मुकट हे चलत धरे तहां ध्यांन ३० ध्यांन धरत परब्रह्म को
ताहि परम पद होय शुकल बसी धर्म और कहा कहे कोय ३१ चेतन दीजन तो कर
जाय धरत ब्रह्म को ध्यांन सुष अनंत शिव लोक मैं प्रगट मल कुल्यांन ३२ ईह वि
ध जो जाग पुरुष निज उगन करे प्रकास ताहि पायो सुष भास तो कहे नमोस दा
स ३३ उग सेन पुरुष अवनिपै सातित मुकट समान तिन ध्यान कर सनाके हि
सम फल हो गुन वांन ३४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ नमस्कार जिनदेव को करूं दुहु कर जोर सुपन बतीसी सरस मैं करूं अरा १५८
नंद लमोर १ आतम सुपना सुगुरु बचन पढत रहे दीनरेन करत काज अपरी बुध

नके आल अवर जल षलीन २ सुगुरु पदावत पेम सुं ए पवत मन लाय घट
के पट जो नांषु ले संवे अैकार थ जाय ३ ॥ [illegible] ॥ सुआ पढायो सुगुरु वनाय क
में वन होजान जरयो ताय तुल्हु के कबऊ नो जायो जो सनत उनी पंद गानां षा
यो दुर्जन मोह दगा के काज बांधन लनी तरध रीनाज सुमजल बगो सु आ सुजा
न नाज विषै सुष लाषि विहघांन ५ जोर्ध्वगतो पकरी नर हे जो पकरो तो दिढ जि
न गहे जो दिढ गहे तो उलटी ना जर यो जो उलटो तो तजी नलनी जर यो ६ इह
विध सुया पढायो तिस सुपा पढके नया विचित्र पढत रहे निसदीन ए वन सु
नत लहै सव पापा चित्रेन ७ एकदिन सुव है आई सेन गरु संगरात तजी न जिगयो
वंन वनमें जो नलनी त्यांति वली दुर्जन मोह दुगा के तनी ८ तातर विषै जाग
आ नथर सुव हे जो सो एह वाषषरे उत्तर विषसु प्रनके काज वेवलनी पै वि
लसराज ९ वगो जो सन नलनी पै जब विषस्वाद उर टको तब लट कत तरे उलट
नयपाप तर मेंा जीउपर तेपपाय १० नलनी दोहर पकर फुनी रहे सुष ते वचन

प्र.बु. दीनताकहे कोउवनमेंजोमाचललार नलनीपंकरलोपोकार ८ पहतरहेगुरु
केसवचन जेजेसुषलेतकारीओल सुवटावनमेउडोजातजाक तातुतेतुलीष
१५९ तानषात १२ नलनीकेजातजईयोतीर जालेतोतीहंबहुनांवीर जोवेगो
तोटिहजितगहे जोदीटगहेतोपकरीतरहे १३ आपकरीतोभुगानांषायो
जोतुमषायोतुलटनजायो जोउलटोतोनजितजीजयो ईतनीसीषहरदेमे
लहि १४ ओसैवचनपटतफुनिरहे लोततनउनीतजवोनांवहे आयोदु
जनदुर्गतीरूप पकरेसुवटासुंदररूप १५ उरदुषकेजालमझार सोदुषक
हतनांआवेपार तुषष्णासबकुंसंकटसहे परवसपलोमहादुषलहे १६
सुवटाकीतीसुधबुधगई एहलोवालओरफलुराई आईपरतवसागरमां
हि अबईततेकोनकौंनतजिजहि १७ कबीकालगयोवहिओर सुवटेजिव १५९
मांवानीओर ईहदुषजालकीनहिजाति ओसीमनमेंजपजीषांत १८ रात
दीनपछुमसमरनकेर पापजालकाटनविततधरे करमरकाटेवनफाल सम

रनफजततमोदीनदयाल १९ अबईसतेजोनतकेजात तोनलनीबतात
षात पांषादावतमोततकाज तजिदुजेनदुर्गतिजंफाल २० आयतउरत
बकुरीवनमांहे वेतानरसोतूमकोजोहे तिनईकमस्यामहामुनिराय
धर्मदेशनादेतसुताय २१ यहसंसारकर्मवनरूप तामांहिसुआचेतन
अनुप पहतरहेगुरुवचनविशाल नवकुनांअपनीकरैसंजाल २२ लो
ननउनीपेंबेंगजाय विषेस्वादरसलटकोआय पकरेदुर्जनदुरगतीरू
प तामेंदुषबकुतजीयतप २३ सोदुषकहतनांओवेपार जांनतजीन
वरज्ञांनमझार सुंनतसुवटाकुंकोआप एतोमोहपरेसबपाप २४ ए
दुषतोसबमोहिसहे जेमुनीवरनेमुषतेंकहे सुवटासोचाल्योमझारएगु
रुसोंचेतारणहार २५ मिसवपरसोकरसबवनमांहे ओसेगुरुकबपायोनं।
हि अबमोहिदुसउरकबुनयो सोंवगुरुकोदर्शनलहो २६ गुरुकोसु
नगणवारंवार समरेसुवटोदायामझार समरतआपपापनेतिगयो घटक
पटषोलसमकीतलयो २७ समकीतहीतनओसबवात पहमेयहपरउम

५२ वी विष्यात चेतनके गुन मन मांहि धरि पुद्गलगादीक परहरे २९ आपमगन
आपनगुनमांहि जनममरण तें जीयकोनहीं सियसमांननी हारत है
१६ ये कर्म कलंक सबे तजि दीये २९ भावतआपजापजगदीसा रूपदएक
विराजित चित ईहविधसु वरतात कीये ध्यान दीनरवारटतहे कलंन चें
अनुक्रमें शिवपद जीवकों नयी सुष अनंत विलसत नीत गयो सत
गतसबकों सुष देय जाकनुछ इयधर्मनयेरय ३२ केवलग्यानराजीतरघु
न घटघटरा जतगांनग्रनुप सुषअनंतविलसे जीपमाय जाके निर्दप
दवारहलिय ३३ सुयाबतीसी गुनलेसुजांन निजपदवारटपरमनी
न सुषअनंत सकुफवचीत नैयाकी विनतीधरचीत ३३ संवतसतरे सप
तमांहि अग्रनिपक्ष लिपक्ष्वकलहि दसोदसा दसामी परगासा गुरुसग
तेंतशिवसुषवासा ३४ ॥ ईतिसुयावतीसी संपूर्णः ॥ अथ ज्ञानिक कवित्त
लिष्यते ॥ दीनकरकेदीन वीस चतुपंचासवत्र वांसह मंगलविराजितज्ञा
व बुधदवपनबुधगानऊ ज्ञानिकोगलवति स देवगुरुदिनआगावरा रक्कुंवेया

जीसएह सुकृसतरमननावनह मगलदिग्गा निजराग्रो ते सुरज जितसं
क्रमपतीतसुन विचारफजहि नविकजन पर्मधर्मत्र्यवधारचित्त रादोरा
रादहाययनरासमु एसलकहियेनित्त परमारथईलतोईमे रहियेनिज
सुषवित्त २ ॥ छप्पय ॥ साहवजाके अमरहे सवकलवतोके दीपको रूपर
दीपंम जरारहेसदाके जोगतीरपकरनए चक्रीवासुदेवा काजअनेतकु
एकसे घटवटैनहिदेवी जाकीवलपतीनीतहे नीतहोयविनासा जीवव
नासुजविनासगारथमनवासा अरथकहोयाकोकरा विनतीसावार नाम
कहोयापदविषे तुमलिहोवदविचार ६ कहतनकसीआवे मुरब
नेवे सागरपितधरीधरगए तुकें सतवे दषसुपनकीसेपरा तुमांनतसा
वे ७ आजकाउजनमजेसदे काहेगादेवे तुंरसलेपरलाजसी पापतहे
पेवे वजुंनरककोआपदा जरहिकोंजस धर्मकर्मनेकोमजो करवा
मतीकांवे तेयाआपनीहारीये परसांमनरांचे ८ ॥ कवित्त ॥ तेरोसुनाव
चितमुरतिविराजतुहे तेरोसुनावअसवारीतेमें कलीय तेरोसुनावअवनं
सीसदादीसतुहे तेरोसुनावपरनावना नगाहिये तेरोसुनावदर्शनसरज

DR. BHAU DAJI

१२४ उदै तेरा सुनाव परता व मैं तब दीपै तेरा सुनाव मैं सुनाव सब आनि लसै
यातै ताहि जिन मन कोई स्वर सरदहियै ८ ॥ मोह मेरे आर ने वगोरे जीव सवा
१६१ जगत के वासी तिम वासी कर राखै है कर्मगीरी के दरा मैं बस्तु तहीं पापी आ
प करत अनेक पाप जातै के से राखि है विषै बन जोरता में चार कोनि वास स
दापर थन दरब को नाव अमि जाबि है तामें जिन राज जु के वैन फौज दास खै है
आनि आनि मजीवन मोहनि राहदी है ९ ॥ आला तेर ही यन्त मतो लोस ना
जो न मर्म को न आप को न कर्म को न धर्म सावृहि दपत आरा स्वर्म जोसहै पी
त धर्म ताहि पाय मोलि धर्म अ सत मै मावु है नक कु न होइ न मै वात वात
मो हि गर्म रहे वाहि मैं वचता दिपाव है एते पर गई सर्म के जा है व को आ
पर्म अस मुदरत मैं मोह नाचै कर्म नाव है १० ॥ अमल जु पीत दहरा अमल
सु पीर दहरा अमल व हार दहरे अमल सु पीर है वानी जु गहार दहरी वाजु वहै १३
रह वा ताहि न कहां जहरा वां ताही न कहार है पर को आरी रहरी पर को तहार
हरी पर कौ न हार दहरा व हदु षत राहै ता दधि म हार दही आया ताहि तार

हरीचे तेनी जथा कहारी पार देस हारहे ११ ॥ अरी न के वृद्द पर करि जोरे जिनक
र म सुतरन के पद नजोरे है नरक तिर्यच पद दपके वबि रहे बिबिवार फट फ
रपक री पवारहे नावन कटाय जोरे अष्ट मद दुष्ट मोरे मदन के देश जोरे क्रोध
कुंभ धारे है वद तसम्यक सुरव वृक्ष तप ताप पुर सुषके समुह नूर सिध के निल
रहे १२ ॥ बार बार फिर आई बार बार फिर आई बार बार फिर आई आतम मोहि रहे ॥ बार
बार जुरी आई बार बार जरी आई बार बार रिजारी आई एसी नाच षराहै ॥ बार बार स
हि वार स्वाहि वार वार स्वाहि मनो मोह रूद राहै ॥ वार वार षोषो पांहि वार वार कैल का हि वा
र पोषे ताहि वार वार बुध करी है १३ ॥ आपनी कमाई नैया पांहि तुम ईहां आई अब क
बूसा व कौ एहा यक ह्लाप रहे तब तो किवार कबू कीला नो हि बोध सम या को कौ
लउ देआ यद मैं सैकर रहै अलप बतायक हाहो तद अप्पा नि जी व ता गत हि वि
न क्रतक कर्म कर्फुर रहे आगे कों संसार के विचार कौम वदे करि ज्ञाति चिदानंद
फंद के नधरि है १४ ॥ नात माता जेती पन्न सरधान सु धक कुमुद के मुदाय कह
सिधि नई नावरे काय क्रम को यक बक्रम तो न को सदाय मो क्ष क सक रवै कोन

॥श्री॥ याहीन भावेरे ॥ छांड्यो घरबारपै न छांड्यो घरका स्नेह तातें बारबार दुःख घने वेने कउं
दावेरे ॥ कलयुगके साधका बडाई कहाकैतीका जेराग द्वेषनाजाके नाउरहे हाउ
१६२ दावेरे १५ ॥ एमनन ताव निपात निरर्थक कादेकेंसोव करे नितन कैरे ॥ रकितन कुप
रसुय दिनाहिकी चाहि निसादीन रुरे ॥ आव नहाय कछु सर्व तेरजु बंधन पापप्र
णाम न हूरे ॥ आगिकी वेलि वलि वरे दुषकी कछु स्वजन नाहि कोधो न सुरे ॥ १६ ॥ सो
म गर्व नहि निग्या कांन नहि सुनै विनसतो ॥ निनमान रषि साध वनते कहि नतिश वप
तिकरे तेदोन नदीन ॥ फिर कछु ध्यान कानि ॥ पटलसो करि पाप पौगपर तीत्रत
होदोनी ॥ नर्थ वेलनहि तीर्थ कहा ति देखारार कहाका जी पई मक देखा लिरस्वां
नसुन ॥ यकुर्नि दनिकष्ट न जो जीयै १७ ॥ मनवचकाया योगति नकु सो सबजीय
नको रखु कहोय ॥ फुवचन बोले कबहु विराहरी पैक बहु जैयने जीय ॥ सालिग्रत
दापाले निरदुषन दुविधपरी ग्रहस्वत काय पंचमाहा जिनसो नाषी लई ॥ मगन १६२
चंदे साफ देसोय १८ ॥ परहोके काज महाराग जुको छांडि देत परहोके काजे फुव
जे पतवनायके ॥ परहोके काज रंक राउको वषांन करे परहोके काज तिनुसेर

कहि ज्ञायके ॥ परहोके काज पाप करत डरात नांहि परहोके काज निजवनविग्रिर
नायके ॥ परहोके काज एसा मह आनक के रे अस मुट पेर सुरे पंडित कहायके
२० ॥ वीतरागके बिंबते व समदिष्टि कहुं ॥ अष्ट कर्म वहाय पाले नत आगे
धरिये पुजा पाप दुरेन ज्ञाप जप ध्यान नहि ध्यान नहि ध्यावे ॥ अवल अंग थिरनाव ग्रध
आतमसी जावे ॥ मंजारि निरष निवदको पवा फल ई ब्रायरहो तंकुल देवरा दुष्यहे
नवरस एक ध्याल तुजन करहि २१ ॥ जिनिके काल जीव मत ग्यादा करीया नावहो
फिर सरत करकारि नमी आनंद देवता फल विन दरि दहारान ॥ रहि नविवेक घपथ पा
बकरि फारि फार रपद तीन धरत ॥ तिनकौ ते कहिये गुनथानि फेच किये मे नरपती
नरत २२ ॥ कई कई वेर सतएन रूपर ग्रवें रूप परसेवे रूप ॥ वे इवे रूपन के द
किन्हा तीन है ॥ कई कई वेर सुनये सुर जीन वासी देवके ई के ई वेरतो निवासन के
कानि है ॥ कई कई वेर स्न एकार मन लभुत माहि भिगत नीव सुषमान तीन है
कोडि कल्य अंतत राग आपुन विकाय चकै गर्व कहा करे मुदद पिदिग्यादा नेहे २२
जबजोगमी सो जिनदेवजीके दर्सकौ न बसो मतार कछु करी नांहि तो यो

५५३ मुनि जिनवानी पैन आनिक कुमत मांहि आसै यदयानी या आगांनी तया मती
यां सुपर विचार को ध्रकारा कछु कीनो नाहि संयम को विलगयो और सब ना
१६२ पक्के बतीया २३ जहां जपै नवकार माल आप के से आवे जहां जपै नवकार त
हां विवरव हि आवे जो लं जपै नवकार तिल सुष संपति होई जहां जपै नव
कार तिहां दुष रहे न कोई नवकार जपत नवी नियम लय सुष सम आवि सर
वसी माहि मंत्र ध्यान सो तया निज जप वो करेय २४ ।। दुहा ।। श्री मंदर स्वामि प्र
मुष वर्त्तमान तीर्थंकर देव मन वच सीस नमाय के कीजत नकी सेव २५ महिमा
केवल ग्यांन की जांनत श्रुत ग्यान तातें दान बरो बरी जाणो श्री जिन भगवान
२६ जिन तीर्थंकर केवल ग्यांन हि तिनतें श्रुत ग्यान तातें जान पालि कर्यो कर्म प
टल हर ग्यान २७ विन कषाय के सागते सुष न लहे पावे जीव आसी श्री जिन वृ
ष कहो वानी माहि सदीव २८ जो कुदेव पिं देव बुध देव विषे बुधि आनि जोई नर १६२
वर पर रीत वे सो मिथ्या सरधान २९ जिस पर को पष नो तसो यह संसार आइ
दृषा ईदे तहे जांन तजा गे बार ३० साग वाला तर को नर दृष्क हि ए विचार सु

विलपा हि सागे त नव तरण कुं चपार ३१ साग वडो संसार में पक्के सो वि होव
लोक सागरते सब पार ये सुष अनंत को थोक ३२ सुगुरु कहें से सिष्य कुं
आयु हि आयु निहार नेजरदे तुमर नुलि के आयु हि आयु विचार ३३ जो परत
आतो कल नया रागत सो नहिं वार साप न सो जु कांचरी विषन हो तसो शरीर
३४ नर तंबेत पंचम सम साधपराय ध्रुवंत कोटि सात अरु अर्द्ध सब नरक हि
जाय परंत ३५ साप मरन ले आए कहे गुरु आन ने तिवार सापहि गहि किरिये कुं
गुरु नप करे गवार ३६ वाघ सिंघ को नेक हा एक वेर तन लेय नेपा वत हे कु गुरु
को नातो अस्ति दुष देय ३७ दुगकि दुषन वृन्ह रहे रुगत्रि मांफि रत अंजांत दुग
जीवन वाघ रूष को नर गुरु के दास समांन ३८ केवल ग्यांन सरूप मय राजत श्री
भगवांन वंदत हुतिन के चरन नमि बनारसी वषांन ३९ ।। संपूर्णं ।। [illegible]
[illegible] कवित में सवैया लिष्यते ।। सवैया ।। [illegible]
पुंन पसी च समन अगोचर ... संग्रह के कवित बवांन चेतन वरा अंतर ब ची
सी पर सतक दोहा सो मांन पुजा आठ कवित हि अरु दोहा प्रस्मोत री जांन जि

बु५८ न्योविसीनविजनन्हउंलोवरतमांनवीरत्रस्त्रोनि १ परमातमजेमालारुदे
थराल तिर्थंकर जयमाल विस्तार मुनके गुनकी माल जमुकट करी पारस नाथके
१६४ छंद निहार मुखवतन विलोकउ परमारथ पद दिढ विचार गुरुभिष्यनकी
चरीचतुर्दशी जानि मन मुगति निसि वनाशि २ मिथ्यात विध्वंसनाम चतुर्दशी
गुनठेयालिसकीजयमाल परमातमकौ गुणकौ धावत पंचपरम पदवंदनव।
ले गुनमंजरीकी कथा चौपई लोकयंतमरजाद विशाल मध्यकाकी भाश्चै बि८
पई सिद्ध चतुर्दशी कवी न विशाल ३ निरवीनकेउ नाम तिरथकी एकादश
गुनथानवकाश काल अष्टकके दोहरा अरु उपदेश पचीसनिवास नंदीश्व
र जयमाल गुन कर बारह भावना विविध प्रकाश कर्मवेद दश नेदकहि
थितिमपतरंग वा मिबहुभास ४ विविधप्रकारकी सुविधकोउ छोत नयो
ताके अनुसारनई सुविधपसीव दे अकोतम अैनालीचउरदशगुनथान १६
जीवपरूप सुपात्रकी स्वरूप नई साहे अलात्रलेक्षोरनिर्णै श्री अनोतकापसी
वीकहि अष्टकर्मचौपई हित पैपकापसाविदे मोहरमाष्टकश्री श्रवर जैव

तुई श्री राग्यादी कनिर्णैकारचनारसाहे स०२७ पुन्यपाप जगमूल पचीसी साथ
पद्मसद्मविस अरु दोय छियालिस दोषन के तजि वामी जिनधर्म पचीसी होय अ
नाथबत्तीसी समुद्धात जो सुठाष्टकवरननसोय सम्यक्श्री वैराग्यपचीसी प
रमातम छत्तीसीजोय ६ नाटिकनामपचीसी सुंदर उपादान अरु निमित्त सं
वाद श्री विसजिनवरजयमाल पठतउपजे अति अहलाद पंचेंद्रीको परम
वापई फुनापसीचीई स्वरनर्णैकर्त्ताको न अकर्त्ताको हेमबविधिज्ञानतजु
उनमाह ७ दिष्टपसीचीमनबतीसी सुनपौनी अपनो मन लाय सुपनबत्री
सीजगकोरचनासुआबत्तीसी सुनतसोहाय ज्ञातिकग्रंथकवितदेहचार
कपदपरनालद बिधरीगाय फुटकरकवितपरमपदमहिमाअलविला
समअसबअगायाअ८॥ अथ ग्रंथकरतानामनगरसबलिख्यते। चौपई। ज्ञ
बुधिपमाहि लीनसंसी नामअर्थंबंड विसरत्ता तिहांजगुसेनपुरथानानाम
रआगरानामप्रधाना २ तिहांवसेजिनधर्मिनोक पुन्यवंतगुनके बहुथोक
बुधवंतसबसरसाकरे अपिवंडारयमेकोलेरे १० नरपतितिहाभैराजेअवरं

प.५३ ग जाकी ग्याग्यावेहस्वषंड ईत्त्वीतयोपनहीकोय यह उपगारन्नपतिके।
होय ११ तिहांमातत्तमवकुंथम सांमिग्रीसवाजकुमिलस तिनकेगोतब
१८५ कुलविस्तार नामकहतनहिआवेपार १२ सबतेंलागगोतप्रसीद्ध नाम
कलाराज्यरीसमीध हजारथसाहपुसंकेयलि तिनकेऊधिवृधिम्रतीघनी
३ तिनकेपुत्रलालजीलए धर्मवेसगुनगुननिरमए तिनकेनामरूपाति
दास जिनईहकीनोब्रह्मविलास १४ जोमनिजआतमकाकथा ब्रह्मविलासो
नामहेजथा बुधवंतहसोयामतकोय अलपमतिनामाकविहोय १५ नही
चुकनिजतेननिहार शुधिकीयेअरथविचार संवतसत्तरसेपंचावन
रतुबसंतवैराषसोहावन १६ सुकलपक्षत्रतियरविवार संघचतुर्विध
धजेकार पढतसुनतसबकोकल्यान प्रगटहोयनिजआतमग्यान १७
अतितअनागतअरुवर्तमान वंदनाकरुंदेवलगवान नेयानामन १८५
गातिदास प्रगटकियोजिनब्रह्मविलास १८ बहोतबातकहायेकहायन २
यहजीवत्रीभुवनकोधणी जाटहोयजबकेवलग्यान सुप्रसरूपवहलगा

वीन॥१२७॥इतिश्रीब्रह्मविलासमंपूर्णः॥ संवत्१९७३वर्षफागणसुदि५लपीतं
पंडतनीमचंदवेसपुरमध्ये॥जथावीतंगोमहतुकानामसमसतपंचमाहजन

प.२	पुन्यपापपचीसी	प.७४	मिथ्यातविध्वंसनचतु	प.१०३	चतुरहगुणस्थानक	प.१३८	वैरागपचीसी
प.५	सतअष्टोत्तरी॥	प.७७	गुणमाला ईसी	प.१०४	पनरपात्र॥	प.१४३	[illegible]
प.२२	द्रव्यसंग्रह॥ ॥	प.७८	सज्जायकडखा	प.१०६	अलमिति	प.१४४	[illegible]
प.२४	कर्मछत्रीसी	प.७९	गुनमंजरीलघुते	प.१०७	अनीतपचसी	प.१४०	[illegible]
प.४१	अक्षरबतीसी॥	प.८३	तीर्थंकरनामोरजु	प.१०८	कर्मकीचोपइ	प.१४२	२४तीर्थंकरजयमाल
प.४२	परमसतक॥	प.८४	मधुबिंदुकाचोपइ	प.१११	सुवीधकुवीधपचीसी	प.१४३	पंचेंद्रीवाणी
प.४८	श्रीजीनहरअष्टक	प.८७	सीधचतुर्दसी॥	प.११४	नीमाष्टक	प.१४३	ईस्वरनीर्णे
प.४९	समोसरणअष्टक	प.९०	नीरवाणकांड॥	प.११६	जथार्थचतुर्दसी	प.१४५	कालीकरस्तुती
प.५०	पारसनाथ कवित्त	प.९१	अगुणठाणक॥	प.११८	रागादिकअष्टक	प.१४८	[illegible]
प.५०	चतुरनरहाल॥	प.९२	कालाष्टक ॥	प.१२०	रूपचंदजनतलसहसी	प.१५४	मनबत्तीसी
प.५०	२४तीर्थंकरसवैया	प.९३	उपदेसपचीसी ॥	प.१२२	बोधीसपरासा	प.१५५	सुपनबत्तीसी
प.५१	२०तीर्थंकरसवैया	प.९४	नंदीश्वरद्वीपकीजयमाल	प.१२३	मुनीराजजयमालाजीपनि	प.१५६	सुपनाबत्तीसी
प.५५	परमातमकीजय	प.९५	बारहभावना॥	प.१२८	जीनधर्मपचीसी	प.१५८	लोकालोकबीत
प.६०	गुरुजयमाल॥माल	प.९६	कर्मकेगढ	प.१३२	अनादबतीसी	प.१६४	जीवीसीरकृत
प.६८	आदितवारपार्श्वनाथ	प.९७	सप्तभंगीवाणी॥	प.१३३	समुद्घात	प.१६५	छंदकरतालमा
प.६४	सीप्पीचउद॥ ॥	प.९९	सुबुधीचोवीसी	प.१३४	मुहोष्टक	प.१६६	संपूर्ण॥ ॥
प.६८	रागमाला	प.१०१	अकीतमजयमाल	प.१३४	समकीतपचीसी		
प.७०	नाटकप्रतीसर ॥						

आयेहै ॥ याकी जिनवांनिकौ सरधा स्रुषवांणे जिनतेई आ[illegible]राजनतए क
श्री रमनसायहै ॥ तातैं इगि षीलनै यालेढो जिनवांनिज सुषक सम्मुल्लस
षपादिनेवतायहै ॥ मिथ्यादृष्टि वर्णनाम स० २ ॥ आपने सरूपकौ नजांनैं
११२ आप विदानंद ब्रह्म [illegible] लिवहै मिथ्यातिनाम पावैहै वेतन अचेतन
है हंसा कै ब्रह्मगौरवा पुरै वित्वार जिवनाह कसतापैहै दरवगुरय पर
यसांत्वकौ नजांनैं ते द्रज्जिहो तिहां ग्रहैं दुवमां नसी सनौवैहै जलकेन घ्य
केनपौन अग्नि फलकेन त्रिसनो विराधमरहै मिथ्यातिकहावैहै ॥ द्रिमो
ह वर्णनाम स० ३ ॥ केईनए साद केईनए प्रातसाद प्राकमीपे केईनए गा
र केई वडे फकीरहै केईनए रायरा केईनए रंक नए विललात केईन
ए कायरओ केईनए धीरहै केईनए ईद केई चंदरब विवेक जैसे केई नये
पीन अरु केई नयेपनिर है केईएक विद्यानंद केउ करकौ लीलरवां गाथुरेते
थनजीवनमास गिर [illegible] तेहे ॥ ६ ॥ स्वरूप [illegible] वर्णनाम स० २४ ॥ परवानस ११२
वे विधि ज्ञानतदे [illegible] जानतदे मतसज्ज हैं करीया करकै क्रम जोरत
हैन छिछिरत [illegible] जपदग्रातन मधरे परमावनको [illegible] दि

है ॥ निज आतमकै अगलीमानकरै तपसैं भवसागरमें गहरै ७ ॥ नरनामह्दि मा
म० २५ ॥ दुरजन पैसें नरनकै कारन देषत हैं नरकौ विजलाये फूरघां चवी
त्तसयाकै ढिलपापकरनन दिये [illegible] नडअन बकबुनां विचारतदीन
आरातम जैसा पाये नतमन तरलो पाप अकारतपावतवाद जनमसब
आये ८ ॥ ब्रह्माकौ (कोड) ॥ म० २६ ॥ करता सबनकौ करम कुलाल जेमजा
कै उपजाय जीव जगतमें जेतनए सुर तिर्यांच नरनारकी सकलजंतस्वोर
संरसब रूजनए नए तासोवर वषकर वैकुत्रगरकल सुआय ऐसो साद।
व लिजिहिपातीर मैति जए ॥ दुहविषुओर नहिपावेकलबुताको बोरवलाजक?
सिष्टकौ विराय चोरलेगए ९ ॥ वोपरकेदिष्टांत म० २७ ॥ वोपरकेषेल तमें त
मासोए कनयोरीमजगतको रीतसब याहिमैवनाईहै ॥ वोसोंगतियारचा
व फिरबोर स्याविराव कर्मवर्तिजीवआरमप्रिविलुए ईहे ॥ तिनजोग पापपु
न्नताकै सैंसदा वफेरै सुभअसुभ कर्महारीजितिगाइहे ॥ फिरवोनरसोजबक
र्मषपजा दिसवेंपंचम गतिपकु वेतेयांचतुतादिहे १० ॥ मिथ्यातवंडेवर्ण

तारीक x

श्री ॥ नाम॥ स० ॥ १ ॥ देहके पवित्र कौ आतमा पवित्र होय ऐसे मूढ सलिरहै मी
थ्यातके नरसमे कुलके आचार कुं विचार कुं सोई जाने धर्म मूलकं दष।
१११ एवुसपापके करमसे सुदेवकुं देवमानत होत द्विजा ने धर्म अधर्म हिंसाद
याएक हि मिलापमे ऐसो दुरबुधि अविवेकी तरपाप कीया सुंरहे से ऐसो
अधर्मि नरकमे ॥१४॥ नरकको दृष्टांत ॥ स० ॥ १ ॥ नदीके निहारहो आतमानि
हारो जाप जाप को तुरंगो न वेतद षेहु षिय र के। एकनीरनयो आए एकआ
गेवल्या जाय ईहाथी रमलायरहो नर पुरके ताहि मेकी लोगके ईन्नां तिक २
नरंगे उवहिन से कुनिता हि मे अनेक था उब रके ते सें अल आत मो मे के
परणाम होहि और परवानदे अनंत आकिकरके ॥१६॥ करता वरणन ॥
स० ॥ १ ॥ जगतके जीवने जी वा वे जगदी आको वा कोई बाआवे तव मारि
डाराय तु है वाहि के लोकमे चे तिकाज सबकरे जीवबी नु वाके हुकमन १११
जिन टारीय तु है करता सबन के करमन को वे दे आपु लेगता हुकुम को न
जो विधा रिय तु है करता सो नागता की कैर और तो जे आके कछु उत्तर सु धे
धारीय तु है ॥१७॥ मिथ्यादी वर्णन ॥ स० ॥ १ ॥ जोलोंई हि जीव के कमी थ्या तरुहि
लागी रहे तो जो सभाव कुं वस्तु कुं वस्तु जे सां चहे राग द्वेष वितादेव ताहि क
है रागी देव जीव को न जाने ते दमान तत्त्व पंचहे वस्तु को सुभाव को न जां
ने एहसां चो धर्म कीया को धर्म मांते मद एकी मा चहे सधार तवां नि सर व
गलि वषां नि ते याता हिं ना पि वां नि तो लो नाव कर्म ना चहे ॥१८॥ तलिव
कौनाम ॥ स० ॥ १ ॥ कोतुक देहे वसुरसो मद त्र तव हो तु को तु क है राम वंड राव
आवा मान सो कोई कहे अला वडो सिष्को करई याई है को न लागी रहे तव
नी ज कें ने न सो वहल पां नो सो चोर षीय जिहो न विचवे वरषा वाके पुत्र नय।
बाप कहे को न सो ऐसे दस नर सम मों ने जीव संसार मों हु तब होते फर तर हे
तुरहे मो षसो ॥२५॥ नाम कर्ता वर्ननाम ॥ स० ॥ २ ॥ निसदी सवहमनलागी र
हे मुनी राय कि पाय कवे पर सों जि न देव के दषन की रटना की मजाय विर ह
विता परसो कब धे जि वलो कमे जाय व सो सुष सी धल कुं तजी के जर सो क
व जाग मल ए मवां वत है जव विग्या जे के काल की धो पर सो ॥२६॥ काल धर्म वर्ण

वृं॰ नाम सं॰ २४॥ जाकि कुलधर्म मांहि सखापदेवन हिष्ठ छैते कोन पाहि हिरदे की
वातको। संमत रघुर रहोगपानगुनउर रहीमाहात मनजर हीलषेसराग।
११२ गातको। मिथ्यातकोलहरस्यो वसो वकोन पंथ पावजिहां तिहोनु लिरयाक
रजीवघातको। जुगाईपुरानमानेकुगोई देवगांनेजे सोजन्म अंधनर हे षेनापे
नासको। २७॥ कुपंथ वर्णन॥ सं॰ २५॥ राजापरजासबवेवरावेरीक्षीसमांनये
हलोप्रनवेवात जोकमसफलनहे। व्यापजगादीसअवतारधरोअवतीपि
कुंजेमकेलकरेसोकेनोमकानदे। परमेश्वर करे परवफर्षोअनाचारके
हतनश्रावत्राजेअसोई पुरांनदे अहोमाहाराजकोनकोजमतकोनेजगत
केजेवेवकोंअैसोसरधोनदे॥ २८॥ श्रीवर्णन सं॰ २०॥ वडानातलघुनातके
रतहवायससलवदवोयनरी। फोरावकुतफनगनीमंउतिसकलदेह
मांनुरागदरी। श्रीपीतपाडमोसमयपुरातततापररीझधरीधरी। अैसानीर ११२
षक्करके गांवरसकत्रीयानुमकाहिकरी॥ २९॥ नीजंदरश वर्णन॥ सं॰ २७॥
जोजुगकुसवदेषतहेतुमतालिविलोककेकेकाहिनोदेषे। जोजगकुंसवजो

नवदेतुमताहिजोजानेतोसुषोदेलेषे। जोजगमेथिरहेसुषमांनतसोसु
षवदसकोनविशेषे॥ हियरेनप्राणेतवदोजवदेतुमआपनिरकेरषे
२०॥ कुपंथ वर्णन॥ सं॰ २८॥ साईतोकुपंथजहांउपकोनजांनेनेदसोईतो
कुपंथजाहांलागारहपरसो॥ साईतोकुपंथजिहोंहिंसामेवषांनेधर्मसोई
तोकुपंथजिहोकहेमोषधरमे। साईतोकुपंथजोकुंपंथजोकुंशिलपसुदे
वकहेसोईतोकुपंथजोकुलेगपडरसो। साईतोकुपंथपंथपंथविनाजांने
नहिवितापंथपायमुहेकेसमोषदरसो। २१। सं॰ २९। पंथवेहसरवगजोहां
प्रभुजीवअजीवकेनेदलपोहे॥ पंथवदेजोनिग्रंथमाहगुरुदेषतरुपम
हासुषपाए। पंथवदेजिहांग्रंथविरोधनआटअोगसेलोकजषाए। पंथव
देजिहोजीवदयाधर्मकर्मषपायकेसिधमेजाये। २२। जस्तपंथवर्णन सं॰ ३०।
पंथसोईजिहांजुवारेवकदेजुवापंथसोईजिहांजुवगुरुमानतहे। जुगापंथसो
ईजिहांग्रंथसवकुगोवाचेजुगापंथसोईजिहांजमकोवषांनतहे। जुगापंथसो
ईजिहांदयाकोनजांनेतदजुगापंथसोईजिहांहिंसाकोप्रवानिहे। जुगापी

६५ सबोलकेस मोषपंथ पापा तिह्के विनां मोष पायें तेयासु षके सें जानिये ॥२२॥ पं
थवर्णनं॥स॰२४॥ पंथवृदेजिनं आपुविराजत लोक अलोक कोईसजु गाये
११४ पंथसोई परषो नविदानंद जाके चलेनवजुलि नां आये पंथवदेजिनं मोषमा
रगसुधो चलेनिवलो कें जोय ॥२५॥ ॥केवलज्ञानकी महिमा॥स॰॥२६॥
केवलिके ग्यांन में प्रति ब्यांन आनि सब आसें लोक अलोकन की जिति कवुवात
है अतीत काल भई हे अनागत में होयगी वर्त्तमान सब की वहि तैसो वि
ख्यात है चेतन अचेतन के भाव विद्यमान सबे एक हि समें में जैसे भंति हे
तज्ञात है एसी कछु ग्यांन की विसुनता विसेष वनी ताको धनी ग्रहै देख्या
केसें विज्ञानाते है ॥२६॥ ॥...॥स॰॥२७॥ एवहजारना
वडिन कुसदी नी बारआरमनतानि हारकोदेखुं उरतुहे कुपंडकी
विलूत बांदतन वैर को जो समवतुरागन सो तदतो भरतुदे नानि थां ११४
भ आद जैव तुरदरतन सोभद्रुहसतानह तो रीवन विसरतुहे असी वि
नोत सो गारववि लें वज्जितकी तौ नहि तरी कछु के रिसिधसो चकुकरतु

हे ॥२६॥ ॥दोहा॥ यह सुपंथ कुपंथ के कवित्त पसिय वसिद्ध जे या पदत्त विवे
क सों लहिये आतमरिद्ध ॥इति सुपंथ कुपंथ रूपस्वरूप॥ अथ मोह स्वरूप क
थन ॥छप्पै॥ परम सु जस रवंग हे तारणतरण त्रिकाल ताद्वर एवेदन
करं षोडस आलंकमाल ए एकमोह हे मगनसु नमत संव संसार है षेत्र
रूपस्फेन दें असी मोहतें विकार ॥मोहवश जगत वर्णन॥स॰॥२९॥ मोह
के भरम सो करम सबु करे जीव नह जाने पुंन अरु पाप असो मोह की गु
हलमे जागत सब गाई ये मोह धरी देह पर नेह परसन करें जम की नल
में धर्म कहीं पाइये चरम की दीठ सो परम कंपुदेषिये तमोह सेन लिय है
भरम तरमाई हे चेतन अचेतन की जाति दोउ भिन्न भिन्न मोह ए कमेक
लेष तें पाईये वताई ये ॥अथ नमस्कार॥स॰॥३०॥ ब्रह्मा अरु विष्णु महादे
व तिन्हें एकरूप कहे परमेश्वर के अंस अवतार ए है विरंचि ओंकार ते आयु
संमयुध की नाभ रसी सरूदन सुपथ न मनाय है विष्णु आप अवतार लीनो
जन मोहि जलकलो काहे पड़ो का उनै वतायहे सिवरूप पीडे करी पह

७वृः जेपववनपांनिद्योईसनौक्रुणांननहिंत्र्मेसांचरमायेहे ॥ ४ ॥
कालकरीकुंजनमकेजपरनारीमांएंसविभचारीनसोईसके
११५ संकदीय मांहोरवनांगेलायनांवेसाप्रसीदवानतन लालजातकहईमक्ता
हिये भ्रमाननीलानमांकोहषीमुषआरकीनेईसनोविचारनहिईनेंअसाव
हीय कहतहईसतुगदीसएवताएआपईनहोकेवरनविकालगाहिरह ?
च ५ अर्जुनकुंतीनलोकमुषमेदषायदीनजिन
षडमनहरसुधककुतांलोकजहतहे सेकरसुसीसकोटिहुहतगएआठ
कोतिनलोकमनकुगाजलगाहनुहे ब्रह्मादुकीसिष्टकोचारायजवगएवो
रवीतलोककरतापहुहतरहतहे रांमचंद्रजिनाकीसुधिपुत्रतसुपैठ
नसातांकोलोकजगतकेईस्वरकहतहे ६
मत्तकोसरूपधरीगएजोपातालमांहम्यारेवदस्वोरसा ११५
सओनिईहोधरेहे कछुहेअयासीसवजाजनकीहष्यरीओरंससमुद्रमस
थनपीतकेरहे षषिकोपातालतजआएआपुसुअरहेसंघकोसरूपधरी

हणीकशहेरहे परमस्वरपरमगुरूअवतासीजोसिरूपताहिकहेपसु
दहआयेअवृतरहे ७ रांमचोफरसरांमआपु
समयुधकीनांहांउअवतारअंगाईस्वरकोलेरहे रूपअवतारमांदिति
नलोकराषतहे हारीकानराषमकेजाहोसवजेरहे बधकेविचारमुहमा
ननबकीनासवपापविस्तरनर्कमांक्षिपेरहे वावनहेजासुवलिईस्क
हिलीनोवलिअसकुपातालद्वारपालनएबेरहे ८ मिछ्यादिष्टवलीनस ॥
७॥ पंचसगुनथानकजोश्रावकजोउत्कष्टीप्रतिमाधरलोय ससीलसाग
ताकाजिनवालसएकपटपरीग्रहमेजाईसाधव्रतुईशापरीग्रहहरावुपं
चपानमांहीएकनहोय तिर्थकरहेउ इहवाकलोकहेतलाजतनहि
आवेलोय ५२ बापुरवीचारेमि
थ्याद्रिष्टीवकहजांनकोनजीवकोनकर्मकेसकमिनापहे सदाकाल
कर्मसोएकमेकरहि तिनताननासीकोनकर्मकोंनआपुहे यहतोस
रवमेदवेदमांनिर्मलरूपचिदानंदपोनमईकर्मजडवापुहे मिदनांति

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

ब्र०
१६६

॥श्रीब्रह्मवीलाससमाप्तं॥